चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य

CHITRA MUDGAL KA KATHA SAHITHYA

Thesis

Submitted to

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

For the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

In

HINDI

Under the Faculty of Humanities

By

गीता. एन.पी.

GEETHA N.P.

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
KOCHI - 682 022

JUNE 2007

Certificate

This is to certify that the research work presented in the thesis entitled **"CHITRA MUDGAL KA KATHA SAHITYA"** is an authentic record of research work carried out by **GEETHA N.P.** under my supervision at the Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology, in partial fullfillment of the requirements for the degree of DOCTOR OF PHILOSOPHY in HINDI and that no part thereof has been included for the award of any other degree.

Dr. (Prof.) R. Sasidharan
Dept. of Hindi
Cochin University of Science
and Technology
Kochi-22

Place : CUSAT CAMPUS
Date 18 6 2007

Declaration

I hereby declare that the thesis entitled **"CHITRA MUDGAL KA KATHA SAHITYA"** is the bonafide report of the original work carried out by me under the supervision of **Dr. (Prof) R. Sasidharan** at the Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology and no part there of has been included in any other thesis submitted previously for the award of any degree.

Place : CUSAT CAMPUS

Date 18-6-07

GEETHA N.P.

प्राक्कथन

हिन्दी महिला लेखन ने पूरे भारतीय समाज के जीवन को, खासकर नारियों के जीवन को बड़ी सजगता के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश की है। महिला रचनाकारों ने शहरी मध्यवर्ग एवं उच्चवर्ग की मानसिकता पर ज्यादा ज़ोर दिया है क्योंकि अधिकांश महिला साहित्यकार इसी वर्ग और क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। आज की महिला रचनाओं में मौजूदा व्यवस्था के प्रति स्त्री समाज के आक्रोश, विद्रोह, प्रतिहिंसा आदि भाव प्रमुख हैं, जिनमें पुरुष सत्तात्मकता के प्रति नकारात्मक भाव, नारी जीवन की छटपटाहट, टूटन, शोषण, उत्पीड़न से जन्मी विद्रोही मानसिकता आदि की अभिव्यक्ति हुई है। इन भावों को रचनाकारों ने अपने अपने दृष्टिकोण से अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। हिन्दी की महिला रचनाकारों ने नारी जीवन की सारी खामियों और खूबियों को सच्चाई के साथ अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। नारी जीवन के हर पहलू को समकालीन जीवन परिस्थिति से जोड़कर उन्होंने पेश किया है। समकालीन बदलते परिवेश में परिवार, विवाह और तलाक, मातृत्व सौन्दर्य बोध, काम और प्रेम, मीडिया, विज्ञापन, राजनैतिक चेतना, यौन उत्पीड़न और बलात्कार, अपराध सम्प्रदायिकता आदि सभी विषयों को महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं का विषय बनाया है।

समकालीन हिन्दी महिला रचनाकारों में चित्रा मुद्गल की खास पहचान है। उनके रचना-कर्म में अनुभव को संश्लिष्टता में रचने और संवारने का हुनर देखा जा सकता है। अनुभव-अनुभूति का उनका सृजनात्मक नुकीलापन मामूली इंसान की जिन्दगी के नरक को व्यक्त करने के साथ-साथ पाठकीय संवेदना को जगाने में भी सक्षम है। चित्राजी की रचनाओं का संवेदना और शिल्प की दृष्टि से अध्ययन करना इस शोध प्रबन्ध का

उद्देश्य है। यह अध्ययन चित्राजी के उपन्यास और कहानियों के आधार पर किया गया है। उनके तीन उपन्यासों और चौदह कहानी-संकलनों को इस अध्ययन का विषय बनाया गया।

इस शोध प्रबन्ध का शीर्षक है **"चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य"**। अध्ययन की सुविधा केलिए इसे छः अध्यायों में विभक्त किया गया है

1. हिन्दी की समकालीन महिला कथाकार और उनकी रचनाएँ।

2. चित्रा मुद्गल : सृजन कर्म।

3. चित्रा मुद्गल के उपन्यास : संवेदना के विविध आयाम।

4. चित्रा मुद्गल की कहानियाँ : जीवन यथार्थ।

5. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी।

6. चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य : शिल्पपरक विशेषताएँ

अन्त में **उपसंहार** भी है।

"हिन्दी की समकालीन महिला कथाकार और उनकी रचनाएँ" शीर्षक पहले अध्याय में समकालीन महिला सृजन कर्मियों की रचनाओं तथा उनकी विशेषताओं को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

दूसरे अध्याय का शीर्षक है "चित्रा मुद्गल सृजन कर्म"। इसमें चित्रा मुद्गल का अति संक्षिप्त जीवन परिचय, साहित्य सृजन की प्रेरणा और उनकी रचनाओं की सामान्य चर्चा की गयी है।

तीसरा अध्याय है "चित्रा मुद्गल के उपन्यास संवेदना के विविध आयाम।' इसमें चित्राजी के उपन्यासों में चित्रित विविध सामाजिक समस्याओं के साथ समाज में नारी अस्मिता और समता सम्बन्धी उनके विचार को भी प्रस्तुत किया गया है।

चौथा अध्याय "चित्रा मुद्गल की कहानियाँ   जीवन यथार्थ" में चित्राजी की कहानियों की कथ्यगत विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

पाँचवाँ अध्याय "चित्रा मुद्गल के रचनाओं में नारी।" इसमें चित्राजी के उपन्यासों एवं कहानियों में चित्रित नारी के बहुविध जीवन और रूप को प्रस्तुत किया गया है।

छठे अध्याय है "चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य शिल्प परक विशेषताएँ" में चित्राजी की रचनाओं के शिल्प सम्बन्धी विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

अन्त में उपसंहार में इस अध्ययन से निकले निष्कर्ष का समाकलन किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ. आर. शशिधरन के निर्देशन में तैयार किया गया है। समय-समय पर उन्होंने जो प्रेरणा और प्रोत्साहन दिये हैं, उसके कारण ही मैं यह शोध-कार्य करने में सफल हो सकी। मेरे शोध कार्य को सफल बनाने में उन्होंने जो मूल्यवान सुझाव एवं निर्देश दिये हैं, उनकेलिए मैं सदैव उनके प्रति आभारी हूँ।

विभाग की अध्यक्षा एवं आचार्या डॉ. पी.एम. शमीम अलियार जी के प्रति मैं अपना असीम आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने विभाग में आवश्यक सुविधाएँ देकर मेरे शोध कार्य को गतिशील बनाया है। उनके प्रति तहे दिल से मैं अपना अभार प्रकट करती हूँ।

मानविकी संकाय अध्यक्ष और वरिष्ठ आचार्य डॉ. ए. अरविन्दाक्षन जी के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने नयी-नयी सामग्रियों के अध्ययन की प्रेरणा मुझे दी है। मेरे इस शोध का विषय-विशेषज्ञ

डॉ. के. वनजा जी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने मुझे हमेशा उचित मार्गदर्शन दिया तथा मेरे इस शोध कार्य को सफल बनाने में बहुत सहायता दी है।

मेरे अन्य गुरुजनों के प्रति मैं आभारी हूँ जिनके आशीर्वादों ने आखिर मुझे इस कार्य केलिए काबिल बनाया था।

कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के कर्मचारियों तथा पुस्तकालय के कर्मचारियों के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने इस शोधकार्य को सुगम बनाने केलिए काफी सहयोग दिये हैं।

मैं अपने प्रिय मित्रों के प्रति आभारी हूँ कि वे मुझे अपनी छोटी मोटी ज़रूरतों केलिए बिना किसी हिचक के सदा उपस्थित रहे हैं। प्रिय दोस्त दीपक, संजीव, राजन, इन्दु, प्रदीपराज, प्रदीप, अनीष, मनीष, जॉयिस टोम, नीलूफर, श्रीजा, अनिता आदि को मैं अपना धन्यवाद देती हूँ। इस शोधकार्य की पूर्ती केलिए पति श्री प्रदीप और प्रिय पुत्र यदुकृष्णन के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। मेरे अन्य सभी मित्रों को मैं इस सन्दर्भ में सप्रेम स्मरण करती हूँ।

श्री उदयन के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिन्होंने इस शोध प्रबन्धक का टाइप सेट किया है।

अपने उन समस्त आत्मीय जनों एवं शुभ चिन्तकों को भी मैं धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मुझे सहायता पहूँचायी है।

मैं यह शोध प्रबन्ध विद्वानों के सामने प्रस्तुत कर रही हूँ। इसमें जो गलतियाँ एवं खामियाँ आयी हैं, उनके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

सविनय

गीता

विषयसूची

अध्याय - 1

हिन्दी की समकालीन महिला कथाकार और उनकी रचनाएँ। **1 - 57**

पूर्ववर्ती महिला कथाकार - समकालीन महिला कथाकार - उषा प्रियंवदा - मन्नू भण्डारी कृष्णा सोबती मेहरुन्नीसा परवेज़ शशिप्रभा शास्त्री रजनी पनिक्कर - मंजुल भगत - चन्द्रकान्ता - ममता कालिया - मृदुला गर्ग - मृणाल पाण्डे - मणिका मोहिनी - कृष्णा अग्निहोत्री - दीप्ती खण्डेलवाल - सूर्यबाला - प्रभा खेतान - कुसुम अंसल - राजी सेठ - मालती जोशी प्रतिभा वर्मा - सिम्मी हर्षिता - चित्रा मुद्गल - अन्य लेखिकाएँ - निष्कर्ष।

अध्याय - 2

चित्रा मुद्गल : सृजन कर्म। **58 - 94**

जन्म और शिक्षा - पुरस्कार - सम्मान - कार्यक्षेत्र - प्रभाव और प्रेरणाएँ - जीवन दृष्टि - रचना-परिचय - उपन्यास - एक ज़मीन अपनी - आवाँ - गिलिगडु - कहानी संग्रह - ज़हर ठहरा हुआ - लाक्षागृह - अपनी वापसी - इस हमाम में - ग्यारह लम्बी कहानियाँ - जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं - चर्चित कहानियाँ मामला आगे बढेगा अभी - जिनावर - केंचुल - भूख - लपटें - बयान - सम्पादित कहानियाँ - असफल दाम्पत्य की कहानियाँ - टूटते परिवारों की कहानियाँ दूसरी औरत की कहानियाँ - बाल-साहित्य।

अध्याय - 3

चित्रा मुद्गल के उपन्यास : संवेदना के विविध आयाम। **95 - 133**

संवेदना की अभिव्यक्ति और समकालीन उपन्यास संवेदना की दृष्टि से समकालीन महिला उपन्यास - प्रेम विवाह एवं तलाक - नौकरी पेशा नारी - राजनीतिक सन्दर्भ के उपन्यास चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में संवेदना के विभिन्न आयाम - ज़रूरत है स्त्री केलिए अपनी एक ज़मीन - उपभोगवाद का दृश्य-अदृश्य जाल विज्ञापन नारी शोषण का अड्डा विज्ञापन और मॉडलिंग का दूसरा पक्ष साम्प्रदायिकता का अभिशाप - ट्रेडयूनियनों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता - व्यक्ति से वस्तु बनने की त्रासदी - धनाभाव और धन की अधिकता - पैसे की ताकत - नारी शोषण - नशीली दवाओं का उपयोग।

अध्याय - 4

चित्रा मुद्गल की कहानियाँ : जीवन यथार्थ। **134 - 175**

पारिवारिक जीवन यथार्थ की कहानियाँ - सामाजिक आर्थिक यथार्थ की कहानियाँ - नारी जीवन के यथार्थ की कहानियाँ - कामकाजी महिलाओं के जीवन का यथार्थ - राजनैतिक यथार्थ की कहानियाँ।

अध्याय - 5

चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में नारी। **176 - 230**

समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में नारी - चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में नारी - विज्ञापन की दुनिया में पिसती नारी - नारी मुक्ति के दो पक्षों का उद्‌घाटन - आवाँ में चित्रित नारीयाँ - मज़दूरों के अधिकारों केलिए लड़ती नारी - मध्यवर्गीय नारी - निम्नवर्गीय नारियाँ - साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ती नारी - नशीली दवाइयों की विभीषिका - निर्दयी एवं शोषक पिता से बदला लेती बेटी - श्रमिक राजनीति और समाज सेवा से जुड़ी नारियाँ - उच्च-वर्गीय पात्र - दलाली करती नारी - समकालीन परिस्थितियों में पिसती नारी - कुँआरी माँ - धन और सम्पत्ति को अहम् मानती आधुनिकाएँ - दलित चेतना का उग्र रूप - चित्रा मुद्‌गाल की कहानियों में चित्रित नारी - विद्रोही नारी - कामकाजी नारी।

अध्याय - 6

चित्रा मुद्‌गल का कथा साहित्य : शिल्पपरक विशेषताएँ। **231 - 309**

चित्रा मुद्‌गल के उपन्यास साहित्य की शिल्पपरक विशेषताएँ - चित्रा मुद्‌गल के उपन्यास साहित्य में कथानक विधान - चरित्र चित्रण - चित्रा मुद्‌गल के उपन्यासों में परिवेश - सामाजिक परिवेश - आर्थिक परिवेश - धार्मिक परिवेश - सांस्कृतिक परिवेश - शहरी परिवेश - चित्राजी के उपन्यासों की भाषा अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग - कथानुकूल भाषा का प्रयोग - पात्रों की मानसिकता के अनुकूल भाषा का प्रयोग - चित्रा मुद्‌गल की कहानियों की शिल्पपरक विशेषताएँ - कथावस्तु की विशेषताएँ - चित्रा मुद्‌गल की कहानियों में पात्र एवं चरित्र चित्रण - उच्चवर्ग के स्त्री पात्र का चरित्र चित्रण - मध्यवर्गीय नारी पात्र - निम्न वर्गीय नारी पात्र - पुरुष पात्र - बालक पात्र - पात्रों का नामकरण - चित्राजी की कहानियों की भाषागत विशेषताएँ चित्राजी की कहानियाँ की शैलीगत विशेषताएँ चित्राजी की कहानियों में आकारगत प्रयोग - चित्राजी की कहानियों में बिम्ब विधान - दृश्य बिम्ब - श्रव्यबिम्ब - मुहावरा, कहावतों और सूक्तियों का प्रयोग - सूक्तियाँ लोकोक्तियाँ और मुहावरे - चित्रोपमा - आलंकारिकता - कहानी के शीर्षक।

उपसंहार **310 - 315**

ग्रन्थ सूची **316 - 325**

अध्याय - 1

हिन्दी की प्रमुख समकालीन महिला कथाकार और उनकी रचनाएँ

प्रस्तावना

महिला लेखन को महिलाओं का लेखन कहने के पीछे एक संजीदा जीवन-दृष्टि है। महिला लेखन में जो खास-बू-बास नज़र आ रही है, उसी की वजह से उसे विशेष दर्जा दिया गया है। सामाजिक धरातल पर महिला और पुरुष में विभेदक दीवारें खडी करना जितना असंगत है, उतना ही असंगत है साहित्य में महिला लेखन की अलग पहचान की शिनाख्त न करना। इस कथन का तात्कालिक मूल्य तो है कि जब भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिला और पुरुष में अधिकारों के स्तर पर संवैधानिक भेदभाव नहीं है तो साहित्य में इस तरह का वर्गीकरण कितना जायज है? गहराई में देखें तो महिला-लेखन ने अपनी खासियत ज़िन्दगी और साहित्य की खास समझ से कायम की है। अपने वर्ग एवं जाति की अनूठी अभिव्यंजना द्वारा नारी लेखन स्वतः अलग पहचान की अधिकारी हो गया है। इससे साहित्य का वैचारिक धरातल व्यापक हुआ है और एकांगिता का बोध तिरोहित होने लगा है। यद्यपि पुरुष रचयिताओं की रचनाओं में स्त्री मन की गहनतम प्रेरणाओं, स्पूर्णाओं एवं मनोभावों को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया गया है तथापि उनकी दृष्टि उस नाविक की सी है, जो समुद्रगर्भ से बाहरी दुनिया का मुजरा पेरिस्कोप से कर रहा हो। ज़मीन पर पाँव रखे बिना ज़मीन के छूने का एहसास नही हो पाता, उसी भाँति महज़ अनुमान से स्त्री मन की थाह पा लेना सहज नहीं। इस दृष्टि से देखें तो साहित्य में सृजनरत महिलाओं ने साहित्य की अधूरी दुनिया को भरापूरा संसार बनाने में अत्यंत योगदान दिया है।

पुरुष प्रणीत साहित्य को इस दृष्टि से जीवन की संपूर्ण गाथा का अपूर्ण चित्र कहा जा सकता है। उसमें आधी दुनिया की अनुपस्थिति रहती है। लेकिन महिला-लेखन ने अपनी तमाम खूबियों-खामियों के बावजूद आधी दुनिया को अपनी रचनाओं में खूबसूरती से समाया और सजाया है। महिला संसार में महसूसे जानेवाले पुरुष अहंकार के दंश, आँसुओं से भरी गोद, पारिवारिक ढाँचे में किसी की मृत्यु से उभरा सूनापन और तज्जनित समस्याओं को महिला-कलम ने ईमानदारी, तलखियत, साफगोई एवं प्रामाणिकता के साथ अपनी कथाओं में उरेहा है। इसके अतिरिक्त जीवन के अनेकानेक पहलुओं पर भी उसने सफलता पूर्वक अपनी पैनी कलम चलाई है।

लेखिकाओं ने सहज नारी-जीवन पर ही नहीं लिखा है बल्कि अनेकों ने तो जीवन की संवेदनाओं की अभूतपूर्व अक्कासी करके कई मायनों में पुरुषों से भी ज़्यादा कामयाबी हासिल की है। नारी कलम से नारी के विषय में जो कुछ लिखा गया है वह अत्यन्त सार्थक, प्रामाणिक और बरकरार है। महिला-लेखन दरअसल लेखन की परिव्याप्ति का घेरा खुलने और जीवन की तस्वीर को पूरे होने का साक्ष्य है। इस प्रकार लेखिकाओं ने सामाजिक जीवन की कुरीतियों तथा रूढियों से मुक्त होकर ईमानदारी से वैयक्तिक अनुभूति को व्यापक दायित्व-बोध से जोड़कर अपनी रचनाओं में प्रतिफलित किया। उनकी रचनाओं में नई मानवीय दृष्टि तथा नई आस्था की खोज है और सहजता स्वाभाविकता का यथार्थ प्रस्तुतीकरण भी।[1]

---

1. आजकल लेख-महिलाएँ घर और बाहर की समस्या पृ. 32

पूर्ववर्ती महिला कथाकार

हिन्दी की प्रारंभिक महिला कथाकारों के लेखन पर ध्यान देने पर यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि इन कथाकारों का क्षेत्र, घर, परिवार, पति, बच्चों तथा अन्य पारिवारिक सम्बन्धों तक सीमित रहा है। बंग महिला श्रीमती राजेन्द्रबाला घोष, उषादेवी मित्रा, कमला त्रिवेणी शंकर आदि लेखिकाओं की रचनाएँ इसका जीवन्त उदाहरण हैं। इनकी रचनाओं में दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ, वेश्या जीवन की त्रासदी, नवजागरण से जुड़ी हुई नारी की स्वतंत्र चेतना शक्ति की पहचान तथा सामाजिक परिस्थितियों से आबद्ध नारी के जीवन के यथार्थ चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। इस काल की नारी मानसिक एवं सामाजिक स्थिति में उतना स्वतंत्र नहीं थी। महिला लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं के ज़रिए इनके तमाम अन्तर्द्वन्द्वों को प्रस्तुत किया है। प्रारंभकाल से ही नारियों के ऊपर पडनेवाले सामाजिक दबाव का तथा उनकी परिस्थिति जन्य विवशता को बडी तीव्रता से अभिव्यक्ति देने का प्रयास हुआ है। इस स्थिति को अभिव्यक्ति देने केलिए उन्होंने पारिवारिक जीवन के विशिष्ट सम्बन्धों एवं संघर्षों का चयन किया।

बंगमहिला (श्रीमति राजेन्द्रबाला घोष) हिन्दी की पहली कथा लेखिका हैं। शुरू शुरू में उन्होंने बंगला में कहानियाँ लिखीं, फिर हिन्दी में खुद उनका अनुवाद किया। बाद में हिन्दी में मौलिक रचनाएँ लिखना शुरू किया। उनमें 'दुलाई वाली' अधिक चर्चित है, जो सरस्वती पत्रिका में सन् 1907 को प्रकाशित हुई। स्थानीय रंगत, यथार्थ चित्रण और पात्रानुकूल भाषा की दृष्टि से यह कहानी महत्वपूर्ण है। 'कुसुम संग्रह' उनका एकमात्र कहानी संग्रह है।

बंग महिला की रचनाओं में सामाजिक परिस्थिति को विशिष्ट भावात्मक संवेदना के साथ जोडने का प्रयास किया गया। उनके लेखन में पहली बार दैनिक जीवन के साधारण प्रसंगों का शब्दांकन हुआ।[1]

स्वर्णकुमारी देवी साहित्यकार के साथ स्वतंत्रता सेनानी भी थीं। वे पहली महिला उपन्यासकार और पहली सफल महिला पत्रकार एवं सम्पादक के रूप में बहुत मशहूर हैं। सन् 1876 में प्रकाशित 'दीप निर्वाण' को राष्ट्रीय चेतना का एक अच्छा उपन्यास माना जाता है। सन् 1877 में 'बीमार राजा', सन् 1879 में 'मालती' और 'घिन्न कुसुम' आदी की रचना की। इसके बाद 'हुगलीर' 'ईमाना बाडा' 'विद्रोह' 'फुलेरमाला' की रचना की। इन ऐतिहासिक उपन्यासों के बाद उस समय की सामाजिक स्थितियों को लेकर सन् 1892 में उनका एक सामाजिक उपन्यास 'स्नेह लता' प्रकाशित हुआ। इसे उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है। 'काहे के' (किस को), 'स्वप्नवाणी' 'मिलन रात्री' जैसे उपन्यास इसके बाद प्रकाशित हुए पर 'स्नेहलता' जैसी ख्याति इन उपन्यासों से उन्हें नहीं मिली।

बंग महिला की 'दुलाई वाली' के साथ हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों की जो सशक्त परम्परा प्रारम्भ हुई थी, उषादेवी मित्रा उस श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। प्रेमचन्द युगीन महिला कथाकारों में अग्रणी उषादेवी की रचनाओं पर रवीन्द्रनाथ ठाकूर और बंगला साहित्य का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उषाजी की रचनाओं की पृष्ठभूमि संगीत शास्त्र है। उनकी पहली कहानी 'मातृत्व' हंस में प्रकाशित हुई। कहानी के

---

1. साहित्य अमृत जनवरी 2003

अलावा उन्होंने कई उपन्यास भी लिखे हैं। 'वचन का मोल' 'पिया' 'जीवन की मुस्कान' 'पथचारी' 'सोहिनी, 'नष्टनीड', 'सम्मोहित' आदि उनके उपन्यास हैं। 'रात की रानी' 'नीम चमेली' 'महावर' 'आँधी के छन्द' 'संध्यापूर्वी' 'मेघमल्हार' 'रागिनी' आदि उनके कहानी संग्रह हैं। उषादेवी मित्रा ने दरअसल अपनी कहानियों और उपन्यासों में नारी जीवन के विविध पक्षों को अपने ही नज़रिए से देखा और उन्हें अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त भी किया।

कमलादेवी चौधरी उषादेवी मित्रा की समकालीना हैं। यथार्थवादी लेखिका होने पर भी उनकी रचनाओं में आदर्शवाद का पुट देखने को मिलता है। सन् 1939 में रचित 'पिकनिक' '1946 में 'यात्रा' सन् 1954 में 'उन्माद', सन् 1957 में 'प्रसादी कमण्डल' आदि उनके कहानी संकलन हैं।

हिन्दी की मशहूर लेखिका सुभद्राकुमारी चौहान भी अपने समय की चर्चित लेखिका हैं। इस कवयित्री ने अपनी कहानियों में जीवन के कई मुद्दे प्रस्तुत किये। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया था। 'खूब लडी मरदानी' वह तो झांसीवाली रानी थी' कविता से अमर हो गयी सुभद्राकुमारी चौहान स्वयं भी वैसी ही मर्दानी थी, जिन्होंने न केवल वीरोचित गीत लिख-लिखकर स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरणा दी, बल्कि स्वयं भी आगे बढ़कर स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लिया। इनके प्रमुख दो कहानी संग्रह हैं 'बिखरे मोत्ती' और 'उन्मादिनी'। नारी हृदय की कोमलता और उसके मार्मिक भाव पक्षों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति इनकी रचनाओं की विशेषता है।

चन्द्रकिरण यथार्थवादी लेखिका रही। समाज के सभी वर्गों की विविधमुखी पारिवारिक समस्याओं एवं मनोवृत्तियों को अभिव्यक्त करने

का प्रयत्न उन्होंने किया। चन्द्रकिरण ने नारी-जीवन की अनेक उलझनों एवं समस्याओं, तथा नारी की विवशता, पतियों की उपेक्षा; सास-ननदों का अत्याचार अनचाही सन्तानोत्पत्ति आदि विषयों पर चर्चा की। 'चन्दन चांदनी' 'वंचिता' 'काला कानून' तथा 'काला देवता' उनके प्रमुख उपन्यास हैं। सौनरक्सा हिन्दी की पहली उपन्यास लेखिका हैं जिन्होंने मध्यवर्गीय परिवेश में आधुनिक शिक्षा प्राप्त करती लडकियों के विवाह, पारिवारिक जीवन में समंजन और जीविकोपार्जन की समस्याओं का चित्रण किया है।[1]

सुमित्रा कुमारी सिन्हा, कान्ति वर्मा, भगिनी निवेदिता, सरला देवी चौधरी, कमला देवी चट्टोपाध्याय, दुर्गाभाई, देशमुख, सुशीला दीदी, प्रकाशवती पाल, रामेश्वरी नेहरु, ललिता विद्यापति कोकिल, ऊर्मिला देवी शास्त्री आदि कुछ अन्य महिला कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कलम से हिन्दी कथा साहित्य की श्रीवृद्धी की है।

समकालीन महिला कथाकार

समकालीन दौर खास तौर से बीसवीं सदी के आखिरी दो दशकों को महिला रचनाधर्मिता के विस्फोट का समय कहा जा सकता है। इस दौरान महिलाओं द्वारा लिखे गये कई उपन्यास 'कालजयी' कहने योग्य हैं। समकालीन महिला रचनाकारों ने पारिवारिक पृष्ठभूमि को छोड़कर आक्रामक भाव से स्त्री की अस्मिता, स्त्री की पहचान, स्त्री की शक्ति, स्त्री की लड़ाई तथा स्त्री से जुड़े हुए तमाम सवालों को लेकर साहित्य सृजन शुरू किया। तब से पुरुष लेखन के समान महिला लेखन भी समाज में असर डालने

---

1 गोपालराय हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ. 278

लगा। इस समय की महिला लेखिकाओं ने स्त्रियों की भीतरी और बाहरी तकलीफों की सच्ची अभिव्यक्ती दी। समकालीन महिला रचनाओं ने केवल एक 'टाइप' न होकर समाज के सभी सन्दर्भों का उद्घाटन करके अपने समय की पुनर्रचना की। इसमें स्त्री अस्मिता को एक नई पहचान देने के साथ-साथ संवेदना और अनुभव के दायरे को भी बढ़ाया गया। समकालीन लेखिकाओं ने अपने दर्द और मुश्किलों के बारे में खुद लिखा और पूरी तलखी और गुस्से के साथ लिखा। इस काल में स्त्री का एक नया संघर्षशील रूप स्त्री-लेखन में उभर आया। इन उपन्यासकारों द्वारा हिन्दी कथा क्षेत्र में कुछ हमेशा ताज़ा रहनेवाले महीन और नफासत भरे चरित्रों का जन्म हुआ। इस प्रकार की लेखिकाओं की एक लम्बी परम्परा है। इनमें प्रमुख हैं, 'मन्नू भण्डारी' 'उषा प्रियंवदा' 'मेहरुन्नीसा परवेज़' 'कृष्णा सोबती' 'शशिप्रभा शास्त्री' 'रजनी पनिक्कर' 'मंजुल भगत' 'चन्द्रकान्ता' 'ममता कालिया' 'मृदुला गार्ग' 'मृणाल पाण्डे' 'सुधा अरोडा' 'मणिका मोहिनी' 'कृष्णा अग्निहोत्री' 'दीप्ती खण्डेलवाल' 'सूर्यबाला' 'प्रभा खेतान' 'कुसुम अंसल' 'राजी सेठ' 'मालती जोशी' 'प्रतिभा वर्मा', 'अरुणा सीतेश' 'विमला वर्मा' 'अचला शर्मा' 'नमिता पाण्डे' 'चित्रा मुद्गल' 'शिवानी' 'मणिका मोहिनी' 'निरूपमा सेवती' 'सुनीता जैन' 'सिम्मी हर्षिता' आदि का नाम उल्लेखनीय है।(1)

आगे इन लेखिकाओं की प्रमुख रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा।

---

1 दस्तावेज़ 89 अक्टूबर-दिसंबर पृ. 43

उषा प्रियंवदा

हिन्दी की समकालीन महिला कथाकारों में उषा प्रियंवदा की खास पहचान है। उनके उपन्यासों में 'नयी कविता' के दौर की आधुनिकता के तमाम तत्व जैसे अकेलापन, संत्रास, ऊब, घुटन, अजनबीपन आदि विद्यमान हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में पाश्चात्य एवं भारतीय परिवेश की स्थितियाँ प्रस्तुत की हैं। परिवार के प्रति ज़िम्मेदार नारी के जीवन को इतनी सफलता से और किसी लेखिका ने प्रस्तुत नहीं किया। आधुनिक नारी जीवन की विडम्बनाओं की तल्ख़ अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में पायी जाती है। 'पचपन खम्भें लाल दीवारें' 'रुकोगी नहीं राधिका' 'शेष यात्रा' 'अन्तर्वंशी' आदि उनके उपन्यास हैं।

'पचपन खम्भे लाल दीवारें' (1963) उषा प्रियंवदा का पहला उपन्यास है। इसमें एक नौकरी पेशा नारी की मनोव्यथा का मार्मिक चित्रण किया गया है। इसमें सुषमा नामक युवती की दर्दभरी संघर्षात्मक कहानी प्रस्तुत है। पारिवारिक जिम्मेंदारियों के कारण वह अपनी इच्छाओं का गला घोंट देती है। इसमें सामाजिक, आर्थिक विषमताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा की मार्मिक अभिव्यक्ति भी है। उपन्यास के 'पचपन खम्भे और लाल दीवारें' प्रतीक है जो पात्र की मानसिक स्थिति का परिचायक है। आधुनिक नारी जीवन विडम्बनाओं से भरा पड़ा है। इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भारतीय आधुनिक नारी के नये जीवन सन्दर्भों को गहरी अनुभूति और प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।[1]

---

1. गोपालराय हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ. 277

'रुकोगी नही राधिका' (1968) तो उपन्यासकार के रूप में उषाप्रियंवदा की पहचान निर्मित करनेवाली रचना है। यह आधुनिक नारी की जटिल मानसिकता, भटकाव, पीड़ा और विद्रोह को अंकित करता है। प्रस्तुत उपन्यास में परिवार के बीच अपना स्वतंत्र अस्तित्व खोजकर जीवन भर एकाकी जीवन बिताने के निश्चय पर एकाकीपन का दुख सहनेवाली नारी का चित्रण अत्यन्त सहज रूप में किया गया है। राधिका एक ज़िद्दी नारी है। वह अपने ऊपर किसी के भी दबाव को पसन्द नहीं करती। राधिका के इस चरित्र को लेखिका ने अत्यधिक सफलता के साथ चित्रित किया है। राधिका पुरुष के साथ जीना चाहती है, उसके सम्पर्क में अनेक पुरुष आते भी हैं, लेकिन किसी को भी वह चुन नहीं पाती। क्योंकि वह अपनी प्रेमी में एक पति का प्रेम नहीं चाहती, बल्कि एक पिता का वात्सल्य चाहती है। आखिर ऐसा एक व्यक्ति उसको मिलता है जो लड़कियों को फँसाने में कोई भी वेश धारण करने में नहीं चूकता। आखिर राधिका अपनी भूल समझकर लौट आती है। इसमें अनेक बाधाओं के बीच निरन्तर मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो रही आधुनिक नारी की कथा कहना ही उषा प्रियंवदा का लक्ष्य है।[(1)]

'शेषयात्रा' (1984) भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय दिखाई देता है। इसमें पश्चिमी दाम्पत्य जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। अनु के जीवन के द्वारा लेखिका यह स्थापित करती है कि नारी के जीवन का अर्थ पीड़ित और आश्रित रहने में नहीं है। पाश्चात्य जीवन को अपनाने से मानव मन से रिश्तों का लगाव और ममता नष्ट हो जाते हैं।

---

1 गोपालराय हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ. 278

जिन्दगी केवल अभिनय मात्र रह जाती है। शादी के चार पाँच साल तक अनु को अपने पति से प्रेम और खुशियाँ मिलती रहीं, उसके बाद सब कुछ नष्ट हो गया और वह परित्यक्ता भी हो गयी। उपन्यास का केंद्र पात्र अनु के आन्तरिक और बाह्‌य संघर्ष को गहरी आत्मीयता और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करने में उषाजी को बड़ी सफलता मिली है।

उषा प्रियंवदा के अब तक के अन्तिम उपन्यास 'अन्तर्वंशी' (2000) में कथाकार ने अमेरिका में जा बसे शिवेशा, बाना और राहुल के आपसी सम्बन्ध की कहानी बड़ी ही स्वाभाविकता के साथ प्रस्तुत की है। प्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष का अनिवार्य हिस्सा व्यक्तिगत सम्बन्धों के बदलते जाना है। बनारस के निम्न मध्यवर्गीय परिवार की बाँसुरी, निजी आकांक्षाओं और स्थितियों के द्वन्द्व से गुज़रती हुई 'वनश्री' और फिर 'वाना' के रूप में रूपान्तरण की जिस तेज़ प्रक्रिया से गुज़रती है उसका उपन्यास में बहुत अच्छा अंकन किया गया है।

उपन्यासकार के अलावा उषा प्रियंवदा नयी कहानी के दौर की बहुचर्चित कहानीकार भी हैं। 'ज़िन्दगी और गुलाब के फूल' 'फिर वसन्त आया' 'एक कोई दूसरा' 'कितना बड़ा झूठ' 'मेरी प्रिय कहानियाँ' आदि उनके प्रमुख कहानी संकलन हैं।

'एक कोई दूसरा' की सभी कहानियाँ प्रेम और विवाह सम्बन्धी हैं। इनमें अधिकांश कहानियाँ विवाहेतर सम्बन्धों की हैं। 'एक कोई दूसरा' 'झूठा दर्पण' 'सागर पार का संगीत' 'टूटे हुए' आदि इसका उदाहरण है। लेखिका ने अपनी रचनाओं में यह व्यक्त किया है कि विवाह की पुरानी पवित्रता नष्ट हो चुकी है। समाज में अविवाहित जीवन और स्त्री-पुरुष का

बिना शादि किये एक साथ रहना, पत्नी के अलावा अन्य सम्बन्धों में पडना आदि एक 'फैशन' बन चुका है, जिससे नयी पीढी गुमराह हो जाती है।

'कितना बडा झूठ' में भोगे हुए यथार्थ का चित्रण है। 'सम्बन्ध', 'प्रतिध्वनियाँ' 'कितना बडा झूठ' 'ट्रिप' 'नींद' 'सुरंग' 'स्वीकृति' 'मछलियाँ' आदि कहानियाँ इसमें संकलित हैं। अनैतिक सम्बन्ध, स्वतंत्र प्रकृतिवाली नारी, विवाहित होने पर भी अन्य पुरुषों के साथ प्रेम करनेवाली नारी, गलती करने पर भी पत्नी से क्षमा करनेवाला पति आदि उनके पात्रों के विविध रूप हैं।

'मेरी प्रिय कहानियाँ' उषाजी की महत्वपूर्ण कहानियों का संकलन है। इसमें 'वापसी' कहानी अधिक चर्चित है। बिखरते संयुक्त परिवार की पृष्ठभूमि में टूटते आत्मीय सम्बन्ध को कहानी में प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में पुरानी और नयी पीढी के बीच का संघर्ष भी चित्रित है। पति-पत्नी, बाप-बेटे (बेटी) के आपसी रिश्तों में पड़नेवाली दरारें 'वापसी' कहानी में वर्णित हैं।

आधुनिक हिन्दी कहानी को ज़िन्दगी के अनेकानेक सन्दर्भों से जोडने और उसे नया मुहावरा देनेवाले कहानीकारों में उषा प्रियंवदा का उल्लेखनीय स्थान है।

मन्नू भण्डारी

मन्नू भण्डारी की रचनाएँ हिन्दी साहित्य की सर्वोच्य उपलब्धि हैं। उन्होंने अपनी कृतियों द्वारा हिन्दी कहानी को पारम्परिक चौखटे से निकालकर वैचारिक पृष्ठभूमि पर ला दिया और जीवन की धड़कनों को अपनी

रचनाओं में अभिव्यक्त किया।[1] नारी हृदय की अनकही सच्चाइयों को ईमानदारी से उरेहने का प्रयास उन्होंने किया हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उभरी नई ज़िन्दगी के सभी पहलुओं तथा नए-पुराने जीवन मूल्यों के संघर्ष से उपजी मानसिकता को भी उन्होंने अपनी रचनाओं में अंकित किया। उन्होंने आधुनिक पति-पत्नी की मानसिकता को वैयक्तिक चेतना के आधार पर अनुप्राणित किया है। उनकी रचनाओं में अधिक सजीवता, जीवन की निकटता, लक्ष्यपूर्ण तथा भोगे हुए यथार्थ है। प्रायः मन्नूजी ने प्रेम, विवाह, तलाक आदि को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, तथा नैतिक जीवन का चित्रण भी उन्होंने सामाजिक सन्दर्भों में किया है। आधुनिकता पर उन्होंने व्यंग्य किया है। 'आपका बंटी' 'कलवा', 'महाभोज' 'एक इंच मुस्कान', 'स्वामी' आदि आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'मैं हार गई' 'तीन निगाहों की तस्वीर' 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब' 'त्रिशंकु', 'श्रेष्ठ कहानियाँ' 'मेरी प्रिय कहानियाँ' 'आँखों देखा झूठ' 'सप्तपर्णा' आदि उनके कहानी संकलन हैं।

'आपका बंटी' में लेखिका ने बंटी नामक छोटे बालक का चरित्र मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया है। बंटी का जीवन उसके माता-पिता का आपसी झगड़ा और तलाक से दुखमय है। बंटी अपने माँ-बाप को चाहता है। जीवन की संघर्षपूर्ण घटनाओं ने उसे एक जिद्दी चरित्रवाला बना दिया। माँ-बाप के बिखरे दाम्पत्य सम्बन्धों के बीच वह स्वयं अकेलापन, अजनबीपन, और बेगानापन, महसूस करने लगा। आधुनिक जीवन में पति-पत्नियों का अहं और सम्बन्धों की टूटन आदि की मर्मस्पर्शीअभिव्यक्ति

---

1 डॉ. शिवशंकर पाण्डेय हिन्दी कहानी का वर्तमान चिन्तन सन्दर्भ पृ. ८7

इस उपन्यास में हुई हैं। 'आपका बंटी' में मन्नू भण्डारी ने तलाक शुदा पति-पत्नी और उसकी शिशु सन्तान को केन्द्र में रखकर उसके चारों ओर की स्थितियों का ऐसा जाल बुना है तथा उसकी वास्तविकता का ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है जो संवेदनशील और विचारवान पाठक को झकझोर देता है।[1]

'एक इंच मुस्कान' नामक उपन्यास की रचना मन्नूजी ने अपनी पति राजेन्द्र यादव से मिलकर सहलेखन के तौर पर की। इस उपन्यास के पुरुष पात्रों का रचना राजेन्द्र यादव ने किया और नारी-पात्रों से सम्बन्धित अंश मन्नूजी ने पूरा किया। यह उपन्यास लेखिका की प्रखर रचना प्रक्रिया की क्षमता का परिचायक है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र अमर एक प्रतिभा सम्पन्न लेखक है जो पत्नी और प्रेमिका के मध्य अन्तर्संघर्ष से ग्रस्त होकर एकाकी जीवन बिताने को बाध्य हो जाता है।

'महाभोज' राजनीतिक उपन्यास है। आज के युग में चुनाव राजनीतिक सरगर्मी का सबसे बडा केन्द्रबिन्दु है। इसे आधार बनाकर मानवीय त्रासदी, करुणा और पीडा के यथार्थ को अंकित करने की सफल कोशिश 'महाभोज' में की है। राजनीतिज्ञों के महत् औदात्य और गाँभीर्य के खोल के भीतर झंकती वास्तविकता की घिनौनी तस्वीर को उन्होंने बड़ी सूक्ष्मता से पकड़ा है। 'महाभोज' इस प्रकार वर्तमान राजनीति के दूषित प्रभाव को व्यापकता से उजागर करता है। इसलिए यह गाँव-बोध का उपन्यास न होकर राजनीतिक बोध का उपन्यास बन गया है।[2]

---

1. गोपालराय हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ. 341
2. डॉ. उषा यादव हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना पृ. 71

मन्नूजी का 'कलवा' एक बाल उपन्यास है। इसमें लेखिका ने एक श्रेष्ठ अध्यापक और श्रेष्ठ विद्यार्थी का चित्रण किया है। आजकल शिक्षा धन और मान के आधार पर चलती है, योग्यता पर नहीं। श्रेष्ठ गुरु वह होता है जो अपने भविष्य की चिन्ता के बिना शिष्यों के हित केलिए-कार्य करता है। इस उपन्यास का कलवा एक आदर्श विद्यार्थी है।

'स्वामी' उपन्यास बंगला कहानीकार शरदचन्द्र की 'स्वामी' का हिन्दी पुनर्लेखन है। पात्रों और स्थितियों की परिकल्पना में दो पीढ़ियों की मानसिकता और दृष्टि का अन्तर होने के कारण रचना में परिवर्तन आ जाना स्वाभाविक है। मन्नूजी ने लिखा है- 'शरत्चंद्र' की कहानी आत्मधिक्कार और पापबोध की कहानी थी, मैने उसे एक सहज मानवीय अन्तर्द्वन्द्व की कहानी का रूप दिया है।[1]

मन्नूजी के कहानी-संग्रह 'मेरी प्रिय कहानियाँ' में उनकी दस कहानियाँ संकलित हैं। इसमें लेखकीय संवेदना व्यक्तिगत अनुभवों को लाँघकर वास्तविकता की कठोर भूमि पर उभरी हैं। इसमें कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों में भोगी जिन्दगी को प्रामाणिकता के साथ अंकित किया गया है। नारी जीवन की महत्वपूर्ण स्थितियों को 'अकेली' 'मज़बूरी' 'बन्द दराजों के साथ' 'एखने आशा नाई' 'यही सच है' 'शायद' आदि कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। इसके सभी पात्र अपने अतीत से छुटकारा पाने केलिए तड़पते हैं। 'यही सच है' 'आते-जाते ययावार' आदि कहानियों में अस्तित्ववादी दर्शन के क्षणवाद की व्याख्या है। मशीनी-ज़िन्दगी का अभिशाप 'खोटे सिक्के' और 'शायद' कहानियों में व्यंजित

---

1. मन्नू भण्डारी स्वामी भूमिका

हुआ है। इस कहानी संग्रह में नगर एवं गाँवों की जीती-जागती मध्यवर्गीय जिन्दगी के बहुविध रूपों की अभिव्यक्त की है।[1]

'मैं हार गयी' 'यही सच है' 'एक प्लेट सैलाब' 'तीन निगाहों की तस्वीर' 'त्रिशंकु' आदि उनके अन्य कहानी संकलन हैं।

कृष्णा सोबती

समकालीन दौर में भी अपनी सक्रिय रचनाधर्मिता के कारण कृष्णा सोबती विशेष चर्चित हैं। वे व्यक्तिपरक मूल्यों की लेखिका हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रेम, वासना, विवाह, वात्सल्य, ममता आदि की अभिव्यक्ति सामाजिक सन्दर्भ में किया। उन्होंने स्त्री पुरुष के यौन-आकर्षण, तथा कामवासना, औद्योगिक तथा दफ्तरों में होनेवाला नारी शोषण, पारिवारिक सम्बन्धों का विघटन आदि विषयों पर अधिक ज़ोर दिया। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी जीवन का सही चित्र प्रस्तुत किया। उनकी रचना धर्मिता के मूल तत्व हैं लेखन के प्रति सम्पूर्ण निष्ठा और आत्मीयता। 'डार से बिछुडी' 'मित्रो मरजानी' 'सूरजमुखी अन्धेरे के' 'ज़िन्दगीनामा' 'समयसरगम' (उपन्यास) 'यारों के यार' 'तिन पहाड' (लघु उपन्यास) 'बादलों के घेरे', 'हम हशमत' (कहानी संग्रह) आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

'डार से बिछुडी' (1958) कृष्णाजी का पहला उपन्यास है। इसमें परम्पराओं और रूढियों से जकडी एक नारी की कथा है। उन्होंने इस उपन्यास में नारी मन की करुणा, कोमल भावनाओं, आशाओं एवं आकांक्षाओं और उनके नष्ट हो जाने पर उसके हृदय में उभरते हाहाकार की मर्मस्पर्शी

---

1. डॉ. शिवशंकर पाण्डेय हिन्दी कहानी वर्तमान चिन्तन और सन्दर्भ पृ. 87

अभिव्यक्ति की है। 'पाशो' इसका मुख्य पात्र है। माँ के अन्तर्जातीय विवाह होने के कारण उनके जीवन में विसंगतियों का आना शुरू हुआ। अधेड़ उम्र के आदमी से विवाह करके वह छोटी उम्र में विधवा बन गयी। ससुराल में वह अपने जेठ से अपमानित होती है। फिर वह किसी को बेची जाती है। उधर वह तीन भाइयों की पत्नी बन जाती है। रण में तीनों भाईयों के मर जाने पर अपनी माँ के पास लौट आती है। पाशो का जीवन इसप्रकार संघर्षपूर्ण और दर्दीले अनुभवों से भरा था। इसमें नारी की निसंगता की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है।

'मित्रो मरजानी' में नारी को बिलकुल अलग ढंग से चित्रित किया गया है। इसमें 'मित्रो' नामक नारी के जीवन-संघर्ष एवं विद्रोह की कथा है। मित्रो का चरित्र एक विवादास्पद नारी चरित्र के रूप में हिन्दी साहित्य में अधिक चर्चित है। वह एक साथ ममता और प्यार की मूर्ती और अविरल बहती वासना की सरिता भी थी। मित्रो के माध्यम से लेखिका ने अब तक के सभी बिम्बों और रूढियों को चुनौती दी है। उसमें एक पूर्ण नारी थी, जो अपनी अतृप्त वासना के कारण निन्दनीय है। इस उपन्यास में मित्रो नामक पात्र से नारी जीवन की दबी हुई वासनाओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है।

'सूरजमुखी अन्धेरे के' में सत्य का निरूपण किया गया है। सत्य कभी नहीं मरता। उपन्यास एक भोली-लडकी 'रत्ती' के जीवन-संघर्ष का दस्तावेज़ है। बचपन से ही उसका जीवन दुर्घटनाओं से भरा था। यह केवल एक स्त्री की कथा नहीं बल्कि तमाम नारी की मानसिकता को उकेरनेवाली कथा है।

'यारों के यार' और 'तिन पहाड' दो उपन्यासों का संकलन है। ये उपन्यास लेखिका की रचना क्षमता के प्रमाण हैं। दोनों उपन्यासों में दफ्तरी माहौल का वर्णन किया गया है। दफ्तरी जिन्दगी के अन्दर की हल-चल, लेन-देन, ठेके, कमीशन, रिश्वत आदि पर उपन्यास में तीखा व्यंग्य भी किया गया है। प्राकृतिक एवं आलंकारिक शैली में लिखा गया 'तिन पहाड' में प्राकृतिक सौन्दर्य का पूर्ण चित्र खींचा गया है।

'दिलोदानिश' शीर्षक उपन्यास वकील कृपानारायण के जीवन के विभिन्न संघर्षों से होकर घर, परिवार, समाज में जीने केलिए संघर्षरत आम आदमी के जीवन को प्रस्तुत करता है। उपन्यास उन्नीसवीं सदी के दिल्ली के रईसों के जीवन का रचनात्मक प्रतिबिम्ब ही नहीं यह भारतीय नारी की व्यथा कथा भी है, जो इतिहास के हर दौर में छली और ठगी है चाहे वह घर की मालिकिन रही हो, चाहे दिल की मालिका।[1]

'समय सरगम' उपन्यास में कृष्णाजी ने बूढापे का जीवन प्रस्तुत किया है। इसमें आरण्या और ईशान नामक दो व्यक्तियों के जीवन के अंतिम अध्यायों की कथा है। जीवन के खेल में अकेले छूट जाने पर भी वे अकेले नहीं हो जाते क्योंकि स्मृति की छायाएँ एकदम उनके साथ हैं। आरंभ से अन्त तक इस उपन्यास में एक खालीपन का सन्नाटा व्याप्त रहता है। पूरा उपन्यास जीवन को जीने पहचानने और स्वीकारने की कहानी है।[2]

---

1 डॉ. वासुदेव शर्मा साठोत्तर हिन्दी कहानी मूल्यों की तलाश पृ. 113
2. रामचन्द्र तिवारी हिन्दी का गद्य साहित्य पृ. 258

'बादलों के घेरे' कृष्णाजी की प्रारंभिक कहानियों का संकलन है। इसमें लेखिका ने मोहभंग की स्थिति को उजागर किया है। 'बहन' नामक कहानी, तीन बहनों के आपसी प्रेम की कथा है। 'दादी अम्मा' कहानी में वृद्धावस्था के मनोभावों को अभिव्यक्ति दी गई है। 'गुलाब जल गडेरिया' में 'धन्नो' की गरीबी और बेबसी का चित्रण है। 'टीलों ही टीलों' में बच्चों के खेल का चित्र है। 'दोहरी साँझ' 'अभी उस दिन ही तो' 'डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा' 'जिगरा की बात' 'खम्भाघणी अन्नदाता' 'सिक्का बदल गया' 'आज़ादी शम्मो जान की' 'कामदार भीखमलाल' 'पहाडों के साये तले' 'न गुल था न चमन था' 'एक दिन' 'नफीसा' 'मेरी माँ कहाँ' 'दो बाहें' आदि इस संग्रह की अन्य कहानियाँ हैं।

मेहरुन्नीसा परवेज़

भारतीय स्त्री की दुर्दशा, दुःख-दर्द, अधिकार कर्तव्य और जागृति को केन्द्र में रखकर रचना करनेवाली लेखिकाओं में मेहरुन्नीसा परवेज़ का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जीवन की समग्रता को प्रस्तुत किया है। समकालीन सामाजिक व्यवस्था से मुक्ति पाने की छटपटाहट उनकी रचनाओं का आधार है। मुस्लिम स्त्रियों की दबी और घुटन भरी ज़िन्दगी और उनके दुःख-दर्द को परवेज़ जी ने अपनी रचनाओं में वाणी दी है। शोषित-पीड़ित नारी वर्ग की हर समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। 'आँखों की दहलीज' 'उसका घर', 'कोरजा' 'पत्थरवाली गली' आदि उनके उपन्यास हैं और 'आदम और हव्वा' 'बूँद का हक' 'अन्तिम चढाई' आदि उनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं।

'आँखों की दहलीज' में लेखिका ने वासना रहित सात्विक प्रेमी 'शमीम' के चरित्र को सहजता से चित्रित किया है। शमीम एक अध्यापक है। वह अपनी पत्नी पर एकनिष्ठ प्यार करता है। माँ बनने की क्षमता पत्नी में नहीं है, यह जानकर भी उसके मन में तनिक भी अतृप्ति का भाव नहीं होता। वह पहले से अधिक पत्नी को प्यार करने लगता। और हमेशा खुशी रखने केलिए प्रयत्न करता है। शमीम एक आदर्श पति है, उसका प्रेम आत्मीय है और वासना-मुक्त है। पत्नी के माइके जाने से उसे अपना घर सूना-सूना लगता है। इस उपन्यास में लेखिका ने प्रेम और पारिवारिक रिश्तों की चर्चा की है।[(1)]

'उसका घर' में नर-नारी के प्रेम सम्बन्धी उलझनों और समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है। अनमेल विवाह के कारण समाज में नारी की वर्तमान स्थिति को अभिव्यक्त करने का प्रयास लेखिका ने किया है। यह स्थिति सदा दुखदायक है। पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन की सुखमयता दोनों के आपसी प्रेम से उत्पन्न होती है। अन्यथा एक दूसरे को केवल अपने सुख-सुविधा की चीज़ मानने से उसका परिणाम तलाक में होता है। ऐलमा और रेश्मा नामक दो स्त्री पात्रों के द्वारा लेखिका ने इस स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

'कोरजा' में मुस्लिम जीवन और संस्कृति को आधार बनाया गया है। इसमें पाश्चात्य दृष्टिकोण से सैक्स की अभिव्यक्ति, भारतीय संस्कृति से भिन्न होकर मानव सम्बन्धों के लुप्त हो जाने का चित्र आदि भी प्रस्तुत है। कोरजा का आशय अनाज की उन बालियों से है, जो फसल काटने के

---

1 रामचन्द्र तिवारी हिन्दी का गद्य साहित्य पृ 258

बाद वहाँ पड़ी रह जाती है और जिन्हें गरीब लोग बटोरकर ले जा सकता है। सैक्स का नया रूप भी उपन्यास में चित्रित है। कहीं बाप की जवान बेटी पर नज़र है कहीं माँ-बेटी दोनों एक ही पुरुष से जुड़ी है और कहीं आर्थिक मज़बूरियों के कारण नारी देह का खुला क्रय-विक्रय है। पूरे उपन्यास में नारी जीवन की त्रासदी व्यंजित है।

मेहरुन्नीसा के उपन्यास 'अकेले पलास' में दाम्पत्य जीवन में आये ठंडेपन की समस्या चित्रित है। तहमीना और जमशदे पति-पत्नी है। एक पुत्र की माँ होने पर भी तहमीना दाम्पत्य जीवन में आए ठंडेपन के कारण 'तुषार' के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है। पर वहाँ भी पुरुष का छद्म व्यवहार उसे अकेला पलाश बनकर अपने लिए ज़िन्दा रहने का निर्णय करवा देता है।

मेहरुन्नीसा के अगले उपन्यास 'पत्थरवाली गली' में भी मुस्लिम जीवन को आधार बनाया गया है। जेबा नामक चूड़ीवाली की कहानी इसमें पेश है। इस उपन्यास में भी नारी के प्रति पुरुष की भोगवादी दृष्टि व्यंजित है। इस प्रकार मेहरुन्नीसा परवेज़ के तमाम उपन्यासों में मुस्लिम समाज में व्याप्त अनाचार, दिनोंदिन टूटते जीवन मूल्य और आर्थिक विपन्नता का सजीव चित्रण है। नारी के पीड़ा-भरे जीवन के प्रति कथाकार को गहरी सहानुभूति है। नारी की व्यथा को उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में नाना दृष्टियों से देखकर प्रस्तुत किया है। कहानी कहने की कला और उपन्यास की मूल संवेदना को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति दने में भी लेखिका बड़ी सफल हुई है।[1]

---

1. उषा यादव हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना पृ. ८६

'अन्तिम चढाई' मेहरुन्नीसा का चर्चित कहानी संकलन है। इस संग्रह की अधिकांश कहानियों में नारी की विविध समस्याएँ प्रस्तुत हैं। 'अन्तिम चढाई' 'अयोध्या से वापसी' 'बूँद का हक' 'गुरु मन्त्र' 'अपनी ज़मीन', 'पत्थरवाली गली' और 'ज़माना बदल गया है' आदि इसमें संकलित कहानियाँ हैं।

'आदम और हव्वा' 'बूँद का हक' आदि उनके अन्य कहानी-संग्रह हैं। इनमें संकलित 'शनाख्त' कहानी में माँ और बेटी के जीवन को आधार बनाया गया है। 'अपने अपने दायरे' में पति-पत्नी के अलगाव को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

शशिप्रभा शास्त्री

शशिप्रभा शास्त्री के कथा साहित्य में रोमांटिक प्रेम के विविध रूपों का निरूपण मिलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में मुख्य रूप से नारी की प्रेम सम्बन्धी समस्याओं को प्रस्तुत किया है। दाम्पत्य जीवन के दोहरे-चेहरे, पीढियों के बीच के अन्तर के कारण उत्पन्न विभिन्न समस्याएँ आदि को विषय बनाया गया है। 'धुली हुई शाम' 'दो कहानियों के बीच' 'जोड़ बाकी' 'अनुत्तरित' आदि उनके कहानी संग्रह हैं। 'सीढियाँ' 'क्योंकि' 'कर्करेखा' 'परसों के बाद' 'परछाइयों के पीछे' 'अमलतास' 'नावें' आदि उनके उपन्यास हैं। 'फूल और सपना' 'सुनहरा' 'गोफी के फूल' आदि उनकी बाल साहित्य कृतियाँ हैं।

'सीढियाँ' फ्लैश बैक शैली में लिखा गया एक सफल उपन्यास है। इसमें स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को नया आयाम दिया गया है। उपन्यास का मुख्य पात्र है मनीषी। उसके जीवन की निस्सहाय स्थिति और अन्तर्द्वन्द्व

इस उपन्यास का मुख्य विषय है। उसको जीने केलिए कई मौके मिलते हैं, लेकिन एक भी उसको स्वीकार्य नहीं रहा। मनीषा का आदर्श कुछ अलग है। वह ऐसे लोगों के सुख केलिए अपना जीवन अर्पण करती है जो उसके कुछ भी नहीं लगते। इससे उसको पीड़ा के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता।

'परछाइयों के पीछे' में पुरुष द्वारा प्रताड़ित और तिरस्कृत नारी की कथा है। इसके नारी पात्र अपने पति से इतने अपमानित और तिरस्कृत होने पर भी पारिवारिक रूढ़ियों के कारण तलाक भी नहीं ले सकते। इसलिए वह सब कुछ सहकर जीने को विवश हो जाती है। महिपाल अपनी पत्नी को केवल जूते समान देखता है। कामकाजी नारी होने पर भी सुमित्रा को अपने पति से मुक्ति नहीं मिलती। इसमें भारतीय नारी की मनोदशा और द्वन्द्वात्मक मनोवृत्ति को स्पष्ट किया गया है। पुरुष प्रधान समाज में नारी आत्मनिर्भर होने पर भी स्वतंत्र नहीं रह सकती।

'क्योंकि' उपन्यास में शशिप्रभा जी ने आदर्श विवाह सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त किये हैं। मध्यवर्गीय परिवार के दो नौकरीपेशा पति-पत्नी के जीवन को उपन्यास में रूपाकार दिया गया है। दीपक काफी खुले विचारों का व्यक्ति है। वह तयशुदा विवाह की अपेक्षा प्रेम विवाह को ज्यादा महत्व देता है। पत्नी के आभूषण प्रेम के कारण दीपक की सारी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। स्त्रियों की आभूषण प्रियता और आदर्श विवाह का समावेश करके इस उपन्यास की रचना की गयी है।

'कर्करेखा' भारतीय परिवेश को प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास है। इसमें नारी पुरुष के सम्बन्ध की वास्तविकता को उजागर किया गया है। दाम्पत्य सम्बन्ध में नारी द्वारा अनुभूत एकाकीपन का चित्रण है। शिक्षित

और बुद्धिजीवी होने के कारण नायक अनिन्ध अपने पर कोई अधिकार नहीं दिखाता। लेकिन पत्नी तनु पति की इस आदत्त पर दुःखी है। वह भारतीय आदर्श के अनुरूप सती होना चाहती है। वह पति के कुछ नियंत्रण और अधिकार में जीना चाहती है। पति उससे सामान्य पति के समान व्यवहार नहीं करता है।

'परसों के बाद' में मनोवैज्ञानिक धरातल पर बाल मन और वृद्ध मन का बहुरंगी चित्र खींचा गया है। इसमें भारतीय सत्ता और राजनीती पर व्यंग्य है। भारत में पढे लिखे लोगों और वैज्ञानिकों को पर्याप्त सम्मान नहीं मिलता। इसलिए शंकर अमेरिका चला जाता है। भारत में तो लोग अपने-देश में जन्मे वैज्ञानिकों और चिकित्सकों पर विश्वास न करके विदेशी वैज्ञानिकों और चिकित्सकों को खोजकर बाहर जाते हैं। इस बात पर लेखिका ने प्रकाश डाला है।

शशिप्रभा शास्त्री एक कहानिकार भी हैं। उनकी कहानियों का केन्द्रीय पात्र स्त्री है। 'धुली हुई शाम' 'दो कहानियों के बीच' 'जोड़ बाकी' 'अनुत्तरित' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। इसमें प्रेम और विवाह की समस्या, विवाहेतर सम्बन्धों की समस्या, माँ की विवशता, प्यार, ममता आदि की सही अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में मिलती है। उनकी कहानियों में नारियों की यौन और अतृप्ति समलैंगिक सम्बन्धों को भी विषय बनाया गया है। इस प्रकार शशिप्रभा शास्त्री ने नारी जीवन के सभी पहलुओं को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है।

रजनी पनिक्कर

भारतीय पारिवारिक जीवन की कहानियाँ लिखनेवाली लेखिकाओं में रजनी पनिक्कर की महत्वपूर्ण भूमिका है। उनकी अधिकांश रचनाएँ नौकरी पेशा नारी को आधार बनाकर लिखी गयी हैं। नारी अपने सुख-दुःख, जय-पराजय, सफलता-असफलता आदि केलिए स्वयं जिम्मेदार है। 'पानी की दीवार' 'जाड़े की धूप' 'महानगर की मीता' 'सोनाली दी' 'मोम के मोती' 'दूरियाँ' 'दो लड़कियाँ' 'एक लड़की के दो रूप' आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

'काली लड़की' में काली होने के कारण घर और समाज से उपेक्षा और घृणा की दृष्टि सहन करनेवाली एक लड़की की कथा है। इसलिए वह बहन के साथ रहती है। परस्त्रियों से सम्बन्ध जोड़नेवाले पति के कारण बहन भी उसे शंका की दृष्टि से देखती है। तब उसकी सारी आशाएँ मिट जाती हैं।

नौकरी पेशा नारी को केन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है 'मोम के मोती'। नौकरी पेशा नारी के जीवन में होनेवाले संघर्ष विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से इसमें प्रस्तुत हैं।

'पानी की दीवार' में रजनी पनिक्कर ने दो युवकों के जीवन सम्बन्धी आदर्शों के माध्यम से उनके पारिवारिक जीवन और दफ्तरीय एवं सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति दी है। 'महानगर की मीता' में 'मीता' नामक अठारह वर्ष की लड़की के जीवन में आनेवाली घटनाओं का वर्णन है। इसमें मीता अविवाहिता भी है। घर और बाहर से उसे चैन नहीं मिलती है। उसे फंसाने केलिए चारों ओर कामुक लोग मंडराते हैं।

'सोनाली दी' में दिल्ली के युवा मन के परिवर्तन तथा उसके विचार प्रस्तुत किया गया है। लेखिका मानती है कि दिल्ली के सामान्य नवयुवक 'प्रैक्टिकल' हो गये हैं। वे धन को महत्त्व देते हैं। युवा वर्ग की मानसिकता तथा विसंगतियों को विभिन्न स्तर के युवावों के माध्यम से चित्रण करके अपने इस मत को लेखिका ने स्थापित किया है।[1]

'बदलते रंग' में पूंजीपतियों का अभिजात गर्व, अहं, अधिकार भावना, व्यावहारिक जीवन बुद्धि आदि का सही दस्तावेज़ है। पूँजिपतियों के परिवार में स्त्रियों की जो हालत है इस पर भी उपन्यासकार ने प्रकाश डाला है।

'दो लड़कियाँ' में आधुनिक संसार के नवयुवकों के मनोभावों का चित्रण किया गया है। आज की शिक्षित युवा पीढ़ी ज़्यादातर बेरोज़गारी की दुरवस्था को झेलती है। वह शान-शौकत और धन-दौलत भरा जीवन जीने की प्रतीक्षा में है। बेरोज़गारी की अवस्था आत्महीनता की ग्रन्थी बढाकर उसे आक्रोश, विद्रोह आदि में फंसाती है। इस उपन्यास में युवा पीढ़ी की वास्तविक मनोदशा का यथार्थ चित्रण मिलता है।

धन एवं सुविधा को पाने केलिए एक पिता जिसप्रकार अपनी तीनों बेटियों के जीवन को बरबाद कर देता है, उसका जीवन्त चित्रण है "एक लडकी के दो रूप" में। एक स्वार्थी, लोभी और प्रमादी पुरुष के जीवन को अंकित करने के साथ-साथ इसके प्रताड़नों को चुपचाप सहनेवाली तीन लड़कियों का मर्मस्पर्शी जीवन चरित है 'एक लड़की के दो रूप'।

---

1. डॉ. श्रीमति ऊर्मिला प्रकाश हिन्दी लेखिकाओं के स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में पुरुष कल्पना पृ. 394

इस प्रकार रजनी पनिक्कर ने अपनी रचनाओं में नारी की विभिन्न समस्याओं को प्रस्तुत करने के साथ साथ सामाजिक समस्याओं को एक अलग नज़रिये से देखा, परखा और उसे उचित रूप में साहित्य में समावेश करने का सराहनीय प्रयास भी किया है।

मंजुल भगत

मंजुल भगत समर्थ युवा लेखिका हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में परिवेशगत विद्रूपताओं, शोषणों, विडम्बनाओं की गहरी अभिव्यक्ति की है। उन्होंने अपनी वर्गीय सीमाओं का अतिक्रमण करके निम्नवर्ग से अपना रिश्ता जोड़ा है। उनका उपन्यास 'अनारो' इसका उदाहरण है। उनकी औपन्यासिक कृतियाँ उनके सर्जक व्यक्तित्व की अच्छी पहचान कराती हैं। 'अनारो' के अलावा 'टूटा हुआ इन्द्रधनुष' 'खातुल' 'तिरछी बौछार' 'बंगाते घर में' 'लेडीज़ क्लब' 'गंजी' आदि उनके उपन्यास हैं। 'क्या टूट गया' 'आत्महत्या से पहले' बावन पत्ते और एक जोकर' कितना छोटा सफर' 'गुलमोहर के गुच्छे' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

'अनारो' में निम्न वर्ग की अनारो नामक युवती को मुख्य पात्र बनाया गया है। वह दूसरों के घर में काम करके अपने परिवार का गुज़ारा करती है। दूसरी स्त्री से सम्बन्ध रहने पर भी अनारो पति से घृणा नहीं करती। वह स्वाभिमानी नारी है। इस उपन्यास में मंजुल भगत ने नारी के सबल रूप को प्रस्तुत किया है।

'टूटा हुआ इन्द्रधनुष' में लेखिका ने प्रेम और विवाह को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। किसी एक व्यक्ति से प्रेम करके उसी को शादी करना प्रचलित परम्परा सी है। लेकिन इस उपन्यास में नायिका

शोभना एक को प्यार करके दूसरे से शादी करती है और शादी के बाद भी प्रेमी के साथ विस्तर बाँटती है। इसमें लेखिका ने प्रेम की नयी व्याख्या की है।

'खातुल' राजनीतिक विचार धारा को लेकर लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास के केन्द्र में एक अफगान परिवार और उनकी समस्याएँ हैं। काबुल से आये अफगानों में एक युवती है खातुल, जो अपनी आँसू भरी जिन्दगी में भी मुस्कुराती है। खातुल को सभी देशों से प्यार है। गली का एक फ़क्कीर और लावारिश कुत्ता शैवी भी उसका दुलारा है। इस उपन्यास में शरणार्थियों का जीवन का सही प्रस्तुतीकरण हुआ है।

'तिरछी बौछार' नारी के अस्तित्व बोध को उजागर करता है। इसमें नायिका अधेड़ उम्र की विस्मिता है। विस्मिता अपने पति के व्यवहार से अतृप्त है। इसलिए वह पति के बोस की ओर आकृष्ट होती है। लेकिन वह पति और पुत्री को छोड़कर जाना नहीं चाहती। इसलिए वह एक कम्पनी में काम करके अपनी अस्मिता को बनाये रखती है।

'लेडीज़ क्लब' में मंजुल भगत ने ऐसी नारियों का चित्रण किया है जो हमारे समाज की पूँजीवादी व्यवस्था की देन हैं। ये नारियाँ ऊपरी दिखावे के अतिरिक्त भीतर से खोखली हैं। लेकिन इनमें से कई अपने वर्गीय अवगुणों को पहचान कर सही मार्ग पर आ जाती हैं। समय के खट्टे-मीठे अनुभव उन्हें बिखरने से बचाते हैं। इस उपन्यास में लेखिका ने आधुनिक जीवन के खोखलेपन एवं मिथ्याडम्बर आदि की ओर संकेत किया है।[1]

---

1. विद्या केशव चिटको लेख-बीसवीं सदी की अन्तिम दशक की स्त्री उपन्यासकार दस्तावेज़ पृ. 4

मंजुल भगत ने स्त्री के विविध रूप में विविध कोणों से विविध स्तर पर होनेवाले शोषण, उसकी पीड़ा, शारीरिक और मानसिक यंत्रणाएँ आदि को लेकर अपनी रचनाएँ की हैं। 'गंजी' उपन्यास में भी उन्होंने ऐसी एक नारी को प्रस्तुत किया है, जो परिवार और रिश्तों से दुःखी है।[1]

मंजुल भगत के कहानी संग्रह 'क्या छूट गया' में शीर्षक कहानी के अलावा 'सादगी' 'त्यागमयी' 'आत्महत्या से पहले' 'चौराहे के बीच में' 'सम्बन्ध हीन' 'बुआजी' आदि कहानियाँ भी संकलित हैं। 'क्या छूट गया' कहानी में नारी की आन्तरिक भावनाओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'सादगी' अनैतिक कार्य करनेवाली युवती की कथा है। 'बुआ जी' में वर्तमान समाज की नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण है। 'त्यागमयी' में युवती के त्याग की कथा है। 'आत्महत्या के पहले' कहानी में आत्महत्या केलिए प्रयत्न कर विफल होनेवाले एक पुरुष की कथा है। 'चौराहे की बीच' पुत्र द्वारा घर से निष्कासित एक वृद्ध की कहानी है। 'सम्बन्ध हीन' एक किशोर बालिका की कहानी है। इसप्रकार इस कहानी संग्रह में लेखिका ने समाज की सभी अवस्थाओं का स्वाभाविक चित्रण किया है।

'बावन पत्ते और जोकर' में ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। इसमें सामाजिक परिवेश में संत्रस्त होती मानवीय संवेदनाओं का अहसास कराया गया है। 'बावन पत्ते और एक जोकर' कहानी में आधुनिक नौकरीपेशा युवती का चित्रण है। 'तीसरा अस्तित्व' में नारी के अन्तर्द्वन्द्व को चित्रित

---

1. विद्या केशव चिटको लेख-बीसवीं सदी की अन्तिम दशक की स्त्री उपन्यासकार दस्तावेज़ पृ. 5

किया गया है। 'पायदान' में एक शराबी की पत्नी के वास्तविक जीवन को प्रस्तुत किया गया है।

मंजुल भगत ने अपनी रचनाओं में प्राचीन एवं आधुनिक सभी मर्यादाओं का पालन करके स्त्री के सामाजिक जीवन की सही अभिव्यक्ति की है। महिलाओं की कठिनाईयों को सहज स्वाभाविक रूप से उन्होंने पकड़ा है। कहानी और उपन्यास दोनों क्षेत्रों में उनका अपना योगदान है।

चन्द्रकान्ता

चन्द्रकान्ता बहुचर्चित महिला कथाकार हैं। 'अन्तिम साक्ष्य' 'अर्थान्तर' 'बाकी सब खैरियत है' 'ऐलान गली जिन्दा है' 'यहाँ वितस्ता बहती है' 'अपने अपने कोणार्क' 'कथा सतीसर' आदि उनके प्रकाशित उपन्यास हैं। चन्द्रकान्ता ने अपने उपन्यासों में आधुनिक मध्यवर्गीय परिवारों के विघटन तथा पारम्परिक मूल्यों एवं नयी मानसिकता के बीच उभरनेवाले अन्तर्विरोधों का बड़ा ही सहज स्वाभाविक चित्रण किया है।

'बाकी सब खैरियत है' में लेखिका ने यह दिखाया है कि किस प्रकार एक संयुक्त परिवार का बेटा विदेश जाकर आज की उपभोगवादी संस्कृति में इतना रम जाता है कि वह सारे पारिवारिक मूल्यों को ताक पर रखकर अपने माँ-बाप, भाई-भाभी सभी से भावात्मक स्तर पर अपने को अलग कर देता है। 'ऐलान गली जिन्दा है' में लेखिका ने काश्मीर की एक गली का चित्रण किया है। 'यहाँ बितस्ता बहती है' में शिक्षाविद् और आदर्शवादी नागरिक राजनाथ कौल के जीवन के माध्यम से बदलते काश्मीर को चित्रित किया है। 'कथा सतीसर' में काश्मीर को तथा उसके समस्त पौराणिक-ऐतिहासिक सन्दर्भ को उपस्थित किया गया है। 'अपने

अपने कोणार्क' में कुनी नामक शिक्षिका की कहानी प्रस्तुत है जो आधुनिक जीवन मूल्यों से अपरिचित नही है किन्तु पारम्परिक रक्षणशील संस्कृति की मर्यादा में कैद, पर-पुरुष प्रेम को पाप समझती है। चन्द्रकान्ता ने मध्यवर्गीय मानसिकता के विश्लेषण क्रम में आर्थिक-सामाजिक कारणों को उपस्थित करके अपनी रचना भूमि को विस्तृत करने का प्रयास किया है।[1]

ममता कालिया

ममता कालिया एक ऐसी लेखिका है जिन्होंने भारतीय नारी जीवन का आधार लेकर उनकी मानसिकता, घुटन आदि को चित्रित किया है। उनकी रचनाओं में साधारण बात भी असाधारणता का आवरण लिए हुए होती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में पति-पत्नी के प्रेमहीन सम्बन्धों का चित्र उसकी पूरी सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है। उनके पात्र वैचारिक स्तर पर एक नई चेतना और आधुनिकता से युक्त उनकी नारी, स्त्री-पुरुष केलिए बनायी गयी अलग सामाजिकता, नैतिकता, मान-मर्यादा से विद्रोह करती है। घर परिवार के संघर्ष में शोषित होती नारी का चित्र भी उनकी रचनाओं में मिलता है। 'बेघर' 'नरक दर नरक' 'प्रेम कहानी' 'एक पत्नी के नोट्स' आदि उनके उपन्यास हैं। 'छुटकारा' 'सीट नं दो' 'प्रतिदिन', 'जाँच अभी ज़ारी', 'एक अदद औरत' आदि उनके कहानी संग्रह हैं।

'बेघर' में ममता कालिया ने सैक्स के स्वरूप को नई दृष्टि से आँका है और पुरानी धारणा पर चोट की है। संस्कार सम्पन्न परंजीत के

---

1 रामचन्द्र तिवारी हिन्दी का गद्य साहित्य पृ. 264

तनाव और उसकी यातना को इसमें उजागर किया गया है। कुँवरेपन पर सन्देह करके परंजीत अपनी पत्नी संजीवनी को छोड़ देता है। उसकी दूसरी शादी रमा के साथ हुई। लेकिन परमजीत को मन-चाहा जीवन नहीं मिला। कुँवरेपन के सम्बन्ध में पुरुषों के बीच फैली गलत धारणा को लेखिका ने यहाँ प्रश्न चिह्न लगाया है।

सुखी दाम्पत्य जीवन केलिए पति-पत्नी के बीच प्रेम की आवश्यकता है। इस पर बल देते हुए ममता जी ने अपना दूसरा उपन्यास 'नरक दर नरक' लिखा। इसमें गृहस्थी यातनाओं में त्रस्त और ऊबी पत्नी का चित्रण है जो पति के प्रेम विहीन जीवन के कारण अलग हो जाती है। इस उपन्यास के नायक बुद्धिजीवी और उच्च आदर्शों की कल्पना करनेवाला है। वह सामाजिक जीवन की रचना तो करता है, लेकिन घर के विधान के प्रति उदासीन है। इसलिए उसका पारिवारिक जीवन में दरार पड़ जाती है। इसमें आज की पूरी सामाजिक व्यवस्था को नरक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।[1]

'एक पत्नी के नोट्स' में पति द्वारा सतायी गयी नारी की दुःख भरी कथा है। इसमें आइ.ए.एस. अधिकारी संदीप अपनी पत्नी कविता को बेहद प्यार करने पर भी उसके साथ दुर्व्यवहार करके उसे सताता है। उन दोनों के बीच आये बच्चे से भी वह घृणा करता है। कविता ऊबकर घर छोड़ जाती है। उसके अभाव में वह अपने जीवन को व्यर्थ समझता है। इसमें संदीप नामक पति के मन की मनोविश्लेषणात्मक चित्र है।[2] पति

---

1 श्रीमती ऊर्मिला प्रकाश हिन्दी लेखिकाओं के स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में पुरुष कल्पना पृ. 99

2. अर्चना गौतम दस्तावेज़-2000, जनवरी पृ 42

आज भी सामंतीय संस्कारों से ग्रस्त है। वह पत्नी पर अपना वर्चस्व कायम रखना चाहता है। इसे लेखिका ने बड़ी साफगोई के साथ पेश किया है।

ममता कालिया ने कहानी लेखन की शुरुआत 'छुटकारा' से की थी। सामान्यता और सहजता उनकी कहानियों की विशेषता है। उनकी कहानियों में आधुनिकता के पुट मिलते हैं। इसमें नारी जीवन का मार्मिक और बारीक चित्रण मिलता है। 'मदिरा' कहानी की नायिका गृहस्थी के धन्धे में पिसती भारतीय नारी की सच्ची कथा है। 'बड़े दिन की पूर्व की साँझ' में नवविवाहिता स्त्री की मनोदशा का चित्रण है। साथ कहानी में विवाह किये बिना एक शादीशुदा पुरुष के साथ रहनेवाली सुनन्दा की कथा है। 'निवेदन' 'दो ज़रूरी चेहरे' 'सूनी', 'जीवन साथी' 'माँ' 'आपकी छोटी लड़की' 'एक जीनियस की प्रेम कथा' 'जाँच अभी ज़ारी है' 'सीट नं. दो' आदि उनकी श्रेष्ठ कहानियाँ हैं।

मृदुला गर्ग

नारी के प्रति बदलते दृष्टिकोण लेकर लिखनेवाली मृदुला गर्ग की रचनाएँ परम्परागत नारी लेखन से भिन्न होकर नारी की बाह्य और भीतरी जीवन को बड़ी सूक्ष्मता से देखा-परखा है। मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन कर उन्होंने हिन्दी साहित्य केलिए कुछ अविस्मरणीय रचनाएँ प्रदान कीं। सूक्ष्म पारदर्शी वेदना की धारा उनके लेखन में मिलती है। 'उसके हिस्से की धूप' 'चितकोबरा' 'वंशज' 'अनित्य 'मैं और मैं' 'कठगुलाब' 'कतार से बाहर' (उपन्यास) 'कितनी कैदें' 'टुकटा टुकटा आदमी', 'डैफोडिल्स जल रहे हैं' 'ग्लेशियर से' 'दुनिया का कायदा' 'उर्फ सैम' 'शहर के नाम' 'समागम' (कहानी संग्रह) 'एक और

अजनबी' 'जादू का कालीन' 'तीन कैदें' (नाटक) 'रंग-ढंग' और 'चुकते नहीं सवाल' (निबन्ध संग्रह) आदि उनकी रचनाएँ हैं।

'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास महिला वर्ष का प्रथम उपन्यास है। इसमें एक स्त्री द्वारा अपने पति और प्रेमी से सम्बन्ध निर्वाह करके बीच में अपने निजी व्यक्तित्व खोजने का चित्रण है। नारी पारिवारिक जीवन के द्वन्द्व से बचने केलिए अन्य सम्बन्धों में पड़ जाती है। लेकिन उसे सब कहीं हार माननी पड़ती है। 'उसके हिस्से की धूप' एक अतृप्त पारिवारिक जीवन संघर्ष की कथा है।

'वंशज' में मृदुला गर्ग ने पारिवारिक पृष्ठभूमि में पीढियों के संघर्ष का चित्रण किया है। पिता जब अपने पुत्र को आधुनिक ढंग से पालना चाहता है तो पुत्र भारतीय चिन्ता धारा में जीना चाहता है। पिता और पुत्र की दृष्टियों के अन्तर का चित्रण करके दो पीढ़ियों के विचार और विद्रोह को उपन्यास में उजागर किया गया है।

'चितकोबरा' एक प्रतीकात्मक एवं सांकेतिक उपन्यास है। इसमें स्त्री के देह-मन की प्यास को गहरे आवेग में चित्रित किया गया है। इसमें उच्चवर्ग के खोखलेपन, उसके भीतर की निराशा, कुंठा और विलास में घुटते पारिवारिक और वैयक्तिक जीवन का असली चित्रण है। लेखिका ने उच्चवर्ग के सामाजिक नैतिक और आडम्बरपूर्ण जीवन पर तीखा व्यंग्य किया है। प्रेम सम्बन्धों की यथार्थता और विवश दाम्पत्य जीवन की असमानता को इसमें चित्रित किया है। लेखिका ने इस उपन्यास में भारतीय दाम्पत्य जीवन की मान्यताओं से बाहर पाश्चात्य जीवन मूल्यों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है।

'अनित्या' में लेखिका ने क्रान्तिकारी आदर्शों का सतर्क विश्लेषण किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर यह उपन्यास लिखा गया है।

'मैं और मैं' की कथावस्तु एक महिला कथाकार की लेखन-चुनौतियों और उसकी पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच का द्वन्द्व है। इसकी नायिका एक लेखिका है जो अपनी प्रशंसा करनेवाले लेखक मित्र से जुड़ जाता है। वह लेखिका से झूठ बोलकर आर्थिक लाभ उठाता है। यह जानते हुए भी लेखिका को उससे अलग होना संभव नहीं हो पाता क्योंकि उससे लगातार सृजनात्मक प्रेरणा मिलती रही थी। एक लेखक की भीतरी दुनिया के तनाव और उत्तेजना जानने केलिए यह उपन्यास सहायक है।[1]

'कठगुलाब' का मुख्य विषय स्त्री-पुरुष सम्बन्ध है। इसमें मध्यवर्गीय परिवेश की नारी, सम्पन्न नारी, विदेश परिवेश की नारी, एवं निम्न वर्ग को प्रतिनिधित्व करनेवाली नारी इन सब के जीवन को आधुनिक परिस्थिति में व्याख्या की गयी है। पूरे उपन्यास में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के कई पहलुओं का बहुआयामी चित्रण है।

'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी' 'ग्लेशियर से' 'डैफोडिलस जल रहे है' 'कितनी कैदें' आदि कहानी संकलनों में मृदुला गर्ग ने समाज के आपसी रिश्तों को ईमानदारी से देखने-परखने के साथ समाज की झूठी मान्यताओं और जीवन की कड़वे-मीठे अनुभवों पर चुटकीला व्यंग्य किया है। बदलते जीवन मूल्यों, सैक्स एवं अतृप्ति बोध, महानगरीय घुटन,

---

1. दस्तावेज़-89 अक्टूबर-दिसम्बर-2000 पृ 47

पीड़ा, मृत्युबोध आदि का चित्रण भी उनकी कहानियों में मिलते हैं। उनकी कुछ कहानियाँ स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की धुरी पर ही निर्मित हैं। अनुभव की सपाटता और वैविधता की गहराई उनकी हर कहानियों में विद्यमान है।

मृणाल पाण्डे

मृणाल पाण्डे समकालीन महिला लेखन की एक सक्रिय लेखिका हैं। वे जीवन को बहुविध नज़रिये एवं वैचारिक दृष्टि से देखनेवाली लेखिका हैं। उनकी रचनाओं में सामाजिक अन्तर्विरोधों, परंपरा और आधुनिकता की टकराहट देखी जा सकती है। उन्होंने आभिजात्य वर्ग को केन्द्र में रखकर उस वर्ग के जीवन में आयी कृत्रिमता, बनावटीपन, व्यर्थ के आडम्बर, खोखलेपन आदि को पैनी चुभती भाषा में प्रस्तुत किया है। 'विरुद्ध' 'पटरंगपुर पुराण' 'रास्तों से भटकते हुए' (उपन्यास) 'दरम्यान' 'शब्दबेधी' 'एक नीच ट्रेजडी' 'एक स्त्री का विदागीत' (कहानी संग्रह) 'मौजूदा हालत को देखते हुए', 'काजर की कोठरी' चोर निकाल के भागा' 'जो राम रची रखा' 'आदमी जो मछुआरा नहीं था' (नाटक) आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

'पटरंगपुर पुराण' में लगभग आठ पीढ़ियों में कुमयूं-गढ़वाल के पहाड़ी क्षेत्र के जीवन में आये बदलाव का मार्मिक चित्रण हुआ है। इसमें लेखिका ने मौजूदा सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्ति की त्रासदी को कुछ नए अर्थ खोजने का प्रयास किया है। वे जिस तरह से शब्दों को खोजती है, गहरे तंत्र के साथ आसपास की चीज़ों को देखती ओर दिखाती है। उससे हमारे जीवन की सारी घटनाएँ साफ-साफ स्मरण आने लगती हैं। पटरंगपुर पुराण की कथा दीदी-नानी द्वारा सुनाये गये किस्से और दिलचस्प

वृत्तान्तों की तरह आगे बढती है और पहाड़ के ऊँचे-नीचे रपटीले-रास्तों की तरह यह इधर से उधर आती-जाती रहती है। पहाड़ी जीवन को उनकी इस कृति में प्रस्तुत किया गया है। एक गौरवपूर्ण जीवन-कथा इसमें है, साथ ही एक खानदान की कई पीढ़ियों के किस्से के रूप में पहाड़ का एक पूरा गतिमान चित्र भी है। 'रास्तों पर भटकते हुए' में आधुनिक उपभोक्तवादी युग में मानवीय सम्बन्धों की मृत्यु, सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, धन और सत्ता की दौड़ में मानवीय मूल्यों को बिलकुल दरकिनार कर राक्षसी भूमिका में जीनेवाले डाक्टरों, उद्योगपतियों, राजनैतिक नेताओं और पत्रकारों का उपन्यास लेखिका ने तल्ख संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। यह उपन्यास उपभोक्तवादी समाज के घिनौनी रूप का यथार्थ अंकन है।[1]

उच्चवर्ग की जिन्दगी की विसंगतियों का चित्रण मृणाल जी की कहानियों में मिलता है। 'गर्मियाँ' कहानी में परिवार के रिश्तों का ताना-बाना औसत, मध्यवर्ग की तकलीफों के सन्दर्भ में बुना गया है। 'समुद्र की सतह के दो हज़ार मीटर ऊपर' कहानी में एक सुसम्पन्न महिला की ज़िन्दगी के अकेलापन को विषय बनाया गया है। 'रूबी' कहानी में उच्चवर्गीय किशोर मन की व्यथा और बनावटी जिन्दगी का चित्रण किया गया है। 'खेल' कहानी बाल मनोविज्ञान से सम्बन्धित है। इसमें उच्चवर्ग और निम्नवर्ग की मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है। 'कौवे' कहानी सम्बन्धों का टूटन, और सम्बन्ध हीनता का परिचय कराती है। 'लकीरें' में एक लड़की की कहानी है।

---

1 गोपाल राय हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ. 358

मणिका मोहिनी

मणिका मोहिनी ने नारी की साहसिकता को अधिकतर विषय बनाया है। वे स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को नयी दृष्टि से आंकती है। उन्होंने बडी भावुकता के साथ आज के बदलते सन्दर्भों में पति-पत्नी के बीच पनपती प्रेम भावना को उपहास की दृष्टि से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उनकी रचनाओं में जिस सामाजिकता के साथ स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को नए दृष्टिकोण से उपस्थित किया गया है, वह अपने आप अजूबा है। इनके स्त्री पात्र लिज-लिजी भावुकता के वशीभूत अपना जीवन नष्ट नहीं करते, वरन जीवन को देखने का इनका नज़रिया बौद्धिक और तटस्थ है। लेखिका ने आधुनिक संस्कृति और परम्परित रूढियाँ तथा संस्कारों के द्वन्द्व को बारीकी से रेखांकित करते हुए बौद्धिक तर्क के माध्यम से समस्या का निदान ढूँढा है। 'पारू ने कहा था' (उपन्यास) 'खत्म होने के बाद' 'अभी तलाश ज़ारी है' 'स्वप्न देश' 'अपना अपना सच' 'ढाई अक्षर प्रेम का' तथा 'अन्वेषी' उनकी प्रमुख रचनाऍं हैं।

'पारू ने कहा था' में प्रेम विवाह के टूटने और तीखे मोहभंग के बाद पति से अलग हुई एक युवती के भीतरी द्वन्द्व और अकेलापन की कथा है। पति से अलग होकर प्रेमी के साथ जिए सुन्दरतम क्षण एक-एक कर सामने आते हैं। तब वह बुरी तरह व्याकुल और बेचैन हो जाती है।

'अभी तलाश ज़ारी है' संग्रह में नौ कहानियाँ संकलित हैं। इनकी अधिकांश कहानियाँ स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को लेकर लिखी गयी हैं। 'देखा-देखी' नामक कहानी में एक लड़के और लड़की की किशोरावस्था के सम्बन्ध की कथा है। 'हम बुरे नहीं थे' कहानी में पति-पत्नी के तनाव को

चित्रित किया गया है। 'कैरम की गोट' दो पुरुष के बीच संघर्ष करनेवाली नारी की कहानी है। 'अभी तलाश ज़ारी है' में सैक्स का खुले रूप में चित्रित किया गया है। 'इन्नेसेन्ट लवर' में युवक और युवतियों में होनेवाले सैक्स की भूख को दिखाया गया है। इसमें सैक्स का कुंठित रूप भी चित्रित है।

मणिका मोहिनी अपनी निजी रचना शैली में जीवन और समाज की समस्याओं का, अपनी कृतियों में समावेश किया है। उनकी कहानियों में यौन वृत्ति या सैक्स का खुला चित्रण है।

कृष्णा अग्निहोत्री

कृष्णा अग्निहोत्री एक यथार्थवादी कथाकार हैं। उनकी रचनाएँ किसी रूढियों या नियमों को तोड़नेवाली न होकर उसकी कमज़ोरियों को व्यक्त करनेवाली हैं। आधुनिक समाज की बहुविध विडम्बनाएँ, भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्यों का चित्रण इनकी रचनाओं में हुआ है। अर्थहीन रूढियों और परम्पराओं से मुक्ति पाने का उपदेश उनकी रचनाओं में मुखरित है। मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था उनकी रचनाओं में विद्यमान है। 'बात एक औरत की' 'कुमारिकाएँ' 'नपुंसक' 'पारस' 'टपरवाले' 'टेन के घेरे' 'गलियारे' 'बौनी परछाइयाँ' 'जिन्दा आदमी' 'ट्रेस की कहानियाँ' 'निलोफर' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

'बात एक औरत की' नामक उपन्यास में स्त्री-पुरुष के नाजुक सम्बन्ध को लेकर लिखी गई एक अत्यन्त मर्मस्पर्शी कथा है। इस उपन्यास में परम्परावादी एवं आधुनिक स्त्री-पुरुषों के बीच के नए एवं पुराने मूल्यों की टकराहट का जीवन्त चित्रण है। पति स्वयं विविध प्रकार के अनैतिक कार्य करके विलासी जीवन बिताता है लेकिन उसकी पत्नी को पतिपरायण

भारतीय नारी के रूप में चार दीवार में बन्द रखता है। इसमें पुरुष जाति की स्वार्थता का चित्रण है। कृष्णाजी ने इस संघर्ष के माध्यम से एक नई दिशा खोजने का प्रयास किया है। इसलिए इसमें जहाँ यथार्थ है, संघर्ष है, ईमानदारी है वहीं अनिवार्य आधुनिकता भी है।

'कुमारिकाएँ' उपन्यास में लेखिका ने कुँवरी पीढ़ी की सारी समस्याओं और जटिलताओं को प्रस्तुत किया है। पति के अत्याचारों से तंग होकर दूसरी शादी करने का निश्चय करनेवाली पत्नी की भी कथा इसमें है। लेकिन नारी मन की कोमलता एवं सहामुभूति पति की रुग्ण अवस्था जानकर सारे अत्याचारों को भूलकर पति की सेवा केलिए ले जाती है। सुचिता के माध्यम से लेखिका ने भारतीय-समाज की नारियों का चित्रण किया है।

'नपुंसक' संग्रह की कहानियाँ विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का प्रदर्शन करनवाली हैं। 'चातकी' कहानी में एक स्त्री की करुण दशा और पुरुष की दहेज-लोलुपता का चित्रण है। 'समापन' कहानी में आर्यसमाज के एक सदस्य और उसके तौर तरीके और आडम्बर आदि पर व्यंग्य है। 'एक केर्नल की वापसी' में कर्नल की जीवन-व्याख्या है। 'राजा' में कुत्ते के पिल्ले के प्रति प्रेम भावना को व्यक्त किया गया है। 'अनुत्तर' कहानी में एक मज़दूर लड़की की कथा है। बेरोज़गारी की समस्या का चित्रण करनेवाली कहानी है 'नपुंसक'। 'दो शब्द' में राजनीतिक प्रश्नों को उठाया गया है। शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि में लिखी गयी कहानी है 'हंस ध्वनि'। दहेज के विरोध में शादी करने के बाद एक युवा के जीवन जिस प्रकार अर्थहीन होता है उसका चित्रण है 'अर्थ हीन' कहानी में। 'छोटी-छोटी खुशियाँ', 'प्लटफोर्म' आदि इस संग्रह की अन्य कहानियाँ हैं।

'ज़िन्दा आदमी' नौ कहानियों का संकलन है। इसमें 'काँटों के झुरमुट' 'रामकलिया' 'मंगली' एक अखंडित सत्य' 'कमाऊ' 'खुली राह पर बन्द दरवाज़े' 'बिखराव' आदि कहानियाँ संकलित हैं। उनकी कहानियों में आदिवासी जीवन को लेकर सामाजिक जीवन तक के कई सन्दर्भों के चित्रण मिलते हैं।

'खत्म होने के बाद' मणिका मोहिनी की तेरह कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में स्त्री-पुरुष के अनकहे अविशुद्ध सम्बन्धों को नये दृष्टिकोण से देखा गया है। इन सम्बन्धों को लेखिका ने आधुनिक जीवन के संघर्ष, तनाव, व्यावसायिकता, मजबूरियाँ आदि के आधार पर व्याख्या करने का प्रयास किया है।

मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था रखनेवाली कृष्णाजी की रचनाएँ सामाजिक जीवन के सभी स्तरों को छूनेवाली हैं। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की हिमायत करते हुए आधुनिकता बोध और व्यक्ति-मन की संवेदनात्मक स्थितियों का विश्लेषण उपस्थित किया है।

दीप्ती खण्डेलवाल

दीप्ती खण्डेलवाल दाम्पत्य सम्बन्धों को नए सिरे से अभिव्यक्त करनेवाली सशक्त लेखिका हैं। दाम्पत्य जीवन की समस्याओं को समकालीन परिवेश से जोड़कर उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। नारी मन के उद्वेग, अभावग्रस्तता दलित औरत की मानसिक यंत्रणा, गरीबी, संघर्ष, आदि को सफलतापूर्वक पिरोकर समकालीन नारी जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने में दीप्ती जी को बड़ी सफलता मिली है।[1] दीप्ती खण्डेलवाल

---

1. डॉ. ज्ञानवती अरोरा समकालीन हिन्दी कहानी पृ 106

ने नारी-जीवन की समस्या का अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्ति दी है। दीप्ती जी ने अपने भोगे हुए यथार्थ को चित्रित किया है। 'प्रिया' 'वह तीसरा' 'कोहरे' 'प्रतिध्वनियाँ', 'कडवे सच' 'सलीब पर' 'सन्धि पत्र' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

'प्रिया' उपन्यास में लेखिका ने प्रिया नामक लड़की को प्रस्तुत किया है जो अपने पिता की चाल की वजह सारा जीवन खो बैठती है। प्रिया की शादी उद्योगपती के बेटे से करवाता है। उसके बाद प्रिया हर दिन अपने मंगेतर के साथ होटल और क्लबों में रहती है। आखिर वह जानती है कि अरुण पहले ही विवाहित था और उसके एक बच्चा भी है। सब जानकर पिता एबोर्शन करवाने हेतु उसके नाम पर दो हज़ार रुपए का 'चेक' भेजता है। प्रिया के जीवन चित्रण से दीप्ती जी ने एक क्रूर पिता और अत्याचारी पति का चित्र प्रस्तुत किया है।

'प्रतिध्वनियाँ' उपन्यास में नायिका अचला की शादी नीलकान्त से होती है। अचला विनय से प्रेम करती थी और नीलकान्त शुभ्रा से। दोनों यह बात जानते भी हैं। शादी के बाद दोनों निश्चय करते हैं कि शारीरिक सम्बन्ध के बिना दोनों के बीच और कोई बन्धन नहीं है। दोनों अपने प्रेमियों के साथ अपनी इच्छा के अनुसार जी सकें। इस उपन्यास में लेखिका यह व्यक्त करती है कि सुखी विवाह जीवन केलिए दम्पतियों के बीच आत्मीय रिश्ता होना चाहिए। आपसी प्यार के बिना ज़िन्दगी यांत्रिक बन जाती है। अचला के माध्यम से एक स्वाभिमानी, दृढ़ निश्चयी, एवं बहादुर नारी का जीवन इसमें प्रस्तुत है।

दीप्ती खण्डेलवाल के उपन्यास 'वह तीसरा' में भावावेश में एकात्मकता को अनुभव करने से एक साथ जीने का निश्चय करनेवाले

संदीप और रंजिता की कथा है। बाद में मिथ्या अहं से ग्रस्त होकर दोनों अपना पृथक अस्तित्व अनुभव करते हैं। उन्हें लगता है कि वे शायद एक दूसरे को नहीं अपने आप को ही प्यार करते थे।[1]

कथा लेखन के क्षेत्र में नारी मन की तहों तक प्रविष्ट होती संवेदनशील दृष्टि को लेकर लिखनेवाली लेखिका है दीप्ती खण्डेलवाल। कहीं कहीं उनके नारी पात्र विद्रोह में दूसरे पुरुषों से अनैतिक सम्बन्ध भी स्थापित करते हैं। उनके पात्रों में अपने व्यक्तित्व की स्थापना की गहरी ललक और परम्परित मूल्यों से छुटकारा पाने का तीव्र आग्रह भी दिखाई देता है। 'कड़वे सच', 'धूप के अहसास' 'क्षितिज' 'देह की सीता' 'शेष-अशेष' 'डूबने से पहले' 'निर्वासन', 'सन्धिपत्र' आदि उनकी श्रेष्ठ कहानियाँ हैं। उनकी कहानियों में आधुनिक नौकरी पेशा पति-पत्नी की मानसिक द्वन्द्वात्मक स्थिति का चित्रण है।

सूर्यबाला

सूर्यबाला ने अपनी रचनाओं में नारी मन के अन्तर्द्वन्द्वों और विषम सामाजिक, राजनैतिक, परिस्थितियों के मध्य जीनेवाले मध्यवर्गीय समाज की विसंगतियों का चित्रण किया है। लेखिका की पैनी-व्यंग्य दृष्टि समसामायिक विषमताओं के भीतर तक पैठ जाती है। लेखिका की सहज करुणा दृष्टि पात्रों की पीड़ा एवं दर्द से पाठक को तादात्म्य स्थापित कराती है। 'मेरे संधिपत्र' 'यामिनी कथा' 'दीक्षांत' 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

---

1. श्रीमती ऊर्मिला प्रकाश हिन्दी महिला लेखिकाओं के स्वातंत्रोत्तर उपन्यासों में पुरुष कल्पना पृ. 99

'मेरे सन्धि पत्र' विधवा-जीवन को प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास है। शिवा और रत्नेश आपस में चाहते थे। वे दोनों अन्दर ही अन्दर यह महसूस करते थे। शिवा के पति मृत्यु हो गई, शिवा के बच्चे भी चाहते हैं कि उनकी मम्मी रत्नेश अंकिल से शादी करें। लेकिन वह निर्विकार बैठती है। अन्त में वह उनसे शादि करने को तैयार होती है।

'यामिनी कथा' और 'दीक्षान्त' में स्त्री और स्त्री के विविध रूप, विविध कोणों से होनेवाले शोषण, उसकी पीडा, शारीरिक और मानसिक यातनाओं को आधार बनाकर लिखे गये उपन्यास है। इन उपन्यासों में नारी को केन्द्र में रखकर उससे सम्बन्धित अनेक समस्याओं को लेखिका ने प्रस्तुत किया है।

'एक इन्द्र धनुष जुबेदा के नाम' में सूर्यबाला की नौ कहानियाँ संकलित हैं। 'समान सतहें' नामक कहानी में इज्ज़त, मान-मर्यादा के पैबन्दों से झांकती ज़िन्दगी की विद्रूपताओं से यथार्थ का साक्षात्कार है। 'व्यभिचार' मानसिक तनावों की कहानी है। 'सुलह' जिन्दगी के उन लमहों की कहानी है जो सुलह करने केलिए विवश करते हैं। 'दरारें' कहानी मिलों और फैक्टरियों में खून-पसीना करके काम करनेवाले मज़दूरों की कहानी है। 'अविभाज्य' में अपनों की भोगी गई सच्चाइयों की कहानी है। 'निर्वासित' वृद्ध पीढ़ी के गहरे अनुभव निर्वासन बोध की पूर्ण सटीक कहानी है।

'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम' में संगीत की पृष्ठभूमि में मुस्लिम परिवार के जीवन को प्रस्तुत किया गया है। 'रेस' कहानी में व्यक्ति की गलत महत्वाकांक्षा का चित्रण है।

सूर्यबाला ने अपनी रचनाओं में नारी मन की विभिन्न समस्याएँ, विभिन्न संघर्षों को पूर्णता के साथ अभिव्यक्त किया है। समाज के विविध धर्म एवं स्तर के जीवन को उन्होंने अपनी रचनाओं में समावेश किया है।

प्रभा खेतान

प्रभा खेतान एक प्रतिभा संपन्न रचनाकार हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी-जीवन की त्रासदी को एक संवेदनशील नारी की दृष्टि से देखा हैं। सीमोन द बुआर की ख्याति प्राप्त पुस्तक 'दि सेकंड सैक्स' का हिन्दी रूपान्तर करके उन्होंने ख्याति अर्जित की है। 'आओ पेपे घर चलें' तालाबंदी, 'छिन्नमस्ता' 'अपने अपने चेहरे' 'पीली आँधी' आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'आओ पेपे घर चलें' में अमेरिकी नारी जीवन की अन्तर्व्यथा को उद्घाटित किया गया है। 'ताला-बंदी' में एक फैक्टरी के स्थापित होने प्रवृत्त होने, और बन्द होने की कथा वर्णित है।

'स्त्री' प्रभाखेतान के चिन्तन के केन्द्र में है। आज स्त्री अपना अधिकार हासिल करने केलिए अपना भाग्य स्वयं निर्मित करने के संघर्ष की राह पर है। यही छिन्नमस्ता का विषय है। यह आधुनिक नारी की त्रासदी और उसके संकल्प का एक प्रामाणिक दस्तावेज़ है।[1] प्रिया इसकी नायिका है। छिन्नमस्ता में प्रभाखेतान की लेखकीय ऊर्जा को एक तीव्र विस्फोट की स्थिति दूर-दूर तक महसूस किया। जा सकता है[2] 'पीली आंधी' में एक समृद्ध मारवाडी परिवार की अन्तरंग कथा के माध्यम से नारी जीवन की त्रासदी पर प्रकाश डाला गया है।

---

1. गोपालराय हिन्दी उपन्यास का इतिहास पृ. 384
2. दस्तावेज 89 अक्टूबर-सितम्बर 2000

कुसुम अंसल

कुसुम अंसल हिन्दी और पंजाबी में लिखती हैं। इनकी अनेक कहानियाँ हिन्दी, पंजाबी और अंग्रेज़ी पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। स्त्री उपन्यासकारों में कुसुम अंसल ने अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। उनके 'एक और पंचवटी' और 'रेखाकृति' उपन्यास अधिक चर्चित हैं। 'एक और पंचवटी' पर पंचवटी नामक फिल्म भी बन चुकी है। 'उदास आँखें' 'नींव का पत्थर' 'एक और पंचवटी' 'उस तक' 'पत्ते बदलते है' (कहानी संग्रह) 'मौन के दो पल' 'छुऐं का सच' 'विरुधीकरण' (कविता संग्रह) आदि उनकी रचनाएँ हैं।

'एक और पंचवटी' में लेखिका ने प्रेम के नए रूप को उजागर किया है। यह पत्नी और प्रेमिका के आत्मसंघर्ष की कथा है। साधवी अपने पति से अतृप्त है, इसलिए वह प्रेमी विक्रम की ओर आकर्षित है। वह पति से तलाक लेकर विक्रम के साथ जीना चाहती है। इतने में प्रेमी की मृत्यु हो जाती है। पति उसकी सब गलतियों को जानकर भी उसे दुबारा अपनाता है।

'रेखाकृति' में नायिका सुरक्षित घेरे को छोड़कर एक ऐंसी दुनिया में प्रवेश करती है। वहाँ कुछ नए सम्बन्ध बनते हें, कुछ नारी असलियतों को पहचानती है। कुसुम अंसल ने इसमें आधुनिक स्त्री के भीतरी खालीपन को अभिव्यक्त किया हे। प्रेम के वास्तविक स्वरूप की एक रेखाकृति बनाने की चेष्टा इसमें हुई है।

'अपनी अपनी यात्रा' विमाता नायिका सुरेखा के जीवन संघर्ष की कथा है। बचपन में ही माता की मृत्यु के कारण उसके मन में कुंठाएँ

भरती हैं। वकील परीक्षा के उत्तीर्ण होने के बाद पिता के पास लौट आती है और बैरिस्टर शिव के जूनियर बनकर वकालत करने लगती है। शिव और उसके पुत्र दोनों उसकी ओर आकृष्ट होते हैं। कुसुम अंसल ने इसमें प्रेम के एक अलग रूप को भी प्रस्तुत किया है। शिव के प्रेम को सुरेखा अपने महत्वपूर्ण उपलब्धि मानती है।

कुसुम अंसल ने अपनी विशिष्ट रचना व्यक्तित्व से हिन्दी साहित्य में अपना स्थान जमाया। मानव जीवन की प्रायः सभी समस्याओं को उन्होंने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

राजी सेठ

राजी सेठ मानवीय संसक्ति और संवेदना की रचनाकार हैं। वे नारी और उनके जीवन के प्रति सजग हैं। उनकी रचनाओं में सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति समर्पित भाव भी है। उनकी रचनाओं में समय, समाज और पीढ़ियों के बीच के तनाव के साथ ही संतुलन भी है। उनके कथ्य में भी अभिव्यक्ति की कुशल सामर्थ्य है। उन्होंने अपनी रचनाओं में मानवीय संघर्ष की परंपरा को एक नई दृष्टि दी है। 'अन्धे मोड़ से आगे' 'तीसरी हथेली', 'यात्रा मुक्त' 'दूसरे देशकाल में' 'तत्सम' 'निष्कवच' आदि उनकी रचनाएँ हैं।

राजी सेठ का उपन्यास 'तत्सम' एक अलग ताज़गी और अभिव्यक्ति की नैसर्गिकता से भरपूर है। इस उपन्यास की नायिका वसुधा पति की मृत्यु के बाद स्वतंत्र जीवन बिताती है। वह अपना पूरा ध्यान अकादमीय पढाई और विश्वविद्यालय की नौकरी में लगाई रखती है। लेकिन उसका अन्दर खालीपन और द्वन्द्व से भरा हुआ है। उसे अपनी इस एकाकीपन से

बचने केलिए एक सच्चे साथी की ज़रूरत है। लेकिन उसके मन में एक आवेग पूर्ण समर्पण भाव है। इसलिए वह अपने को खोजती है। इस प्रकार 'तत्सम' उपन्यास में मानसिक द्वन्द्व और संघर्ष से जीती नारी का जीवन प्रस्तुत है।

'निष्कवच' उपन्यास में लेखिका ने अलग-अलग रास्ते में जीनेवाली दो लड़कियों का चित्र प्रस्तुत किया है। उपन्यास दो पृष्ठभूमियों में गढ़ा है एक स्वदेश और दूसरा परदेश। मीरा और मार्था के माध्यम से आत्माभिमान के साथ के जीवन और उन्मुक्त जीवन, ये दोनों का तुलना भी की गयी है। इसमें पीढ़ियों के संघर्ष को भी चित्रित किया गया है।(1)

'तीसरा हथेली' राजी सेठ का दूसरा कहानी संकलन है। इसमें दस कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों का मुख्य विषय पति-पत्नी या स्त्री-पुरुष सम्बन्ध और विवाह की समस्या है। इसमें 'अनावृत कौन' 'अपने दायरे' 'दूसरी ओर से' 'एक बड़ी घटना' 'वे मेरेलिए नहीं' आदि कहानियाँ बहुत ही उल्लेखनीय हैं। जीवन में अपने अपने दायरे में घूमते हुए पति-पत्नी का जीवन 'अपने दायरे' में प्रस्तुत है। विवाह की समस्या को उकेरनेवाली सामाजिक कहानी है 'वे मेरेलिए नहीं'। 'दूसरी ओर से' कहानी में परित्यक्ता नारी का आत्मसंघर्ष है। 'तीसरी हथेली' में पति का अन्य युवति के साथ अनैतिक सम्बन्ध और उसके परिणाम की कथा है।

इस प्रकार राजी सेठ ने अपनी रचनाओं में मनुष्य के अन्तरंग जीवन और बहिरंग का चित्र प्रस्तुत किया है।

---

1. दस्तावेज़ 89 अक्टूबर-दिसंबर 2000

मालती जोशी

मालती जोशी ने हिन्दी साहित्य की प्रायः सभी विधा में अपनी क्षमता की पहचान दी है। उन्होंने अपनी रचनाओं में मुख्यतः दाम्पत्य, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को ही उभरा है। उनकी अधिकतर रचनाएँ भारतीय परिवेश को लेकर लिखी गयी हैं। नारी मन के अन्दर्द्वन्द्व को बड़ी मार्मिकता के साथ उन्होंने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। इन्होंने पारिवारिक-सामाजिक विसंगतियों से जूझती नारी का चित्र खींचा है। उनकी रचनाओं में सम्बन्धों के विघटन को भिन्न-भिन्न कोणों से प्रस्तुत किया गया है। 'पटाक्षेप' 'सहचारिणी' 'पाषाण युग' (उपन्यास) 'दादी की घड़ी' 'मध्यान्तर' 'एक घर सपनों का' 'जीने की राह' 'विश्वासगाथा' 'पराजय', 'राग-विराग' 'शोभयात्रा' (कहानी संग्रह) समर्पण का सुख (लघु उपन्यास) आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

'सहचारिणी' नारी जीवन को आधार लेकर लिखा गया उपन्यास है। इसमें नीलम और योगेश के जीवन में घटित घटनाओं का चित्रण है। योगेश शादि के चार वर्ष बाद सीमा की ओर आकृष्ट होता है। काम में कृत्यविलोप के कारण 'सस्पेन्ड' होकर वह घर लौटता है। इसमें 'धन' के कारण मानव मन में होनेवाले बदलाव को भी चित्रित किया गया है। पति-पत्नी के आपसी सम्बन्धों को सूक्ष्म दृष्टि से इसमें विवेचित है।

'समर्पण का सुख' में चार लघु उपन्यास संकलित हैं। वे हैं 'गोपनीय' 'ऋणानुबन्ध', 'चाँद अमावास्या का' 'समर्पण का सुख' आदि। 'गोपनीय' लघु उपन्यास में लड़कों और लड़कियों की स्थिति को विवाह के माध्यम से सुलझाया गया है। 'ऋणानुबन्ध' में एक मध्यवर्गीय परिवार

में टूटते बिखरते सम्बन्धों को खुले रूप में चित्रित किया गया है। 'चाँद अमावस्या का' उस स्त्री की कथा है जो पति की मृत्यु के कारण मानसिक संतुलन खो बैठती है। 'समर्पण का सुख' पढ़ी-लिखी अभावग्रस्त स्त्री गीता की कहानी है। गीता अपने पति की सेवा में समर्पित होने में अपने को सर्वाधिक सुखी समझती है।

'पाषाण युग' में तीन लघु उपन्यास संकलित हैं 'ज्वालामुखी के गर्भ में' 'एक जंगल आदमियों का' और 'पाषाण युग'। 'ज्वालामुखी के गर्भ में' में जोशी जी ने प्रेम-विवाह को तयशुदा विवाह की अपेक्षा उचित बताया है। 'एक जंगल आदमियों का' में भारतीय विवाह पद्धति पर व्यंग्य किया गया है।

'मध्यान्तर' कहानी संग्रह में आठ कहानियाँ संकलित हैं। 'टूटने से जुड़ने तक' कहानी में नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व को उभारा गया है। 'कलंक' में स्त्री और पुरुष के प्रेम पर उपहास किया गया है। 'अस्ताचल' में नारी मन को चित्रित किया गया है। 'सन्दर्भहीन' कहानी में उस नारी की कथा है जो समाज द्वारा पापी, कलंकित, निर्लज्ज कहकर अपमानित है। 'मध्यान्तर' एक कामकाजी नारी की कथा है। 'कुहासा' दो बहनों की कहानी है। 'एक और देवदास' में प्रेम की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है।

'एक घर सपनों का' में मालती जोशी की दस कहानियाँ संकलित हैं। 'फेयरवेल' 'एक घर सपनों का' 'मुट्ठी भर खुशियाँ' 'दूसरी दुनिया' 'गुमशुदा की तलाश' 'सपने' 'बेडियाँ' 'ममता तू न गई मेरे मन से' और 'एक जंगल आदिमयों का'।

मालती जोशी ने अपनी रचनाओं में सामाजिक जीवन के कई सन्दर्भों को समकालीन जीवन क्षणों के साथ पिरोकर प्रस्तुत किया है। परिवार और समाज के सभी विषयों को उन्होंने अपनी रचनाओं में समावेश किया है।

प्रतिभा वर्मा

प्रतिभा वर्मा समकालीन हिन्दी साहित्य में बहुचर्चित कथाकार हैं जिन्होंने समसामायिक जीवन के सभी पहलुओं को अपनी कथाओं का कथ्य बनाया है। प्रतिभा जी ने आज के बदलते विषम माहौल में घर की चाहर-दीवारी से बाहर निकली संघर्षशील नारी की पीड़ा पर भी विभिन्न कोणों से दृष्टिपात किया है। 'गलियाँ-गलियारे' 'अपने-बेगाने' 'सुबह होती है शाम होती है' 'उसका आकाश' 'उन शरदों पर' (उपन्यास) 'धूप-धूप साया-साया' 'ज़िन्दगी एक घूँट' 'जुड़ी हुई सतहें' 'बाँधे पावों का असर' 'एक सुबह और' (कहानी संग्रह) आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

'गलियाँ-गलियारे' उपन्यास में आधुनिकता के नाम गलत व्यवहार करनेवालों पर व्यंग्य करते हुए लेखिका ने किशोर वयस की भावुकता और जीवन की गलियों में भ्रमण करते प्रेम, विद्वेष, विक्षोभ और टूटन की गलियों में जिस प्रकार भटक जाती है इसका चित्र प्रस्तुत किया है।

'धूप-धूप साया-साया' में प्रतिभा वर्मा की पाँच कहानियाँ संकलित हैं 'पर्दे' 'सूत्रधार' 'बाढ़ का पानी' 'विलाप' और 'धूप धूप साया साया'। इसमें आज की संघर्षरत नारी की व्यथा की कथा का मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है। इसमें एक ओर पात्रों का दुख व्यथित करता है तो दूसरी ओर उनकी अदम्य जिजीविषा, प्रेरणा का स्रोत बनती है। 'महाजन की

बही' में अपनी विपरीत परिस्थितियों से निकलने का प्रयास करती नारी का चित्रण है।

'राख' कहानी में अर्थभाव के कारण उपजती समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। अर्थ संकट पुरुष की स्थिति को परिवार में दयनीय बना देता है। जहाँ उसकी पत्नी नौकरी पेशा भी है तो उसकी दशा और दयनीय हो जाती है। लेखिका की दृष्टि उस विषम आर्थिक व्यवस्था की ओर गयी है।

सिम्मी हर्षिता

सिम्मी हर्षिता की रचनाओं में जीवनगत सन्दर्भों की विशिष्ट एवं सूक्ष्म अभिव्यक्ति मिलती है। इसलिए ही वे अन्य रचनाकारों की तुलना में जीवन के कई सूक्ष्म पहलुओं को बेखूबी से उतार सकी। जीवनगत समस्याओं को उन्होंने सहज भावुक दृष्टि से न देखकर बौद्धिकता के साथ देखा-परखा। 'कमरे में बन्द आभास' 'धराशायी' 'सम्बन्धों के किनारे' 'यातना शिविर' 'रंगशाला' आदि उनकी प्रमुख कथाकृतियाँ हैं।

'कमरे में बन्द आभास' सिम्मी हर्षिता का पहला कहानी संग्रह है। इसमें पन्द्रह कहानियाँ संकलित हैं। इस संग्रह में कुँआरी लड़कियों की मनोभावनाओं की कथा है। 'चक्रभोग' कहानी में पिता द्वारा विवाह को बाधा ड़ालने के कारण कुंठाग्रस्त लडकी का चित्रण है। 'अपने-अपने दायरे' का कथ्य चक्रभोग के समान है लेकिन इसमें लड़की साहस करके शादी करती है। 'कमरे में बन्द आभास' में भी केन्द्र में एक लड़की है जो अपने प्रेमी से शादी कर न पाने के कारण आत्महत्या कर लेती है। 'उसका मन' एक लड़की का अविवाहित रहने की कहानी है। इस प्रकार

सिम्मी हर्षिता ने इस संग्रह की तमाम कहानियों में अविवाहिताओं की समस्याओं पर प्रकाश ड़ाला है।

'सम्बन्धों के किनारे' सिम्मी हर्षिता का एक बहुत मार्मिक उपन्यास है। इस उपन्यास के केन्द्र में एक युवती है। उसको घर परिवार एवं समाज से तिरस्कार ही मिलता है। उसके पड़ोसी रिश्तेदार भी उसे असहाय समझकर निकालते हैं। वह अपने दुःखों को अकेले सहती है। परिस्थितियों से जूझकर वह तबादलों के चक्कर में इधर-उधर घूमकर अकेला जीवन बिताती है। जीवन के अकेलापन में वह खुद अपने जीवन को समाप्त करने को सोचती है और खुद एक आस्था लेकर मन की दृढ़ता से जीवन का अर्थ ढूँढ़ता है। इस उपन्यास में अकेले जीवन की विवशता, शून्यता, भय, दुख आदि को सीधा-सादा शैली में अभिव्यक्त किया गया है।

'यातना शिविर' में सिम्मी हर्षिता ने एक ऐसी युवती का चित्रण किया है जो निरीह और बेचारी है। ससुराल में एक सीधी-सादी लड़की किस तरह के दबावों से धीरे-धीरे मारी जाती है और अपने को दुःखी और बेसहारा महसूस करती है इसका चित्र प्रस्तुत किया है। यों लेखिका ने युवती के जीवन संघर्ष को ज़ोरदार ढंग से प्रस्तुत किया गया है। विवाह के बाद पति अपने परिवार में पत्नी की सुख-सुविधा को खोजने केलिए तैयार नहीं बल्कि उसे थोड़ा उत्पीड़ित करके दूसरों के साथ सुख का अनुभव करता है। इसमें लेखिका ने अन्य उपन्यासों की तुलना में जीवन क्षणों की और ज्यादा मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति दी है।

सिम्मी हर्षिता की रचनाओं में प्रेमचन्दीय शैली का आभास मिलता है।

चित्रा मुद्‌गल

समकालीन महिला कथाकारों में चित्रा मुद्‌गल का विशिष्ट स्थान है। उनकी रचनाएँ मानवीय सरोकारों से गहराई से जुड़ी हुई हैं। आज की व्यावसायिक उपभोगवादी संस्कृति में होने वाले नारी शोषण को सार्थक औपन्यासिक परिणति देकर सफल उपन्यासकार के रूप में चित्राजी ने अपने को स्थापित कर लिया था। 'एक ज़मीन अपनी' 'आवाँ' और 'गिलिगडु' उनके उपन्यास हैं।

चित्रा मुद्‌गल का 'एक ज़मीन अपनी' बहुचर्चित उपन्यास है। ओब्सर्वेशन एड़वरटाइसिंग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मि. मैथ्यू अंकिता जैसी प्रतिभा संपन्न कापीराइटर को यूँ ही अपने यहाँ से निकाल देते हैं, क्योंकि वह उनके क्लाइंट्स द्वारा की गयी अश्लील हरकतों को बरदाश्त नहीं करती। इसके विपरीत नीता हर तरह का समझौता करके उसकी कंपनी में उसकी जगह नियुक्ति पा लेती है। लेकिन इसका मूल्य उसे देना पड़ता है। नित्य के शोषण से ऊबकर आखिर वह आत्महत्या कर लेती है। इसप्रकार सम्पूर्ण उपन्यास में स्त्री शोषण पर केन्द्रित संचार माध्यमों की भोगवादी दृष्टि का पर्दाफाश किया गया है।

'आवाँ' चित्राजी का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है। मज़दूर आन्दोलन और उसके परिणाम, उसकी सफलता और असफलता, मज़दूर राजनीति के अन्तर्विरोध, आपसी वैमनस्य, प्रतिद्वन्द्विता, पूँजीपति वर्ग के शोषण, छल छद्‌म, आदि का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। नमिता पाण्डे इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है जो शिक्षिता है। उसके चरित्र को संघर्षशील, महत्वाकांक्षी, आधुनिक मूल्यों के प्रति संचेत युवती के रूप में प्रस्तुत

किया गया है। इसमें घर परिवार और समाज की समस्याओं और दुरवस्थाओं, विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को जीवन्त शैली में यथार्थ चित्रण किया गया है।

'गिलगडु' चित्रामुद्गल का अन्तिम प्रकाशित उपन्यास है। इसमें आज की युवपीढ़ी द्वारा अपने बुजुर्गों की घोर उपेक्षा और अवमानना का बड़ा ही मार्मिक और सजीव चित्रण किया गया है। आज के भरे-पूरे परिवार में भी बुजुर्गों की स्थिति परिवार के पालतू कुत्ते से भी बदत्तर है। महानगरों के शिक्षित मध्यवर्गीय परिवार का समकालीन जीवन किस सीमा तक यांत्रिक, आत्मकेंद्रित और अमानवीय हो गया है, यह उपन्यास इसका जीवन्त दस्तावेज़ है।

चित्रा मुद्गल उपन्यासकार के अलावा एक ऐसी महिला कहानीकार भी हैं जिन्होंने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के दायरे से बाहर निकलकर महानगरों में संघर्षरत नौकरीपेशा नारियों एवं झोंपट-पट्टियों में घिसटते हुए निम्न मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में भी झांक कर देखा है। अब तक उनके कई कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'अपनी वापसी' 'ग्यारह लम्बी कहानियाँ' 'जिनावर' 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' 'केंचुल' 'भूख' 'मेरी प्रिय कहानियाँ' आदि उनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं। उनकी कहानियों में जीवन में ज़ारी विसंगतियों, विद्रूपताओं का यथार्थ अंकन किया गया है। चित्राजी की रचनाओं का विषय प्रायः निम्न जाति के जीवन से सम्बन्धित है जो उन्हें अपने जीवन में अनुभूत सच्चाई है।

अन्य लेखिकाएँ

उपर्युक्त लेखिकाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य लेखिकाएँ भी है, जिन्होंने हिन्दी के कथा साहित्य को संपन्न किया है। वे अपनी स्त्री सुलभ

अनुभूतियों एवं संवेदनाओं से स्त्री की बहुआयामी समस्या को साहित्यिक रूप प्रदान किया जो मानव जीवन से ज़्यादा निकट है।

'सुषमा बेदी' समकालीन लेखन का ख्याति प्राप्त लेखिका हैं जिन्होंने अपने रचनाओं में विलायत में रहनेवाले भारतीय परिवारों की अन्तर्दशा को लेकर रचना की है। 'हवन' 'लौटना' 'कतरा-दर-कतरा' आदि उनके उपन्यास है। औद्योगीकरण एवं शहरीकरण से उत्पन्न संवेदन शून्यता को सच्चाई के साथ प्रस्तुत करनेवाली लेखिका हैं प्रतिमा वर्मा। 'ज़िन्दगी एक घूँट' 'बाँधे पावों का सफर' 'जुड़ी हुई सतहें' 'एक सुबह और' आदि इनके कहानी संग्रह हैं और 'गलियाँ-गलियारे' 'अपने बंगाने' 'उसका आकाश' 'उन सरहदों पर' आदि इनके उपन्यास हैं। स्त्री जीवन से जुड़े विविध आयामों को मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय दृष्टि से समझानेवाली लखिका हैं उषा महाजन। 'शोषित एवं अन्य कहानियाँ' और 'चतुर चरवाहा' इनके बाल कहानी-संग्रह हैं। वर्तमान जीवन की विडम्बनाओं, विद्रूपताओं को उजागर करनेवाली लेखिका है अर्चना वर्मा। उन्होंने समाज में व्याप्त रूढ़िवादी मान्यताओं का तीखा विरोध किया। 'स्थगित' इनकी कहानी संग्रह है। स्त्री जीवन में मानवता की खोज करनेवाली लेखिका है अरुणा कपूर। 'रेत के आँसू', 'अधूरे लोग' 'धुंध' आदि इनके उपन्यास हैं और 'आकारों के दंश' 'टूटते अंधेरे' 'तुम झेल नहीं पाओगे' आदि उनके कविता संग्रह हैं। रचनात्मक प्रतिभा के कारण हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखनेवाली लेखिका हैं 'इन्दु बाला'। इन्होंने नारी शोषण और नारी मनोविज्ञान को सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है। 'सोये प्यार की अनुभूति' 'बसुरिया बज उठी' 'अमर बेली स्पर्श' आदि इनके उपन्यास हैं। अपनी विशिष्ट शैली के कारण क्षमा शर्मा हिन्दी की प्रमुख लेखिकाओं में एक स्थान प्राप्त की। उन्होंने बडी भावुकता से समस्याओं को प्रस्तुत

किया। कुसुम कुमार ने 'हीरामन हाइस्कूल' लिखकर एक विधवा, अकेली असहाय स्त्री, जुगनी के जीवन संघर्ष को मूर्त किया है। मैत्रेयी पुष्पा की 'स्मृति दंश' 'बेतवा बहती रही' 'इदमन्नमम्', चाक, 'अलका कबूतरी' 'झूला नट' जैसे उपन्यास, ललमनियाँ गोमा हंसती है, चिह्नार जैसे कहानी संकलनों के माध्यम से अपने को विशिष्ट बना लेनेवाली कथा लेखिका है। नासिरा शर्मा ने एक प्रगदिशील मानव धर्मी लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनायी है। उनके पाँच उपन्यास 'सात नदियाँ एक समुन्दर' 'शाल्मली' 'ठीकरे की मंगिनी' 'जिन्दा मुहावरे' और 'अक्षयवट' प्रकाशित हैं। उपन्यासकार के अलावा वे देश-काल धर्म-जाति संप्रदाय के भेदों से ऊपर उठकर एक दिल और एक दिमागवाले इन्सान के दुःख-दर्द उत्थान-पतन का आकार देनेवाली कहानीकार भी है। अब तक उनके नौ कहानी संकलन प्रकाशित हैं 'शामी कागज़' 'पत्थर गली', 'संगसार' 'इब्ने मरियम' 'सबीना के चालीस चोर' 'खुदा की वापसी' 'इनसानी नक्ल' 'दूसरा ताजमहल' और 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' आदि। 'पतझड़ की आवाज़ें' 'बंटता हुआ आदमी' 'मेरा नरक अपना है' और 'दहकन के पार' आदि निरूपमा सोबती के उपन्यास हैं। अलका सरावगी के उपन्यास हैं - 'कलिकथा वाया बाइपास' और 'शेष कादम्बरी' 'कहानी की तलाश' में 'दूसरी कहानी' उनके कहानी संकलन हैं। मधुकाँकरिया का 'खुले गगन के लाल सितारे' न नक्सलवादी आन्दोलन को केन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास हैं। उनकी कई कहानियाँ भी बहुचर्चित हैं।

इसी प्रकार अन्य सैकड़ों लेखिकाएँ हैं जो अपने अनुभव और मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को साहित्य में अभिव्यक्त करने की प्रयास किया हैं, जैसे प्रमुख नाम है मीनाक्षीपुरी, उषा बरुआ, नीलिमा सिंहा, सोमा वीरा, माया प्रधान, कमला सिंधवी, स्वरूप कुमारी बख्शी, आशा पूर्णा,

बीना सक्सेना, चेतना, अतीता आलोक, सूनीता जैन, सुमति अय्यर, कान्ति त्रिवेदी, कृष्णा, विमला शर्मा आदि। ये लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समकालीन साहित्य सृजन के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। महिला जागृति तथा समाज के बदलते सामाजिक स्थिति को इन्होंने कई कोनों से देखा-परखा है स्त्री की मनोदशा, पीड़ा, व्यथा, हर्ष, उल्लास आदि को बिना कल्पना के सहारे प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्यिक क्षेत्र में महिला लेखिकाओं की एक सशक्त भूमिका है। इन्होंने समस्या प्रधान और चरित्र प्रधान रचनाओं का सृजन किया है। इसमें राजनीतिक पृष्ठभूमि पर लिखित उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, आत्मकथा शैली में लिखित उपन्यास भी मिलते हैं। शैली वैविध्य इनके उपन्यासों की एक उल्लेखनीय विशेषता है। स्वतंत्रता के पूर्व की लेखिकाओं ने व्यक्ति स्वातंत्र्य का समर्थन करते हुए सामाजिकता को महत्व दिया पर स्वतंत्र्योत्तर लेखिकाओं के रचनाओं में मनोविश्लेषणात्मक, व्यक्तिवाद आदि को महत्व दिया गया। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि समाज के बृहत्तर सन्दर्भों की पुनर्रचना करने की क्षमता महिला लेखन में भी निहित है। समय के साथ बहते जीवन में नारी हमेशा सताती है। इस पीड़ित शोषित नारी के जीवन यथार्थ को वाणी देने का प्रयास महिला लेखन ने किया है। इन लेखिकाओं ने नारी जीवन सम्बन्धी अछूती समस्याओं को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। स्त्री की मनोदशा पीड़ा, व्यथा, दु:ख, सुख आदि को कल्पना के बिना नारी लेखन द्वारा प्रस्तुत किया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी एक महत्वपूर्ण बात है।

❖[.]❖

अध्याय - 2

चित्रा मुद्गल : सृजन कर्म

प्रस्तावना

चित्रा मुद्गल समकालीन हिन्दी साहित्य की सशक्त कथाकार हैं। उनकी रचनाएँ मानवीय संवेदना की मसालें हैं। प्रखर चेतना की धनी चित्राजी ने समाज को अपनी पारखी नज़र से देखा है और अपनी रचनाओं में उसकी सजीव एवं ईमानदार अभिव्यक्ति भी की है। उन्होंने समाज में व्याप्त सामाजिक आर्थिक एवं नैतिक मूल्यों को बड़ी गहराई से जाना और समझा। उनका अनुभव समाज के विभिन्न समुदायों के साथ बैठकर काम करते हुए समृद्ध हुआ है। रचना क्षेत्र में आने के पहले ही उन्होंने एक समाज सेविका के रूप में निम्न स्तर एवं कारखानों में काम करनेवाली स्त्रियों के संगठनों से जुड़कर काम किया था। वहाँ से उनके रचना-व्यक्तित्व को काफी ऊर्जा और मर्मस्पर्शी अनुभव प्राप्त हुआ। उनकी रचनाएँ अनुभव वैविध्य और अनुभूति-विस्तार की ओर संकेत करती हैं। उनका रचना-संसार केवल स्त्री समस्याओं तक सीमित नहीं, बल्कि घर बाहर और समाज तीनों उसमें उपस्थित हैं। केवल एक रचनाकार के रूप में नहीं एक समाज सेविका के रूप में, खास तौर से झोंपड़ पट्टी के श्रमिक लोगों में चेतना पैदा करने की दृष्टि से उनका खास महत्व है। आन्दोलनोन्मुखी संगठनों से इनका गहरा नाता है। महानगरीय निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवेश की यथावत् अभिव्यक्ति अपनी सम्पूर्ण हार्दिक सहानुभूति के साथ उनकी रचनाओं में देखने को मिलती है। चित्राजी ने सामाजिक जीवन के प्रति प्रतिबद्धता को जीवन्तता के साथ उजागर किया है। उन्होंने

महानगरीय जीवन के निम्न और मध्यवर्गीय चरित्रों को लेकर उनके अन्तर्दन्द्वों को विश्लेषित करके प्रस्तुत किया है। उनमें व्याप्त यांत्रिकता, संत्रास, भय, अपरिचितता-बोध, असुरक्षा का भाव आदि की भी उन्होंने सही अभिव्यक्ति की है। शोषण से मुक्त होने के लिए नारी का जो संघर्ष है उसको को भी उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। आगे की पंक्तियों में इस सृजनशील महिला रचनाकार और उनके रचना-संसार का संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा।

जन्म और शिक्षा

10 दिसंबर 1944 को चेन्नई में चित्राजी का जन्म हुआ। उनका पैतृक स्थान निहाली खोडा जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश) है। चित्राजी की प्रारंभिक शिक्षा पैतृक गाँव निहाली खोडा से लगे गाँव भरतीपुर की कन्या पाठशाला में हुई। पूना बोर्ड से हायर सेंकन्डरी भी पास हुई। शेष पढ़ाई मुम्बई विश्वविद्यालय तथा स्नातकोत्तर पढ़ाई पत्राचार पाठ्य-क्रम के द्वारा एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय मुम्बई से सम्पन्न हुई। चित्रकला में गहरी अभिरुचि होने के कारण जे.जे. स्कूल ऑफ आर्टस में फाइन आर्टस का भी अध्ययन किया।

पुरस्कार - सम्मान

उनके बहुचर्चित उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' को सहकारी विकास संगठन मुम्बई द्वारा 'फणीश्वरनाथ रेणु' सम्मान मिला। हिन्दी अकादमी दिल्ली ने उन्हें सन् 1996 के साहित्यकार सम्मान से सम्मानित किया। उनका दूसरा उपन्यास 'आवाँ' पर सहस्राब्दी का पहला अंतर्राष्ट्रीय 'इन्दु

शर्मा कथा सम्मान' लंदन (इंग्लैंड) में पाने का गौरव भी उनको प्राप्त हुआ। 'विकास' काया फाउंडेशन द्वारा सामाजिक कार्यों केलिए 'बिड़ला सम्मान' और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण सम्मान' से प्राप्त हुआ। 2000 में 'व्यास सम्मान' भी सम्मानित हुई है। चित्रकला पर भी उन्हें कई पुरस्कार मिले हैं।

कार्यक्षेत्र

चित्रकला के प्रति उनकी गहरी चाव थी। इसलिए वे चित्रकला में अधिक ध्यान देने लगीं। मि. जोशी चित्रकला में उनके शिक्षक थे। बाद में सोमैया कालेज मुम्बई में पढ़ाई के दौरान श्रमिक नेता दत्ता सामंत के सम्पर्क में आकर श्रमिक आन्दोलनों से जुड़कर श्रमिकों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया। अब वे पूर्ण रूप से स्वतंत्र लेखन में और समाज सेविका के रूप में कार्यरत हैं।

प्रभाव और प्रेरणाएँ

चित्राजी का कलाकार सबसे पहले एक चित्रकार के रूप में निखरा था। रंगों से उन्होंने अपनी एक अलग दुनिया का सृजन किया। छोटी उम्र में गाँव में रहकर ग्रामीण जीवन की सारी गति-विधियों और सुख दुःखों का अनुभव उन्होंने किया। बचपन से ही उनको पारिवारिक विसंगति और उससे जन्य तनावों से खूब परिचय मिला। मन में लगनेवाली हर चोट ने उनके ह्रदय में घोर धक्का लगाया। परिवार में भोगे तनावों को उन्होंने कागज़ पर पुनः सृजन किया। फिर मानसिक तनावों के साथ सामाजिक विसंगतियों से उपजी तिलमिलाहट को रंगना शुरु कर दिया। चित्रकला शिक्षक मि. जोशी उनके चित्रों को देखकर विस्मय से भर उठते

थे। चित्रकला में उनकी इतनी चाव थी कि दिये गये विषय को छोड़कर कुछ और बनाती रही। चित्रकला की प्रतियोगिताओं में उनको कई पुरस्कार मिले। महाराष्ट्र की चित्रकला परीक्षाएँ भी उन्होंने उत्तीर्ण कीं। उनके शिक्षक जोशी जी ने उन्हें खूब प्रोत्साहित किया और उनके मन में ठीक बेन्द्रे और बी. प्रभा के समान ख्याति प्राप्त करने की इच्छा हुई। उनके चित्रों की कई प्रदर्शिनियाँ भी हुई हैं।

साहित्य सृजन का प्रारंभ कालेज में हो रही कहानी प्रतियोगिता के सिलसिले में हिन्दी प्रोफेसर अनन्त राम त्रिपाठी के आग्रह पर चित्रा ने लिखा। कथा प्रतियोगिता के निर्णय केलिए 'सारिका' के तत्कालीन सम्पादक चन्द्रगुप्त विद्यालंकार आये थे। किसी कारण से वे प्रतियोगिता में कहानी पढ़ न सके। लेकिन अध्यापकजी की राय में कहानी अधिक परिपक्व थी। पुरस्कृत कहानी सारिका में उनके मित्र अवध नारायण मुद्गल को भेजने को कहा गया। सारिका के दफ्तर में कहानी पहुँचाने केलिए उनको वहाँ जाना पड़ा। वहाँ से मुद्गल जी से उनका परिचय हुआ। परिचय कालान्तर में घनिष्ठता में बदल गया। परिवारवालों द्वारा आपत्ति उठाए जाने के बावजूद उनका मन तनावग्रस्त रहा। उनके पिताजी पारिवारिक महत्ता को अधिक प्रधानता दे रहे थे। बैसवाडा के सूर्यवंशियों के खानदान की लड़की है। वहाँ की किसी लड़की के पाँव कभी अनुशासन से बाहर जाते हैं तो उसे बड़ी सतर्कता से कुए में ढ़केल दिया जाता है और साबित किया जाता है कि पानी खींचते समय अचानक कुए में फिसल गयी। उनके घर का वातावरण बिलकुल अलग रहा। घरवालों की नृशंसता पर चित्राजी का मन हमेशा विद्रोही रहा। घर की नौकरानी के घर से पानी पीने की कसूर केलिए उनको मार खानी पड़ी। लेकिन वे बाहर सभ्यता का मुखौटा ओढ़े

हुए थे। इन अन्तर्विरोधों और पाखंडों का सहन कर वे जी रही थीं। उस खानदान से परंपरा को नज़रन्दास करके वे अपना ब्याह करने का निर्णय कर बैठीं। वे अपनी भावनाओं और विचारों को परिवार केलिए छोड़ने केलिए तैयार नहीं थीं।

शादी के बाद घर और शहर छोड़कर दिल्ली में मन्नूजी और राजेन्द्र यादव के यहाँ जीने लगीं। वहाँ उन्होंने दूसरी कहानी 'रूना आ रही है' की रचना की। इसमें उन्होंने स्वार्थ लिप्सा में निरन्तर बौना होते मनुष्य जीवन को अंकित किया। इसी बीच आर्थिक दबाओं के कारण कैनवास और रंगों की दुनिया को छोड़ना पड़ा। साथ ही उन्हें यह भी मालुम हुआ कि अपने को अभिव्यक्त करने केलिए कागज़ और कलम का साथ बुरा नहीं है। बाद में कागज़ और कलम उनकी साँस बन गयी। बीच में उन्होंने कविता लिखना शुरु किया, और आधे रास्ते छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि कविताएँ उनकी अभिव्यक्ति की तीव्रता का समुचित माध्यम नहीं रहीं।

आर्थिक कठिनाई के कारण चित्रा जी और मुद्गल जी का जीवन अभावपूर्ण होने लगा। उनके पिताजी उसे कुछ देने को तैयार थे लेकिन चित्राजी ने इनकार किया। अवधजी ने कविता और कहानियाँ लिखना छोडकर एजेंसियों केलिए विज्ञापन लिखना शुरू किया। चित्राजी ने अनुवाद कार्य भी किया। बीच में लिखी गयी कहानियाँ डायरी में सुरक्षित रहीं। इसी बीच उसका परिचय महिलाओं की सामाजिक संस्था 'जागरण' से हुआ। वहाँ से उसका परिचय घर-घर में बर्तन घिसने और झाडू-पोंछकर आजीविका चलानेवाली अशिक्षित शोषित बाइयों से हुआ। यह संस्था बाइयों को उनके अधिकारों के प्रति सचेत करने और उनके अधिकार दिलाने केलिए कृत

संकल्प थी। संस्था के कई दायित्व थे जैसे उनके साथ हुई नाइनसाफियों के प्रति आवाज़ उठाना और उनका दाम्पत्य कलह सुलझाना, बच्चों को शिक्षा के प्रति बोध कराना, आवश्यकता पड़ने पर उनकेलिए कॉपी, किताब दाखिला की व्यवस्था करना आदि। इन सभी कार्यों की देख-भाल वे करती थीं। 'जागरण' केलिए कार्य करते समय उनको अपने ईद-गिर्द फैले झोंपड-पट्टी के नरक-सदृश्य जन-जीवन को निकट से देखने का अवसर मिला। उनका संपर्क उन लोगों से हुआ जो दिहाड़ी, भीख, पॉकेट-मारी, चोरी, देह-व्यापार, दारु, साग-सब्जी, ड्राइवरी, फेरी या सिनेमा टिकटों की ब्लाक परआजीविका खोजनेवाले थे। इन अनुभवों के साथ उनका परिचय दत्ता सामंत, पाटील आदि नेताओं के साथ हुआ जो मज़दूरों को कानूनी सहायता दे रहे थे और उनके जोशीले शब्द लउड़स्पीकरों से सुनकर पूरे धैर्य के साथ परिवर्तन का सपना देखती थीं। चित्राजी ने अपने मन में उभरे जीवन के कठिन क्षणों को कागज़ में लिखना शुरू किया। अवधनारायण मुद्गल जी उनके रचना-कार्य को आलोचना के साथ प्रोत्साहन देते रहे।

जीवन दृष्टि

"स्त्री क्षमता को उसकी देह से ऊपर उठकर स्वीकार न करनेवाले रूढ़ रुग्ण समाज को बोध कराने"[1] के लक्ष्य को स्वीकारते हुए चित्राजी अपने लेखन कार्य में रत हैं। 'जागरण' के प्रवर्तक के रूप में उन्होंने जो कुछ अनुभव किया उसकी सीधी अभिव्यक्ति उनकी तमाम रचनाओं में विद्यमान है। समाज में कार्यरत यूनियनों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता, अन्तर्विरोध

1 चित्रा मुद्गाल आवाँ पृ. 9

और उसमें अपराधी गिरोहों की ठेकेदारी को उन्होंने खूब देखा और अनुभव किया। उसका सही दस्तावेज़ है उनकी हर रचना और उनमें चित्रित पात्र। हर रचनाकार अपनी रचना प्रक्रिया के दौरान अकेला है। यों चित्राजी का रचना क्षेत्र समाज में शोषित, पीड़ित, पद-दलित, श्रमिकों और नारी की शोषित-स्थिति, अभावग्रस्त भूखे बच्चों और काम पर जानेवाले छोटे बच्चों की मानसिकता और उनकी बेबसी एवं दर्द आदि उनकी रचनाओं के विषय रहे। उनकी तमाम रचनाओं को पढ़ने पर यह मालूम हो रहा है कि चित्राजी इन लोगों के जीवन को समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहती है। कडे अनुभव के बिना गलि के लोगों की चिन्ता, विचार, भाषा और उनकी वेदना को पहचानना संभव नहीं। अन्य किसी लेखिका की रचना में इतना पद दलित, आत्मसंघर्ष से भरी नारी को देखा नहीं जा सकता। अभाव के कारण इनके पात्र क्या क्या कर बैठते हैं, जन्म लेने से जीवित रहने तक का अभिशाप को वे ढोते रहते हैं।

इनके पात्र जीवन संघर्ष में भी अकेले जूझकर खड़े रहने केलिए तैयार हैं। और जीवन की हर घटनाओं पर अपने आत्मबल से सामना करते हैं। 'विद्रोही नारी' उनकी रचनाओं में है, साथ ही माँ के प्यार में उसकी रक्षा केलिए काम पर जानेवाले बच्चे, आधुनिक सुख-सुविधा के बीच कहीं खो जानेवाले पति-पत्नी सम्बन्ध आदि का भी चित्र है। उनकी रचनाओं का केन्द्र-पात्र पुरुष नहीं है, नारी है। लेकिन यह नारी समाज की उच्च वर्ग की नहीं बल्कि निम्न स्तर की है।

रचना द्वारा चित्राजी इन शोषित पीड़ित समाज का दयनीय चित्र का अंकन करने के साथ शोषित पीड़ित नारियों की उन्नति और उनकी

सुरक्षा के प्रति उनका मन बेबस है। उनकी उस दमित स्थिति से उनको ऊपर उठाना और उचित वेतन और नैतिक सुरक्षा देना ये सब उनकी रचनाओं का लक्ष्य हैं। श्रमिकों के प्रति होनेवाले अनैतिक बातों के प्रति वे हमेशा जागरूक हैं।

अपने निश्चय पर अटल रहना चित्राजी के व्यक्तित्व की विशेषता है। अवध नारायण मुद्‌गल से परिचय होने के बाद उनके प्रभाव से उनके कला-हृदय को खूब प्रोत्साहन मिला और निरन्तर साहित्य सृजन की प्रेरणा प्राप्त हुई। साथ ही उनकी कड़ी आलोचना भी अवध जी ने की। बाद में जब 'जागरण' द्वारा समाज के निचले जीवन तक पहुँची, तब से उन्हें ऐसा विचार हुआ कि अपनी क्षमता के अनुसार इन लोगों के जीवन को समाज के सामने प्रस्तुत करना है। घर-घर में झाडू-पोंछा कर जीवन बितानेवाले और विविध काम करनेवालों को अपने अधिकारों और आवश्यकताओं के बारे में अवगत कराना है। इस के लिए वे 'जागरण' से अधिकाधिक अनुभव अपनाती रहीं। आखिर लोग जब उनके पात्रों का परिचय प्राप्त कर उन्हें सहायता देने केलिए तैयार हो जाने लगे। चित्राजी के पात्र कल्पित नहीं, जीवित हैं। उनके विचार, व्यवहार, कार्यक्षेत्र आदि उनकी रचना के विषय रहे। इन पात्रों में भी व्यक्तित्व है जीने की अभिलाषा है। समाज और कानून से निरन्तर संघर्षरत चित्राजी ने उन्हें समझने की पूरी कोशिश की। आधुनिक जीवन के चकाचौंधी प्रभाव, नगरीकरण की समस्या, मीड़िया का प्रभाव आदि से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएँ भी उनकी रचना का विषय रहीं। लेखन के क्षेत्र में जो ज़िम्मेदारी लेखक पर है चित्राजी ने उसे पूरी तरह निभाया है।

मन के विद्रोह और प्रतिक्रिया को व्यक्त करने केलिए ही चित्राजी ने लेखन-कार्य को अपनाया। उन्होंने अकेलापन, पीड़ा और आर्थिक दबावों से प्रभावित होकर अपने को भी बेचनेवाली नारी के जीते-जागते जीवन को प्रस्तुत किया। झोंपड-पट्टी के बच्चों का जीवन, जिन्हें न कोई प्रेम करता है, न किसी से प्रेम मिलता है। छोटी उम्र में ही ये घर की पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले लेते हैं। अपनी रचनाओं में ऐसे पात्रों को प्रस्तुत कर चित्राजी ने एक ऐसी दुनिया को हमारे सामने प्रस्तुत किया है कि पाठक सोचने केलिए बाध्य होता है कि ऐसा भी जीवन है।

उनकी कहानियाँ झोंपड़-पट्टी के जीवन का जीता-जागत सबूत हैं, जिसे अधिकांश रचनाकारों ने अनदेखा कर दिया है। वहाँ के जुआड़ी, शराबी, दारू पीके पत्नी और बच्चों को पीटनेवाले, विद्रोही बच्चे आदि का चित्र यथार्थ को छोड़े बिना उन्होंने अभिव्यक्त किया है। उनकी रचना सिर्फ यथार्थ पर आधारित है, जिनमें जीवन है, प्रतीक्षा से पूर्ण स्त्री भी है। झोंपड-पट्टी की जिन्दगी को जन-साधारण तक पहूँचाने पर उसकी सहायता केलिए जो कुछ मिला चित्राजी उसे ठीक हाथ पर सौंप देती रहीं। "उनकी रचनाओं का उद्देश्य यही रहा कि अशिक्षा, शोषण और रूढ़ियों के अंधकार में जकड़ी हुई झुग्गी-झोंपडी की स्त्रियाँ अपने पावों को पहचान सकें और उनके नीचे की ज़मीन तलाश सकें।"[1]

चित्राजी अब भी अपना लेखन कार्य सक्रिय रूप से ज़ारी करते हुए भी एक अच्छी समाज सेविका की भूमिका निभाती आ रही हैं।

---

1. चित्रामुद्गाल जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं पृ. 11

रचना-परिचय

हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों की एक सशक्त एवं जीवन्त परंपरा है। उनमें चित्रा मुद्गल का स्थान शीर्षस्थ है। नारी जीवन और नारी मनोविज्ञान को जीवन के हर स्पन्दन में महसूस करते हुए वे अपनी लेखनी को अधिकतर 'नारी' पर केन्द्रित करती हैं। चित्राजी का साहित्य बहुआयामी है।

अब तक चित्राजी के तीन उपन्यास, तेरह कहानी संग्रह, छह सम्पादित कहानी संकलन और पाँच बाल साहित्यिक रचनाएँ आ चुकी हैं। साथ ही उन्होंने अनुवाद और टेलिफिल्म 'वारिज़' का निर्माण भी किया। उपन्यासों में सर्वप्रथम 'एक ज़मीन अपनी' 'आवाँ' और 'गिलिगडु'। बाल साहित्य में 'सबक' 'जंगल का राजा' 'माधवी कन्नगी' 'जीवक' 'मणिमेखलै' और 'देश देश की लोक कथाएँ' और 'नीतिकथाएँ' हैं। सम्पादित कृतियाँ हैं 'असफल दाम्पत्य की कहानियाँ' 'दूसरी औरत की कहानियाँ', और 'टूटते परिवारों की कहानियाँ' भीगी हुई रेत, पुरस्कृत कहानियाँ, देह-देहरी। इसके अतिरिक्त दूरदर्शन केलिए लघु फिल्म 'वारिज़' का निर्माण किया और भारतीय तथा अन्य भाषाओं की कहानियों का अनुवाद भी प्रकाशित किया है जैसे 'तहखानों में बन्द आइनों के अक्स' 'विचार' 'बयार उनकी मुट्टी में'।

उपन्यास

चित्राजी ने कुल मिलाकर तीन उपन्यासों का प्रकाशन किया है 'एक ज़मीन अपनी' (1990) 'आवाँ' (1999) और 'गिलिगडु' (2002)। उसमें दो उपन्यास स्त्री जीवन पर केन्द्रित हैं। विज्ञापन एवं मॉडलिंग के

क्षेत्र में होनेवाले नारी शोषण, पुरुष-प्रधान समाज की विवशता, लक्ष्य भ्रष्ट ट्रेड-यूनियनों का यथार्थ, वृद्ध जीवन की समस्याएँ आदि को चित्राजी ने मुख्य रूप से अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है।

उनके अपने शब्दों में 'साहित्य से लोक और लोक हित खारिज हो रहा है।' उनकी रचनाओं में समाज अपनी रूपता-विरूपता की भीतरी तहों को उद्‌घाटित करते हुए सफल-असफल रूप उपस्थित है। चित्राजी का रचनात्मक प्रभाव पाठक के मर्म को गहरे से उद्वेलित करता रहा है। बम्बई नगर के व्यस्त तथा तनाव पूर्ण जीवन को लेखिका ने कई रचनाओं में प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने स्त्री पात्रों को अपनी मर्यादित सीमा में रखकर स्वतन्त्रता तथा अधिकार दिलवाने का प्रयत्न किया है। चित्रा मुद्‌गाल को निम्नवर्गीय नारी, विशेषतः स्लम की ज़िन्दगी में संघर्ष करती नारी के विविध रूपों के चित्रण में विशेष सफलता मिली है। चित्राजी ने अपनी रचनाओं में उच्च, मध्यवर्ग की नारी को लेकर निम्न श्रेणी की नारी तक के भीतरी और बाहरी जीवन का उद्‌घाटन किया है।

एक ज़मीन अपनी

'एक ज़मीन अपनी' चित्राजी का सर्व-प्रथम उपन्यास है। इसमें आज की संघर्षशील नारी के विविध रूप, समस्याएँ और समाज में उसका बनता मिटता स्थान, उसका अपना झुकाव, पुरुष समाज के प्रति उसका अपना रवैया आदि अनेक पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है। निम्न या मध्यवर्ग से विज्ञापन जगत में आयी नारी तथा उच्चवर्ग से आयी नारी के संस्कारों तथा सोच में अंतर है। चित्राजी ने यहाँ बिल्कुल नया विषय उपस्थित किया है। विज्ञापन की दुनिया में पिसती हुई स्त्री, जिसे भूख या

घर की आर्थिक ज़रूरतें विज्ञापन की मंडी में ले जाती हैं। नारी को एक बिकाऊ चीज़ बनाकर उसकी अस्मिता खो देने का चित्र इस उपन्यास में है। यहाँ नारी को बेचनेवाला आधुनिक सभ्य पुरुष वर्ग और उसकी चाल में फंसकर तड़पनेवाली विवश नारी का चित्र इसमें हैं। आज की संघर्षशील नारी पुरुष द्वारा निर्धारित मूल्यों के प्रति क्या रुझान रखती है इसका विश्लेषण इसमें है। 'एक ज़मीन अपनी' के स्त्री विमर्श में एक नए भावुक, समझदार और जिम्मेदार बुद्धिजीवी की अवधारणा की बदलती नज़र नज़र आती है। उपन्यास बम्बई जैसे महानगर के व्यस्त तथा तनावपूर्ण जीवन को भी उभारता है। फिल्म नगरी होने के कारण विज्ञापन जगत का अधिकांश काम इसी नगर में होता है। उपन्यास में महानगरीय जीवन की समस्याएँ उभरी हैं। महानगर में सामूहिक जीवन का नितान्त अभाव है। अंकिता और नीता नामक पात्रों के माध्यम से आधुनिकता और सभ्यता के संघर्ष का चित्र भी इसमें है। आधुनिक सामाजिक जीवन में नारी की जो मानसिकता है उसके आधार पर चित्राजी ने यह उपन्यास रचा है। उपन्यास का मतलब जीवन की कुछ वास्तविक स्थितियों को सामने रखना है। विज्ञापन जगत की चकाचौंध भरी पृष्ठभूमि में इस कृति की रचना हुई है। उपन्यास के पात्र अपना पृथक रूप लिए हुए हैं। इसमें अस्तित्व की व्याख्या या विश्लेषण नहीं है, अपितु उसकी खोज का सार्थक प्रयास है।

'एक ज़मीन अपनी' में निम्न वर्ग के पात्रों के जीवन का अध्ययन है। साथ ही नए ज़माने की रफ्तारों में फंसी जिन्दगी की मज़बूरियों के तहत अपसंस्कृति के गर्त में धंसते जा रहे आधुनिक मानवीय मूल्यों को स्तब्ध कर देनेवाली तस्वीर भी गहरी संवेदना से उभरी है। उपन्यास में पहली बार बीसवीं सदी की ओर तेज़ी से उन्मुख होनेवाले भारतीय समाज

की मानसिकता को पूरी जागरूकता और संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। विज्ञापन जगत की पृष्ठभूमि के माध्यम से आज की संघर्षशील नारी का सही चित्रण भी इसमें है। इस उपन्यास के द्वारा चित्रा मुद्गल ने विज्ञापन जगत में होनेवाले नारी शोषण को सार्थक औपन्यासिक परिणति देकर एक सफल उपन्यास लेखिका के रूप में अपने को स्थापित कर लिया है।"[1]

आवाँ

'आवाँ' चित्राजी का दूसरा उपन्यास है। उपन्यास का कथानक सामाजिक होते हुए भी परिवेश ट्रेड यूनियन, राजनीति और विज्ञापन है। मज़दूर आन्दोलन और उसके परिणामों और उसकी सफलता और असफलता की चर्चा इसमें मिलती है। उपन्यास का शीर्षक 'आवाँ' प्रतीकात्मक है जो मनुष्य के अन्दर दहकती आँच (अग्नि) है। उपन्यास की रचना बम्बई की पृष्ठभूमि में की गयी है। आवाँ में मज़दूर राजनीति के अन्तर्विरोध, आपसी वैमनस्य, प्रतिद्वन्द्विता, पूँजीपति वर्ग के शोषण, छल-छद्म, हथकण्डे आदि चित्रित हैं। नमिता इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है जो पढ़ी-लिखी है। उसका चरित्र संघर्षशील महत्वाकांक्षी, आधुनिक मूल्यों के प्रति सचेत युवती के रूप में उभरा है। अन्ना साहब के माध्यम से तथाकथित मज़दूर नेताओं एवं राजनीतिक नेताओं के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। नारी शोषण का जिक्र इस उपन्यास के आरंभ से अन्त तक है।

उपन्यास में घर परिवार और समाज की समस्याओं और दुरवस्थाओं, विसंगतियों और विद्रूपताओं को जीवन्त शैली में चित्रित किया गया है।

---

1 डॉ. रामचन्द्र तिवारी हिन्दी का गद्य साहित्य पृ. 265

नये बिम्बों एवं प्रतीकों के द्वारा प्रसंगों के बीच प्रसंग को गूँथने का प्रयास लेखिका ने किया है। 'आवाँ' जनजीवन और लोक परंपरा पर लेखिका की गहरी पकड़ का परिचायक है। 'आवाँ' के पात्र हमारे आसपास के हैं। यह रचना आधुनिक नारी की वैचारिकता और व्यवहार पर प्रश्नचिह्न लगाती है। इसमें पूँजीवादी हथकण्डों और मज़दूर संगठनों की तीव्रता और साजिश आदि को प्रस्तुत किया गया है। फालिज़ से अपाहिज देवी शंकर पाण्डे की पुत्री नमिता परिवार की दाय संभालने केलिए बाबा ज्वेलर्स में काम करने लगती है। वहाँ से आभूषण के बड़े व्यापारी शादीशुदा संजय कनोई से सम्बन्ध जुडता है। उसके सम्बन्धों के टूटने के साथ पुरुष की स्वार्थ लिप्सा, अवसरवादिता और दायित्व हीनता का भी उद्घाटन होता है।

आज की राजनीति और नारी के दयनीय जीवन का समावेश चित्रा जी ने इसमें किया है। उपन्यास अन्य समकालीन सामाजिक प्रश्नों को भी प्रस्तुत करता है। नारी के भावों, विचारों, एवं उनकी समस्याओं को लेखिका ने अधिक सफलता के साथ शब्दबद्ध किया है। नमिता को आखिर अपनी सौतेली माँ के पास लौटते हुए दिखाकर लेखिका ने संघर्ष की मूल नैतिक भूमि की ओर वापसी का संकेत किया है। इस प्रकार आग की तरह झुलसानेवाली आज की मानवीय नियती के विकल्प की ओर ईशारा किया गया है।(1)

गिलिगडु

'गिलिगडु' चित्राजी द्वारा लिखित तीसरा उपन्यास है। इसमें लेखिका ने बदलते जीवन मूल्यों को परिभाषित करने के साथ बुजुर्गों के जीवन की

---

1. रामचन्द्र तिवारी हिन्दी का गद्य साहित्य पृ. 264

समस्याओं की चर्चा करते हुए, आधुनिक व्यस्त जीवन में अकेले बन पडे, मनुष्य के दर्द को व्यक्त किया है। लेखिका के अनुसार 'गिलिगडु' मलयालम भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'चिडियाँ'। 'गिली' यानि चिडिया, गडु का तात्पर्य बहुवचन से है। उपन्यास के प्रमुख पात्र रिटयर्ड केनल विष्णुनारायण स्वामी अपनी जुडुवी पोतियों कुमुदिनी और कात्यायनी को गिलिगडु सम्बोधित करते हैं। केनल स्वामी और जस्वंत सिंह नामक दो पात्रों के ज़रिए उपन्यासकार ने आधुनिक शिक्षित समाज ने जिस प्रकार बूढे माँ-बाप को अनावश्यक और बेकार समझकर उनको अकेलापन के दर्द में धकेल दिया है, उसका प्रस्तुतीकरण है। घर पर उन्हें कुत्ते की जगह भी नहीं मिलती। वर्तमान युग में बूढे अपने बच्चों और पोतों के साथ रहने पर भी अलग जीवन जीते हैं। केनल स्वामी को अपने घर पर केवल एक ही बुजुर्ग व्यक्ति मानता है और वह है घर का कुत्ता टोमी। केनल स्वामी अकेले एक फ्लैट में जीते हैं। वे तो अपने अकेलापन में दुःखी न रहकर अपनी उपेक्षित जिन्दगी के बीच एक काल्पनिक जगत की सर्जना करके अपने को सुखी और खुशी से जीने का प्रयत्न करते हैं।

जसवंत सिंह और केनल स्वामी का परिचय इतना दृढ़ बन गया कि वे आपस में हर दिन मिलते रहे। जिस संकल्प जगत का सृजन कर केनल स्वामी ने जस्वंत सिन्ह को सुखी रखने की कोशिश की थी उसका रहस्य उनकी मृत्यु के बाद खुल जाता है, तब जस्वंत सिंह अपने जीवन के बारे में खुद निर्णय लेने को सक्षम हो गये।

चित्राजी ने इस उपन्यास में पारिवारिक जीवन में सिमिटते घटते मूल्यों की प्रस्तुति की। लेखिका ने यह दिखाया कि आज के भरे-पूरे

परिवार में भी बुजुर्गों की स्थिति कुत्तों से भी बदत्तर है। इसप्रकार उन्होंने वृद्धजीवन के प्रति संवेदनशील नज़रिया उपस्थित किया।

कहानी संग्रह

चित्रा मुद्गल वह महिला रचनाकार हैं जिन्होंने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के दायरे से बाहर निकलकर महानगरों में संघर्षरत नौकरीपेशा नारियों एवं झोंपड-पट्टियों में घिसटते निम्नवर्गीय लोगों के जीवन का सजीव एवं यथार्थ चित्र अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया। चित्राजी के अब तक चौदह कहानी संकलन प्रकाशित हैं 'जहर ठहरा हुआ' (1980), 'लाक्षागृह' (1982), 'अपनी वापसी' (1983), 'इस हमाम में' (1987), 'ग्यारह लम्बी कहानियाँ' (1987), 'जगदम्बाबाबु गाँव आ रहा है' (1992), 'चर्चित कहानियाँ' (1994), 'मामला आगे बढेगा अभी' (1994), 'जिनावर' (1996), 'केंचुल' (2001), 'भूख' (2001), 'लपटें' (2003), 'बयान' (2004) और 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' (2006)। चित्रा मुद्गल ने यद्यपि एक उपन्यासकार के रूप में अपनी क्षमता का परिचय दिया है तो भी उनकी असली पहचान एक कहानिकार के रूप में है। उन्होंने अपनी अधिकांश कहानियों में पारिवारिक जीवन के अलावा अन्य सामाजिक राजनीतिक मुद्दों को भी उठाया है। विषय की विविधता उनकी कहानियों को अलग विशिष्टता प्रदान करती हैं।

ज़हर ठहरा हुआ (1980)

'जहर ठहरा हुआ' चित्राजी का एक उल्लेखनीय कहानी-संग्रह है। इसमें परम्परागत रूढियों के खिलाफ और अपनी स्वतंत्रता केलिए संघर्षरत नारियों को देखा जा सकता है। चित्राजी की प्रारंभिक कहानियों में झोंपड-

पट्टी की जिन्दगी में लड़नेवाली नारियों के चित्र मौजूद हैं तो इस संकलन में संकलित कहानियों में उनका कथ्य वहुवर्णी हो जाता है। "ज़हर ठहरा हुआ कहानी इसकी अच्छी मिसाल है। यह दरअसल इस संकलन की प्रतिनिधि कहानी साबित होती है।

लाक्षागृह (1982)

'जहर ठहरा हुआ' के बाद चित्रा मुद्गल का दूसरा कहानी-संग्रह है 'लाक्षागृह'। इसमें वर्गीय सीमाओं का अतिक्रमण कर निम्न वर्ग के पक्षधर रचनाकार के रूप में चित्राजी ने अपनी पहचान बनायी है, खासकर बम्बई के झोंपड़-पट्टी जीवन की सच्चाईयों और त्रासदियों के चित्रण में तो उनका कोई सानी नहीं है। बम्बईया हिन्दी का उत्कृष्ट रूप चित्राजी की कहानियों में देखा जा सकता है। झोंपड-पट्टी और शानदार फ्लैटों के जीवन के द्वन्द्व को उभारनेवाली कहानी 'मामला आगे बढेगा अभी' अत्यन्त मार्मिक है। झोंपड-पट्टी के जीवन पर केन्द्रित उनकी कहानी 'केंचुल' काफी समय तक मन को अस्वस्थ करती रहती है। इसमें संकलित शिनाख्त हो गई' चित्राजी का और एक महत्वपूर्ण कहानी है। इसमें डाँट खाकर भागे हुए बच्चे की माँ की अकुलाहट और पीड़ा का मार्मिक चित्रण हुआ है। संग्रह की नामधर्मी कहानी 'लाक्षागृह' प्रौढ़ वय की युवती के विवाह की समस्या पर केन्द्रित है और वह अपने ढंग से इस स्वार्थी संसार पर चोट करती है।

अपनी वापसी

'अपनी वापसी' में संकलित कहानियाँ पुरानी लीक से हटकर कामकाजी नारी का भावात्मक सम्बन्ध एवं संघर्ष, उसके विभिन्न परिप्रेक्ष्य

मानवीय सम्बन्धों के नए बिन्दु, बेकार नवयुवक की मानसिकता और परिवार जनों का उसके प्रति कटु व्यवहार आदि को प्रस्तुत करती हैं। ये कहानियाँ व्यापक धरातल पर लिखी गयी है। इनमें कुछ कहानियाँ ऐसी है जो महानगरीय जीवन में सम्बन्धों के टूटने की तस्वीर खींचती हैं। ये कहानियाँ कुछ प्रश्नों को सामने लाती है।"[1] संघर्षशील उच्च, मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय नारी परम्परागत ढाँचे के बीच कसमसाती, उसकी खराबियों को उजागर करती हुई, खुद को उससे अलग करके समाज में अपनी पहचान कायम कर रही है। ऐसे पात्रों का सृजन चित्राजी ने इसमें संकलित कहानियों में किया है। इसमें संकलित 'अपनी वापसी' 'मोर्चा पर' 'केंचुल' 'शून्य' 'लिफाफा' 'गर्दी' 'दरमियान' आदि कहानियाँ इसके प्रमाण हैं। तथा-कथित महिला लेखन के चालू और बोल्ड रवैये से अलग, विभिन्न परिस्थितियों से जूझती, पिसती और उबरती महिलाओं के यथार्थ से जुड़ी हुई कहानियाँ हैं 'अपनी वापसी' में।[2]

कहानी के कलेवर में चित्राजी ने जीवन की विभिन्न समस्याओं को बड़ी सर्तकता से समावेश किया है।

इस हमाम में (1986)

इस संकलन की बहुत बड़ी विशेषता है कि लेखिका द्वारा अपने निजी अनुभव को संस्मरण की शक्ल देने की कोशिश की है। इस संग्रह की कहानियों में निरन्तर रीतते सम्बन्ध हैं, विवशताओं के कारण व्यक्ति असंस्कृत होने की अभिव्यक्ति भी है। इसमें 'भूख' 'चेहरे' 'इस हमाम

---

1 डॉ. ज्ञानवती अरोडा समकालीन हिन्दी कहानी के यथार्थ के विविध आयाम पृ. 107
2. साक्षात्कार मार्च 1985 पृ. 97

में' 'लेन' 'फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती'; 'ब्लेड़, ताशमहल, जिनावर आदि कहानियाँ हैं। इस संग्रह की कुछ कहानियाँ अपने विशिष्ट अनुभव क्षेत्र के बाहर जाती हैं और अपने समय-सन्दर्भों से जुड़कर अपने रचनात्मक अनुभवों के दायरे को एक प्रकार विस्तार देती हैं। इस संग्रह की कहानियों का प्रभाव हमेशा एक सा नहीं पड़ता।[1] इस प्रकार 'इस हमाम में' की अधिकांश कहानियाँ शीर्षक के अनुरूप ही अपने समय के आइने में आदमी की स्थिति की प्रतिछवि है।

ग्यारह लम्बी कहानियाँ

समकालीन जीवन स्थितियों में मनुष्य के भीतरी संसार का उद्‌घाटन करनेवाली कहानियों का संकलन है 'ग्यारह लम्बी कहानियाँ।' इसमें 'शून्य', 'केंचुल' 'अनुबन्ध' 'बन्द' 'दशरथ का वनवास' 'मोर्चा पर', 'दरमियान', 'दुल्हिन' 'अग्निरेखा' 'बावजूद इसके', 'चेहरे' 'जिनावर' आदि कहानियाँ संकलित है। इन कहानियों के माध्यम से कहानिकार ने समसामयिक सन्दर्भों की प्रायः सभी समस्याओं पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। इस संकलन की कहानियाँ महानगरों के गतिशील जीवन के अनुकूल शीघ्र निर्णय लेती कामकाजी मध्यवर्गीय नारी के व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पहलुओं को रेखांकित करती हैं। नारी जीवन की विविध तनावपूर्ण अवस्थाएँ को 'दरमियान' 'शून्य' आदि कहानियों में चित्रित हैं।

चित्रा मुद्‌गल ने अपनी कहानियों द्वारा महिलापन से बचाकर सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक आदि जीवन के सभी क्षेत्रों पर दृष्टि

---

1 डॉ. मधुरेश हिन्दी कहानी अस्मिता की तलाश पृ. 207

ड़ाली। इन कहानियों में उनकी भाषा भी अत्यन्त पारदर्शी, बिम्बात्मक और मनोदशाओं की सूक्ष्म थरथराहट को उसके सारे संगीत और लयात्मकता के साथ प्रस्तुत है। इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ भिखारी, बाइयों, जमादारिन, मोटोर ड्राईवर, आदि पर केन्द्रित हैं। ये पात्र कभी कभी परिचित क्षेत्र का अतिक्रमण भी करते हैं पर उनकी अपनी सीमाएँ बहुत साफ हैं। वे सब ऐसे ही पात्र हैं जिन्हें लेखिका ने जीवन प्रवाह में उतर और डूबकर नहीं, अपने रोज़मरा के संपर्क में पाया है।"[1]

जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं (1992)

इसकी नगदंबा बाबू गावआ रहे हैं की रचना चित्राजी ने अपने निजी जीवन के कटु यथार्थ एवं दुःखों के आधार पर की है। इसमें कहानीकार ने अपने रचना-कर्म को पारिवारिक, सामाजिक सन्दर्भों को अलग कर राजनैतिक क्षेत्र के छल एवं नेताओं की अवसरवादिता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। जगदम्बा बाबु उन तमाम नेताओं का प्रतीक है जो वोट पाने केलिए आम लोगों को कुछ देते रहते हैं और जब काम निपटाने पर दी हुई मदद को वापस लेते हैं। जगदम्बा बाबु आज के तथाकथित मक्कार नेता, रंगे हुए सियार एवं राजनीति के मंजे हुए खिलाड़ी आदि का प्रतिनिधि है। इसमें लेखिका ने निर्धानों एवं विकलांगों तक को भी शोषण का हथियार बनानेवाले राजनैतिक नेताओं की राजनीति को बहुत गहराई से उद्घाटित किया है। राजनीतिक क्षेत्र में नेता लोगों के कुचक्रों, अत्याचारों, अवसरवादिताओं का पर्दाफाश करने में यह कहानी अत्यन्त सफल हुई है।

---

1 डॉ. मधुरेश हिन्दी कहानी अस्मिता की तलाश पृ 212

इस संग्रह की अन्य कहानियाँ हैं 'मुआवज़ा' 'सौदा' 'अभी भी' 'ताशमहल' 'प्रमोशन' 'हस्ताक्षेप' 'बेईमान' और 'लकडबग्घा'। इसमें समकालीन परिस्थिति में नारी जीवन के उत्पीड़न आदि मुखर हुआ है। आज की नारी के स्वाभिमान, संघर्षशीलता, विद्रोह आदि कहानी में विशेष रूप से उद्‌घाटित हुए हैं।

चर्चित कहानियाँ (1994)

'चर्चित कहानियाँ' चित्राजी की कहानियों का सचमुच प्रतिनिधि संकलन है। चित्राजी ने इन रचनाओं द्वारा दबे-कुचले इनसान और खासकर शोषित स्त्री की विडम्बनात्मक स्थिति को उकेरने में अपनी सहानुभूति की कलम चलायी है। कहानीकार खुद उस विडम्बनात्मक स्थिति की भोक्ता है। इसमें जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं, 'अपनी वापसी' 'भूख' 'प्रेतयोनी' 'जिनावर' 'शिनाख्त हो गयी' 'लकडबग्घा' 'पाली का आदमी' 'मामला आगे बढेगा अभी' 'दुलहिन' 'त्रिशंकु' आदि श्रेष्ठ कहानियाँ संकलित हैं। निम्न मध्यवर्गीय नारी की संघर्ष गाथा, अनछुए मानवीय सम्बन्ध, कामकाजी नारी की स्थिति और समस्याएँ, मातृ-हृदय की परेशानियाँ आदि इस कहानी संग्रह का मुख्य कथ्य है।

चित्रा मुद्‌गल की कहानियों में आधुनिक मानव की पूरी ज़िन्दगी सच्चाई के साथ मिलती है। इसमें संकलित कहानियाँ जीवन के विभिन्न स्तर का प्रतिनिधित्व करती हैं। राजनीति, पारिवारिक समस्या, आर्थिक समस्या, मन का तनाव झोंपड-पट्‌टी के बच्चों का जीवन नारी जीवन के विभिन्न सन्दर्भ आदि प्रायः सभी विषयों का समावेश कहानियों में किया गया है।

चित्राजी ने अपनी रचनाओं के ज़रिए व्यापक परिप्रेक्ष्य में निम्न वर्ग की पक्षधर रचनाकार के रूप में अपनी शिनाख्त बनायी है। उन्होंने अपने आसपास के परिवेश में बिखरे हुए साधारण कथानकों की असाधारण अभिव्यक्ति की है। महानगरीय निम्न मध्यवर्गीय जीवन की सही अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में है। 'प्रेतयोनि' माँ-बेटी के रिश्ते को लेकर रची गयी है। इसमें दो परम्परा की टकराव है। माँ और बेटी समाज के दो पक्षों को प्रस्तुत करती हैं। भूख कहानी में माँ लक्ष्मी की विवशता मन में चोट लगानेवाली है। 'लकडबग्घा' में विधवा जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है। यों इस संकलन की सारी कहानियाँ समाज में व्याप्त विद्रूपताओं, अपसंस्कृति एवं अमानवीय कुकृत्यों को रेखांकित करनेवाली हैं।

मामला आगे बढेगा अभी (1995)

'मामला आगे बढेगा अभी' नामक संग्रह की सभी कहानियाँ 'लाक्षागृह' और 'अपनी वापसी' में संगृहीत हैं। पुनः-पाठन के सन्दर्भ में कथा में कुछ परिवर्तन किया गया, इसलिए इन कहानियों को दूसरे संग्रह में संग्रहित किया गया। इस संग्रह की कहानियाँ कुछ ऐसी कहानियाँ हैं जो परिवार को केन्द्र में रखकरक लिखी गयी हैं। आज समाज में परिवार का महत्व एवं उसकी सत्ता गायब हो रही है। चित्राजी मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन की चतुर चित्रकार हैं। इस संकलन में 'मामला आगे बढेगा अभी' 'अग्निरेखा' 'लाक्षागृह' 'गर्दी' 'शून्य' 'मोर्चे' 'अपनी वापसी' 'शिनाख्त हो गई है' 'पाली का आदमी' 'त्रिशंकु' 'दरमियान' आदि कहानियाँ संकलित हैं। 'लाक्षागृह' 'मामला आगे बढेगा अभी' 'त्रिशंकु' जैसी कहानियों में झोंपड पट्टी के किशोर बालकों के जीवन प्रस्तुत किये गये

हैं। उनकी ज्यादत्तर कहानियों में नौकरी-पेशा नारियों की मानसिकता को प्रतिफलित करने की कोशिश के साथ-साथ गृहस्थी जीवन बितानेवाली नारियों के जीवन का संघर्ष एवं द्वन्द्वों को भी अभिव्यक्ति मिली है। 'मामला आगे बढेगा अभी', 'अग्निरेखा', 'लक्षागृह' 'लिफाफा' 'गर्दा' 'शून्य', 'मोर्चे पर' 'अपनी वापसी' आदि कहानियाँ अधिक महत्वपूर्ण हैं।

संग्रह की शीर्षक कहानी 'मामला आगे बढेगा अभी' चित्राजी की सबसे प्रिय कहानी है। कहानी का पात्र 'मोट्या' उन तमाम बालकों का प्रतीक है जो हमेशा समाज के प्रति विद्रोह कर रहे हैं। अश्क जी द्वारा लिखी गयी आलोचना के उत्तर के रूप में चित्राजी ने खुद लिखा है "व्यवस्था से लड़ने को तत्पर किशोर मोट्या की लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई। खत्म होगी भी नहीं, क्योंकि वह एक ही रूप में नहीं छला जा रहा। उसकी दैहिक और मानसिक भूख की नब्ज उनके हाथों में है। और वे जानते हैं कि किस समाज में उसे किस की भूख हो सकती है और क्या दे, दिखा उसे बहलाया, फुसलाया, इस्तेमाल किया जा सकता है।[1]

चित्राजी ने इस संकलन की हर एक कहानी में विभिन्न सामाजिक मुद्दों को लिया है जो समाज में हमारे आसपास के जीवन में निरन्तर बनते-मिटते दिखाई देते हैं। कहानियों में आधुनिक परिवेश में स्त्री की पीड़ा, महानगरीय परिस्थितियों में मूल्य विघटन, इन्सान के पतन, विधवा जीवन, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओं को अत्यन्त मार्मिक एवं धारदार ढंग से लेखिका ने उभारा है।

---

1 चित्रामुद्गाल मामला आगे बढ़ेगा अभी पृ. ।

जिनावर (1996)

'जिनावर' कहानी संकलन में कुल अठारह कहानियाँ हैं। इस संकलन की कहानियों में मानव मन के द्वन्द्वों को उजागर किया गया है। मानवीय संवेदनाओं, सम्बन्धों, रिश्तों, महिला शाक्तीकरण, शोषण, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार आदि की स्पष्ट अभिव्यक्ति 'प्रेतयोनी' 'जिनावर' 'सुख' 'बाघ' 'अठाई गज की ओढ़नी' 'स्टेपिनी' 'एंटीक पीस' आदि कहानियों में हुई है। 'प्रेतयोनी' और 'जिनावर' इस संकलन की श्रेष्ठ कहानियाँ कही जा सकती हैं, जो अन्य संकलनों में भी संकलित हैं।

'प्रेतयोनी' इस संकलन की सर्वप्रथम कहानी है। इसमें अपमानित नारीत्व का चित्र प्रस्तुत किया गया है। आज की सामाजिक स्थिति में अपमानित लड़की और उसके पूरे परिवार को घृणा की दृष्टि से देखा जाता है और व्यवहार किया जाता है। अपमान करनेवाला पुरुष समाज में स्वतंत्र विचरण करता है। 'प्रेतयोनी' कहानी की नायिका उस व्यक्ति को जिसने उसका अपमान किया था, कानून के सामने लाने केलिए खुद निकल पड़ती है। यहाँ चित्राजी ने नारी के विद्रोह और समाज के बुरे नज़रिये की चर्चा की है। 'जिनावर' इस संकलन की दूसरी प्रमुख कहानी है। कहानी यह दिखाती है गरीबी किस प्रकार आदमी को जानवर बना देती है। इस समाज में सम्बन्धों के संवेदनहीन और खोखले होते जाने की प्रक्रिया को निर्ममता से उधेड़ी गयी है। गरीबी से त्रस्त मनुष्य कभी जानवर से भी नीच बन जाता है। आदमी जानवर बन जाने की इस विवशता को मार्मिक ढंग से इस कहानी में चित्रित है।[1] मृतप्राय घोड़ी सरवरी को

---

1. डॉ. ज्ञानवती अरोडा समकालीन हिन्दी कहानी यथार्थ के विविध आयाम पृ. 15

आर्थिक विषमता के कारण जानबूझकर कार से टकराकर असलम उस जानवर की सूखी हड्डियों पर भी आजीविका खोजता है। यह विवशता प्रेमचन्द की कहानियों की तरह हमारे मन को चोट लगाती है।[1] ये दोनों इस संग्रह की श्रेष्ठ कहानियाँ हैं।

'सुख' और 'स्टेपिनी' महिला केन्द्रित कहानियाँ हैं। इसमें नारी के अन्तर्द्वन्द्व और नौकरी पेशा नारी के संघर्षों को चित्रित किया गया है। आधुनिक नगर जीवन के दबाव और तनावों को ये कहानियाँ खूब प्रस्तुत करती हैं।

'राक्षस' 'गरीबी की माँ' 'रिश्ता' 'व्यावहारिकता' 'रक्षक-भक्षक' 'ऐब' 'पत्नी' 'मानदण्ड' 'पहचान' 'बोहनी' और 'प्राथमिकता' आदि इस संकलन की लघु कथाएँ हैं। ये कहानियाँ कलेवर में छोटी होने पर भी इसमें निहित अर्थ-सम्भावनाएँ लम्बी कथाओं जैसी हैं। भाषा और शैली की दृष्टि से 'जिनावर' संग्रह की कहानियों को अपना अलग स्थान प्राप्त हैं। ये कहानियाँ मानवीय संवेदना की मिसालें हैं। ये नारी जीवन की विषमताओं एवं त्रासदियों के बीच अस्तित्व कायम रखने की उसकी इच्छा-शक्ति का चित्रण करनेवाली कहानियाँ हैं।

केंचुल (2001)

'केंचुल' में 'दुल्हिन' 'दशरथ का वनवास' 'केंचुल' 'बावजूद इसके' 'रूना आ रही है' 'अनुबन्ध' 'पेशा' 'मोर्चे पर' 'अग्निरेखा' आदि नौ कहानियाँ संकलित हैं। 'ग्यारह लंबी कहानियाँ में संकलित सारी

---

1. देवेन्द्र कुमार समीक्षा मार्च 1997 पृ. 23

कहानियाँ 'केंचुल' में भी संकलित हैं। रचनाकार का संवेदनशील मन समाज में घटनेवाली घटनाओं को देखकर उद्विग्न होता है। इस संकलन की कहानियाँ उस संवेदनशील मन की अभिव्यक्ति हैं। चित्रा मुद्गल की कहानियाँ उनके निजी अनुभव से उपजी हैं इसलिए ये कहानियाँ यथार्थ के निकट हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा समुदाय की रीढ़ को खोखला करनेवाली आत्मघाती प्रतिगामी रीतियों एवं नीतियों के विरुद्ध आक्रोश प्रकट किया। 'केंचुल' 'दुल्हिन' 'रूना आ रही है' 'अनुबन्ध' 'अग्निरेखा' आदि कहानियों में नारी जीवन ही प्रमुख विषय है।

भूख (2001)

'इस हमाम में' कहानी संकलन की सारी कहानियाँ 'भूख' में भी संकलित हैं। अन्तर केवल इतना है कि 'वाइफ स्वैपी' नामक कहानी को उन्होंने पुनः सृजन किया। इस संकलन में 'भूख' 'लेन' 'चेहरे' 'फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती' 'इस हमाम में' 'ब्लेड' 'ज़रिया' 'वाइफ स्वैपी' 'बंद' आदि कहानियाँ संकलित हैं।

इसमें आर्थिक अभाव में अपने को भी बेचती माँ की विवशता, वेश्या समस्या, नारी जीवन की अन्य विभिन्न समस्याओं को कहानी का विषय बनाया गया है। इन कहानियों में वर्णित पात्रों को समाज के दबे-कुचले वर्ग से चुना गया है। महानगरीय सभ्यता में निम्नवर्ग के प्रति लेखिका की कहानियाँ गहरी वेदना प्रकट करती हैं। कुछ कहानियाँ स्त्री समस्याओं पर केन्द्रित हैं। इसमें जीवन के तमाम अनछुए पहलुओं को समेटा गया है जो समाज को आये दिन खोखला करते हैं।

लपटें (2002)

'लपटें' चित्रा मुद्गल का अधुनातन कहानी संकलन में है। इसमें 'गेंद' 'नीले चौखानेवाला कम्बल' 'लपटें' 'बलि' 'एक काली एक सफेद' 'जब तक विमलाएँ हैं' आदि कहानियाँ और 'मिट्टी' 'डोमिन काकी', 'नाम' 'पाठ' आदि लघुकथाएँ शामिल हैं। 'गेंद' कहानी में वृद्धावस्था में आश्रम में रहकर अकेलापन का दुःख झेलनेवाले सचदेव नामक वृद्ध पात्र की मानसिकता की अभिव्यक्ति हुई है। पति वियोग में दुःखी पत्नी के अन्तर्द्वन्द्व और संघर्ष का चित्रण करती कहानी है 'नीले चौखानेवाला कम्बल'। 'नतीजा' कुछ अनाथ बच्चों की कथा पेश करती है। 'लपटें' राजनीतिक परिवेश में लिखी गयी कहानी है। 'एक काला एक सफेद' कहानी में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से मानव मन में आनेवाले बदलाव का चित्र प्रस्तुत किया गया है। बिमला जैसे पात्र के माध्यम से लेखिका ने साधारण गरीब नारी जीवन की विसंगतियों पर प्रकाश डाला है।

इस कहानी संग्रह में भी चित्राजी ने अपनी सहज शैली के अनुसार अनाथ बच्चे, विधवा नारी, स्लम की नारी, राजनैतिक छल कपट आदि को आधार बनाकर जीवन के नए रूप को कहानी में उकेरा है। ये कहानियाँ स्त्री विमर्श के मुहावरे को तोड़कर आगे बढनेवाली दीख पड़ती हैं।

बयान (2004)

'बयान' चित्रा मुद्गल का लघु कथा संग्रह है। उन्होंने कहानियों और उपन्यासों में नारी जीवन के कई पक्षों को उद्घाटित किया है। 'बयान' में उन्होंने विशिष्ट भावबोध और संवेदनात्मक शैली में अपने मन में कौंध के रूप में आकर मिटनेवाली छोटी घटनाओं को संगृहित किया

है। जीवन की इन क्षणिक घटनाओं, अनुभूतियों को छोटे कैनवास में बड़ी सतर्कता से उन्होंने उद्घाटित किया है। उनके अन्य पात्रों के समान इस संकलन की कहानियों के पात्र भी सर्वहारा और शोषित हैं। ये पात्र जीवन से सीधा सम्बन्ध रखनेवाले प्रतीत होते हैं। इसमें कुल उनतीस लघुकथाएँ संकलित हैं। आज साहित्य में लघुकथा और ग़ज़ल के सन्दर्भ में अधिक चर्चा हो रही है। इनके सभी पात्र शोषित, जुझारू, संघर्षरत परिस्थितियों से प्रतिशोध करनेवाले हैं। इस संग्रह में चित्राजी ने बिलकुल झोंपड-पट्टी की भाषा का ही प्रयोग किया है जो कभी-कभी अर्थ समझने में बाधा डालती है। इसमें संकलित कुछ लघु कथाएँ अन्य कहानी संग्रह में भी शामिल हैं। इसमें जन पक्षधरता का ऐसा प्रभावी रूप नज़र आता है जो अन्यत्र विरले है। 'गरीब की माँ' नामक कथा बम्बई में रहनेवालों की व्यथा का मार्मिक चित्र है। 'बयान' जीवन में फिर-फिर पाये अनुभवों को फिर से पा लेने, पढ़ लेने का अनुभव है।[1]

चित्रा मुद्‌गल की कहानियों में आधुनिक मानव जीवन की पूरी ज़िन्दगी सच्चाई के साथ उभरी है। उन्होंने बम्बई के झोंपड-पट्टी के जीवन तथा वहाँ की देखी-भोगी स्थितियों को सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। उनका जीवन यद्यपि अभिजात वर्ग का है फिर भी निम्न वर्ग के जीवन यथार्थ को उन्होंने बहुत गहराई से कहानी में उकेरा। उन्होंने अपने लेखन को महिलापन से बचाते हुए अपनी कृतियों में वर्गीय सीमाओं का अतिक्रमण कर निम्न वर्ग के पक्षधर लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनाई है। अपने आसपास के परिवेश में बिखरे हुए

---

1. समीक्षा अक्टूबर-दिसंबर 2004 पृ 40

साधारण कथानकों की असाधारण अभिव्यक्ति उनके पात्रों में देखने को मिलती है। कहानी और पाठक के बीच सम्प्रेषण की सीधी सुविधा और भाषायी तेवर की कथानुकूल वक्रता इन सबका समावेश चित्राजी की कहानियों में उपलब्ध है।

सम्पादित कहानियाँ

एक अच्छी सम्पादिका होने का साक्ष्य पेश करते हुए चित्राजी ने कई कहानी संकलनों का संपादन किया है - 'असफल दाम्पत्य की कहानियाँ' (1987), 'टूटते परिवारों की कहानियाँ' (1987) और दूसरी औरत की कहानियाँ (1987) भीगी हुई रेत (1988) पुरस्कृत कहानियाँ (1989), देख देहरी (2003) आठवें दशक की प्रायः चर्चित सभी लेखिकाओं द्वारा लिखित नारी और पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित कहानियाँ इन संकलनों में संग्रहित हैं। इसमें विषय की समानता है। नारी की मानसिकता, द्वन्द्व, दर्द, पीड़ा और पारिवारिक जीवन की विसंगतियाँ आदि इन रचनाओं का विषय रहे।

असफल दाम्पत्य की कहानियाँ

असफल दाम्पत्य की कहानियाँ 'चित्राजी द्वारा सम्पादित पहला कहानी संकलन है। इसमें पारिवारिक जीवन की कुंठाओं, निराशाओं एवं अलगाव का चित्रण हुआ है। असंतृप्त दाम्पत्य जीवन आखिर तलाक में परिणित हो जाता है। पुराने मध्यवर्गीय मूल्यों, परंपराओं, रूढियों, अहंवादिता आदि से जकड़ने से कोई किसी के सामने सिर नवाता नहीं। आधुनिक सभ्यता ने पति-पत्नी की तुल्यता को बल दिया है। पुरुष का परंपरागत

अहं स्त्री को उसी केलिए अनुमति भी नहीं देता। तब स्त्री अपनी स्वतंत्रता या हक के नाम पर सीमित दायरे से बाहर पालायन करती है। दाम्पत्य की असफलता का मुख्य कारण पति या पत्नी का अहं है। साथ ही अन्य समस्याएँ भी आती हैं। आर्थिक असमानता, धन की कमी और धन की अधिकता ये सब दोनों के पारिवारिक जीवन में प्रभाव डालते हैं। आपसी शंका एक और कारण है। आज पति-पत्नी के बीच का आत्मीय सम्बन्ध नहीं के बराबर है। इन्हीं कारणों से पारिवारिक जीवन असफल हो जाता है। इसमें विभांशु दिव्याल की 'स्वयं से स्वयं तक' मन्नूभण्डारी की 'शायद' महीपसिंह की 'धूप की ऊँगलियों के निशान' धीरेन्द्र आस्थाना की 'पत्नी', शुभदा मिश्र की 'राख की ढ़ेर', चित्रा मुद्गल की 'शून्य' सुरेश सेठ की 'क्लेग स्टेशन' ऋता शुक्ला की 'कदली के फूल' संतोष रमेश की 'मिज़यब', सुभाष पंत की 'दो धरातलों के बीच' गौरी शंकर कपूर की 'द्वन्द्व युद्ध' स्वदेश दीपक की 'मुस्कान' और सूर्यबाला की 'झील' ये चौदह कहानियाँ संगृहीत हैं।

इस संकलन की कहानियों में पारिवारिक सन्दर्भों को कई कोणों से देखने-परखने, मूल्यांकन करने की कोशिश हुई है, इसमें दाम्पत्य जीवन को असफल न होने देने का ईशारा भी है।

टूटते परिवारों की कहानियाँ

यह संग्रह चित्राजी की संपादन क्षमता का दूसरा प्रमाण है। इसे 'असफल दाम्पत्य की कहानियाँ' की दूसरी कड़ी कही जा सकती है। आज की बदलती सामाजिक परिस्थितियों में परिवार एवं रिश्तों के अर्थ बदल रहे हैं। आदमी आदमी को पहचानता नहीं। यह अपरिचितता समाज से

नहीं परिवार से ही शुरु होती है। परिवार का पहला रिश्ता पति-पत्नी का है। दाम्पत्य जीवन की दरार पारिवारिक विघटन का कारण बन जाती है। पति-पत्नी के मत-भेद परिवार के शान्त स्वस्थ माहौल को नष्ट कर देता है। आदमी अपने में सिमिट जाता है। समाज की बुनियाद ही परिवार है। इसलिए परिवार के सदस्यों के बीच प्यार, ममता आदि का होना ज़रूरी है। नगरीय सभ्यता, पाशचात्य संस्कारों का अन्धा अनुकरण, अनमेल विवाह, बाल विवाह, लड़का न पैदा कर पाने की असमर्थता, पति-पत्नियों का विवाहेतर सम्बन्ध, शंका आदि कई कारणों से पारिवारिक सम्बन्ध टूट जाता है। सब कहीं स्त्रियाँ शोषण, छल आदि की शिकार बन रही हैं; जब से उन्होंने अपने अस्तित्व एवं अधिकार केलिए लड़ना शुरु किया, तब से उनके खिलाफ सामाजिक रूढ़ियाँ अधिक बलवती हो गयीं। इस संकलन में भी चौदह कहानियाँ संकलित हैं ममता कालिया की 'मनहुसाबी' अवधनारायण मुद्गल की 'और कुत्ता मान गया' राजी सेठ की 'अनावृत कौन', सुरेन्द्र अरोड़ा की 'आग का जंगल', मेहरुन्नीसा परवेज़ की 'अयोध्या से वापसी', हरीश पाठक की 'कितने सच' गोविन्द मिश्र की 'संध्यानाद' रमेश बक्षी की 'जिनके मकान दहकते हैं' मृदुला गर्ग की 'तुक' स्नेह मोहिनीश की 'अनगत समय', हिमांशु जोशी की 'किनारे के लोग', मणिका मोहिनी की 'एक ही बिस्तर पर' सुरेन्द्र उनियाल की 'दीवार' और रवीन्द्र कालिया की 'हथकड़ी'।

इन कहानियों में सम्बन्धों को टूटने या तलाक के विविध कारणों का अन्वेषण हुआ है। सामाजिक सम्बन्धों का मूल्य या नैतिकता का नष्ट होना ही इसका पहला कारण हो सकता है। रचनाकार अपनी रचनाओं द्वारा लोगों को अवगत कराना चाहते हैं कि पारिवारिक सम्बन्ध अटूट रहना चाहिए।

दूसरी औरत की कहानियाँ

'असफल दाम्पत्य की कहानियाँ' और 'टूटते परिवारों की कहानियाँ' की तीसरी कड़ी है 'दूसरी औरत की कहानियाँ'। दाम्पत्य जीवन असफल होने और परिवारों के टूटने का कारण पति-पत्नी के बीच एक दूसरे का आगमन है। अगर पत्नी या पति शंकालु है तो पारिवारिक जीवन के ऊपर टूटन के बादल उमड़ते हैं। दाम्पत्य जीवन असफल होने में अपने दुःख को मिटाने केलिए पत्नी या पति दूसरे के साथ सम्बन्ध जोड़ता है। तब तीनों के जीवन में संकट का पहाड़ आ जाता है। कभी तीसरे व्यक्ति को अकेले ही जीना पड़ता है। चित्राजी ने ऐसे पात्रों को भी अपनी रचना में शामिल कियाहै। हिन्दी कहानी में ऐसे कई पात्र हैं जिन्हें अपनी छोटी दुर्बलता के कारण जीवन भर दुःखी या अकेला रहना पड़ता है। हिन्दी के चर्चित कहानिकारों की बहु चर्चित कहानियाँ इसमें संकलित हैं। निरन्तर दुःख और अकेलापन झेलते ये पात्र अन्त तक दूसरों से अपमानित होकर जीने को विवश हो जाते हैं।

इस प्रकार चित्रा मुद्‌गल ने रचना-कार्य से हटकर सम्पादन कार्य भी किया है। जैसे उनकी तमाम रचनाओं में स्त्री जीवन की विभिन्न पहलुओं को उजागर किया था वैसे अपने सम्पादित पुस्तकों में भी स्त्री सम्बन्धी दुःख, पीड़ा और अकेलापन के द्वारा जीवन जीने को विवश नारी की कथा सुनायी गयी है।

बाल-साहित्य

बाल साहित्य का आशय बच्चों केलिए लिखे जानेवाले साहित्य से है। बाल साहित्य द्वारा बच्चों में कल्पना, आशा, उत्साह, विश्वास

सहजीवी स्नेह आदि भावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। बाल साहित्य मनोरंजक होना चाहिए और उसकी भाषा सरल होनी चाहिए। आधुनिक यूग में अणु परिवार का प्रचलन है। यहाँ बच्चों को कथा सुनाने केलिए बुजुर्ग आदमी नहीं, वह स्थान आज पुस्तक ने ले लिया है। इसलिए बालोपयोगी पुस्तकों की माँग बढ़ती आ रही है। बच्चों केलिए जंगली जानवरों को पात्र बनाकर लिखी गयी लोक कथाएँ, नीती कथाएँ, पुराण एवं इतिहास से सम्बन्धित कथाएँ आज उपलब्ध हैं। इस क्षेत्र में अनेक लेखक कार्यरत हैं। इनमें प्रमुख हैं सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, नागार्जुन, पंकज बिष्ट, प्रकाशमनु शमशेर, अहमद खान, शिव कुमार गोयल, डॉ. शकुन्तला कालरा, डॉ. आशा जोशी, उषा महाजन, सत्येन्द्र वर्मा, देवलीना, विमला मेहत्ता, देवेन्द्र कुमार, सविता चड्ढा आदि।

आठवें दशक की चर्चित कथाकार चित्रा मुद्गल ने बाल साहित्य के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया है। 'देश-देश की 'लोक कथाएँ' 'नीति कथाएँ', 'सबक' 'जंगल का राजा' 'माधवी-कन्नगी', मणिमेखला आदि उनकी श्रेष्ठ बाल साहित्यिक कृतियाँ हैं। 'सबक, जगल का राजा' 'माधवी कन्नगी' 'जीवक' 'मणिमेखलै' आदि बाल उपन्यास हैं। बच्चों को शिक्षा देने के साथ उनके मानसिक एवं बौद्धिक विकास केलिए बाल साहित्य का प्रमुख स्थान है। चित्राजी का भी मक्सद यह है कि कहानी पढ़ने से बच्चों को मज़ा आयें और ऐसी कहानी सुनकर वे कुछ नया जाने और नया सुने इसी से नयी बातों को देखें और सीखें। बच्चों के लिए चित्राजी 'चिम्मू दीदी' है। जिस प्रकार दीदी बच्चों को कथा सुनाती है उसी प्रकार की सरल भाषा एवं शैली में चित्राजी ने कथा रचना की है।

'देश-देश की लोक कथाएँ' में चित्राजी ने विभिन्न देश की बालोपयोगी लोक कथाओं का अनुवाद किया है। नीति-कथा में नीति सम्बन्धी कथाओं का पुनराख्यान किया गया है। 'जीवक' नामक बाल उपन्यास में उन्होंने जीवक के माध्यम से बच्चों में दृढ संकल्प और प्रतिकूल परिस्थिति में अकेले रहने का साहस दिखाया है। 'जीवक' की संकल्पबद्धता और बुद्धि चातुर्य आज भी प्रासंगिक है। चित्राजी ने जीवक के जीवन को बड़ी सरल शैली में बच्चों के अनुकूल सरल भाषा में प्रस्तुत किया।

'मणिमेखलै' और 'माधवी कन्नगी' तमिल के प्रसिद्ध महाकाव्य 'शिलपतिकारम' को आधार बनाकर लिखे गये उपन्यास हैं। तमिल साहित्य की संपन्नता से उत्तर भारत के बाल-पाठकों को अवगत कराने केलिए अपने कुछ मित्रों के उपदेश से चित्राजी ने इसकी रचना की। माधवी कन्नगी में माधवी और कन्नगी के चरित्रों और जीवन को बड़ी सरल भाषा एवं शैली में चित्रित किया गया है। सती कन्नगी का चरित्र देवी के समान उभरा हुआ है। कन्नगी अपने पति से कभी नफरत नहीं करती यद्यपि वह दूसरी स्त्री से सम्बन्ध रखता हो। व्यापार और उसके सारे आभूषण एवं धन माधवी केलिए छोड़ देकर वह भारतीय संस्कृति की पति-परायण पत्नी बन गयी।

'शिलपतिकारम' के आधार पर लिखे गये 'मणिमेखलै' उपन्यास में मणिमेखलै की कहानी प्रस्तुत है। मणिमेखलै कोवलन और माधवी की पुत्री है। वह माधवी के समान नर्तकी नहीं बनी। पिता की मृत्यु के बाद दुःखी माँ जब बुद्ध की तेज़ और भक्ति में डूब जीने लगी तब से वह भी एक बुद्ध भिक्षुणी के समान जीने लगी। साथ ही बुद्ध भक्ति में डूबकर शहर

और गाँव में घूमती रही। आखिर एक गाँव में एक बुद्ध विहार में अपना जीवन साधुओं की सेवा में लगाने लगी। 'जंगल का राजा' और 'सबक' भी बाल उपन्यास हैं। इसके प्रमुख पात्र विभिन्न जीव जन्तु हैं।

चित्राजी ने प्रायः सभी विषयों को आधार बनाकर साहित्य-सृजन किया है। उनकी रचनाओं का विषय प्रायः सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है। सामाजिक विषयों को चुनकर रचना करने से वे जनपक्ष लेखिका भी बन गयी। रचनाकार के रूप में ही नहीं समाज सेविका के रूप में वे जनसाधारण के बीच में हैं।

निष्कर्ष

चित्रा मुद्‌गल समकालीन दौर की सशक्त महिला रचनाकार हैं। समाज में व्याप्त सामंतशाही और विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को रेखांकित करके उन्होंने हिन्दी साहित्य में अपनी अलग पहचान बना ली। उनकी रचनाओं में समय सापेक्ष क्रूर यथार्थ को बहुत ही पैनेपन से उकेरा गया है। इस के लिए उन्होंने समाज के लोगों के जीवन को बहुत निकट से देखा-परखा, खास तौर से मध्यवर्ग के और निचले तबके के लोगों के। हर एक रचना में उन्होंने समाज की किसी न किसी समस्या को उपस्थित किया हौ। लेखिका मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए उनकी रचनाओं में निम्न और उच्चवर्ग से लेकर ग्रामीण परिवेश का भी सहज-स्वाभाविक चित्र भी प्राप्त है। चित्राजी ने जिन्दगी को कई कोणों से देखा, अनुभव किया, मानव की सहज जिन्दगी को सहज प्रवाहमयी संवेदनाओं के साथ अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया।

उन्होंने बम्बई की झोंपड-पट्टी के जीवन तथा वहाँ की देखी-भोगी स्थितियों के निरीक्षण करके उसे बड़ी प्रामाणिकता के साथ अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। उनकी रचनाओं का धरातल बड़ा व्यापक है। आधुनिक मानव की पूरी और असली पहचान उनकी कहानियों की खासियत है। उनकी कहानियों का कथ्य मुख्यतः पारिवारिक है इसलिए एक आलोचक ने उनकी कहानियों को 'पारिवारिक जीवन की शोभयात्रा' की संज्ञा दी। फिर भी उन्होंने अन्यान्य सामाजिक विषयों को भी अपनी रचना का विषय बनाया। चित्राजी का रचना क्षेत्र निजी, विशिष्ट और सुरक्षित है। उनकी रचनाएँ एक पृथक रूप को लेकर आयी हैं। कहानियाँ यथार्थ की ज़मीन से जुडी हुई है, 'मामला आगे बढेगा अभी' 'भूख' 'केंचुल' 'अपनी वापसी' आदि कहानियाँ इसका उदाहरण है। कहानियों में आए हुए पात्र उनके जीवन से सीधे सम्बन्ध रखनेवाले हैं। उनकी कहानियों की एक और विशेषता यह है कि उनमें आधुनिक नारी के हृदय की यथार्थ संवेदना का कच्चा-चिट्टा मिलता है। समस्त भारतीय नारी समाज के इमेज को पेश करने का प्रयत्न इन कहानियों में हुआ है। लेखिका ने नारी के विविध रूपों को उनकी पूर्णता के साथ अपनी कहानियों में चित्रित किया है।

उनकी कहानियाँ पढते समय ऐसा मालूम पड़ता है कि कहानी न लिखी गई है, बल्कि कहानी ने लेखिका से अपने आपको लिखवा लिया है। 'भूख' 'जिनावर' 'शून्य' 'प्रेतयोनी' 'केंचुल' आदि कहानियाँ जीवन की विभिन्न परिस्थिति का उल्लेख करते हुए पाढक के मन में अमिट छाप छोडती हैं। 'भूख' कहानी के माध्यम से लेखिका ने एक नए आयाम को पेश किया है, जो हिन्दी कहानी के इतिहास में और कहीं नहीं दिखाई पड़ जाती। भूख की तीव्रता का एहसास पाठक के मन में हमेशा बना रहेगा।

चित्राजी ने अपनी कहानियों में मुख्य रूप से मध्य और निम्न वर्ग के जीवन को प्रस्तुत किया है। ऐसा कहा जा सकता है कि चित्राजी की कहानियों ने समाज का निरूपण, प्रेम सैक्स की कुण्डाओं का स्पष्टीकरण, वर्तमान युवा पीढ़ी के तनाव और आक्रोश की अभिव्यक्ति आदि को सामाजिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाएँ शहर से गाँव और गाँव से शहर का चक्कर करते हुए व्यक्ति की संघर्ष गाथा को समाज के सामने प्रस्तुत करती हैं।

अध्याय - 3

चित्रा मुद्‌गल के उपन्यास : संवेदना के विविध आयाम

प्रस्तावना

चित्रा मुद्गल बीसवीं शताब्दी की मान्यता प्राप्त रचनाकार हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में मानवीय संवेदना के विविध आयामों पर साधिकार लेखन किया है। हिन्दी कथा साहित्य में अपनी सक्रियता दिखाते हुए चित्राजी ने पारिवारिक जीवन पर केन्द्रित रचनाऐं की हैं साथ ही सामाजिक जीवन के अन्यान्य पहलुओं को भी अपनी रचनाओं में अंकित किया है। अनुभवों की सीमा का संकट चित्राजी में नहीं रहा है। उन्होंने कई वैविध्यपूर्ण उत्कृष्ट कथा रचनाएँ हिन्दी साहित्य को दी हैं।

महिला रचनाकारों की अनुभव-सीमित दुनिया पर अक्सर आलोचना करते हुए कहा जाता है कि महिला पारिवारिक जीवन या स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के अपने सुरक्षित क्षेत्र में राहत महसूस करती है। पर चित्राजी के कथा-लेखन पर नज़र डालने पर पता चलता है कि उन्होंने पारिवारिक-जीवन अथवा स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के अलावा अनेक सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक सन्दर्भों की कथा रचनाएँ की हैं। उनकी रचनाधर्मित का क्षेत्र और उसे देखने का दायरा विस्तृत हैं। कई पुरुष कथाकारों को अपनी सर्जनात्मक काबिलियत से शिकस्त करने की क्षमता चित्राजी में है। उनकी रचनाएँ महज परिवार या नारी जीवन पर केन्द्रित नहीं हैं। उन्होंने मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को विभिन्न कोणों से छुआ है और हिन्दी साहित्य को कुछ अविस्मरणीय रचनाएँ दी हैं।

साहित्य में मनुष्य जीवन की व्याख्या-पुनःव्याख्या होती है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। सामाजिक क्षेत्र में सामाजिक व्यवस्था यानि व्यक्ति, परिवार तथा समाज, सामाजिक मान्यताएँ संस्कार, आदर्श, कानून, रूढ़ि, परम्परा और सामाजिक स्थिति आर्थिक एवं राजनैतिक आदि समाहित है। समय-समय पर रचनाकार अपने अनुभव की व्याप्ति के सामाजिक सन्दर्भों को साहित्य में समावेश करके अपने समय की सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक मान्यता और सामाजिक स्थिति का परिचय कराते हैं। समाज के मूल में व्यक्ति है। व्यक्ति के सुख-दुःख सम्बन्ध, संघर्ष एवं अन्य विषयों को लेखक रचना का विषय बनाते हैं। समाज की संस्कृति, रुढ़ि एवं परम्परा के अनुरूप व्यक्ति का जीवन बनता बिगड़ता है। व्यक्ति को समाज में जीते हुए शारीरिक एवं मानसिक रूप से सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज द्वारा निश्चित कुछ सामान्य नियमों का पालन उसे करना पड़ता है। लेकिन कभी-कभी ये नियम उनके स्वतंत्र जीवन में बाधा डालते हैं। तब उन्हें उन नियमों के प्रति विद्रोह करना पड़ता है। यों मनुष्य के जन्म से लेकर सामाजिकता का स्थान है। मनुष्य की वैयक्तिक आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार से होती है। मनुष्य की सर्वप्रथम परिचित सामाजिक संस्था भी परिवार है। मानव मूल्यों का निर्माण और समावेश वहाँ से होता है। व्यक्ति के आचार-विचार एवं संस्कृति परिवार से आर्जित है। समाज में विभिन्न प्रकार के संस्कार और आदर्श हैं जो व्यक्ति को श्रेष्ठतम जीवन बिताने की प्रेरणा देते हैं।

संवेदना की अभिव्यक्ति और समकालीन उपन्यास

साहित्य समाज का आइना है। यह आइना समाज की सारी समस्याओं को प्रतिफलित करता है। समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आधुनिक

समाज का पूरा चित्र मिलता है। उसकी पूर्ण से उनमें अभिव्यक्ति मिली है। यद्यपि समकालीन उपन्यास पात्र के मनोविज्ञान, अकेलापन, घुटन एवं उनके जीवन संघर्ष से अधिक जुड़े हुए हैं, तो भी समकालीन लेखकों ने अपने दायित्व को पूर्ण रूप से निभाया है। आज के सामाजिक जीवन में कुछ बदलाव आ गया है। सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक, आर्थिक, जातीय एवं प्रांतीय विषय इसमें मुख्य हैं।

मृदुला गर्ग के 'वंशज' (1976) उपन्यास में पिता और पुत्र को केन्द्र में रखकर दो पीढ़ियों के बीच के अन्तराल और द्वन्द्व को प्रस्तुत किया गया है। मृदुला गर्ग ने पिता-पुत्र के प्रतिनिधि चरित्रों के सभी अच्छे पक्षों को परिचित कराया है। पारिवारिक परिवेश में लिखित उपन्यासों में सम्बन्धों का टूटन, अलगाव, प्यार, ममता, संघर्ष, स्वार्थ आदि को व्यक्त किया गया है। पारिवारिक समस्याओं के साथ सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों का चित्रण भी इन उपन्यासों में है। सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियाँ, परिवार में पिता-पुत्र संघर्ष, नौकरशाही, और पुलिस के कार्यकलाप आदि का वर्णन भी है।

सन् 1980 में प्रकाशित मृदुला गर्ग का 'अनित्य' नामक उपन्यास समकालीन राजनीतिक विसंगतियों, असफलताओं तथा विचार हीनता पर प्रकाश डालता है। स्त्रियों की मुक्ति एवं अधिकारों केलिए स्त्री रचनाकारों ने कई उपन्यास लिखे। इन लेखिकाओं की कृतियों में स्त्री मुक्ति-संघर्ष सम्बन्धी प्रश्नों को उठाया गया है। कृष्णा सोबती के 'डार से बिछुडी' 'जिन्दगीनामा', 'मित्रो मरजानी' 'ऐ लड़की' मन्नू भण्डारी का 'आपका बँटी' आदि इसका उदाहरण है। चित्रा मुद्गल का 'एक ज़मीन अपनी' और

'आवाँ' जैसे उपन्यासों में अभिशप्त जीवन बितानेवाली नारियों के जीवन के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यक्ति मिली है। यों समकालीन लेखिकाओं ने अपने लेखन द्वारा सामाजिक संसक्ति के विभिन्न आयामों को गंभीरता के साथ देखने-परखने की कोशिश की है।[1]

महिला रचनाकरों ने अपनी रचनाओं में अपने अनुभवों, विचारों और आकांक्षाओं को शब्दबद्ध करके जीवन के कई पक्षों को खुलकर बताने की कोशिश की है। पुरुष संसार से भिन्न स्त्री लेखन की अपनी विशिष्टताएँ, विलक्षणताएँ, चुनौतियाँ, संघर्ष, अनुभव और कल्पनाएँ हैं।

संवेदना की दृष्टि से समकालीन महिला उपन्यास

आज़ादी के बाद कई लेखिकाओं ने अपने सक्रिय रचना वैभव द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। इन रचनाकारों ने बहुत ही अनुभूतिपूर्ण सशक्त एवं सजीव ढंग से समकालीन आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं पर विचार किया है। इनकी दृष्टि परिवार और सामाजिक जीवन तक सीमित थी, लेकिन सातवें और आठवें दशक की लेखिकाओं ने हर तरफ से पारिवारिक सामाजिक बन्धनों से उन्मुक्त होकर व्यक्ति और समाज की हर समस्याओं की जीवन्त अभिव्यक्ति दी और अपने अनुभवों, जीवन संघर्षों को पूरी ईमानदारी, विवेक और साहस के साथ अभिव्यक्त किया। वे अपनी रचनाओं द्वारा पैतृक प्रतिमानों, बने-बनाये नियमों, धार्मिक नियमों और परम्परागत संस्कारों के विरुद्ध विद्रोह करने लगीं। समाज में हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध भी

---

1. राकेश कुमार नारीवादी विमर्श पृ. 40

111 T172

वे प्रतिशोध करने लगीं। समकालीन लेखिकाओं ने साहस और सच्चाई के साथ घर, परिवार एवं सामाजिक समस्याओं को बड़ी जीवन्तता के साथ प्रस्तुत किया है। पराधीनता की जंजीरों में जकड़े हुए नारी-जीवन के 'स्व' को जगाकर अपनी अस्मिता को बनाये रखने का प्रयत्न उन्होंने किया। मेहरुन्नीसा परवेज़ ने खुलकर बता दिया कि नारी के मौन का शब्द-रूप नारी ही दे सकती है। स्त्रियों को अपने अधिकारों, स्वत्व, अस्तित्व, अस्मिता के प्रति जागरूक बनाने का प्रयास नारी लेखकों द्वारा हुआ।

मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्माकबूतरी' में सामाजिक पक्ष की ऐसी अभिव्यक्ति मिली है कि मनुष्य को आज के सामाज में जीने केलिए शिक्षा पाने की कोई ज़रूरत नहीं, बल्कि रिश्वत और सिफारिश चाहिए। शिक्षा की कोई उपयोगिता नहीं। आज हर क्षेत्र बाज़ारू बन गया है, जिसमें मक्कारी और चालाकी के सिक्कों से सब कुछ खरीदा और बेचा जाता है। आज राजनीति में डाकुओं और खूनियों का स्थान बढ़ता जा रहा है। इनका आत्मसमर्पण और राजनीति में प्रवेश होने का चित्र प्रस्तुत करके लेखिकाओं ने तत्कालीन राजनीति का असली चित्र प्रस्तुत किया है। भ्रष्ट राजनीति आज समाज का अभिशाप बन गयी है। आज राजनीति का अपराधीकरण हो गया है। कबूतराओं की जीवन गथा के ज़रिए लेखिका ने हमारे समाज के सभ्य और प्रतिष्ठित लोगों की कथनी और करनी का अनावरण किया है। देश में बढ़ती अमानवीयता, स्वार्थता, क्रूरता और झूठ-फरेब से आम आदमी का जीवन दूभर हो गया है।

'महाभोज' और 'आपका बंटी' द्वारा मन्नूजी ने समकालीन चुनावी राजनीति और आधुनिक शिक्षित युवा पीढ़ि के दंभ और पारिवारिक

जीवन के टूटन आदि को प्रस्तुत किया है। 'तत्वमसी' उपन्यास में जया जादवानी ने प्रेम के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करते हुए स्त्री-पुरुष सम्बन्धों और उनकी मानसिकता से लेकर पारिवारिक जीवन की सारी हलचलों का भी समावेश किया है। इसमें उपन्यासकार ने पारिवारिक सन्दर्भों की दर्शन और मनोविज्ञान के ज़रिए नयी व्याख्या देने की कोशिश की है।

समकालीन महिला कथाकारों ने सामाजिक समस्याओं को स्त्री के नज़रिए से देखने-परखने की पहल की है। इन लेखिकाओं ने नारी की समस्याओं को स्त्री की दृष्टि से देखा और अन्य सामाजिक समस्याओं पर कम नज़र डाली। पुरुष लेखकों के समान किसी वादों या किसी ज़िम्मे को निभाने के बजाय स्त्री मुद्दों के प्रति उन्होंने प्रतिबद्धता दिखाई। पुरुष लेखकों की तुलना में महिला कथाकारों का सृजन क्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित होते हुए भी उन्होंने घर, परिवार, विवाह, दाम्पत्य, रिश्ते-नाते, प्रेम, तलाक जैसे मुद्दों को बड़ी बेवाकी से उजागर किया है। नारी जीवन की पीड़ा, शोषण, दमित-कुंठित वासनाएँ, मान-सम्मान के प्रश्न, नौकरी के क्षेत्र में पुरुष सत्ता द्वारा स्त्रियों को सताना आदि को अभिव्यक्ति देने में इनको बड़ी कामयाबी मिली है।

इस प्रकार नारी जीवन के अनुभवों-अनुभूतियों को भिन्न-भिन्न कोणों से प्रस्तुत करने में महिला रचनाकारों को काफी सफलता हासिल हुई है। सूर्यबाला के 'इन्तज़ार तक' कृष्णा सोबती का 'समय सरगम' मैत्रेयी पुष्पा का 'अल्माकबूतरी' जया जादवानी का 'तत्वमसी' राजी सेठ के 'तत्सम' और 'निष्कवच', दीप्ती खण्डेलवाल का 'प्रतिध्वनियाँ' शशिप्रभा शास्त्री के 'मिनारें' और 'कर्करेखा' अल्का सरावगी का 'शेष कादम्बरी'

गीतांजलीश्री का 'माई' जैसे उपन्यासों में समकालीन समाज की विसंगतियों-जटिलताओं से जूझती स्त्री की स्थिति को उकेरा गया है।

हिन्दी महिला लेखन में यद्यपि स्त्री की स्वतंत्रता, समानता और अधिकारों की माँग अधिक मुखर है तो भी उनमें अल्पस्तर पर ही सही, नारी जाति को दायित्वबोध का एहसास कराने का प्रयास भी दृष्टिगत होता है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' में परम्परागत रूढ़ियों के प्रति तीक्ष्ण आक्रोश व्यक्त है। साथ ही साथ वर्तमान की आयायित चुनौतियों को अपनी मान्यताओं, आवश्यकताओं की कसौटी पर परखने का प्रयास भी है। उपभोक्तवादी अपसंस्कृति और उसका पोषक मीड़िया तन्त्र स्त्री को स्वतंत्रता और स्वच्छन्दता का आकर्षण आइना दिखाकर नई तरह की दासता में कैद कर रहा है, जिसमें वह व्यक्तित्व हीन वस्तु बन रही है।

शशिप्रभा शास्त्री का 'नावें' परिवार और रिश्तों की दृढता की आवश्यकता पर लिखा गया उपन्यास है। कृष्णा अग्निहोत्री का 'एक बात औरत की' ऐसा उपन्यास है जिसमें माँ-बाप की मनमानी जीवन से बच्चों के मन में होनेवाली दुविधा की चर्चा हैं। इसमें पुरुष की दायित्व हीनता से त्रस्त नारी की दर्द-व्यथा को प्रकट किया गया है। नासिरा शर्मा ने 'शाल्मली' और 'ठीकरे की मँगनी' में व्यावहारिक धरातल पर स्त्री की जीवटता, विश्वास और संघर्षों को प्रस्तुत किया जो मर्यादित और संयत है। ग्रामीण जीवन की निम्न वर्गीय स्त्रियों के जीवन के प्रस्तुत करके मृदुला सिन्हा ने 'घरवास' उपन्यास में परम्परागत रूढ़ियों और आधुनिकता के दबाव में बदलते ग्रामीण जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है। उपन्यास में परिस्थितियों

को भेदकर निकलती स्त्री के आत्मविश्वास को प्रस्तुत किया गया है। प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' में बौद्धिक धरातल पर नारी जीवन की अन्तर्व्यंथा और संघर्ष को भिन्न-भिन्न कोणों से प्रस्तुत किया गया है।

मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपने उपन्यास 'कोरजा' में स्त्री मन की तड़प, पीडा, घुटन, निराशा को प्रस्तुत करके मानवीय संवेदना जगाने का प्रयास किया है। इस प्रकार महिला उपन्यासकारों ने जीवन के बहुविध पक्षों को लेकर लेखन कार्य किया है। लेकिन इन तमाम रचनाओं की धुरी में नारी जीवन का संघर्ष है। नारी जीवन की अन्तर-बाह्य परिस्थितियों के अनछुए पहलुओं की प्रस्तुति लेखिकाओं ने बड़ी जीवन्तता के साथ की है। मेहरुन्नीसा परवेज़ का 'आँखों की दहलीज' मंजुल भगत का 'अनारो' मृदुला गर्ग का 'चितकोबरा' और 'कठगुलाब' मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक्' चित्रा मुद्‌गल का 'आवाँ' अलका सरावगी का 'कलिकथा वाया बाइपास' राजी सेठ का 'तत्सम' कुसुम कुमार का 'हीरामन हाइस्कूल' कमल कुमार का 'यह खबर नहीं', प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता' आदि सामाजिक सरोकारों से युक्त नारी जीवन को सही ढंग से प्रस्तुत करनेवाले उपन्यास हैं।

स्त्री पात्र को केन्द्र में रखकर महिला उपन्यासकारों ने समाज की तमाम समस्याओं को अपने अनुभव के दायरे में देखने-परखने की कोशिश की है। मंजुल भगत का 'अनारो' में महानगरीय परिवेश में झोंपड़ी के भीतर कीड़ों-मकड़ों के समान जीवन बिताने में विवश लोगों और निम्न वर्ग की स्त्रियों के जीवन की अभिव्यक्ति है। महिला उपन्यासकारों में मेहरुन्नीसा परवेज़ और नासिरा शर्मा ने मुस्लिम समाज की स्त्रियों और उनकी समस्याओं को आधार बनाकर कई महत्वपूर्ण उपन्यास लिखे हैं।

'शाल्मली' में अन्तर्जातीय विवाह और उससे उपजती पारिवारिक सामाजिक समस्याओं का सजीव अंकन है। 'ठीकरे की माँगनी' में धार्मिक रूढ़ियों के कारण अपनी ज़िन्दगी नष्ट हो जानेवाली एक लड़की की कथा है। मालती जोशी ने नारी जीवन के संघर्ष को घर-बाहर के द्वन्द्व और तनावपूर्ण मानसिकता को यथार्थ भावभूमि में चित्रित किया है। उनका 'सहचारिणी' उपन्यास इसका उदाहरण है। उम्र के अन्तराल से पति-पत्नी के बीच होनेवाली समस्याओं को लेखिका ने 'पाषाणयुग' में उपस्थित किया है।

कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने उपन्यास 'बात एक औरत की' में नारी का विद्रोहात्मक जीवन और अनेक पुरुषों के साथ जीवन बिताकर जीवन को नई परिभाषा देने का प्रयास करती नारी का चित्र प्रस्तुत किया है। इसमें पुरुष के शिष्टाचार और एक- पत्नीव्रत, धर्म, कर्तव्य, मान्यता आदि को पारिवारिक जीवन के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

महिला रचनाकारों ने बिना किसी साहित्यिक या राजनीतिक वाद-विवाद में न पड़कर रचनाकार्य किया है। उनकी रचनाओं के विषय प्रायः शोषण, उत्पीड़न, पीड़ा-व्यथा, जागरण, संघर्ष आदि हैं।

प्रेम विवाह एवं तलाक

आज मनुष्य की मानसिकता में भारी बदलाव आ गया है। पूरे समाज में पाश्चात्य सभ्यता की पकड़ है। नौकरी की तलाश में विदेश में जानेवाले वहाँ के जीवन और सुख-सुविधाओं से प्रभावित हो जाते हैं। अपने जीवन में इसे लागू करना स्वाभाविक है। पर हमारी संस्कृति कुछ अलग है और हमारे अपने नैतिक मान और परंपरागत रूढियाँ भी हैं। वर्तमान समाज में भी मुख्यतः पुराने ज़माने की तरह पारिवारिक, सामाजिक,

सांस्कृतिक तथा धार्मिकता की मान्यता पर शादी तय कर ली जाती है। पहले से ही विवाह को एक पवित्र बन्धन मानता आ रहा है और पति को जन्म-जन्म के साथी के रूप में स्वीकार किया जाता था। पर आज स्थिति बदल गयी है स्त्री-पुरुष अपने अपने साथी को खुद तय करते हैं और शादी करते हैं। इससे दहेज के संकट से मुक्ति और स्त्रियों को अपने साथी का चयन स्वयं करने का अधिकार मिलता है। लेकिन बुनियाद कमज़ोर होने के कारण नब्बे प्रतिशत दाम्पत्य में दरार पड़ जाती है। फलतः दाम्पत्य संबन्ध टूट जाता है। पिछले दो दशकों में पति-पत्नी के तलाक लेनेवाले की संख्या बढ़ी है। आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने के कारण स्त्री पुरुष के गलत व्यवहार को सह नहीं पाती। आर्थिक सुरक्षा ने उसमें एक प्रकार का आत्मबल दिया है। दाम्पत्य जीवन का आधार विवाह और पति-पत्नी का परस्पर विश्वास है। पुराने ज़माने में विवाह बन्धन टूटने का कारण अनमेल विवाह, बहु विवाह आदि रहा था। लेकिन आज समझौता विहीनता, नासमझी एवं दंभ आदि के कारण भी तलाक होते हैं।

समकालीन लेखिकाओं ने प्रेम, विवाह, एवं तलाक को लेकर अनेक उपन्यास लिखे। मन्नूभण्डारी का 'आपका बंटी' और मंजुल भगत का 'टूटा हुआ इन्द्रधनुष' इसके उदाहरण हैं। विवाह जीवन की बहुमुखी समस्याओं को चन्द्रकान्ता, ममताकालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, निरूपमा सेवती, मेहरुन्नीसा परवेज़ आदि ने सटीक ढंग से प्रस्तुत किया है।

नौकरी पेशा नारी

आज की नारी ने जीवन के अक्सर तमाम क्षेत्रों में अपनी क्षमता को दर्शाया है। आधुनिक नारी अपनी 'करियर' पर अधिक सजग है।

इसलिए वह पहले के समान घर की चार-दीवार के अन्दर बन्द रहना नहीं चाहती। नौकरी केलिए उसे घर से बाहर नगरों-महानगरों तक जाना पड़ता है। पहले, स्त्रियाँ नौकरी केलिए अपने गाँव खेतों में कृषि कार्य में भाग लेती थीं। वह केवल घरेलु आवश्यकता केलिए थी। पर आज वे उस सीमा को तोड़कर कारखानों, कार्यालयों में काम करने लखी है। इसप्रकार घर और बाहर के दोहरे व्यक्तित्व को निभानेवाली स्त्री मानसिकता को महिला लेखकों द्वारा सही अभिव्यक्ति मिली है। घर के तनावग्रस्त माहौल से बाहर आयी नारी कार्यालयीन जीवन और समस्याओं से भी जूझने को विवश हो गयी है। रजनी पनिक्कर के 'मोम के मोती' की परंपरा के कई उपन्यास नौकरी पेशा नारी और उनकी समस्याओं को लेकर लिखे गये। कृष्णा सोबती का 'यारों के यार' में दफ्तरी माहौल का जिक्र किया गया है। मन्नू भण्डारी का 'आपका बंटी' सामाजिक समस्याओं के कई पहलुओं पर प्रकाश डालता है। इसमें भी नौकरी पेशा नारी का दंभ का चित्र प्रस्तुत है। उषा प्रियंवदा का 'पचपन खम्भेलाल दीवारें' घर के दायित्वों के बीच पिसती नारी की कहानी है। मंजुल भगत का 'तिरछी बौछार' मृदुला गर्ग का 'मैं और मैं' आदि उपन्यासों में कामकाजी नारी के घर बाहर की समस्याओं की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है।

राजनीतिक सन्दर्भ के उपन्यास

समकालीन राजनीति भ्रष्टाचार, अपराधीकरण और तिकड़म का साधन बन गयी है। राजनैतिक नेता महज वायदों से आम जनता की आँखों में धूल झोंक रहे हैं। सच्चा समाज सेवक तथा राजनीतिक कार्यकर्ता पद-लोभी एवं धन लोलुप नहीं होता। कंचनलता सब्बरवाला का 'नया

मोड़', शशिप्रभा शास्त्री का 'नावें' आदि में आदर्शवादी समाज सुधारक की जीवन गाथा है। गीतारानी कुशवाह के 'सरोज' में साहसी, निर्भीक, आत्मगौरवी, चतुर एवं कुशाग्रबुद्धि से युक्त क्रान्तिकारी युवा लोगों की सामाजिक सेवा तथा समर्पण भाव को प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा मीरा महादेवन का 'अपना घर' गीतारानी कुशवाह का 'गरम खून ठण्डा पानी' विमला शर्मा का 'कीर्ति शेष', क्रान्ति वर्मा का 'साका सप्न', बिन्दु सिन्हा का 'सागर पारबी' कृष्णा अग्निहोत्री का 'बात एक औरत की', निर्मला वाजपेयी का 'काँटों के फूल' आदि में राजनैतिक नेताओं के कार्य क्षेत्रों और उनके कार्यकलापों की चर्चा करके सच्चे राजनीतिक नेताओं का चित्रण हुआ है। साथ ही साथ छल-कपट से दूसरों पर अत्याचार करनेवाले राजनैतिक नेताओं की भी महिला उपन्यासकारों ने तीखी अभिव्यक्ति देने की कोशिश की है। मन्नू भण्डारी का 'महाभोज' चित्रा मुद्गल का 'आवाँ' शान्ति जोशी का 'राजुल' कृष्णा सोबती का 'जिन्दगीनामा', निर्मला वाजपेयी का 'सूखा सैलाब' आदि उपन्यास इसके उदाहरण हैं।"[1]

सत्ता प्राप्ति केलिए प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चुनाव एक ऐसी सीढ़ी है जिस पर चढ़ने केलिए महत्वाकांक्षी व्यक्ति आज सभी तौर तरीकों का इस्तेमाल करते हैं और जनसेवा का नारा देने के साथ साथ अधिकतर प्रत्याशियों की अभिलाषा, व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति तथा अपनी पद-प्रतिष्ठा की है। आज-कल की राजनीति में नैतिकता की बू तक नहीं है। कई वर्षों से हमारे देश की जनता झूठे-वादों तथा प्रलोभनों से गुमराह हो रही है। कई नेताओं द्वारा झूठ बोलकर जनता को ठगा भी जा रहा है।[2]

1. डॉ. सुधाकर हिन्दी उपन्यासों में प्रशासन पृ. 70
2. वहीं पृ. 72

कुलमिलाकर स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी राजनीतिक उपन्यास यह प्रतिध्वनित करता है कि सम्पूर्ण व्यवस्था में धुन लग गया है और प्रशासन लुंज-पुंज हो गया है। आज उपन्यासकार की लेखनी प्रशासन के सकारात्मक पहलुओं को उजागर करने में नहीं रमती बल्कि उसकी पोलों को खोलने में ही अधिक व्यस्त है। भ्रष्टाचार की चक्की में गरीब जनता पिस रही है। जनता को चूसनेवालों में राजनीतिज्ञ, सरकारी कर्मचारी, पूँजीपति और दलाल सभी शामिल हैं। शान्ति जोशी अपने उपन्यास 'राजुल' में कहती है "भ्रष्टाचार, डकैती, घूस के नरमुण्डों का मदोन्मत्त नग्न नृत्य जनता को भोजन, वस्त्र और आवास से विहीन कर देश को खण्ड-खण्ड और जीर्णशीर्ण कर रहा है।"(1) राजनैतिक नेताओं के अपने आदमियों द्वारा समाज में होनेवाली डकैतियों, चोरियों, स्त्रियों पर किये जानेवाले अत्याचार आदि को 'राजुल' में उपन्यासकार ने अभिव्यक्त किया है। कृष्णा सोबती ने 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास में उथली राजनीति के साथ सामाजिक स्थितियों का भी चित्र प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास सफेद पोश समाज की दस्तान है। मेहरुन्नीसा परवेज़ के 'कोरजा' में धार्मिक संघर्ष के बीच राजनीतिक संघर्ष का चित्रण अत्यधिक सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान राजनीति से लोग अतृप्त हैं। देश में पनपे राजनीतिक और पूँजीवादी भ्रष्टाचार ने निम्नवर्ग को अधिक शोषित बना दिया है।

इस प्रकार समकालीन महिला लेखिकाओं ने समाज की अन्य समस्याओं के साथ राजनैतिक गति-विधियों एवं उसके अन्तर्विरोधों को भी अपनी रचनाओं का विषय बनाया है।

---

1. शान्ति जोशी राजुल पृ. 48

चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में संवेदना के विभिन्न आयाम

अपनी सृजनात्मकता की विशिष्टता के द्वारा समकालीन उपन्यास लेखन के क्षेत्र में चित्राजी ने एक खास स्थान प्राप्त किया है। भोगे हुए अनुभव पर लिखित उनकी रचनाएँ जन-जीवन की निकटतम बातें बन गयीं। साहित्य सृजन केलिए उन्हें विषय खोजने की ज़रूरत नहीं पड़ी, घटनाएँ उन्हें नज़दीक से ही मिलीं। उनमें उच्चवर्ग के जीवन से लेकर निम्नवर्ग का जीवन तक है। एक समाज सेविका के रूप में उन्हें मनुष्य जीवन की विभिन्न समस्याओं एवं विवशताओं से गुज़रना पड़ा था।

उनकी रचनाओं के सभी पात्र हमारे समाज में नितप्रति दिखाई देनेवाले हैं। मानव जीवन की समस्याएँ कालातीत हैं जो वर्तमान से होकर भविष्य की ओर जा रही हैं। धर्म, धन, परिस्थिति के अनुसार ये समस्याएँ कई रूप में समाज में विद्यमान हैं। ये समस्याएँ मानव जीवन को हमेशा सताती रहती हैं।

अभी तक चित्राजी के तीन उपन्यास प्रकाशित हैं। वे हैं 'एक ज़मीन अपनी', 'आवाँ' और 'गिलिगडु'। सामाजिक संपृक्तता उनके उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता है। उनके उपन्यासों में नारी जीवन की अस्मिता, अस्तित्व, स्वतंत्रता बोध, आदि को व्यक्त किया गया है। नारी मुक्ति, समानता स्वातंत्र्य आदि के बारे में उनकी जो राय है उसका सीधा प्रतिफलन है उनकी रचनाएँ।

ज़रूरत है स्त्री केलिए अपनी एक ज़मीन

चित्राजी ने अपनी रचनाओं में नारी जीवन को ही प्रधानता दी है। स्त्री होने के साथ-साथ एक समाजसेविका का जीवन-अनुभव उनकी

तमाम रचनाओं में हर कहीं विद्यमान है। नारी जीवन की सारी गति-विधियों का चित्रण करने के साथ-साथ चित्राजी यह भी संकेत करती है कि नारी जीवन में होनेवाली उलझनों की जिम्मेदार खुद नारी ही है। स्त्री स्वातंत्र्य पर ज़ोर देनेवाले आधुनिक समाज में स्त्री स्वातंत्र्य किस प्रकार, किस हद तक होना है, इस प्रश्न का उत्तर उनकी रचनाओं में व्यक्त है। 'प्रेतयोनि' कहानी में चित्रित नीतू का चरित्र 'जब तक बिमलाएँ हैं' कहानी में चित्रित बिमला आदि पात्र मौजूदा व्यवस्था के प्रति विद्रोह करते हैं। कहानियों के अलावा उपन्यास में नारी जीवन की वास्तविक गति को प्रस्तुत किया गया है। 'एक ज़मीन अपनी' उपन्यास में लेखिका ने स्त्री केलिए अपनी ज़मीन की आवश्यकता पर बल दिया है। पुरुष की गुलामी को अस्वीकार करते हुए, पुरुष समाज को सम्मान करनेवाली अंकिता जैसे पात्र द्वारा चित्राजी ने समकालीन समाज में नारी शोषण का एक नया चित्र प्रस्तुत किया है। अंकिता विज्ञापन के क्षेत्र में काम करती है। वहाँ नारी शोषण के कई रूप हैं। स्त्री शरीर को सभी तरह आधुनिक समाज शोषण करता है। नीता का चरित्र कुछ विकल है। वह सदियों से दमित नारी जीवन से स्वतंत्र होना चाहती है। इसलिए वह पुरुष द्वारा ही निर्धारित स्वातंत्र्य को स्वीकारती है पर वह नहीं जानती कि यह उसे फंसाने और शोषण करने का नया जाल है। अंकिता कहती है वह परिभाषा अधिकार आधुनिकता, समता और स्वतंत्रता के नाम पर पुरुषों द्वारा ही अखबारों, पत्रिकाओं, विज्ञापनों, फिल्मों, पोस्टरों, स्लाइड्स के माध्यम से स्त्री को सौंपी जा रही है... बड़ी चतुरता से काया-कल्प के बहाने जिंस बनाए रखने का षडयंत्र।"[1] अंकिता के तर्कों को नीता स्वीकारती है पर वह अपने को

---

1 चित्रा मुद्गल एक ज़मीन अपनी पृ. 126

कपड़ों में छिपाते रखने को तैयार नहीं। अंकिता अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बनाये रखना चाहती, वह अपनी व्यक्तित्व एवं स्वातंत्र्य को पति केलिए भी त्यागने को तैयार नहीं। इसलिए नौकरी करके अकेले जीने को तैयार होती है। नीता अंकिता की दोस्त है, वह एक निरंकुश लड़की के रूप में चित्रित है। नीता का चरित्र आधुनिक युवा पीढ़ि का प्रतिनिधित्व करता है। वह किसी प्रकार का बन्धन सह नहीं पाती। वह पुरुष के समान जीना चाहती है, वैवाहिक सम्बन्ध को अनावश्यक मानती है। लेकिन उसे आखिर अपने इस स्वतंत्र जीवन के परिणाम स्वरूप मृत्यु को स्वीकार करना पड़ा। नीतू से अंकिता कहती है स्त्री केलिए अपनी ज़मीन चाहिए उसे अपनी ही संस्कृति में पलना और उसी में जीना चाहिए। अंकिता अभिमानी चरित्र है, उसने स्वतंत्रता को व्यक्ति स्वातंत्र्य के रूप में देखा है। पुरुष समाज आगे भी अपने अधीन बनाये रखने का सामंती इरादा है। स्त्री को वह अब भी इस्तेमाल कर रहा है। नीता जैसी आधुनिक कहलाने के शौकीन स्त्री इन सबको स्वीकारती है। 'एक ज़मीन अपनी' में आज की संघर्षशील नारी की विविध समस्याएँ, समाज में उनका बनता-मिटता स्थान, उनका अपना झुकाव, पुरुष समाज के प्रति उनका रवैया आदि की ओर संकेत है। उपन्यास में उठायी गयी एक सामाजिक समस्या है नारी शोषण। विज्ञापन जगत में स्त्री शरीर का जिस प्रकार शोषण हो रहा है और समता-समानता के नारे को लेकर पुरुष के कन्धे से कन्धे मिलाकर स्वतंत्र बिताने की कोशिश के अन्त में आत्महत्या करने केलिए मज़बूर नीता नामक पात्र के ज़रिये चित्राजी ने आधुनिक जीवन के खोखलेपन का खुलासा देने का प्रयास किया है। मर्द बनना नीता का स्त्री-समानता का दृष्टिकोण है। इस प्रकार नारी मुक्ति की चेतना के दो विपरीत पक्षों को उजागर करती है।

परिवार, विवाह आदि सामाजिक मर्यादा है। आधुनिक समाज में अब परस्पर सम्बन्ध पर विश्वास नहीं है। पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करके आधुनिक मनुष्य अपने जीवन को चिन्दी-चिन्दी कर फेंक देता है। उपन्यास की नायिका अंकिता भी अपने पति सुधांशु के चरित्र को सह नहीं पाती। इसलिए वह तलाक लेकर अकेले जीती है। लेकिन नीता विवाह बन्धन को अनावश्यक मानती है और मानसिक सम्बन्ध को सही मानती है। आखिर वह महसूस करती है कि उसके पैर के नीचे ज़मीन नहीं है। इस प्रकार लेखिका ने अंकिता के माध्यम से एक सकारात्मक नारी चरित्र को गढा, जिसकी अपनी अस्मिता है और उसके पावों के नीचे ज़मीन है जो उसकी अपनी है।[1] समाज में ज़रूर कुछ बन्धन है वह संस्कृति केलिए अनिवार्य है। 'आवाँ' उपन्यास में भी यही विचार विद्यमान है। नमिता पाण्डे अपना सारा जीवन बरबाद करने के बाद ही अपनी नियति की वास्तविकता को स्वीकारती है। नमिता का जीवन जिन-जिन राहों से गुज़रा वहाँ-वहाँ पुरुष समाज का दुःशासन एवं उपभोक्तावाद का जाल विद्यमान रहा। नारी को फंसाने केलिए हर कहीं किसी न किसी जाल बिछा पड़ा है। नमिता इन सबसे गुज़र कर वास्तविक भूमि पर लौट आती है। उनका वास्तविक चरित्र यानि 'हर्षा' सामाजिक जीवन के सारे छल-कपटों को जानती है पर शरीर रूपी नमिता सुख-सुविधा की ओर आकृष्ट होती है। लेकिन अन्त में उन दोनों के मिलने का संकेत भी उपन्यास में है। समाज में व्यक्त नारी शोषण एवं अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह करने केलिए स्त्री केलिए अपनी ज़मीन होना अनिवार्य है। स्त्री को अपनी ज़मीन को अपनाने की प्रेरणा देना चित्राजी का लक्ष्य है।

---

1. गुरुचरण सिंह मीडिया और स्त्री अस्मिता पृ. 64

उपभोगवाद का दृश्य-अदृश्य जाल

आधुनिक समाज की एक चर्चित विषय है उपभोक्तवाद। समकालीन जीवन में पीने के पानी से लेकर यह समाज में व्याप्त है, जिससे व्यक्ति और समाज को कई नई-नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। चित्राजी ने उपभोक्तावादि अप-संस्कृति का चित्रण अपनी कहानियों और उपन्यासों में किया है। शहरीकरण और उपभोक्तावादी अपसंस्कृति ने नारी को शोषण की शिकार बनाई। नारी के शारीरिक एवं मानसिक रूप में शोषण का चित्रण चित्राजी के 'एक ज़मीन अपनी' में मिलता है। विज्ञापन के जगत में नारी शोषण का चित्र प्रस्तुत करके चित्राजी ने नारी मुक्ति को प्रमुखता दी है। 'अठाई गज ओठनी' 'स्टेपिनी' 'वैइफ स्वैपी' 'एक काली एक सफेद' आदि कहानियों में उपभोक्तावादी अपसंस्कृति का चित्रण है। 'एक ज़मीन अपनी' का नारी पात्र अंकिता के सम्बन्ध में चित्राजी ने यों बताया है 'एक ज़मीन अपनी' में नारी चेतना आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में मैंने दिग्भ्रमितता के संकट को विवेचित करते हुए उन खतरों से अगाह किया है कि जिसे आज का अधिकांश पढ़ा-लिखा विचारशील होने का दावा करता हुआ स्त्री समाज, स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री समानता और उसके मानवीय अधिकारों की लड़ाई लड़ता हुआ भी नहीं जानता कि वे अधिकार वस्तुतः क्या हैं? कैसे होना चाहिए? किस रूप में होना चाहिए और उनकी सामाजिक छवि कैसी हो? उपभोक्ता और संस्कृति को पोसने परोसनेवाले विज्ञापन जगत में संघर्षरत उपन्यास की नायिका अंकिता नारी मुक्ति से जुड़े उन ज्वलन्त प्रश्नों से भी दो-चार होती है। जो आधुनिकता, वैचारिकता, समता और जीवन शैली के नाम पर संचार माध्यमों के ज़रिए एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत पुरुष प्रधान समाज नारी को सौंप रहा है।[(1)]

---

1. साक्षात्कार जुलाई पृ. 53

इस प्रकार आधुनिकता की आड़ में उपभोक्तवादी संस्कृति ने नारी को बिक्री का नया माल बनाया है। अपने अधिकार केलिए लड़ती स्त्री समाज को बड़ी चतुरता से विज्ञापन और मॉडलिंग के क्षेत्र में समता देकर उसका शोषण करने का षड़यंत्र रचा गया है। इस प्रकार स्त्री पुरुष समता स्थापित करने और सिन्दूर, बिछुए आदि छोड़कर अल्प वस्त्र धारण कर उतरनेवाली नीतू जैसे पात्र उभोक्तवाद संस्कृति की उपज है। अंकिता उसकी आलोचना करती है तो वह कहती है "स्त्री की सामाजिक छवि को दूषित करने केलिए तुम, हम-जैसी आधुनिकाओं को कोस रही हो, पुरुषों को कोस रही हो, उस स्त्री को क्यों नहीं कोसती जो फेरे लेते ही तोला भर सिन्दूर के रूप में पति की खोंपडी पर बाकायदा बैठाए दासीत्व भाव को जीने में गौरव अनुभव करती है।"[1] स्त्री शरीर के अनावश्यक प्रदर्शन को अंकिता ने स्वीकार नहीं किया। इससे बने लाखों रुपयों का नष्ट करना भोजराज जैसे व्यवसायी पसंद नहीं कर सकता। वह भोजराज को त्यागपत्र देती है। अंकिता में स्वाभिमानी पक्ष अधिक है। वह इसलिए त्यागपत्र देने को तैयार होती है कि भोजराज की सहायता के बिना? "वह खुलकर सांस नहीं ले पाएगी"[2] उनके प्रति उसकी कृतज्ञता भी है। साथ ही दायित्वपूर्ण अनुभव का सुअवसर उसने ही दिया है। उपन्यास में उपभोक्तावाद के सन्दर्भ में भी हमारी अपनी ज़मीन की ज़रूरत पर लेखिका ने ज़ोर दिया है। 'आवाँ' में भी उपभोक्तावादी अप संस्कृती के दुष्परिणामों की चर्चा हुई है। उपन्यास में उपभोक्तवाद का असर सबसे पहले कुंती मौसी, अंजना वासवानी, गौतमी आदि पर है। अंजना वासवानी का चरित्र एक उपभोक्तवादी

---

1. चित्रा मुद्गल एक ज़मीन अपनी पृ. 127
2. चित्रा मुद्गल एक ज़मीन अपनी पृ. 128

एवं भोगवादी स्त्री का है। सिद्धार्थ मेहता जो संजय कनोई के 'कैमरामान' भोगवाद को व्यक्त करते हुए संजय कनोई के चरित्र को समझाया। अंजना वासवानी धन कमाने केलिए नैतिक-अनैतिक कार्यों को भी अपनाने में संकोच नहीं करती। वर्तमान युग में वासवानी जैसी उपभोक्तवादी औरतें आसानी से देखने को मिल जाती हैं। यह हमारे समाज का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। नमिता और गौतमी जैसी भोली-भाली लड़कियों को आकर्षित कर अंजना वासवानी घर बैठे लाखों रुपये कमाती है। साथ ही मॉडलिंग के बहाने छेड़ा साहब व संजय कनोई के साथ क्रमशः गौतमी व नमिता को भेजती है, दोनों का लक्ष्य बाप बनना है। इस प्रकरण में उसे ऊँची कमीशन भी मिलता है। संजय कनोई की बातों से यह स्पष्ट हो जाता है "जानती हो? बाप बनने केलिए मैंने तुम्हारे ऊपर कितना खर्च किया? उस मामूली औरत अंजना वासवानी की औकात है कि तुम्हारे ऊपर पैसा पानी की तरह बहा सके? उसका जिम्मा सिर्फ इतना भर था कि वह मेरे पिता बनने में मेरी मदद करे और सौदे के मुताबिक अपना कमीशन खाए।[1] छेडा साहब और संजय कनोई जैसे व्यक्तियों केलिए दलाली करके अंजना वासवानी अपने व्यापार की वृद्धि कराती है।

उपभोक्तवाद से ग्रसित नई पीढ़ि अपने माँ-बाप को तनहा में छोडकर शहर की ओर जाती है। अणु परिवार के पनपने के कारण जीवन की सारी गति-विधियाँ बदल गयी हैं। घर पर बूढे लोगों को कुत्ते से बदत्तर जीवन बिताने को विवश कर दिया जाता है। 'गिलगडु' का वृद्ध पात्र पूछता है "तुम कभी बूढे नहीं होगे नरेन्द्र?"[2]

---

1. चित्रा मुद्‌गल आवाँ पृ. 539
2. चित्रा मुद्‌गल गिलगडु पृ. 80

विज्ञापन : नारी शोषण का अड्डा

चित्राजी के 'एक ज़मीन अपनी' में विज्ञापन जगत में नारी किस प्रकार शोषण की शिकार बन जाती है इसका विशद विश्लेषण है। विज्ञापन उपभोक्तवाद का दूसरा रूप है। इसकी भीतरी तह छल, शोषण, दलाली आदि से बनी हुई है। विज्ञापन जगत में काम करनेवाली नारी को यहाँ कई प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है। अर्थ और प्रतिष्ठा केलिए नीता जैसे पात्र अपने संस्कारों एवं जीवन मूल्यों को खो बैठते हैं। उसने अपनी योग्यता तथा प्रतिभा के बल पर आगे बढ़ना चाहा, किसी सिफारिश के बल पर नहीं। पर नीता की मान्यता यही है कि "यह ग्लैमर की दुनिया है यहाँ जीने की, जी पाने की पहली शर्त है विशिष्ट दिखना, विशिष्ट करना, विशिष्ट बनना जो वास्तविकता नहीं है।[1] ग्लैमर की इस दुनिया में अंकिता नैतिक मूल्यों को नष्ट करना नहीं चाहती। वह कहती है "स्त्रीत्व के गुणों को बरकरार रखते हुए... संघर्ष का यह गलत मोड़ है नीतू! चेतने की ज़रूरत है स्त्री को स्त्रीत्व में मुक्ति नहीं चाहिए। उन रूढियों से मुक्ति चाहिए, जिन्होंने उसे वस्तु बना रखा है"[2] इसलिए ही अंकिता ने भोजराज के प्रति अपनी कृतज्ञता को प्रेम भाव से प्रकट नहीं किया। नीतु उपदेश देती है कि "तुम मि. भोजराज के प्रति कृतज्ञ हो ओगी... उन्होंने भी तुम्हें वह छलांग मारने में मदद की है अंकू, जो तुम्हारे लिए महज एक सपना था उनके प्रति तुम्हारा कृतज्ञ भाव प्रेम हो सकता है।"[3] विज्ञापन जगत में ऐसे कई प्रकार की समस्याएँ हैं जो स्त्री को भीतरी और बाहरी तौर पर शोषण के शिकार होने को मज़बूर करती हैं।

---

1. चित्रा मुद्गल एक ज़मीन अपनी पृ. 45
2. वहीं पृ. 201
3. वहीं पृ. 202

कायम कर लेना।"[1] उसकी बातें तत्कालीन युवा पीढ़ी की मानसिकता व्यक्त करती हैं। जहाँ लोग अभ्यास एवं अनुभव के बल पर पहूँचते हैं, वहाँ युवा पीढ़ि छलांग कर पहूँचती है। इस कारण से वह संगठनों के नेतृत्व गुण-अवगुणों से ग्रस्त हो जाता है। ऐसे लोग ही वोट पाने के हथियार के रूप में धर्म और साम्प्रदायिकता आदि को अपनाते हैं। नेतागिरी की होड़ समकालीन राजनीति का अंग है। नेता बनने केलिए ही पवार ने श्रमिक संगठनों में भाग लिया है। उपन्यास में नमिता का परिवार श्रमिक संगठनों में हुई नेतागिरी की होड़ में अनाथ हो गया। राजनीति की क्रूर नीति से परिवार शिथिल होता है, बच्चे अनाथ हो जाते हैं। इसका उदाहरण है देवीशंकर पाण्डे का जीवन। चित्राजी ने 'आवाँ' में पवार नामक पात्र के ज़रिए दलित जीवन की भी चर्चा की है। श्रमिक राजनीति की पृष्ठभूमि में लिखे जाने पर भी उपन्यास में इस प्रकार के कई सामाजिक सन्दर्भों का भी समावेश हुआ है।

व्यक्ति से वस्तु बनने की त्रासदी

समाज से मानवता लुप्त होती जा रही है। बढ़ने से मनुष्य को समाज में अनावश्यका वस्तु समझी जाती है। चित्राजी ने अपने अनुभव में मिले कुछ पात्रों के ज़रिए यह दिखाने की कोशिश की है कि बूढ़े लोगों का भी अपना हक है, उनका अपना सपना भी है। लेकिन आधुनिक सभ्य समाज उनको बेकार समझता है। 'गिलिगडु' उपन्यास में चित्राजी ने बुढ़ापे की समस्याओं की चर्चा की है। बाबु जसवंतसिंह और केनल स्वामी नामक दो पात्रों के माध्यम से वृद्धजनों के अकेलापन एवं असहाय स्थिति

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 348

विज्ञापन और मॉडलिंग का दूसरा पक्ष

चित्राजी ने 'एक ज़मीन अपनी' और 'आवाँ' में समान पृष्ठभूमि में नारी शोषण का चित्र प्रस्तुत किया है। मॉडलिंग का क्षेत्र भी विज्ञापन के समान नारी शरीर के शोषण का अड्डा है। अंजना वासवानी जैसी दलाली स्त्रियाँ यहाँ लड़कियों को बेचकर अपनी पूँजी बढ़ाती है। 'आवाँ' उपन्यास में लेखिका ने आर्थिक अभाव एवं पारिवारिक शोषण से त्रस्त लड़कियों नमिता पाण्डे और गौतमी सन्याल के जीवन में हुए शोषण का चित्र प्रस्तुत किया है। नमिता पाण्डे मज़दूर नेता देवीशंकर पाण्डे की बेटी है। पिता के लकवाग्रस्त होने के कारण बड़ी बेटी नमिता पर घर के सारे जिम्मे आ जाते हैं। नौकरी की तलाश के दौरान उसकी भेंट अंजना वासवानी से हुई वहाँ उसको लिपिकीय कार्य के साथ-साथ आभूषणों की मॉडलिंग भी करना था। इसी सिलसिले में आभूषण के थोक व्यापारी संजय कनोई से उसका परिचय हुआ जो निसन्तान व्यक्ति था। बच्चे को गोद लेने को उसकी पत्नी निर्मला कनोई सहमत थी पर अपने को मर्द स्थापित करने केलिए उसे अपने ही बच्चा चाहिए था। इसलिए उसने अंजना वासवानी की सहायता से नमिता को ब्याह के झूठे जाल में फंसाया। नौकरी की तलाश में नमिता जहाँ-जहाँ पहूँची वहाँ वहाँ उसके शरीर का भरपूर शोषण हुआ। संजय कनोई का 'कैमरा मेन' सिद्धार्थ मेहत्ता भी उसी जाल की एक कड़ी है। वह कनोई की आलोचना करते हुए उसके साथ काम करने को कहता है। विज्ञापन एवं मॉडलिंग के साथ 'सिनेमा सिटी' होने के कारण वहाँ भी कई प्रकार की अनौतिक बातें चल रही हैं। चित्राजी गौतमी और नमिता के माध्यम से यह चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं। अभावों से मुक्त होने का लालच दिखाकर सिद्धार्थ

नमिता से कहता है "मैं बेहद स्पष्टवादी, ईमानदार, पेशेवर रवैये का व्यक्ति हूँ। तुम्हें लक्ष्य तक पहूँचाने में कोई कोर कसर न रखूँगा। लेकिन प्रत्येक अनुबन्ध में साठ प्रतिशत मेरा चालीस तुम्हारा। पोर्टफोलियो बनने की एवज में तुम्हें मेरे साथ दैहिक सम्बन्ध रखने होंगे। हिसाब बराबर। और कोई चिंता है?"[1] नमिता के रूप सौन्दर्य को आर्थिक और शारीरिक रूप से शोषण करने की शर्त है उनका यह प्रस्ताव। नमिता को उसका भेड़िया रूप आश्चर्य कर देता है।

गौतमी सन्याल का काम आभूषण निर्यात कंपनी की प्रबन्ध निर्देशिका का है। मॉडलिंग से उनका कोई सम्बन्ध नहीं। पर वहाँ अंजना वासवानी के साथ काम करने के कारण छेडा साहब जैसे व्यक्ति के साथ उसे जीना पड़ता है। मैडम नफा कमाती है। इसके अलावा देवयानी चतुर्वेदी, चेतना स्वामी जैसी मॉडलों के नाम भी आते हैं। लेकिन ज़्यादा जिक्र नहीं।

साम्प्रदायिकता का अभिशाप

साम्प्रदायिकता आधुनिक समाज का एक अभिशाप है। चित्राजी ने 'आवाँ' उपन्यास में समाज की की समस्याओं को समाया है। इसमें साम्प्रदायिकता के दो पक्षों को भी उन्होंने उकेरा है। आधुनिक नेता लोग साम्प्रदायिकता को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इसका उदाहरण है पवार का चरित्र। पवार में ऊँचे ओहदे की अभिलाषा है। साथ ही एक दलित होने के कारण दुःखी भी है। इसलिए वह नमिता के साथ विवाह करके ऊँचा नेता बनने का सपना देखता है। वह कहता है "आसान

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 293

होता है किसी मज़बूत संगठन में प्रवेश कर जातीय साम्प्रदायिकता के बलबूते उसकी महत्वपूर्ण धड़ा बन जाना। उसी संगठन में मेल भाव की औकात पैदा कर लेना, उनकेलिए चुनौती बन जाना। सुअवसर देख, पूरे धड़े के साथ विभाजित हो, स्वतंत्र पार्टी कायम कर लेना।"(1) पवार का महत्वाकांक्षी चरित्र नमिता को अच्छा नहीं लगा। पवार जाति की राजनीति के बल पर अपने को श्रम मंत्री बनना और अन्नासाहब जैसे सशक्त श्रमिक नेता बनना चाहता है। सुनन्दा नामक पात्र के ज़रिए आज समाज को ओक्टोपस के समान जकड़ी साम्प्रदायिकता की विभीषिका को व्यक्त किया गया है। सुनन्दा और सुहैल का सम्बन्ध धर्म विरुद्ध स्थापित करके दोनों को अलग करने की कोशिश की जाती है। सुहैल ने घरवालों को मनाकर शादी केलिए राजी करायी। लेकिन घरवालों ने एक शर्त रखी कि सुनन्दा इस्लाम धर्म स्वीकार करें। सुनन्दा उससे सहमत नहीं है "सुहैल ने प्रेम करते समय तो कोई शर्त नहीं रखी। ब्याह करना होगा तो उससे नहीं, इस्लाम से करना होगा या हिन्दुत्व से?.... जो शर्त पहले शर्त नहीं थी, बाद में क्यों शर्त बने। मुझे लगा, दीदी, समझौते आदि तो होते हैं अन्त नहीं।"(2) सुहैल विदेश चला जाता है। सुनन्दा अपनी बेटी को पालने को तैयार हो जाती है। लेकिन साम्प्रदायिकों ने एक मुसलमान का बच्चा हिन्दु घर पर बढ़ने का पलने विरोध करके उसकी हत्या कर ली। सुनन्दा के माध्यम से हिन्दु-मुस्लिम साम्प्रदायिकता की समस्या को उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है।

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 348
2. वहीं पृ. 112

ट्रेडयूनियनों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता

'आवाँ' उपन्यास में अभिव्यक्त अगली सामाजिक समस्या है। ट्रेड यूनियनों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता, अन्तर्विरोध, ठेकेदारी आदि। हिन्दी में ट्रेड यूनियन और श्रमिक संगठनों से सम्बन्धित यह पहला उपन्यास है, जिसमें चित्राजी ने व्यक्तिगत अनुभवों को आधार बनाया है। इसमें केवल मिल मलिकों, ठेकेदारों का संघर्ष मात्र नहीं, इससे जुड़े मक्कार राजनेताओं और श्रमिकों के जीवन भी है। श्रमिकों का जीवन मिलमालिकों, ठेकेदारों एवं नेताओं से जूझता रहता हैं। 'जागरण' की सदस्या होने के कारण चित्राजी को जीवन ट्रेड यूनियों का आपसी संघर्ष, श्रमिकों के हक आदि परिचय था। भूके मज़दूरों के आक्रोश से उनका परिचय वहाँ से हुआ। वहाँ से सड़क पर स्त्रीत्व को अपमानित करना भी उसने देखा। चित्राजी ने इन अनुभवों के बल ट्रेडयूनियन का इतिहास रचा है। चित्राजी ने 'आवाँ' की पृष्ठभूमि में यह लिखा है 'ट्रेडयूनियन का इतिहास - अंकन मेरे मानस का दबाव नहीं। उसे लिखने की ज़रूरत नहीं, वह तो श्रमिकों के मालिन मुख पर हरफ-दर हरफ अंकित है...।"(1) उपन्यास में अन्नासाहब, देवी शंकर पाण्डे, पवार, किशोरी बाई, विमलाबेन आदि से समकालीन ट्रेडयूनियनों एवं कई महिला संगठनों के कार्यव्यवहार पर प्रकाश डाला है। 'कामगार अघाडी' नामक श्रमिक संगठन के नेता अन्ना साहब तथा कथित श्रमिक नेताओं के प्रतिरूप हैं जो श्रमिकों के श्रम का शोषण करके उनकी सेवा की स्वांग में कार्यरत हैं। वह श्रमिकों की सेवा तो करता है फिर भी अपनी सुख-सुविधा एवं यश केलिए भी ध्यान देता है। इस केलिए देवी शंकर

---

1 चित्रा मुद्‌गल आवाँ पृ. 10

पाण्डे के परिवार केलिए कन्नमवार नगरवाला फ्लैट अनुदान में देता है। एक साक्षात्कार में वह कहता है "मित्र की सहायता केलिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर सकते हैं मित्र गद्गद। श्रमिकों के समक्ष उदारता और अनासक्ति की अप्रतिम मिसाल-श्रमिक श्रद्धावन।"[1] उसके विलक्षण व्यक्तित्व से प्रभावित होकर पवार कहता है "व्यक्ति जब मृत्यु को जीवन का पर्याय बना लेता है, तब निर्द्वन्द्व होकर अपने लक्ष्य जीने लगता है। निश्चित रूप से वे अपनी परिणति से अवगत हैं, इसीलिए निर्भय हैं। खिलाड़ी वे बहुत ऊँचे दर्जे के हैं, यह अलग बात कि खेलने से ज्यादा खिलवाने में महिर है।"[2] वह मृत्यु से नहीं ड़रते इसलिए उसने पुलिस अफसरों को अपनी सुरक्षा केलिए स्वीकार नहीं किया।

अन्नासाहब एक महत्वाकांक्षी नेता अवश्य है। साथ ही स्त्रियों के प्रति वासनायुक्त भी है। उसका सम्बन्ध विधान सभा की सदस्या तथा 'जागोरी' की महिला नेता विमला बेन से है। बेटी जैसे सम्बोधन से नमिता को भी अपनी वासना की पूर्ती कराता है। वह स्त्री शरीर का शोषण यह कहकर करता है "देह मुझे नहीं भोगती! भूले-भटके मैं स्वयं अपनी दैहिक और मानसिक थकान उतारने केलिए उसका उपयोग कर लेता हूँ ओर नई स्फूर्ती, नई ऊर्जा के साथ श्रमिक-सेवा में संलग्न हो उठता हूँ।"[3] विचित्र चरित्रवाला अन्ना साहब दूसरे श्रमिक संगठन के प्रतियोगी द्वारा मारा जाता है।

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 347
2. वहीं पृ. 345
3. वहीं पृ. 136

देवी शंकर पाण्डे जैसे नेता तत्कालीन राजनीति केलिए बेकार है। वह एक जुझारू श्रमिक नेता है जिसने अपने लिए अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करता एक बार उनपर जानलेवा आक्रमण हुआ जिससे उसके प्राण बच गये। वह लकवाग्रस्त होकर बिस्तर पर पड़े रहने को अभिशप्त हो जाते हैं। नेता होने साथ वे एक अच्छे पिता भी हैं। नमिता को बहुत प्यार करता था। नमिता के हर निर्णय को उसके जीवन की अनिवार्यता मानकर स्वीकार करता रहा। कामगार अघाडी की नौकरी छोडने के सन्दर्भ में वह कहता है "मुझे खुशी है कि तुम ने पहली बार अपने विषय में स्वतंत्र निर्णय लिया। विवेक जागृत है तुम्हारा, जागृत ही रखना। मैं तुमसे हरगिज़ नहीं पूछूँगा कि तुम वहाँ नौकरी क्यों नहीं करना चाहती? निश्चिंत होकर सो जाओ-नए भोर की प्रतीक्षा में जिसे कोई सूर्य नहीं, स्वयं आदमी गढता है।"(1) वह समकालीन राजनीति की नेतागिरी की होड़ का शिकार बना। वह अपने जीवन भर श्रमिकों के एक अच्छा श्रमिक नेता बना रहा।

अन्नासाहब के समान एक महत्वाकांक्षी युवा नेता है पवार। वह बड़े ही चालाक नेता है। वह जाति-कार्ड के बल पर वोट पाने और श्रम मंत्री बनने का सपना देखता है। वह इसलिए अन्नासाहब के साथ काम करता है कि "कोई अलग से संगठन खड़ा करना चाहता तो निश्चित ही पूरा जीवन होम हो जाता। आसान होता है किसी मज़बूत संगठन में प्रवेशकर, जातीय साम्प्रदायिकता के बलबूते उसका महत्वपूर्ण धडा बन जाना।" सुअवसर देख, पूरे धडे के साथ विभाजित हो, स्वतंत्र पार्टी

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 101

की पहचान कर आधुनिक समाज एवं शहरी जीवन की व्यस्तता को पेश किया है। पढे-लिखे युवा लोग बुजुर्ग के प्रति उपेक्षा, हेय और परिहास को आधुनिकता मानते हैं। उपन्यास का केन्द्र पात्र बाबु जसवंतसिंह अपने बेटे नरेन्द्र और बहु सुनयना के साथ फ्लैट में रहने केलिए आते है। प्रारंभ में बेटा और बहु उनसे प्रेम से व्यवहार करते थे। बाद में उनका जीवन कुत्ते से बदत्तर होने लगा। वे अपनी पसन्द को भी भूल जाते हैं। खाने-खिलाने में उनकी पत्नी ने जो सर्तकता दिखाई थी, बहु सुनयना ने उसे अनदेखा किया। उसने उन्हें एक व्यक्ति के रूप में नहीं माना। कमरे की बत्ती न बन्द करने, भूल के कारण लिफ्ट बन्द करने से लेकर और पड़ोस की मिसेज़ रावत की बेटी को देख पायजामा खोलने तक कई शिकायतें उन पर लगायीं। शिकायतों से ऊबकर नरेन्द्र कहता है "इस घर में बच्चों की शिकायतें नहीं आती बूड्ढों की आती हैं।"(1) हर शिकायत से जसवंत सिंह का जीवन और दयनीय होता रहा। बेटी शलिनी पर उन्हें गर्व था पर वह भी पिता से अनादरपूर्वक बात करती है। अपनी निसहाय स्थिति में वे सोचते हैं कि "इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं एक टॉमी, दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजिनीयर जसवंत सिंह।"(2) बेटे नरेन्द्र और बेटी शालिनी ने उन्हें मनोरोग समझकर डॉक्टर के पास ले जाने की तैयारियाँ कीं। साथ ही उसके मन में माँ के गहनों की चिंता है। जिसे जसवंतसिंह ने लॉकर में सुरक्षित रखा है। यह जानकर जसवंतसिंह केनल स्वामी से शिकायत करते हैं तो वे कहते हैं "तुम्हारा बेटा बुद्धिमाना ही नहीं व्यावहारिक भी है। व्यावहारिक समय में व्यावहारिक होना बहुत ज़रूरी है। फिर लॉकर में

---

1. चित्रा मुद्‌गल गिलिगडु पृ. 65
2. वहीं पृ. 69

जो कुछ संजोया धरा हुआ है, उन्हीं का तो है। उन्हीं का। उन तक आज पहूँचे या कल।"[1] आधुनिक युवा पीढ़ि का यह व्यावहारिक चरित्र ही बूढों को अकेलापन और असहायता की ओर धकेल देता है। इसी मानसिकता को देखकर जसवंतसिंह सोचते हैं "इस सोसइटी के लोग शायद कभी बढ़े नहीं होंगे। न उनकी शक्ति क्षीण होगी न स्मृति। ऐसे अजर-अमर जन्मे हैं, न कभी कोई कष्ट व्यापेगा न हारी बीमारी।"[2]

केनल स्वामी अपनी बूढापे में भी खुश जीवन बिताते हैं। उन्होंने सपनों में अपने जीवन को सुखी बनाया। बेटे बहु और पोते-पोतियों साथ जीने की कल्पना कर जीवन बिताते हैं। वे शराब पीते हैं और अपना आखिरी प्रेम अणिमादास से करते हैं। वे जसवंत सिंह से कहते हैं "सर, लिव लाइक शेर.... अपनी तरह से। अपनी शर्तों पर।"[3] बेटे श्रीनारायण और बहु अनुश्री से मिले तिरस्कारपूर्ण व्यवहार से चोट खाकर वे एक फ्लैट में अकेले रहते थे। आखिरी क्षण तक वे अकेले रहे शेर की तरह। केनल स्वामी के जीवन से मिली नई ऊर्जा जसवंत सिंह को कानपुर लौटने और वहाँ नौकरानी सुनगुनियाँ के साथ रहने की प्रेरणा देती है।

धनाभाव और धन की अधिकता

आधुनिक जीवन की सबसे प्रमुख सामाजिक समस्या है आर्थिक समस्या। व्यक्ति परिवार से लेकर पूरे समाज तक इसका बुरा प्रभाव व्याप्त है। समकालीन जीवन में धन कमाने और आजीविका चलाने

1. चित्रा मुद्गल गिलिगडु पृ. 87
2. वहीं पृ. 65
3. वहीं पृ. 63

केलिए लोग अनेकानेक कामों पर लगे रहते हैं। इसकी खोज में देश विदेश में भटकते हैं। समकालीन रचनाकारों ने अर्थ मोह की इस विभीषिका को रचनाओं का विषय बनाया। आवश्यकताओं की पूर्ति और भूख मिटाने केलिए नयी-नयी सुख-सुविधाओं को अपनाने केलिए सब कहीं धन चाहिए। चित्राजी ने भी अपने उपन्यास में धन की दोनों अवस्थाओं यानि उसकी कमी और अधिकता से जनित समस्याओं की चर्चा की है। 'एक ज़मीन अपनी' नामक उनके प्रथम उपन्यास की नायिका 'अंकिता' अपनी विवाह बन्धन से छुटकारा पाकर अकेले जीने का निर्णय लेती है। नौकरी के चक्कर में वह जिस दुनिया में पहूँची वह ग्लैमर और समर्पण की दुनिया थी। अपनी आजीविका चलाने और स्वालंबी बनाये रखने केलिए वह नौकरी करने को तैयार हो गयी। इसमें अंकिता से ज्यादा नीता अधिक स्वार्थपूर्ण और विलासपूर्ण जीवन बिताना चाहती थी। उसकेलिए धन केवल आडम्बर केलिए है। धन कमाने से ज्यादा यश को वह प्रमुखता देती थी। लेकिन विज्ञापन के क्षेत्र में काम करनेवाला पुरुष वर्ग धन की अभिलाषा में ही स्त्री का शोषण कर रहा है। लेकिन धन और यश के पीछे भागती युवा पीढ़ी यह नहीं समझती है कि वे लोग धन का बहाना देकर उसका शोषण कर रहे हैं। लेकिन उपन्यास की केन्द्र पात्र अंकिता इन कलंकों से बचाकर स्वतंत्र जीवन बिताती है।

पैसे की ताकत

'आवाँ' उपन्यास में पारिवारिक दायित्वों से दम घुटनेवाली लड़की की कथा है। अकेली नमिता घर की दाय संभालनेवाली एक मात्र व्यक्ति है। उसे पूरे परिवार का भोजन, लकवा ग्रस्त पिता की सेवा, भाई और

बहन की पढ़ाई आदि को संभालना है। अचानक पिताजी के पतन ने डिग्री फैनल तक पहूँची उसकी पढ़ाई को छोड़ने को विवश कर दिया। नौकरी की तलाश पर निकली नमिता को कई सामाजिक अन्यायों का सामना करना पड़ा। ट्रेड़यूनियन नेता होने के कारण पिताजी के दफ्तर में उसे पहले एक छोटी सी नौकरी मिली। पर पिता जैसे अन्ना साहब के अनैतिक व्यवहार से उसने नौकरी छोड़ दी। आखिर एक ट्रेन यात्रा से मिली अंजना वासवानी उसे मॉडलिंग जगत में ले आयी। वास्तव में वहाँ की नौकरी नमिता की आर्थिक कठिनाई को दूर करने के साथ जीवन को और उसके सपनों को मिट्टी में मिला दिया। नमिता का जीवन आर्थिक लाभ का प्रत्यक्ष रूप है तो अंजना वासवानी जैसे लोगों का अप्रत्यक्ष लाभ है। वे नमिता जैसे लड़कियों को हमेशा खोजती रही है जिससे उनका ज्यादा लाभ मिलता है।

धन की ताकत से सम्बन्धित अंजना वासवानी कहती है "पैसे की ताकत मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत है। पैसे की ताकत से एक बुद्धिहीन, अपाहिज, असमर्थ व्यक्ति बुद्धिमान का मस्तिष्क और सबल की शक्ति खरीद बड़ी आसानी से अपने हितों केलिए उसका उपयोग कर समाज और संसार का सर्वाधिक समर्थ व्यक्ति बन सकता है। सत्ताधारी बन सकता है। प्रतिष्ठा आर्जित कर सकता है। लोगों पर शासन करने केलिए नोट की शक्ति पहचानो। सुख-सुविधाएँ जुटाने में उसकी भूमिका की कद्र करो।"[(1)] धन से सम्बन्धित उनका और कथन है 'छुट्टे रुपयों की बजाय एक पांच सौ का पत्ता हमेशा तुम्हारे पर्स में सुरक्षित रहे। छुट्टे में ताकत

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 201

नहीं होती। ताकत होती है बड़े नोट में। बड़े नोट की मौजूदगी से तुम स्वयं अनुभव करोगी कि संकट की घड़ी में भी तुम्हारा आत्मविश्वास अविचालित बना हुआ है।"[1] नमिता को आभूषण व्यापारी संजय कनोई तक पहूँचाने के पीछे उसका एकमात्र लक्ष्य धन कमाना था। स्त्री द्वारा स्त्री को बेचने की मानसिकता के पीछे आर्थिक लाभ की इच्छा है। संजय कनोई नामक पात्र उच्च वर्ग के सारे दंभ से पूर्ण है। स्त्रियों पर जितने भी धन व्यय करने को भी तैयार है। धन के बल से ही वह नमिता को अपनाता है। धन के अभाव के साथ अधिकता भी खतरनाक है। आर्थिक तंगी को मिटाना हर कोई चाहता है। नमिता भी अपनी ज़रूरतों की पूर्ती केलिए जानबूझकर दलदल में फंसी।

नमिता के अलावा लेखिका ने इस उपन्यास में निम्नवर्ग की आर्थिक समस्याओं को भी प्रस्तुत किया है। झोंपड़ियो, गलियों में रहनेवाली स्त्रियाँ, कम्पनियों में काम पर जानेवाली स्त्रियाँ, घरों में बर्तन मांजनेवाली स्त्रियाँ, शरीर बेचनेवाली स्त्रियाँ इन सबके जीवन संघर्ष को और अभावों से गिरे इनके जीवन की प्रस्तुति लेखिका ने इसमें की है। 'श्रमजीवा' जैसे संगठनों में कम वेतन पर पापड़ बेलनेवाली विधवाओं का संगठन है। जहाँ अभावपूर्ण जीवन के कई चित्र उभरते हैं। चित्राजी ने 'आवाँ' में अर्थभाव के कारण उत्पन्न समस्याओं के साथ साथ अर्थ की अधिकता से उपजी विभिन्न समस्याओं की अच्छी झांकी प्रस्तुत की है।

नारी शोषण

चित्राजी के उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' और 'आवाँ' में नारी शोषण की विविध रूप अंकित हैं। समकालीन समाज में स्त्री घर और

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 201

बाहर में शोषण की शिकार हो रही है। चित्राजी ने दोनों परिवेश में नारी शोषण को प्रस्तुत किया है। एक ज़मीन अपनी में नीता नारी शोषण का प्रतीक है। आधुनिक काल में लोग विज्ञापन, मॉडलिंग, फैशन, अभिनय, यश आदि के पीछे दौड़ते हैं। विज्ञापन एवं मॉडलिंग ने नारी की सामाजिक स्थिति बढ़ाने की सहायता दी, लेकिन उसे नैतिक पतन की ओर धकेल भी दिया। 'एक ज़मीन अपनी' में अंकिता इस प्रकार के छल-कपटों से अपने को बचाती रही। वह अपनी योग्यता और प्रतिभा के बल पर आगे बढ़ती है। उसे फंसाने केलिए मि. मैथ्यू जैसे लोगों ने कोशिश की, पर वह उसके यहाँ की नौकरी छोड़ कर चली जाती है। वह स्वतंत्र व्यक्तित्ववाली है। वह स्त्रीत्व के गुणों को बरकरार रखना नहीं चाहती। नीता उसे उपदेश देती है कि भोजराज जैसे व्यक्तियों से कृतज्ञता प्रकट करने से उसे लाभ होगा। कृतज्ञता भाव प्रकट करने केलिए अंकिता तैयार नहीं थी क्योंकि वह अपनी क्षमता पर विश्वास करती थी। विज्ञापन जगत में इसप्रकार स्त्री को भीतरी और बाहरी तौर से शोषण होता है। अंकिता का चरित्र एक आदर्श चरित्र है। यह पात्र लेखिका की एक उत्तम पात्र-सृष्टि है।

'नीता' नारी शोषण का शोषित रूप है। उसने धन और यश के पीछे भागकर, समता और स्वतंत्रता का नाम लेकर अपने जीवन को विनष्ट किया। नारी समता स्वतंत्रता के नाम पर समाज में जो गलतफहमी फैली हुई है, इसकी ओर संकेत किया गया है। आधुनिक नारी रूढ़ियों से मुक्त होने केलिए तड़प रही है। लेकिन यह नहीं जानती हैं कि नारी मुक्ति माने क्या है? नीता के पात्र के ज़रिए चित्राजी नारी मुक्ति की असलियत की ओर प्रकाश डालती हैं। नीता शादीशुदा सुधीर के साथ बिना किन्हीं शर्तों से कई महीनों तक जीती है। आखिर सुधीर पत्नी और बच्चे के पास

लौट गया तब से नीता जीवन की सच्चाई के बारे में सोचती है। मि. मैथ्यू, भोजराज, मि. मल्होत्रा जैसे कंपनी प्रबन्धकों एवं निर्देशकों ने उसकी शारीरिक और मानसिक शोषण कनरेवालों में हैं। नीता का विचार है कि ज़िन्दगी में आये हुए ये सौभाग्यों को भोगना उसका दायित्व है। किसी के सामने सर झुकाने से बेहतर है स्वतंत्र जीवन बिताना।

'आवाँ' में चित्रित स्त्रियों की मुख्य एवं सबसे महत्वपूर्ण समस्या शोषण यौन शोषण और श्रमशोषण की है। यौन शोषण उच्चवर्ग की नारी समस्या है तो यौन शोषण और श्रमशोषण निम्न वर्ग की नारी की समस्या है। उपन्यास में नमिता पाण्डे तीन बार यौन शोषण का शिकार बन जाता है। 'गौतमी' उसका सौतेले भाई से गर्भवतकी हो जाती है। यहाँ उसका शोषण करनेवाला भाई है तो अंजना वासवानी द्वारा उसका दूसरा शोषण छेठा साहब द्वारा होता है। इसी प्रकार स्मिता की बड़ी बहन (ताई) का यौन शोषण उसका पिता द्वारा होता है।

समाज के उच्चवर्ग की स्त्रियाँ जैसे विमला बेन, निर्मला कनोई, शिप्रा, नीलम्मा की मालिकिन आदि भोगवादी स्त्रियाँ कई सामाजिक मुद्दे का प्रतिनिधित्व करती हैं।

अनीसा, सुनन्दा, किशोरीबाई, श्रमजीवा के सदस्यों को प्रस्तुत करके कंपनियों एवं घरों में नारी की श्रम और शरीर को लूटने का चित्र प्रस्तुत किया गया है। अनीसा वेश्या थी। वह धन्धा छोडकर नौकरी कर जीने लगती है। लेकिन पुरुष समाज धन्ध का नाम लेकर शोषण करती रही। सुनन्दा और पढरी बाई जैसे पात्रों से श्रम अधिकारों के शोषण का चित्र प्रस्तुत किया गया है। कुँवारी माँ होने के कारण उसे कम्पनी जचकी

की सुविधाएँ नहीं देती। 'श्रमजीवा' में श्रमिक पापड़ बेलनहारियों के श्रम का शोषण दिखाया गया है। श्रम शोषण छोटे से छोटे स्तर पर भी देखने को मिलता है। श्रमजीवा में शाहबेन के अभाव में सुमित्रा बेन अपने सम्बन्धितों को पापड़ मुक्त में देती है।

इस प्रकार चित्राजी ने अपने उपन्यासों में सामाजिक जीवन के बहुत सारे सन्दर्भों को विशेषकर नारी जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को प्रस्तुत किया है। उपन्यासों में नारी जीवन की अनेक सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक, धार्मिक समस्याओं को प्रस्तुत करके इसका समाधान खोजने का प्रयास करके, युवा पीढी को इन समस्याओं से दूर रहने का संकेत भी दिया गया है।

नशीली दवाओं का उपयोग

चित्राजी ने अपने उपन्यास में मदिरा और नशीली दवाओं के दुरुपयोग से जन्य समस्याओं का जिक्र किया है। समकालीन समाज में विशेषकर युवा पीढ़ी में व्याप्त एक बीमारी है नशा। नशे में डूबे व्यक्ति समाज और परिवार का सर्वनाश की ओर ले जाते है। 'एक ज़मीन अपनी' का पात्र गुहा साहब ब्राऊन शुगर के प्रयोग से बीमार पड़ता है। कहा गया है "ब्राऊन शुगर की लत ने उसे बरबाद कर दिया.... गोवा में है। पणाजी के किसी मनोरोग चिकित्सालय में इलाज हो रहा है उसका।"[1]

"यह बड़ा दुखद पक्ष है... ऐसे वातावरण में बच्चे अक्सर दिशाहीन हो जाते हैं।"[2]

---

1. चित्रा मुद्‌गल ज़मीन अपनी पृ. 243
2. वहीं पृ. 243

उपन्यास में नीता 'अॅबराय हॉटल' में जाती है जहाँ शराब ओर सिगरट पीने की आदत शुरू करती है। परन्तु जब वह गर्भवती बनती है तो उसे बन्द करती है।

'आवाँ' उपन्यास में नमिता की सहेली एवं पड़ोसिन ममता दोस्तों से मिलकर पढाई का बहाना बनाकर नशीली दवा का सेवन करती थी। बाद में प्रेमी द्वारा उपेक्षित होने के कारण दुःख भुलने केलिए अधिक मात्रा में प्रयोग कर पागलपन की स्थिति तक पहूँचाती है। ममता ने 'स्पैस्मोप्रॉक्सिम' नामक दवा केमिकल, नाइट्रोजन का प्रयोग किया था। आखिर स्मिता की सहायता से उसे डॉक्टर के पास पहूँचाया जाता है।

नशीली चीज़ों का उपयोग भारतीय परिवारों के स्वच्छ माहौल को नष्ट कर रहा है। उपन्यास में चित्रित दो परिवार है स्मिता और गौतमी के। 'गौतमी परिवार में एकलौती बेटी है उसका पिता बडा जालिम है। इसका वर्णन यों किया गया है "शराबी, व्यभिचारी पुलिस अधिकारी पति के मानसिक दैहिक उत्पीड़न से त्रस्त गौतमी की माँ ने लम्बी कानूनी लड़ाई लडने के उपरान्त जैसे-तैसे उससे मुक्ति पाई।"[1]

इसी प्रकार स्मिता की माँ और ताई (बड़ी बहन) दोनों ही दैहिक उत्पीड़न की शिकार है। स्मिता का पिता मदन खत्री मुम्बई का मटका किंग है, जो शराब पीकर अपनी पुत्री व पत्नी से शारीरिक सम्बन्ध तो बनाता ही है, साथ में उन्हें मारता-पीटता भी है। स्मिता का कतन है

"हर रोज़ आई-ताई को रोलर-सा कूटता, भरकुस बनाता उनकी शक्लों उनसे छीन रहा।"[2]

---

1. चित्रा मुद्‌गल आवाँ पृ. 322
2. वहीं पृ. 43

स्मिता की माँ इसी घुटन से मुक्ति पाने के लिए आत्महत्या का प्रयास करती है, क्योंकि वह अपने पति के मानसिक व शारीरिक उत्पीड़न के कारण परेशान है। इसी प्रकार समाज में आज अनेक ममताएँ, स्मिताएँ, नीताएँ आदि हैं जो पारिवारिक घुटन, सामाजिक दबाव के कारण परेशान हैं और वे भी ममता की तरह ड्रग आदि का उपयोग कर इन समस्याओं से मुक्ति का मार्ग खोज रही हैं।

निष्कर्ष

समकालीन महिला उपन्यासकारों में चित्रा मुद्गल ने अपनी विशेष रचना धर्मिता के कारण खास जगह हासिल की है। उन्होंने अपनी औपन्यासिक रचनाओं में जीवन के जिन क्षणों का चित्रण किया है, उन्हें अपने जीवन में देखा, परखा और अनुभव किया है। इन अनुभवों एवं विचारों को समाज के सम्मुख पेश करने का प्रयत्न भी उन्होंने किया है। चित्राजी ने भी अपनी रचनाओं के केन्द्र में नारी को ही स्थान दिया है। लेकिन उनकी रचनाओं की पृष्ठभूमि कुछ अलग है। इसलिए उनकी रचनाएँ समकालीन महिला रचनाकारों की रचनाओं से कुछ भिन्न हैं। उनके तक तीन उपन्यास प्रकाशित हैं।

चित्राजी के दो उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' और 'आवाँ' नारी मुक्ति से सम्बन्धित हैं। पर अपने तीसरे उपन्यास 'गिलगडु' में उन्होंने समाज में उपेक्षित वृद्धजनों के जीवन की मानसिकता को अभिव्यक्त करने की कोशिश की है। चित्राजी ने बचपन से श्रमिक नारियों-संगठनों से जुड़ी रही, 'जागरण' कामगार अघाड़ी जैसे संस्थाओं में काम करने के कारण ऐसे लोगों के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध प्राप्त करने का अवसर उन्हें

मिला। इसी कारण उनके हृदय में उनके प्रति मार्मिक वेदना सहानुभूति है। इसके आधार बनाकर ही चित्राजी ने अपनी रचनाओं का सृजन किया है।

विषयवस्तु एवं परिवेश की दृष्टि से चित्राजी के उपन्यास भिन्न किस्म के हैं। विज्ञापन और मॉडलिंग भारतीय समाज के नारी जीवन को विशेषकर युवा पीढ़ी को ग्लैमर की दुनिया में पहूँचा देती है। लेकिन उस दुनिया की चकाचौंधी के पीछे छिपे छल छद्म को वह नहीं जानती। चित्राजी ने इस मुद्दे को मुख्य रूप से अपने प्रारंभिक उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। साथ ही पूँजीपति वर्ग और श्रमिक वर्ग के बीच के द्वन्द्व को भी प्रस्तुत किया गया है। श्रमिक वर्ग हमेशा उसके अधिकारों से वंचित रहता है क्योंकि उसे कानूनी सहायता देनेवाला कोई नहीं होता। इसलिए स्त्री समाज के समान उसे हमेशा सताया जाता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि चित्राजी की औपन्यासिक रचनाएँ चहार दिवारी के भीतर तक सीमित नहीं हैं। अपने उपन्यासों द्वारा चित्रा जी ने यह साबित करने का प्रयास किया है कि जीवन के विविधमुखी संघर्ष से जूझते समय, या आवाँ सा जलते वक्त भी स्त्री के लिए अपनी एक ज़मीन की बड़ी ज़रूरत है। आर्थिक विपन्नता, यशप्राप्ति की इच्छा, अर्थमोह जिसप्रकार स्त्रियों को विज्ञापन एवं मॉडलिंग की दुनिया में लाकर उनका दैहिक-आर्थिक शोषण किया जाता है उसका जीवन्त चित्र भी चित्रा जी ने अपने उपन्यासों में पेश किया है। समकालीन जीवन की तमाम संवेदनाओं की अभिव्यक्ति की दृष्टि से चित्रा जी के उपन्यास सफल एवं जीवन्त बन पड़े हैं।

अध्याय - 4

चित्रा मुद्‌गल की कहानियाँ : जीवन यथार्थ

प्रस्तावना

समकालीन महिला कथाकार श्रीमती चित्रा मुद्‍गल ने सामाजिक जीवन के यथार्थ पर साधिकर लेखन किया है। कहानी की विधा में सक्रियता दिखाते हुए श्रीमती चित्राजी ने प्रारंभ में पारिवारिक जीवन पर केन्द्रित कहानियाँ ही लिखीं। उनकी कहानियों के नयेपन और ताज़गी ने पाठकों को आकृष्ट किया। उनकी कहानियाँ के अध्ययन से लगता है कि उन्हें कभी भी 'अनुभवों की सीमा का संकट' महसूस नहीं हुआ है। महिला रचनाकारों की, अनुभवों की सीमित दुनिया पर आलोचना करते हुए कहा जाता है कि लेखिकाएँ कुछ रचनाओं के बाद या तो चुप हो जाती हैं, या स्त्री-पुरुष संबन्धों के अपने सुरक्षित क्षेत्र में पहूँचकर राहत महसूस करती हैं। किन्तु चित्रा जी के कहानी साहित्य पर नज़र डालने पर यह जाहिर हो जाता है कि उन्होंने पारिवारिक जीवन सन्दर्भ के अलावा अन्य सामाजिक, राजनीतिक, एवं आर्थिक पहलुओं पर भी कहानियाँ लिखी हैं। उनकी रचना धर्मिता का क्षेत्र और लेखन का दायरा विस्तृत है। उन्होंने नारी के संघर्ष के चित्रण के साथ-साथ मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को विभिन्न कोणों से छुआ है और हिन्दी साहित्य को कुछ उल्लेखनीय कहानियाँ दी हैं।

नारी का दमन एवं शोषण, उसमें व्यक्ति स्वातंत्र्य की छटपटाहट, सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता, गरीबी, भूख, आम आदमी की विवशता आदि पर कहानियाँ लिखकर चित्राजी ने अपना रचना-धर्म निभाया है, अपनी लेखकीय जागरूकता का परिचय दिया है। उनकी कहानियाँ

अपने समय की धड़कनों और सामाजिक सरोकारों से भरपूर तथा गहरी संवेदना एवं सर्जनात्मकता की सच्ची मिसालें हैं। उनकी कहानियाँ अपने कालगत मूल्यों की लड़ाई लड़ने में मुकम्मल साबित होती हैं। वे अपने लेखन द्वारा प्रयोगधर्मी साझेदारी और सामाजिकता की जिम्मेदारी के जोखिम उठाने केलिए कटिबद्ध हैं। उनका कहना है कि साहित्य को समाज के सर्वांगीण विकास और मनुष्य के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए।

चित्राजी की प्रारंभिक कहानियाँ बम्बई के उपनगरों में फैली गन्दी बस्तियों का बड़ा प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करती है। निम्न वर्गीय नारी विशेषतः स्लम की ज़िन्दगी से संघर्ष करती नारी के विविध रूपों के चित्रण करने में उनको बड़ी कामयाबी मिली है। उनकी कहानियों में सम्बन्धों के अनछुये बिन्दुओं को भी रेखांकित किया गया है। कामाकाजी नारी की समस्याओं का यथार्थ चित्रण भी उनमें प्राप्त है। कामकाजी नारियों का संघर्ष, परेशानियाँ, घर के स्तर पर बच्चों की समस्या, बच्चों की निरन्तर उपेक्षा से मातृहृदय के तनाव आदि की सच्ची अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में मिलती है।

जीवन यथार्थ की अभिव्यक्ति की दृष्टि से उनकी कहानियों को मुख्य रूप से चार कोटियों में रखा जा सकता है

1. पारिवारिक जीवन यथार्थ की कहानियाँ।
2. सामाजिक-आर्थिक यथार्थ की कहानियाँ।
3. नारी जीवन के यथार्थ की कहानियाँ।
4. राजनीतिक यथार्थ की कहानियाँ।

पारिवारिक जीवन यथार्थ की कहानियाँ

परिवार समाज का अभिन्न अंग है। व्यक्तियों का समूह समाज है। परिवार व्यक्ति या मनुष्य को आत्मीयता एवं स्नेह बन्धनों में बाँधता है और मानव के अच्छे भविष्य का निर्माण कर जीवन को गतिशील बनाता है। परिवार समाज की मौलिक सार्वभौमिक तथा प्रमुख संस्था है। इसकेलिए उसके सदस्यों का योगदान बहुत ज़रूरी है। उनके आपसी सम्बन्ध परिवार को बनाये रखने की नींव हैं। जब यह सन्बन्ध टूट जाता है, तब सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता है। परिवार के सम्बन्धों के टूट जाने के अनेक कारण हो सकते हैं। पारिवारिक सम्बन्धों के विघटन के प्रमुख कारण दाम्पत्य जीवन, प्रेम-विवाह, शिक्षा, आर्थिक समस्या, आपसी शंका, व्यक्तियों का अहं आदि हैं। चित्राजी पारिवारिक जीवन को अपने नज़रिए से यानी नारी के नज़रिए से देखा है। उनकी अधिकांश कहानियाँ पारिवारिक जीवन पर आधारित हैं। इसलिए डॉ. मधुरेश ने चित्राजी की कहानियों को 'पारिवारिक जीवन की शोभयात्रा' कहा है।[1] मतलब यह है कि चित्रा जी पारिवारिक जीवन के चतुर चितेरे हैं।

दाम्पत्य जीवन को पारिवारिक जीवन की रीढ़ मानी गयी है, जिसमें पति-पत्नी दोनों की समान साझेदारी या समभागिता है। भारतीय परिवारों में पुरुषों की प्रधानता है। यद्यपि आज समाज में स्त्री-पुरुष को समान अधिकार प्राप्त है, फिर भी आज परिवार में पुरुष का है हुकूम ज़्यादा चलता है। दाम्पत्य जीवन में शारीरिक सम्बन्ध एक प्रमुख विषय है, जिसके द्वारा सन्तानोत्पत्ति का कार्य भी होता है। सन्तान परिवार का केन्द्र

---

1. डॉ. मधुरेश हिन्दी कहानी अस्मिता की तलाश पृ. 114

बिन्दु होती है. बच्चों का पालन-पोषण, उनकी शिक्षा, आदि परिवार से ही होता है। माँ-बाप और बच्चा तीनों सदस्यों को मिलाकर परिवार की संकल्पना पूर्ण होती है। आपसी सम्बन्ध, प्रेम, ममता आदि भावनाओं से वे सब परस्पर बन्धित हैं। इसमें कोई किसी से तनिक दूर होना प्यार एवं ममता से वंचित रहना पारिवारिक समस्याओं का कारण बन जाता है। चित्रा मुद्गल ने अपनी कहानियों में सभी वर्गों के खासकर निम्न एवं मध्यवर्ग के लोगों के पारिवारिक जीवन सन्दर्भों की यथार्थ अभिव्यक्ति दी है। दाम्पत्य जीवन के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित करनेवाली उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं - 'अपनी वापसी' 'शून्य' 'गर्दो' 'केंचुल' 'दशरथ का वनवास' 'अग्निरेखा' 'रुना आ रही है' 'बावजूद इसके' 'एंटीक पीस' 'स्टेपिनी' लाक्षागृह, शिनाख्त हो गयी, 'लिफाफा' आदि। इन कहानियों में पारिवारिक जीवन के विविध मुद्दों पर चित्राजी ने प्रकाश डालने की कोशिश की है।

'अपनी वापसी' संघर्षपूर्ण क्षणों का वास्तविक दस्तावेज़ है। इसमें पारिवारिक जीवन के कई संघर्ष पूर्ण क्षणों को एक साथ प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक ज़माने में जीने के बावजूद अपने पुराने आदर्शों और रीतियों से ज़रा भी हटने केलिए इस कहानी की नायिका शकुन तैयार नहीं है, जिससे वह पति और बच्चों से दूर हो जाकर उन सब के उपहास का पात्र भी बन जाती है। बढ़ती हुई आधुनिकता के प्रति बच्चों का जो मोह है उसे वह सह नहीं पाती। शकुन की, अपने पति से भी शिकायत है कि पति पहले की तरह उस पर ध्यान नहीं देता, उसे समय नहीं मिलता। पति हरीश सदा धन कमाने की दौड़ में व्यस्त रहता है। सब कुछ मिलाकर शकुन अपने बच्चों और पति सब से अलग हो जाती है। वह अपनी

शिकायतों के साथ अपने कमरे में अकेली बन जाती है। इस कहानी में माँ-बाप के संघर्षों के बीच पड़े बच्चे की मानसिकता का भी अंकन हुआ है। साथ ही साथ यह एक ऐसी पत्नी की भी कहानी है इसमें जो अपनी रूढियों और पुरानी मानसिकता वाले जिद्दी पति एवं बच्चों के प्यार एवं ममता से वंचित है। अर्थ की अधिकता से जन्मते तनाव भी इस कहानी के एक मुद्दे के रूप में प्रस्तुत हुआ है।

'शून्य' कहानी में चित्राजी ने पारिवारिक संबन्ध के टूट जाने की वजहों की ओर ईशारा किया है इस कहानी में पति अपनी पत्नी की उपेक्षा करता है क्योंकि वह अपनी आशिका को भूल नहीं पाता। कहानी का नायक राकेश बेला से इश्क फरमाता था लेकिन माँ-बाप के दबाव में आकर उसे सरला से शादी करनी पड़ी। लेकिन शादी के बाद भी वह बेला से सम्बन्ध छोड़ नहीं पाता। सरला ने तीन वर्ष तक सब कुछ सहकर जीने की कोशिश की। लेकिन अंत में वह अदालत से तलाक लेकर अलग हो गयी। पति या पत्नी के नजायज सम्बन्धों से पारिवारिक सम्बन्ध टूट जाता है। 'शून्य' कहानी पति-पत्नि के बीच में तनाव का कारण एक तीसरे का आगमन है। यह तनाव तलाक में परिणत हो जाता है। बेला राकेश की पूर्व प्रेमिका है जो किसी दूसरे की पत्नी भी है। राकेश और बेला का यह अवैध सम्बन्ध दो परिवारों की टूटन का कारण बन जाता है।

'अग्निरेखा' शीर्षक कहानी भी पारिवारिक जीवन की सच्ची झांकी प्रस्तुत करती है। कहानी के मुख्य पात्र हैं मनु अमरेन्द्र और शशी। मनु शशी की बहिन है जो वर्षों से बीमार और अपाहिज है। प्रसव के समय उसकी देखभाल केलिए शशी को घर बुलाया जाता है। उसकी माँ ने

उसका दायित्व एक तरह से उन्हें सौंप दिया था। मनु शक्की पत्नी है। उसकी बीमारी और विकलांगता उसके शक्की चरित्र को बढ़ावा देती है। मनु की देखभाल केलिए उसकी बहिन शशी उसके घर आती है तो शशी और अमरेन्द्र को लेकर शंका पैदा हो जाती है। दूसरे कमरे में कपड़ों की सरसराहट भी मनु के मन में संदेह के अनेक भूत खड़े करती है। तब असली अग्निरेखा शशी के आगे खींची जाती है। उसे बीमार और अपाहिज बहिन मनु की देखभाल करनी है जो शरीर से अधिक मन से बीमार है। शशी को अपने और अमरेन्द्र के बीच ऐसा सन्तुलन भी बनाये रखना है जो मनु की आशंकाओं को झुठला सके। वहाँ रहते हुए शशी को लगता है कि उसके सामने अग्निरेखा खिंची है। दोनों पति-पत्नी के साथ ठहरने पर उसे यह अग्निरेखा अधिक दाहक लगती है। मनु की छोटी से छोटी खुशी केलिए सब कुछ करने को तैयार शशी एक ऐसी लम्बी और नसों को तोड़ देनेवाली अग्निपरीक्षा से गुज़र रही है जिसका आजकल कोई अन्त नहीं। मनु का अतीत (मृत शिशु और आगे मां न बन सकने की संभावनाओं का अन्त) उसे आशंकाओं की ऐसी अंधेरी सुरंग में धकेल देता है जहाँ नींद की गोलियाँ ही उसे सबसे बड़ा उपचार लगती हैं। इस तरह 'अग्निरेखा' में खड़ी मनु के ज़रिए लेखिका ने पारिवारिक जीवन की विभिन्न झांकियों को प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

भारतीय संविधान ने स्त्री और पुरुष को समान अधिकार प्रदान किया है। शिक्षा की सुविधाओं की समान प्राप्ति और नौकरी के क्षेत्र में सहकर्मिता के कारण स्त्री-पुरुष पहले से ज़्यादा नज़दीक आ सके। आयु की विशेषता के कारण एक दूसरे के प्रति उनमें शारीरिक आकर्षण हो जाना सहज स्वाभाविक है। यह आकर्षण कभी-कभी शादी में तब्दील नहीं

हो पाता। धर्म एवं जाति के साथ साथ आर्थिक स्थितियाँ भी इसके कारण बनती है। अंजाम यह निकलता है कि शादी के पहले का इश्क दिल के किसी कोने में रखकर उनको ज़िन्दगी भर चुपचाप जीना पड़ता है। यह विवाहपूर्ण प्रेम विवाहेतर जीवन में अक्सर मिट जाता है। पति या पत्नी दोनों इस पूर्व-प्रेम को भूल भी सकते हैं। पर यह तभी मुमकिन है जब दोनों एक दूसरे से गहरे जुड़े हो। अगर ऐसा न हो कि किसी न किसी कारण उनमें अगर तनाव पैदा होता है तो सुप्तावस्था में स्थित यह प्रेम बेचैन करने लगता है। एक गहरी निराशा आ जाती है, यह स्थिति दोनों में संभव है।

पति के विवाहवूर्व प्रेम से पत्नी के मन में तनाव की संभावना होती है और पत्नी के ऐसे प्रेम से पति में विवाह पूर्व प्रेम का यह तनाव कई प्रकार की मानसिक स्थितियों को उद्घाटित करता है। अगर ये पूर्वप्रेम वर्तमान में झांका रहा हो तो तनाव की स्थिति अधिक भयंकर रूप धारण कर लेती है। अगर इस प्रेम में कोई (नजायज) सन्तान पैदा हो गई तो तनाव और भी बढ़ जाता है। चित्रा मुद्गल की 'ताशमहल' एक ऐसी कहानी है जिसमें विवाह पूर्व प्रेम, उससे उत्पन्न संतति और उस सत्तति के कारण निर्मित तनाव और तनाव की परिणति की अभिव्यक्ति हुई है।

शोभना 'ताशमहल' कहानी की एक ऐसी पत्नी है, जिसका पति है निशीथ। शादी के पहले दिवाकर के साथ शोभना का बडा प्यार हुआ था। बच्चू शोभना दिवाकर का बेटा है। बच्चू के जन्म के पहले दिवाकर शोभना से हट जाता है। बाद में शोभना की शादी निशीथ के साथ होती है। निशीथ अबोध बच्चू में दिवाकर को ही खोजता है। इसलिए शोभना में

तनाव की स्थिति है। पति-पत्नी के सम्बन्धों में भी इस बच्चे के कारण दरार निर्मित होती है। एक दिन बच्चू को टाइफोइड हो गया। शोभना की छुट्टी खतम हो गयी है, निशीथ घर पर बैठने को तैयार नहीं है। वह कहता है 'टाइफोइड है केंसर नहीं। मर नहीं जाएगा बच्चू। सुबह से घर सिर पर रखा है ऊपर से ये डाक्टर जेब- कतरे हैं साले, जेब-कतरे।'[1] उसकी इन बातों से शोभना चिढती है। वह इसलिए गुस्से में आती है कि बच्चू की ज़िम्मेदारी लेने केलिए कोई तैयार नहीं। दो हफ्ते से बीच बीच में छुट्टी लेती रही, ले सकती थी। नहीं ले पा रही है तो कोई बच्चू की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार नहीं। हफ्ते से बिस्तर पर पड़ा है बच्चू किसी रोज़ दिक्कत हुई क्या? कोई तकलीफ दी बच्चू ने? ....लेकिन सामान्य दया-माया पाने का भी अधिकारी नहीं है वह।[2] शोभना को सास भी डाँटती रहती है। निशीथ ने शोभना की शर्त भी मान ली थी बच्चू के अलावा वह भी कोई दूसरा बच्चा नहीं चाहूँगी।"[3] फिर भी असावधानीवश 'रोनु' हो गया। बच्चू के प्रति निशीथ का व्यवहार देखकर शोभना गुस्से में ही है। उसे लगता और वह कहना चाहती थी, जो व्यक्ति मेरे जीवन से निकल चुका है तुम उसे इस अबोध बच्चे में खोज रहे हो। यह दिवाकर का अंश ज़रूर है निशीथ, किन्तु यह मेरा भी तो अंश है तुम मुझे क्यों खोज सके उसमें और नहीं अपना सके।[4] फिर शोभना भी पति से दूर जाना चाहती है और तबादला कैंसल करने का प्रयत्न छोड़ देती है और नौटियाल को कहती है अब मैं तबादले पर जाने केलिए तैयार है।[5]

---

1. सारिका (अक्टूबर 89) पृ. 48
2. वहीं पृ. 49
3. वहीं पृ. 42
4. वहीं पृ. 54
5. वहीं पृ. 34

झोंपड-पट्टी के पारिवारिक जीवन की कहानी है 'केंचुल'। कमला मेहनत मंज़ूरी करके घर चलाती है। उसके विश्वासों की केंचुल उतरने की कहानी केंचुल में बतायी गयी है।[1] 'रूना' आ रही है कहानी में परिवार से कट जाने और काटकर फेंक दिए जाने की पीड़ा का चित्रण है।[2] 'बावजूद इसके' कहानी में भाभी भैया और दूसरे दबावों के बीच पड़े एक युवती का चित्रण है। 'एंटीक पीस' कहानी में पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित आधुनिक नारी को प्रस्तुत किया गया है जो अपने परिवार के सदस्यों को त्यागकर खुद सजधज कर पार्टी एवं क्लबों में घूमती है।

'दशरथ का वनवास' कहानी में एक पुत्र के ज़रिए माँ-बाप के प्यार एवं ममता को व्यक्त किया गया है। पिता बच्चे को प्यार करता है, लेकिन वह प्यार खुलकर नहीं दिखाता। ऐसा पिता कभी पुत्र का शत्रु बन जाता है। रवि को माँ-बाप का प्यार एवं ममता नहीं मिला, यद्यपि वह अकेला बेटा था। साइकिल पर जाना उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा थी। पर पिता ने उसकी पसन्द को नकारा। पुत्र की आशाओं को अनदेखा करनेवाले पिता को अनजाने ही पुत्र नष्ट की व्यथा को सहना पड़ेगा। यों रवि भी अपने माँ-बाप से कोसों दूर हो गया। आखिर पिता की मृत्यु की खबर पाकर कहता है कि उसकेलिए पिता पहले ही मर चुका था। लेकिन खत के साथ आए हुए पार्सल खोलकर देखने पर वह चौंक जाता है। वह वही साइकिल था जिसके कारण वह माँ-बाप को छोड़कर चला गया। पिता-पुत्र सम्बन्ध की मर्मस्पर्शी चित्र चित्राजी ने इस कहानी द्वारा प्रस्तुत किया है।

---

1 डॉ. मधुरेश हिन्दी कहानी की अस्मिता की तलाश पृ. 209
2. वहीं पृ. 211

'बावजूद इसके','स्टेपिनी', 'पाली का आदमी' 'शून्य' 'एंटीक पीस' जैसी कहानियों में उच्चवर्ग का पारिवारिक जीवन प्रस्तुत किया गया है। 'बावजूद इसके' नामक कहानी में पाश्चात्य संस्कृति के अन्धे अनुकरण से पारिवारिक सम्बन्धों में जो विघटन होता है उसका चित्र प्रस्तुत है। रात में पार्टियों में जाना, मदिरा पान करना आदि गोयल की आदत है। पार्टियों में पत्नी को दूसरे व्यक्ति द्वारा चूमते हुए देखकर 'टेक इट ईसी' कहकर गोयल समस्या छोड़ देता है। पाश्चात्य संस्कृति में परिवार का कोई मूल्य नहीं। गोयल ऐसी संस्कृति पर विश्वास करता है। गोयल आधुनिक सभ्य समाज का प्रतिनिधि है। प्रीति भारतीय संस्कृति और जीवन को चाहनेवाली लड़की है। गोयल के चरित्र को वह सह नहीं पाती। इसलिए वह अलग रहने लगी। बाद में गोयल अपनी गलतियों पर पश्चाताप करके प्रीति के साथ जीने लगा। उनको मोना नामक एक बच्ची पैदा हुई। लेकिन गोयल को मोना के प्रति कोई लगाव नहीं था। अचानक बच्ची की मृत्यु हुई। मोना की मृत्यु के बाद गोयल और प्रीति का सम्बन्ध और तनावग्रस्त हो गया। फिर दोनों अलग होने को विवश हो गये। मानसिक असन्तुलन के कारण अकेले रहने को विवश पति-पत्नी की मानसिकता इस कहानी में चित्रित है।

पारिवारिक जीवन में पति-पत्नी का आपसी विश्वास मुख्य है। जब वह विश्वास खो जाता है तब पारिवारिक जीवन का स्वच्छ माहौल नष्ट हो जाता है। चित्राजी की 'स्टेपिनी' कहानी ऐसे एक विषय को लेकर लिखी गयी है। नौकरीपेशा नारी की समस्या भी इस कहानी में चित्रित है पत्नी। नौकरानी और पति के सम्बन्ध को शंका की दृष्टि से देखती है। नौकरी और गृहस्थी के बीच पोर-पोर पीसती देह से वह अपने पति को

संतुष्ट न कर पाती। दफ्तर से थककर आते समय घर का सारा काम पड़ा रहता। आधुनिक नारी घर और बाहर तनावपूर्ण रहने को विवश है। घर पर पति विनोद और नौकरानी बताशा को अकेले छोड़कर चली जानेवाली पत्नी को कभी मन में चैन नहीं मिलेगी। पड़ोसिन श्रीमती खन्ना जैसी स्त्रियाँ दूसरों के जीवन में किस प्रकार उलझनों भर देती हैं इसकी भी अभिव्यक्ति इसमें है। इसमें कई समस्याओं को एक साथ पिरोया गया है। संयुक्त परिवार से अणु परिवार बनने के, फ्लैट का जीवन, नौकरी पेशा नारी, शहर का जीवन, पति-पत्नी सम्बन्ध इन सब की चर्चा इसमें हुई है।

'पाली का आदमी' कहानी में अवैध सम्बन्ध से जन्मी पुत्री को लेकर चिन्तित पिता की मानसिकता का चित्र है। अवैध सम्बन्ध से जन्मी पुत्री को लेकर पति-पत्नी की झकझक पारिवारिक जीवन का स्वस्थ माहौल बिगाड़ देती है। इसलिए रवि पत्नी नीरू से 'लल्ली' की बात छिपाता है। उसे पत्नी और प्यारी बेटी को छोड़ना संभव नही था। इसलिए रवि लल्ली के पितृत्व को इनकार करता है। कहानी में व्यक्ति के मानसिक द्वन्द्व का मनौवैज्ञानिक चित्रण है। पति और पिता, कर्तव्य और प्रेम इन दोनों का संघर्ष भी इसमें है।

पति-पत्नी के बीच का अहं और दंभ दाम्पत्य जीवन के विघटन की ओर ले जाता है। दाम्पत्य जीवन में कड़ुवाहट बड़ी जहरीली है। इस स्थिति को चित्राजी ने शून्य कहानी में प्रस्तुत किया है। शादी के तीन दिन बाद पति, पत्नी सरला से कहता है कि वह बेला से प्रेम करता है और उसके साथ जीना चाहता है। वहाँ से वे दोनों अलग हो जाता हैं। वर्षों बाद वह अपने बच्चे को लेने केलिए आता है, क्योंकि एक दुर्घटना के फलस्वरूप

बेला में बच्चा पैदा करने की क्षमता नष्ट हो गयी थी। इसलिए वह सरला से बच्चे को मांगता है जो उसके जीवन का एकमात्र सहारा था। पारिवारिक जीवन के इतनी बडी तनावपूर्ण स्थिति को चित्राजी ने चार पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। पति के रहते हुए विधवा के उपेक्षित जीवन बितानेवाली सरला के चरित्र का चित्रण चित्रा जी ने बडी जीवन्तता के साथ किया है। साथ ही साथ पुरुष की स्वार्थता और निर्दयता भी इसमें प्रस्तुत किया गया है।

'एंटीक पीस' कहानी वास्तव में 'आवाँ' उपन्यास का छोटा सा रूप है। कहानी में माँ-बाप और पुत्री का चरित्र उपन्यास के पात्रों से निकट है। कहानी में चित्राजी ने बीमार पड़े पति और बच्चों के प्रति सोचे बिना अपनी सुख-सुविधा की ओर भागनेवाली पत्नी का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

चित्रा मुद्गल ने अपनी कहानियों में नारी जीवन को केन्द्र में रखकर पारिवारिक जीवन के कई सन्दर्भों को प्रस्तुत किया है। नारी अपने जीवन के अधिकांश क्षण परिवार में ही बिताती है। परिवार को छोड़कर उसका कोई टिकाना नहीं। भारतीय सन्दर्भ में परिवार में नारी का विशेष स्थान है। स्त्री घर की पूरी व्यवस्था करनेवाली है। इसी कारण से नारी समाज और परिवार का एक अभिन्न अंग है। पति-पत्नी सम्बन्ध में तनाव आने पर पारिवारिक जीवन में भी बिखराव आने लगता है। चित्राजी ने अपनी कहानियों में पारिवारिक जीवन के प्रायः सभी मुद्दों पर प्रकाश डाला है।

चित्राजी की कहानियाँ प्रायः निम्न वर्ग की नारी और नौकरी करनेवाले बच्चे, नौकरीपेशा नारी आदि को लेकर लिखी गयी है। पति-पत्नी सम्बन्ध उच्च-मध्य और निम्न वर्ग की जीवन परिस्थिति के अनुसार भिन्न होता है। चित्राजी ने इन तीनों स्तरों के जीवन को अपनी कहानियों में

चित्रित किया है। समाजजीवि होने के नाते व्यक्ति को सामाजिक मर्यादाओं का पालन करना पड़ता है। इसलिए विवाह और जीवन, पति-पत्नी का दायित्व निभाना व्यक्ति का कर्तव्य बन जाता है। पति-पत्नी के सम्बन्ध में अलगाव का भाव न होना चाहिए। अणु परिवार की व्यवस्था, स्त्रियों की आत्मनिर्भरता, पति-पत्नी का दंभ, अनैतिक सम्बन्ध आदि कारण से आज ज्यादातर सम्बन्ध टूट जाते हैं। ऐसे बिखरे परिवेश में बच्चों की मानसिक स्थिति को भी वे ध्यान नहीं देते। घर के तनावपूर्ण माहौल में व्यक्ति अपने में सिमिट कर अकेलापन की पीड़ा को सहता है। चित्राजी ने अपनी कहानियों में पति-पत्नी सम्बन्ध के कई सन्दर्भ प्रस्तुत किये हैं।

चित्राजी ने उपन्यासकार से ज्यादा एक कहानिकार के रूप में अधिक ख्याति प्राप्त की है। उनकी कहानियों में विगत वर्षों में देश में आये राजनैतिक सामाजिक तथा आर्थिक बदलावों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। चित्राजी ने अपनी कहानियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को नई दृष्टि से देखा और परखा। चित्राजी ने नारी के घर बाहर के जीवन को अधिक ध्यान दिया। पति-पत्नी के आपसी सम्बन्ध में विवाह-पूर्व और विवाहोत्तर, विवाहेतर सम्बन्ध आदि सारी स्थितियों पर चित्राजी ने कहानियाँ लिखी हैं। भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी सम्बन्ध के कुछ सामाजिक नियम चालू हैं। पर पाश्चात्य संस्कृति में ऐसा नहीं है। शहरीकरण और पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण से आज रिश्ते ढ़ीले पड़ गये। विवाह दाम्पत्य जीवन की पहली सीढ़ी है। वैवाहिक सम्बन्ध पर ही परिवार का अस्तित्व है। विवाह स्त्री-पुरुष को एक साथ रहने की सामाजिक व्यवस्था है जिससे सन्तानोत्पत्ति और स्वस्थ समाज का संचालन भी होता है। पति-पत्नी को जीवन में पारस्परिक सौहार्द, यौन-तुष्टि, परस्पर सम्मान की भावना परस्पर विश्वास

सहानुभूति और समानता आदि चाहिए। पति-पत्नी का स्वस्थ दोनों को परस्पर बाँधता है। आधुनिक युग में पति और पत्नी अपनी मर्जी के अनुसार स्वतंत्र जीवन जीना चाहते हैं।

चित्राजी ने अपनी कहानियों में पति-पत्नी सम्बन्ध को फोकस में रखकर उसके कुछ क्षणों की अभिव्यक्ति की है। उनकी 'लेन' ऐसी एक कहानी है। आर्थिक दबावों से जीवन बिताने पर भी कहानी की मेहन्दरी और दत्तुराम आपसी प्यार न खोते। उनके जीवन में आए संकटों को एक साथ सामना करते हैं। जीवन संघर्ष में जब कानून उनके साथ रहा, फिर भी मेहन्दरी अपने पति पर छुरा भोंगनेवालों से पैसा लेने केलिए निकलती है। क्योंकि वह जानती है कि पति आगे नहीं उठेगा, न काम करेगा। इसलिए वह बुद्धिमानी से पति पर आक्रमण करनेवालों से पैसा लेकर मुकदमा टालने को विवश हो जाती है। मेहन्दरी का जीवन पति और परिवार के प्रति समर्पित है। यह कहानी स्वस्थ पति-पत्नी सम्बन्ध और पति-पत्नी के निस्वार्थ प्रेम का उदाहरण है। उच्चवर्ग का पति-पत्नी सम्बन्ध केवल व्यावहारिकता पर टिका है। 'इस हमाम में' नामक कहानी इस प्रकार के पति-पत्नी सम्बन्ध का उदाहरण है। आधुनिक जीवन परिस्थिति में पति-पत्नी सम्बन्ध में जो मूल्यच्युति आ गयी है इसकी ओर कहानी में संकेत किया गया है। पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण से समाज में सम्बन्धों में भी बदलाव आ गया। 'एंटीक पीस' 'बावजूद इसके' आदि कहानियाँ पाश्चात्य संस्कृति की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी हैं। रात में पार्टी में जाना, नशे में आपस में मिलजुलकर डान्स करना, पति-पत्नियों को आपस में बदलना ये सब शहरी जीवन का अंग बन चुके है। उच्चवर्ग का यह जीवन 'वाइफ स्वैपी' में भी चित्रित है। अंग्रेज़ी पढ़ने की शौक से बेटी

को ज़बरदस्ती से अंग्रेज़ी पढाने की कोशिश करनेवाले मध्यवर्गीय पति-पत्नी का जीवन 'एक काली एक सफेद' में प्रस्तुत किया गया है। इसमें अहं के कारण पति-पत्नी हमेशा झगड़ा करते हैं। माता-पिता के झगड़ने से दुखी बनती छोटी लड़की की मानसिकता भी इस कहानी में प्रस्तुत है।

पति को भगवान के रूप में प्यार करनेवाली पत्नी को 'सौदा' कहानी में उकेरा गया है। माँ, पत्नी, और नारी ये तीन रूपों से नारी के कर्तव्य को चुननेवाली पत्नी की भी कहानी है 'सौदा'। पति और अपने बच्चों के पिता होने पर भी एक लड़की पर पति द्वारा किये गये अत्याचार को वह सह नहीं पति। यद्यपि वह पति से प्यार करती है, तो भी पति द्वारा किये गये अमानवीय व्यवहारों से घृणा भी करती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'सौदा' कहानी एक पत्नी के प्यार और कर्तव्य के संघर्ष की कहानी है।

'प्रमोशन' कहानी में भी यह दिखाया गया है कि शंका के कारण किस प्रकार पारिवारिक सन्बन्ध टूट जाता है। सुभाष और ललिता का जीवन पहले सुखमय था। ललिता और उसके आफिस के सहकर्मी डॉ. कोठारी के सम्बन्ध को सुभाष शंका की दृष्टि से देखने लगा। सुभाष इसलिए उस पर शंका करता है कि पहले उसको अपने दफ्तर की रेखा नामक युवती से कुछ अनैतिक सम्बन्ध था। ललिता पर सुभाष द्वारा आरोप का यही कारण है। सुभाष का शंकालु चरित्र दोनों के तलाक तक ले जाता है। 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' कहानी उच्चवर्ग के पति-पत्नी सम्बन्ध के खोखलेपन का कच्छा चिट्ठा है। 'अग्निरेखा' कहानी में भी शंकालू चरित्र के कारण पति-पत्नी के सम्बन्ध में जो टूटन है उसका चित्र

है। पति के सम्बन्ध में पत्नी के मन में होनेवाली संकल्पनाओं एवं आकांक्षाओं का चित्र प्रस्तुत है। 'पाली का आदमी' में पति-पत्नी के जीवन के स्वच्छ बहाव में बाधा डालनेवाला पूर्व सम्बन्ध, उस सम्बन्ध में जन्मी बेटी के हक को ठुकरा देनेवाले पिता और अपने नए जीवन को न छोड़ने केलिए मज़बूर पति की मानसिकता की अभिव्यक्ति हुई। इसमें पति-पत्नि सम्बन्ध की ईमानदारी भी प्रस्तुत हुई है।

'त्रिशंकु' निम्नवर्ग के पति-पत्नी सम्बन्ध पर केन्द्रित कहानी है। निम्नवर्ग में प्रायः ज्यादातर सम्बन्ध बनते मिटते रहते हैं। कहीं सम्बन्धों के प्रति विशेष लगाव नहीं। पति और पत्नी अपनी मर्जी के अनुसार जीवन बिताते हैं। 'इस हमाम में' कहानी की अंजा का जीवन भी ऐसा है। ऐसे सम्बन्धों से बच्चे जनमते हैं और उन्हें न पिता है और न माता।

आधुनिक सभ्यता और मीडिया ने पारिवारिक रिश्तों के बीच की दूरी को बढ़ा दिया है। सम्बन्धों के बीच के मूल्य के स्थान पर मूल्यहीनता आ गयी है। 'अपनी वापसी' कहानी में आधुनिक जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है। हरीश और शकुन पहले बड़े प्यार से जीवन बिताते थे। लेकिन पहले की तुलना में वे अब आर्थिक रूप से सुरक्षित हैं। धन की अधिकता और बच्चों के बड़े होने की स्थिति में दोनों अनजाने ही अलग हो गये। एक ही घर में अलग-अलग व्यक्ति के जैसे जीने लगे। शकुन के मन में जिन्दगी के बीते पलों की यादें हमेशा उभर आती हैं। वह जिन्दगी में सादगी चाहती थी। लेकिन आधुनिक रीति-रिवाज़ों में पले बच्चे नई संस्कृति के शिकार बन गये। बच्चे के हर बदलाव को हरीश ने स्वीकार किया। लेकिन शकुन पर सामाजिक बदलाव का कोई असर नहीं पड़ा।

उसने पति और बच्चे के भ्रम को स्वीकार किया। यों हरीश और शकुन के बीच दरार बढ़ने लगी।

चित्राजी ने अपनी कहानियों में रिश्तों के मर्मस्पर्शी चित्र अंकित किये हैं। आज कोई रिश्तों की परवाह नहीं करता। पिता पुत्र, माता आदि का पारस्परिक सम्बन्ध केवल व्यावहारिकता पर टिका है। युवा वर्ग अपनी सुख सुविधाओं की खोज में माँ-बाप और सम्बन्धियों को छोड़कर विलायत मे चला जाता है। माँ-बाप पैसा कमाने की व्यवस्तता में बच्चों को बोर्डिंग में दाखिला कराकर चैन महसूस करते हैं। आधुनिक समाज में बढ़ी यह नई प्रवृत्ति बच्चों को अपने घर और माँ-बाप के प्यार से वंचित होकर स्वार्थ जीवन बिताने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार पले बच्चे रिश्तों से कोई लगाव नहीं दिखाते। ऐसी परिस्थिति में बच्चों, माँ-बाप बूढों आदि सब में एक प्रकार का अस्वस्थ संबन्ध जन्म लेता है। इसका परिणाम उनका यंत्रवत व्यवहार है। सम्बन्ध में कोई आत्मीयता नहीं रहती। चित्राजी अपनी कहानियों में सम्बन्धों की तीव्रता, पवित्रता, आत्मसमर्पण की भावना, प्यार, ममता को उसकी पूर्णता के साथ अभिव्यक्त किया है।

चित्राजी की कहानियों में पारिवारिक जीवन को स्त्री पात्रों की दृष्टि से चित्रित किया गया है। 'भूख' कहानी की माँ और बच्चे का जीवन मर्मस्पर्शी है। 'भूख' की माँ की विवशता अन्य कहीं नहीं देखी जा सकती। 'भूख' की लक्ष्मा और गनेसी छोटू के आपसी सम्बन्ध की व्याख्या करना बड़ा मुश्किल है। 'सौदा' कहानी का चन्दू अपनी पत्नी और बच्चों को ठीक तरह से पालने केलिए निकृष्ट काम करता है। चंदू का चरित्र एक ओर अच्छे पति और पिता का है तो दूसरी ओर छलिया, कपटी, एवं

निर्दयी का है। 'ताशमहल' की शोभना माँ-बेटी के प्यारे सम्बन्ध का अच्छा उदाहरण है। शोभना अपने बेटे केलिए दूसरे पति निशीथ को छोड़कर अकेले जीने का निर्णय लेती है। पति-पत्नी सम्बन्ध में हुए तनाव, बेटों और माँ के बीच का प्यार-ममता आदि इस कहानी का विषय है।

'दुल्हिन' कहानी में चित्रित माँ-बेटे का प्रेम अजीब सा लगता है। बडे होने पर भी बेटे के मन में माँ के प्रति बड़ा लगाव है। जब माँ घर छोड़कर चली जाती है तब बेटा ऐसा अनुभव करता है कि अपने घर पर वह अकेला है। 'दशरथ का वनवास' में पिता बेटे के प्रति जो प्यार है उसे छिपाकर, निर्दय भाव से व्यवहार करता है। पिता के प्यार न मिलने से बेटा पिता को जिन्दा रहने पर भी मरा हुआ समझता है। आखिर जब पिता की मृत्यु की खबर मिली, तब पिता के असीम प्रेम का भेद भी खुला। परिवार की प्रतिष्ठा को बनाए रखने केलिए अपनी बेटी पर किये गये अत्याचार को छुपा रखनेवाले माँ-बाप की मानसिकता 'प्रेतयोनी' कहानी में चित्रित है। इसमें माँ-बाप बेटी की इज्ज़त से ज्यादा उसके भविष्य के प्रति चिन्तित हैं।

गरीबी मनुष्य को जानवर बनाती है। अपने बच्चों की भूख मिटाने केलिए असलम अपनी प्रिय घोड़ी को गाड़ी से टकराकर कत्ल करता है। सरवरी से असलम के रिश्ते की व्याख्या इस प्रकार है 'सरवरी केलिए क्या नहीं किया उसने बीवी कह लो, प्रेमिका कह लो, बहन कह लो... बेटी कहलो... अपने को बचकर भी उसके हाड मांस बचा पाने की गारन्टी होती तो बेझिझक बचकर उसे बचा लेता...।[1] यह पिता की

---

1. चित्रा मुदागल जिनावर पृ. 57

विवशता और बच्चों के प्रति प्रेम की कथा है। साथ ही अपने बच्चे के समान प्रेम करनेवाली घोडी को मार देने से असलम के मन में बडा दुःख होता है। उसके मन में वही संघर्ष होता है जो बेटे के मरने पर पिता को होता है। 'शिनाख्त हो गयी' में माँ और बेटा सोनू के आपसी प्रेम की कहानी है। डाँट खाकर घर से भाग निकले बेटे की याद में छटपटाती माँ की पीड़ा की अभिव्यक्ति इसमें है। माँ के मन में बेटे के प्रति कितना प्यार एवं ममता है इसका संघर्षपूर्ण चित्रण चित्राजी ने किया है।

'पाली का आदमी' में चित्रित रवि का दोहरा व्यक्तित्व हैं। पिता और पति के दायित्व को निभाने के चक्कर में अवैध सम्बन्ध में जन्मी पुत्री के पितृत्व का वह निराकरण करता है। बेटी के प्रति वास्तव में उसके मन में प्यार है, लेकिन पत्नी और प्यारी बेटी के सम्बन्ध में उलझन आने की संभावना महसूस कर रवि अपने प्यार मन में ही छुपाता है।

निम्न वर्ग के माँ-बाप और सन्तान की कथा 'त्रिशंकु' में प्रस्तुत की गयी है। इसमें चित्रित पिता पियक्कड़ और दूसरी स्त्रियों के साथ रहनेवाला है। पिता के दायित्व के वह कभी नहीं निभाता। माँ तो बाप से डरती है। छोटे होने पर भी बेटा घर का दाय संभालता है। पिता से बचाने केलिए बहन को एक घर में छोड़ता हे। आखिर पिता के समान माँ भी उसे छोड़कर एक पड़ोसी के साथ भाग जाती है। एक परिवार के बिखर जाने की कथा इसमें वर्णित है।

'अपनी वापसी' कहानी आधुनिक शिक्षित परिवार की दस्तान प्रस्तुत करती है। इस कहानी में यह समझाया गया है कि शहरीकरण और पाश्चात्य संस्कृति के अन्धे अनुकरण से पारिवारिक रिश्तों में नैतिकता

नष्ट हो गयी है। इस कहानी में चित्रित पिता-पुत्री सम्बन्ध अजीब सा लगता है। सांस्कृतिक चिन्तन के गिराव को चित्राजी ने इसमें चित्रित किया है।

'लिफाफा' कहानी में यह दिखाया है कि माँ-बाप अपनी कमाऊ सन्तान पर ही गौर करते हैं, बेरोज़गार या बेकार सन्तान के प्रति उनकी कोई चिन्ता नहीं है। यहाँ पैसा ही सब कुछ है। पैसा नहीं है तो परिवार में किसी सदस्य की पूछ भी नहीं होती है। इसके बदले उसके प्रति नफरत ही ज्यादा होती है। माँ-बाप को सब बच्चे समान हैं। लेकिन आधुनिक समाज व्यावहारिकता पर टिका है। इसलिए जहाँ जीने केलिए ज्यादा सुविधाएँ मिलती हैं वहाँ ज्यादा प्यार दिखा जाता है। बेटा कमाऊ बनता है ज्यादा पैसा कमाता है तब माँ-बाप बेटी को छोड़कर बेटे से ज्यादा प्रेम करते हैं। माँ-बाप की यह व्यावहारिकता आधुनिक समाज की एक विशेषता है।

इस प्रकार चित्राजी ने अपनी कहानियों में पिता-पुत्र, पिता-पुत्री सम्बन्ध के कई सन्दर्भों को पूरी यथार्थता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियों में नारी की नज़र में पारिवारिक जीवन का चित्रण करने की कोशिश हुई है। उनकी कहानियों में चित्रित माँ और पत्नी समाज में इसी हालत में आज भी मौजूद है।

सामाजिक आर्थिक यथार्थ की कहानियाँ

आधुनिक हिन्दी कहानी में समाज विषयक शाश्वत और परंपरागत, रूढिगत मूल्यों का बहिष्कार किया गया है। चित्राजी ने भी समाज विषयक मूल्यों की अस्वीकृती के साथ उसकी यथार्थता को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। मध्यवर्गीय कुंठाग्रस्त व्यक्ति केलिए सारे पुराने मूल्य बांसी हो गए हैं। चित्राजी ने मध्यवर्गीय सामाजिकता के साथ निम्न वर्ग के

सामाजिक जीवन को अधिक प्रमुखता दी है। प्रतिष्ठा, नैतिकता और संहिताएँ आज बेईमान हो गयी हैं। चित्राजी की कहानी में पुराने मूल्यों के प्रति आक्रोश का भाव अभिव्यक्त है। उन्होंने पुराने मूल्यों का खण्डन किया है। उनके अनुसार मूल्य और धारणाएँ आज का जीवन जीने को लायक नहीं रह गयी हैं। उनकी कहानियाँ मूलतः सामाजिक यथार्थ के संवाहक हैं। प्रेमचन्द्र ने सबसे पहले समाज को प्रमुखता देते हुए कई सामाजिक समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत किया। बाद की कहानिकारों ने भी उसी प्रकार सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। समकालीन कहानीकारों ने भी समकालीन सामाजिक सच्चाई और असलियत की तलख अभिव्यक्ति देने की कोशिश की है।

चित्राजी ने ग्रामीण शहरीय और झोंपड़-पट्टी के लोगों के सामाजिक जीवन को अपनी कहानियों में उकेरा है। नगरों के सामाजिक जीवन का चित्रण करते समय मुख्य रूप से मुम्बई जैसे महानगरों की गन्दी बस्तियों के जीवन का बड़ा प्रामाणिक चित्र उन्होंने प्रस्तुत किया है। समाज में सबसे पहली और मुख्य समस्या आर्थिक समस्या है। अर्थ की प्राप्ति और कमाना उतना आसान नहीं है। अर्थ के कारण समाज में व्यक्ति, सम्बन्धों को भूलता है, अपने को भी बेचने केलिए तैयार हो जाता है। चित्राजी ने सामाजिक जीवन में पाश्चात्य संस्कृति एवं मीडिया के गहरे दबावों को चित्रित किया है। 'अठाई गज की ओठनी, 'एंटीक पीस' आदि कहानियाँ इसके उदाहरण हैं। इसमें उन्होंने सामाजिक जीवन के बहुवर्णी रूपों और बेहतर सन्दर्भों को कई कोण से प्रस्तुत किया है। सामाजिक सन्दर्भों को उद्घाटित करनेवाली चित्राजी की प्रमुख कहानियाँ हैं - 'जिनावर' 'केंचुल',

'लिफाफा' 'अढाई गज की ओढनी' 'प्रेतयोनी' 'अपनी वापसी' 'बोहनी' 'रक्षक भक्षक' आदि।

'जिनावर' कहानी गरीबों के सामाजिक जीवन का सही दस्तावेज़ है। यह कहानी प्रेमचन्द्र की 'कफन' एवं 'पूस की रात' के समान एक प्रमुख सामाजिक सत्य को उद्घाटित करनेवाली है। दरिद्रता के कारण एक गरीब आदमी कैसे जानवर बन जाता है, यही इस कहानी का कथ्य है। समाज में सम्बन्धों के संवेदनहीन और खोखले होते जाने की प्रक्रिया बढ़ती जा रही है। ऐसे अवसर पर मनुष्य जानवर से अधिक क्रूर एवं निर्मम कार्य करने केलिए भी तैयार हो जाता है। अपनी घोड़ी सरवरी से असलम की अगाध ममता है। वह बूढ़ी घोड़ी उसकी आजीविका का आसरा है। वह सोचने लगता है कि उस घोड़े से अधिक काल तक आजीविका चला नहीं सकेगा।

एक दिन वह अपने तांगे को किसी गाड़ी से जानबूझकर टकराने देता है। जिसमें घोड़ी मर जाती है। गाड़ीवाले से मुआवज़ा लेकर घर चला जाता है। लेकिन उसने जो कुछ किया उस पर उसे बड़ा अफसोस है। रात को वह सो नहीं पाता। जब कभी सोने लगता है तो किसी घोड़ी के हिनहिनाने का प्रखर स्वर सुनकर उसकी नींद उचट जाती है। उसके अन्तरंग में दर्द होने लगता है। अपनी घिनौनी कारवाई उसके हृदय को रह रहकर पीड़ा देती है। तब तो पत्नी से वह कहता है - नहीं.... वह जुदा नहीं हुई.... उसके जुदा होने से पहले मैं ने उसकी मौत से सौदा कर लिया बीवी। जानबूझकर उसे गाड़ी से भिड़ा दिया.... ये नोट, नोट नहीं मेरी सरवरी की बोटियाँ हैं, बोटियाँ... बीबी....।[1] उसके हृदय की यह संवेदना

1. चित्रा मुदागल जिनावर पृ. 65

सचमुच दर्दनाक है। अर्थाभाव ही उसे जानवरों से गया-बीता काम केलिए मज़बूर करवाता है।

'प्रेतयोनी' सामाजिक नीतियों एवं अनीतियों को चित्रित करनेवाली कहानी है। इसमें समाज की जटिल नीति के सामने अपनी बेटी का अपमान करनेवालों के खिलाफ प्रतिशोध करने के बदले अपमान को छिपाने केलिए प्रयत्न करने की कहानी वर्णित है। 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' नामक कहानी में उच्च वर्ग के जीवन के खोखलेपन ओछेपन, दिखावा आदि की अभिव्यक्ति मिलती है। आज पति-पत्नी, माता-पिता आदि के रिश्ते में कोई संवेदना नहीं है। वे केवल दिखावा केलिए संवेदनशीलता दिखाते हैं और मुखौटा पहनकर अपने अतृप्त जीवन को दूसरों से छिपाते हैं।

समाज पर मीडिया एवं माध्यमों के दुष्प्रभाव को व्यक्त करनेवाली कहानी है अठाई 'गज की ओचनी।' पाश्चात्य जीवन एवं संस्कृति का अन्धानुकरण से आज की नई पीढ़ी पर जिस प्रकार का असर दिखाई देता है इसका सच्चा खाका इस कहानी में खींचा गया है। आज के मानव फ्लैट के जीवन और शहरी संस्कृति की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। बच्चे ही अपने आसपास के जीवन से जल्दी से प्रभावित हो जाते हैं। उन्हें भलाई व बुराई का फिक्र नहीं। वे जो कुछ देखते हैं उसका अन्धा अनुकरण करते हैं। इसका अंजाम क्या है, यह सोचने में वे काबिल नहीं या उनमें क्षमता नहीं है। बच्चों को सच्चाई समझाने का वक्त भी माँ-बाप के पास नहीं। यही इस कहानी का कथ्य है। भूख एक असहाय परिवार को जिस भीषण स्थिति तक ले जाती है इस का चित्र 'भूख' कहानी में है। जन्म लेने से मरण तक हर कोई भी जीने का हकदार है। माँ के सामने बड़ा या छोटा; सूरत या

बदसूरत सब समान है। पर 'भूख' की माँ लक्ष्मा की विवशता और कहीं देखी जा सकती। बड़े दो बच्चों की भूख मिटाने केलिए माँ अपने छोटे बच्चे को एक भिखारिन के हाथ किराये पर देने को विवश हो जाती है। परिवार के अन्य सदस्यों की भूख मिटाने छः महीने के बच्चा भूख से आँतें सूखकर हमेशा केलिए सो जाता है। गरीबी की इतनी तीव्र अभिव्यक्ति अन्य किसी कहानीकार ने नहीं की है। पारिवारिक जीवन की यह असहाय स्थिति अन्य कहीं नहीं मिलेगी। त्रिशंकु आर्थिक सामाजिक स्थितियों, व्यवस्थाओं पर सवाल उठानेवाली कहानी है। इसमें माँ और छोटी बहन की परिवरिश केलिए नौकरी की तलाश में निकलते लड़के की कहानी है। एक दोस्त की सहायता से थियेटर में टिकटों की कालाबाज़ारी करके कुछ न कुछ कमाकर माँ को देता है। आखिर जिस सामाजिक व्यवस्था से कम उम्र में उसको नौकरी केलिए निकलना पड़ा, उसी ने ही दुबारा उसके जीवन को अनाथ बना दिया। यह कहानी निम्न वर्ग की अस्थिर पारिवारिक जीवन और अनाथ होनेवाले बच्चों की मानसिकता आदि से सम्बन्धित कई समस्याओं की ओर संकेत करती है। बंडू उन तमाम बच्चों का प्रतिनिधि है जो शराब के नशे में जीनेवाले पिता की वजह जीवन भर बालभवन और जेल में बिताते हैं। उसी बदमाश पिता के कारण गुड़िया लेकर खेलने की उम्र में बहन कमली चाकरी करने केलिए विवश हो जाती है। शराब पीने का परिणाम कितना भयानक होता है, इसकी ओर भी लेखिका प्रकाश डालती है। टिकट की कालाबाज़ारी में पकड़े गये बंडु जेल से लौट आकर सीधे पिता की खोज में निकलता है। बीच में पड़ोसिन से माँ के नए रिश्ते की खबर सुनकर भीड़ में गायब हो जाता है। पति द्वारा आतंकित पत्नी और बच्चों को जीने केलिए बड़ा संघर्ष करना पड़ता है।

निम्न वर्ग का पारिवारिक जीवन ऐसे ही बनता, बिगड़ता रहता है और बंडू जैसे आवारा लड़के समाज में बढ़ते रहते हैं।

मध्य एवं उच्चवर्ग की पारिवारिक जीवन प्रस्तुत करनेवाली कहानियाँ हैं 'पाली के आदमी' 'बावजूद इसके' 'दशरथ का वनवास' 'शून्य' 'स्टेपिनी' 'एंटीक पीस' 'अग्निरेखा' 'लाक्षागृह' 'लिफाफा' 'शिनाख्यत हो गयी' 'गर्दी', 'दुलहिन' 'अनुबन्ध' आदि। कहानियों में पारिवारिक जीवन यथार्थ के कई सन्दर्भ प्रस्तुत हैं। 'अग्निरेखा' नारी की कुण्डाग्रस्त मानसिकता को लेकर लिखी गयी कहानी है। परिवार में पति या पत्नी निष्क्रिय होकर रहने से, एक दूसरे पर ईर्ष्या भाव से व्यवहार करने से एवं आपसी लगाव नष्ट होने से दोनों के मन में जो संघर्ष होता है उसी को चित्राजी ने इस कहानी में बड़ी सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त किया है। अमरेन्द्र और मनु पति-पत्नी हैं। डेढ़ साल से मनु बिस्तर पर है। मनु की देख-भाल केलिए उसकी बहन शशि आती है। घर का सारा काम और मनु की शुश्रूषा शशि करती रही। इसी बीच मनु के मन में शशि और अमरेन्द्र के प्रति शंका उत्पन्न हुई। यह शंका तीनों के जीवन को संघर्षमय बना देती हैं। मनु अपनी निसहाय स्थिति पर पति का प्रेम और ध्यान चाहती है। अमरेन्द्र से मिली उपेक्षा का भाव उसके मन को चोट पहूँचाता है। पारिवारिक जीवन में नारी जीवन का एकाकीपन, विवशता आदि की इस कहानी में हैं। साथ ही नारी मन में होनेवाली शंकाओं और पति-पत्नी सम्बन्ध की आत्मीयता को भी इस कहानी में चित्रित किया गया है।

'लाक्षागृह' में चित्राजी ने असुन्दर होने के कारण घरवालों से और समाज से घृणा की पात्रा बनती सुन्नी नामक युवती के जीवन को

प्रस्तुत किया है। अपनी बद्सूरती के कारण जीवन से वह वंचित हो जाती है। माँ-बाप अपना हाथ पीला करने केलिए एक गँवार, अनपढ़ व्यापारी से उसकी शादी तय करती हैं। लेकिन वह इनकार करती है। इसी बीच ऑफिस में आए नए कर्मचारी सिन्हा उससे प्यार से व्यवहार करने लगा। वह बड़ा ही चालाक व्यक्ति है। वह जानता था कि आज एक भरे-पूरे परिवार को एक की आमदनी से चलाना मुश्किल है। इसलिए कुरूप होने पर भी कमाऊ लड़की से वह शादी करने का निर्णय लेता है। सुन्नी जब यह जानती है कि सिन्हा का प्यार उससे नहीं, धन से है तो वह उस सन्बन्ध को भी तोड़ देती है। साथ ही नौकरी से त्यागपत्र भी देती है। आखिर वह माँ-बाप द्वारा व्यापारी से तय शादी करने का निर्णय सुनाती है। पर तब तक व्यापारी की भी शादी किसी दूसरी लड़की से तय हो जाती है।

आज का ज़माना व्यावहारिकता पर टिका हुआ है। इसलिए सिन्हा सुन्नी से शादी करने को तैयार होता है कि वह महीने में आठ हज़ार रुपए कमाती है। पारिवारिक सम्बन्धों में 'अर्थ' की इस व्यावहारिकता को चित्राजी ने इस कहानी में चित्रित किया है। 'लिफाफा' कहानी भी इसी व्यावहारिकता पर लिखी गयी है। माँ-बाप कमाऊ लड़की को पसंद करते हैं और बेकार पुत्र से नफ़रत का भाव रखते हैं। माँ-बाप केलिए सब सन्तानें बराबर हैं, होना भी चाहिए। लेकिन आधुनिक समाज कमाऊ बच्चों को ज्यादा लगाव और प्यार देता है। इस कहानी में पारिवारिक जीवन की पृष्ठभूमि में चित्राजी बढ़ती हुई बेकारी की ओर भी संकेत करती हैं। बेकारी आज की एक ज्वलन्त सामाजिक समस्या है। बेकारी के युवक अनैतिक बातों की ओर अधिक आकृष्ट होते हैं। स्त्रियों के नौकरी पर जाने का कारण भी बेकारी बढ़ती है। इसलिए कहानी का केन्द्रीय पात्र

यों सोचता है कि पुराने ज़माने की तरह स्त्रियों को घर पर रहना चाहिए और पुरुषों को नौकरी करनी चाहिए। शहरीकरण और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से समाज से मूल्यों में कमी होती जा रही है। 'अपनी वापसी' कहानी में लेखिका एक परिवार के माध्यम से फैशन की ओर तेज़ी से उन्मुख युवा पीढ़ी के चित्र प्रस्तुत करती है। आधुनिक समाज में आपसी सम्बन्ध में बदलाव आ गया है। पिता को दोस्त के रूप में देखती बेटी और बेटी के सौन्दर्य का वर्णन करनेवाला पिता आधुनिकता की ही उपज हैं। बेटियाँ पिता को समय के साथ चलनेवाला कहती हैं और माँ उपयोगिता का पर्याय। आज की युवा पीढ़ी रिश्तों और उसके मूल्यों को नहीं मानती, वह खुले आकाश पर विचरण करना चाहती है। माँ उनकी गति पर व्याकुल होती है तो पिता खुशी के साथ उसका साथ देता है। संयुक्त परिवार से अणु परिवार बनने का ऐसा परिणाम निकला है कि व्यक्ति साथ रहने पर भी अलग है। आज के बदलते सामाजिक जीवन को चित्राजी ने इस कहानी द्वारा चित्रित किया है।

'शिनाख्त हो गयी' मानवीय संवेदना को झकझोर करनेवाली है। माँ की मानसिकता को लेकर यह कहानी लिखी गयी है। डाँट खाकर घर से निकले बच्चे की याद में माँ के मन में होनेवाली शंकाओं, आकांक्षाओं को चित्राजी ने बड़ी बारीकी से शब्दबद्ध किया है। बच्चे के खो जाने पर घरवाले, रिश्तेदार, पडोसी, दोस्त आदि के मत, सांत्वना, बढ़ते तनाव में आग लगानेवाली घटनाओं का वर्णन आदि ने कहानी को यथार्थ घटना का अभास दिया है। इसमें बच्चे के खो जाने पर माँ के मन में होनेवाले दर्द, पीडा आदि का मनोवैज्ञानिक चित्र प्रस्तुत है। बच्चे की गैरहाज़िरी से

परिवारवाले जितने तनावपूर्ण स्थितियों से गुज़रते हैं इसकी अभिव्यक्ति जीवन्त है।

'गर्दी' कहानी में काफी अन्तराल के बाद घर लौट आए व्यक्ति की मानसिकता की अभिव्यक्ति दी गयी है। रमेश, राजी के उपेक्षा भरे विधवा जीवन में एक सहारा बन जाता है। घरवालों के मना करने पर भी राजी उसके पास लौट आता है। वैधव्य नारी की सबसे बड़ी दयनीय स्थिति है। विधवा का जीवन त्रासद एवं तनहापूर्ण है। ऐसे जीवन की राह में अकेली रह जानेवाली अभागी नारियों की जिन्दगी को चित्राजी ने 'गर्दी' कहानी का विषय बनाया। भरे-पूरे परिवार में अकेलापन का अनुभव करनेवाले एक युवा की कहानी है 'दुलहिन'। इस कहानी में कुछ विशेष मानसिकताओं को भी प्रस्तुत किया गया है। पुरानी लीक में ही जीनेवाली माँ के प्रति बेटे के मन में प्यार-ममता के स्थान पर घृणा का भाव भर जाता है। बड़े बड़े बेटों और पोतियोंवाली माँ का गर्भवती होना स्वाभाविक नहीं है। इसलिए उसे ऐसा लगा कि पूरा घर अनपढ़ों, गॉवारों, उजड़डों, कमीनों और अविवेकियों का अड्ड़ा है।

नारी जीवन के यथार्थ की कहानियाँ

चित्राजी ने साहित्य सृजन की शुरुआत से ही नारी की बदहालत एवं शोषण आदि कई समस्याएँ चित्रित की हैं। उन्होंने अपनी कहानियाँ में नारी जीवन के अनुछुए पहलुओं पर प्रकाश डालने की कोशिश करने के साथ ही शोषित नारी के प्रति अपनी हमदर्दी भी प्रकट की है। कहीं-कहीं उन्होंने पात्रों के विद्रोहात्मक रूप भी चित्रित किये हैं जिन्होंने अपनी शोषित स्थिति के विरुद्ध आवाज़ उठायी है। आज महिला कथाकार अपनी कहानियों

में नारी की कई समस्याओं को उजागर करने का प्रयत्न कर रही हैं। चित्रा मुद्‌गल की ऐसी अनेक कहानियाँ हैं जिनमें नारी की सामाजिक स्थिति, शोषण, शोषण के खिलाफ विद्रोहात्मक प्रवृत्ति अंकित हैं। माँ, प्रेमी, पत्नी, पुत्री, नौकरानी, कामकाजी नारी जैसे नारी के अनेक रूप उनकी कहानियों में प्रस्तुत हुए हैं। नारी के शोषण एवं उनके जीवन की समस्याओं को चित्राजी ने उसकी पूरी यथार्थता और सच्चाई से चित्रित किया है। नारी का शोषण सब कहीं चल रहा है। सबसे पहले उसका शोषण घर से शुरू होता है। वहाँ से लेकर समाज, दफ्तर ससुराल आदि तक यह व्याप्त है।

चित्राजी की 'प्रेतयोनी', 'फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती', 'दरमियान' 'स्टेपिनी' 'जहर ठहरा हुआ है' 'चेहरे' 'शून्य' 'केंचुल' 'अग्निरेखा' 'अभी भी' 'ताशमहल' 'गर्दी' आदि कहानियों में नारी जीवन की विभिन्न समस्याएँ देखने को मिलती हैं। उनकी कहानियों के नारी-पात्र अपने अस्तित्व एवं अस्मिता केलिए लड़ते हुए दिखाई देते हैं। हमारे समाज में नारी विरोधी नियम ज़ोर पकड़ रहे है। स्त्री कैसे शर्मीली जिन्दगी जी रही हैं, उसके जीवन में क्या उथल-पुथल मच रहे हैं, इन बातों का चित्रण पुरुष कहानीकारों की तुलना में स्त्री कहानीकार ही सही ढंग से कर सकती हैं। चित्राजी की 'फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती' चित्रा जी की उल्लेखनीय कहानी है, जिसमें उन्होंने मानवीय संवेदना को उजागर करने की कोशिश की है। इस कहानी में एक युवती लाल बत्ती इलाके में जाकर वेश्याओं के जीवन को निकट से देखकर उस पर कुछ लिखना चाहती है। वह उस क्षेत्र के परिचित थाना-इंचार्ज से संपर्क करती है। उसकी बात पर ज्यादा ध्यान दिये बगैर वह सलाह देता है कि वह क्यों जहमत उठाती है। यहीं थाने में जब वह चाहेगी, चार-छः औरतों को बुलावा लिया जाएगा

और वह जो चाहे उनसे पूछ सकती है। लेकिन इस सलाह को नामंजूर करके वह स्वयं उस इलाके में जाकर उस पूरे परिवेश को देखने और समझने का आग्रह दोहराती है।

पुलिस के एक हवलदार को लेकर वह जाती है और उन औरतों से मिलती है। एक नए कोण से समस्या को उठाकर अपने मध्यवर्गीय संस्कारों और सोच पर व्यंग्य की मुद्रा द्वारा कहानी की अन्तर्वस्तु को अवांछित व्यापकता देने में लेखिका को सफलता हासिल हुई है। वह कोठी की मालिकिन फातिमाबाई के इस सुझाव को भी नामंजुर कर देती है कि वह एक-एक लड़की को कमरे में बुलाएगी और वहीं वह आराम से बुलाएगी और वहीं वह आराम से बातें कर ले। वह वहीं उनके कमरे में जाकर उनके समूचे परिवेश में उन्हें देखना चाहती है। उसे लगता है कि फातिमाबाई झूठ नहीं बोली थी। क्योंकि "लडकियाँ सचमुच सोकर उठी थीं। उनके चेहरे पर रात का अंधेरा बदरंग धब्बों में पुता हुआ था...।"[1] इन अपरिचित चेहरों के बीच उसे एक परिचित चेहरे का आभास होता है। दिमाग पर थोडा ज़ोर डालने पर ही वह उसे पहचान लेती है और तब वह स्वयं कोठे की मालिकिन फातिमाबाई में बदल जाती है जिसने ट्रेन में मिली किशोरी शैला को 'केतकी' बनाकर फातिमाबाई के हवाले कर दिया है। डिब्बे में सहयात्रियों के दबाव और आशंकाओं ने उसे सही वक्त पर सही निर्णय नहीं लेने दिया। अपने ऊपर आनेवाले संभावित संकट से बचाव का उनका तर्क उसे विचलित कर गया था और आज वही शैला केतकी है। स्त्री को वेश्या बनाकर कोठे पर बिठाने केलिए फातिमाबाई

1. चित्रा मुद्गल इस हमाम में पृ. 32

होना ज़रूरी नहीं हैं। सामाजिक उत्तरदायित्व और संलग्नता का अभाव संभावित संकट से अपने को बचाने का तर्क ही वस्तुतः इस कोठ को जिलाए है। सही वक्त पर सही निर्णय न ले पाने के कारण अनजाने ही हम शोषकों के हिमायती बन जाते हैं।

'जिनावर' में संकलित 'प्रेतयोनी' एक ऐसी कहानी है जिसमें यह दिखाया गया है कि नारी को अपनी अस्मिता की लड़ाई अपने ही घर से शुरू करनी पड़ती है। इस कहानी की नायिका अनिता गुप्ता नामक छात्रा है, जो रेल दुर्घटना ग्रस्त होकर अन्य यात्रियों के साथ साझे की टैक्सी से दिल्ली आ रही थी। अन्य यात्रियों के अपने गन्तव्यों पर उतर जाने के बाद एक निर्जन स्थान पर टैक्सी ड्राइवर की हवस की शिकार हुई। साहसी अनिता ने बहादूरी से बहशी टैक्सी ड्राइवर का सामना किया और उस दरिन्दे के हाथ से निकल भागने में सफल हुई। लेकिन चोट खाकर जब घर पहूँची तो उसके बाबुजी उसे कमरे में बन्द करते हैं। फोन पर बुलावा आता है तो वे कहते हैं कि वह अनिता हमारी नहीं है, कोई दूसरी है। उनका विचार है कि घर का अपमान होगा। अम्मा तो उसे काढ़ा पिलाने लगती है। आखिर वह घर पर ही अस्मिता की लड़ाई लड़ने का फैसला करती है। यह आज की अनेक लड़कियों की कहानी है जो समाज में पुरुष द्वारा पीड़ित है और अपनी अस्मिता की लड़ाई अपने घर से ही प्रारंभ करना पड़ता है। इस कहानी में अनिता के विरुद्ध खड़े रहनेवालों में उसके माँ-बाप भी हैं। यद्यपि अनिता के साथ देने केलिए वे तैयार हैं तो भी उन्हें ड़र है कि समाज के नारी-विरुद्ध नियम उन्हें सामाजिक जीवन से अलग कर देंगे। इसी ड़र के कारण उसके माँ-बाप अनिता के हिमायत नहीं कर

पाते। यह कहानी केवल एक अनिता की नहीं, बदमाशों की हवस के शिकार बननेवाली कई लड़कियों की कहानी है।[1]

नारी चाहे निम्न वर्ग की हो या उच्च वर्ग की, वह समाज के शोषण की चीज़ बन जाती है। निम्नवर्गीय नारी के शोषण का एक सजीव चित्र 'फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती' कहानी में खींचा गया है। इस कहानी में वेश्याओं की ज़िन्दगी के यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है और इसमें उनकी जिन्दगी के नज़दीक से देख लेने की कोशिश की गयी है। सच तो यह है कि कोई भी लड़की या नारी मर्जी से व ्या नही बनना चाहती। सामाजिक व्यवस्था की वजह से मज़बूरन रंडी ननी पड़ती है। वेश्याओं की ज़िन्दगी को और उनके अकेलापन एवं अि ाप्त जीवन के दर्द को प्रस्तुत कहानी में अभिव्यक्ति मिली है। इस कहा में लेखिका ने वेश्याओं के जीवन को एक नए नज़रिए से देखकर उन ी समस्या को मार्मिकता के साथ पेश की है। बेचारी लड़कियों को बिकाऊ ाल बनानेवाली केवल एक फातिमाबाई नहीं है। समाज में ऐसे अनेक आदमी हैं जो परिस्थिति वश अकेली बन पड़ी बेचारियों को दूसरा नाम देकर फातिमा जैसे लोगों के पास पहूँचा देते हैं। यह कहानी रिपोर्ताज़ शै में लिखी गयी है। समाज के तमाम तबकों की महिलाओं के जीवन क जीवन संघर्ष की, प्रतिशोध की, विद्रोह की कहानियाँ चित्राजी ने लिखी ।[2]

जीने केलिए संघर्षरत नारी को बाहरी दुनिया क दबाव जटिल आत्मसंघर्ष का पाठ पढ़ा रहा है। उसका जीने का संघर्ष ब रहा है क्योंकि

---

1 समीक्षा जनवरी-मार्च 1997 पृ. 22, 23

2. दस्तावेज़ जनवरी-मार्च

अब घर की दहलीज छोड़कर बाहर निकलकर उसे नौकरी करनी पड़ती है। आज की नारी यह सोचती है कि उसे अलग हो जाना है। अलग होकर समाज में अपनी अस्मिता उसे बनायी रखनी है तो पहले उसकी लड़ाई अपने घर में लड़नी पड़ती है और अब वह घर से बाहर लड़ रही है। चित्राजी के कई नारी पात्रों में कुछ ऐसे पात्र भी हैं जो घर पर ही अपनी लड़ाई शुरू कर देती है।

कामकाजी महिलाओं के जीवन का यथार्थ

'दरमियान' एवं 'स्टेपिनी' कहानी में कामकाजी नारी की स्थिति एवं समस्याओं का सशक्त आलेखन हुआ है। 'दरमियान' शीर्षक कहानी में नौकरिपेशा नारी की छोटी सी आकस्मिकता, अचानक माहवरी हो जाने से उत्पन्न परेशानियाँ आदि को चित्रित किया गया है। इसके माध्यम से महानगरीय जीवन में संघर्ष करती नारी के भावात्मक संघर्ष, घर के स्तर पर बच्चे की समस्या, बच्चों की निरन्तर उपेक्षा में मातृहृदय में उठती हूक जैसी समस्याएँ और संवेदना के कई रंग इस कहानी में आये हैं। पत्नी की नौकरी से अज़िजा आ गए पति का पत्नी को नौकरी छोड़ने का भावुक झुकाव इस कहानी के ऐसे बहुवर्णी सन्दर्भ हैं, जो इस कहानी को बेजोड़ बनाते हैं। हर दृष्टि से यह यादगार कहानी कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर बेजोड़ है।

'स्टेपिनी' कहानी में भी नौकरीपेशा नारी की एक कहानी है। 'स्टेपिनी' की पत्नी पति और नौकरानी के बीच के सम्बन्ध को लेकर मानसिक संघर्ष को झेलती है। वह खुद अपनी शंका को दूर करने का प्रयास करती है, फिर बाद में ऐसा एहसास करती है कि वह खुद घर रूपी

गाड़ी की 'स्टेपिनी' है और मुख्य पहिया नौकरानी है। गृहस्थी और आत्मनिर्भरता के मध्य अपने 'स्व' का संतुलन खोजते हुए कब वह अपने ही घर केलिए स्टेपिनी हो गयी और बताशा मुख्य चक्का कौन जाने।[1] इस कहानी में नौकरानियों के जीवन की असलियत का भी वर्णन है। नौकरानी होने के नाते वह समाज में निम्न या उच्च स्तर की नहीं बन सकती। वह भी अपने घर चलाने केलिए काम करती है। लेकिन समाज उसके जीवन और उसकी पेशे को बुरी दृष्टि से देखता है और उसके चरित्र को शंका की दृष्टि से देखता है। इस प्रकार चित्राजी ने एक कहानी में दो स्तर की नारियों की जीवन-समस्या को प्रस्तुत किया है। नौकरानियों का जीवन एक तरह की ललकार है, जिसके पीछे उसके जीवन की सारी पीड़ा और गरीबी समायी हुई है।

'शून्य' कहानी की नायिका सरला है जिसको पति के जीवित रहने पर भी विधवा के रूप में जीवन बिताना पड़ा। नारी की अस्मिता और उसके जीवन का आधुनिक समाज में कोई खास महत्व नहीं है। सरला ने तीन वर्ष तक पति की सेवा की, फिर भी वह अपनी प्रेमी को भूल नहीं पायी। सरला अपनी अस्मिता को बनाये रखने केलिए तलाक लेकर अलग हो जाती है। पारिवारिक जीवन में पति द्वारा नारी सबसे अधिक अपमानित और प्रताड़ित हो जाती है।

'चेहरे' में आर्थिक और शारीरिक दृष्टि से शोषित एक भिखारिन की कहानी प्रस्तुत की गई है। उसके एक बच्चा भी है। वह रोज़ एक ही स्थान पर भीख माँगती है। उसकेलिए वह रेलवे के बाबु को हफ्ता देती है।

---

1. चित्रा मुद्गल जिनावर पृ. 85

यदि कोई किसी की जेब कतरता है तो कसूर उस बेचारी पर लगती है। रेलवे पुलीस उसकी जिस्म का शोषण करती है। इस प्रकार हर दृष्टि से निरीह और असहाय भिखारिन समाज के उच्च एवं अधिकारी लोगों के शिकार का माल है। उसकेलिए अपना जीवन किसी भी प्रकार बिताना है, इसलिए समाज द्वारा देनेवाली सभी यातनाओं को वह स्वीकारती है। लेकिन बीच बीच में उसके भीतर की विद्रोही नारी उमड़ कर बाहर आती है। 'चेहरे' शीर्षक इस कहानी में कहानीकार ने इस सामाजिक सच्चाई को अभिव्यक्ति दी है कि नारी उच्चवर्ग या निम्नवर्ग का हो वह हमेशा किसी न किसी का शिकार हो जाती है और किसी न किसी समस्याओं से भी जूझती रहती है।

इसी प्रकार 'बावजूद इसके' 'अग्निरेखा' 'रूना आ रही है' 'लेन' 'भूख', 'अभी भी' 'ताशमहल' आदि कहानियों में नारियों की किसी न किसी समस्या को प्रस्तुत करने की कोशिश हुई है। चित्राजी की कहानियों में आधुनिक नारी के हृदय की यथार्थ संवेदना जाहिर हुई है। उनके नारी पात्र विद्रोह संघर्ष, समर्पण आदि को एक साथ अनुभव करते दिखाई देते हैं। 'अपनी वापसी' की 'शकुन' इसका उदाहरण है।

राजनैतिक यथार्थ की कहानियाँ

महिला कहानिकारों की कहानियों पर यह आक्षेप लगाया जाता है कि उनकी कहानियाँ पारिवारिक जीवन में ही सीमित हैं। उनमें व्यापकता नहीं। उनका दायरा सीमित है उनमें राजनीतिक जीवन की झांकी नहीं है। लेकिन चित्राजी की कई कहानियाँ इसका अपवाद हैं। देश में घटनेवाली राजनीतिक घटनाओं, राजनीतिक लहर और राजनीतिक दाव-पेंच को

चित्रित करने में चित्राजी ने भी कुशलता दिखाई है। आज की 'वोट' की राजनीति में जनता का हित बहुत पीछे छूट चुका है। हिन्दी महिला लेखन में भी राजनीतिक जीवन की संवेदना की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। राजनीति आज एक पेशा बन चुकी है। चित्राजी ने अपनी कहानियों में राजनीतिक क्षेत्र में होनेवाले अत्याचार, धोखाधडी, भ्रष्टाचार, शोषण आदि को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। आज देश में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि आदमी का जीना दूभर हो गया है। राजनीतिज्ञ देशसेवा और जनसेवा के नाम पर भ्रष्टाचार करके अपनी जेब भरता है। इस तरह उनकी देशसेवा 'जेब-सेवा' हो जाती है। उसकेलिए भ्रष्टाचार एक ज़रिया है अपने मतलब सधने का। राजनीति के ये रंगे सियार कई तिकड़मबाजी करते हैं और इस तरह हमारा सामाजिक जीवन कुलषित हो जाता है।

'बन्द', 'जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं', 'पाठ' 'लपटें' आदि राजनैतिक चेतना से भरपूर कहानियाँ हैं। 'बन्द' आज कल हमारे राजनैतिक क्षेत्र में फैशन बन गया है। 'बन्द' शीर्षक कहानी समाज में व्यापे जानेवाले बन्द के आयोजन और उसके आगे पीछे की सच्चाईयों को उद्घाटित करती है। बन्द के द्वारा अमीर या राजनीतिक नेताओं को कोई हानी नहीं होती है। सच तो यह है कि आम जनता को ही कष्ट उठाना पड़ता है। रमेश, हरीश और नवल सर्वहारा किस्म के पत्रकार हैं। इनके ज़रिए कहानीकार ने अपने कथ्य का विस्तार किया है। जुलूस में शामिल नारे लगती भीड़ और आगजनी की सूचनाओं के बीच नवल सोचते हैं 'कमाते खाते कूसकता.... पर कैसे? वह सोच रहा है 'यह बन्द न मराठियों का है, न मद्रासियों के खिलाफ है न एक जाति का दूसरी जाति

के प्रति... यह उस जाति के खिलाफ है जो अपने स्वार्थों और संकीर्णताओं के चलते दूसरों का शोषण करती है और किसी भी जाति का मुखौटा ओढ़कर अपना चेहरा बदल लेती है.... और यह मलहोत्रा भी....।[1] बन्द' कहानी में अपनी रचनावस्तु को अपने समय-सन्दर्भों से जोड़ने के उपक्रम में लेखिका को बड़ी कामयाबी हासिल हुई है। इसलिए 'बन्द' महानगरों में आयोजित बन्द की नीरस तफसील से आगे जाकर पूरे राष्ट्रीय सन्दर्भों तक फैल जाता है।[2]

'जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं' कहानी द्वारा कहानीकार ने जनता को उल्लू बनानेवाले आधुनिक राजनैतिकों की तिकड़मबाजी और धोखा घड़ी का पर्दाफाश किया है। इस कहानी में लेखिका ने मार्कण्डेय की कहानी 'भूदान' की तरह अपनी प्रतिछवि बढ़ाने केलिए निर्धनों और विकलांगों की सहायता का नाटक करने के राजनीतिक छद्म को गहराई से उद्घाटित किया है। व्यंग्य में लिथड़ी करुणा कहानी के प्रभाव को और बेधक बनाती है। इस कहानी का केन्द्रिय पात्र भूत-पूर्व स्वास्थ्य मंत्री जगदम्बा बाबू हैं जो पिछले चुनाव में केवल सात सौ वोटों से हार गये। अगले चुनाव की तैयारी केलिए वे गाँव आते हैं और विकलांगों केलिए सहायता देनेवाली अपनी संस्था की ओर से तिपहिया गाडियाँ और अन्य चीज़ें मुफ्त देते हैं। सुक्खन भौजी अपने अपाहिज बेटा ललौना केलिए तिपहिया गाड़ी पाकर भविष्य का सपना देख रही है। उसी समय ठाकूर सुमेर सिंह के अपने आदमियों के द्वारा वह गाड़ी लेते है। गाड़ी उठाते समय यह कहा जाता है कि किसी के पूछने पर यह कहना कि गाड़ी की

1. चित्रा मुद्गल ग्यार लम्बी कहानियाँ पृ. 192
2. ड़. मधुरेश हिन्दी कहानी अस्मिता की तलाश पृ. 201

चोरी हो गई। गाड़ी घर पर आने की खुशी में सुक्खन भौजी ने अपनी देहरी तोड़कर समतल बना दिया था, ताकि गाडी को अन्दर लाकर खड़ा किया जा सके। सुमेरसिंह के आदमी द्वारा गाड़ी उठाकर चले जाने के बाद सुक्खन भौजी अन्दर जाकर कुठरिया लेकर आयी और उससे दीवार पर लटकी एक तस्वीर उसने तोड़ दी, जिसपर पंचायत घर से प्राप्त अखबार की वह कतरन चिपकाई हुई थी जिसमें गाड़ी पर बैठे ललौना और बगल में ताली बजाते हुए हर्षित मुद्रा में जगदम्बा बाबू की तस्वीर छपी थी।(1) इस कहानी में स्पष्ट एवं सुन्दर ढंग से तथाकथित ढोंगी राजनेता के असलियत को प्रस्तुत किया गया है। वैसे तो हमारे यहाँ नेता लोग अपने को लोकप्रिय बनाने केलिए इस तरह का आयोजन करते हैं और उसके प्रचार केलिए फोटो खिचवाकर अखबार में प्रकाशित कराते हैं। चुनाव के समय वे कई वादा लेकर आते हैं उसके बाद अधिकार मिलने पर उसे भूल जाते हैं। वे अपनी बातों को अवसर के अनुरूप बदलते हैं। किसी न किसी प्रकार दिखावा करके वोट लेना और अधिकार का चस्का लगाते रहने के अलावा इन लोगों के मन में आम जनता के प्रति कोई दिलचस्पी तक नहीं है।

'लपटें' कहानी में भी राजनैतिक नेताओं की चालाकी और चंदा इकट्ठने की नई रीति को भी प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक व्यवस्था आज ऐसा बन चुकी है कि किसी भी राजनैतिक पार्टी के झंण्डे के आश्रय के बिना और उनको चन्द न दिये बिना जीवित नही सकता। नेता लोग अपने प्रभावशाली भाषण से लोगों पर विश्वास दिलाते है कि अपनी पार्टी

---

1 चित्रा मुद्गल जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं पृ. 53

में शामिल करो और पार्टी केलिए चन्दा इकट्ठा करो। हमारे पार्टी सत्ता में आते, हमारी जात.....[1] नेता अपनी भाषण के बाद घर घर में जाकर चन्दा इकट्ठना शुरू किया। अगोशे साहब के घर में नेता का यथावत् स्वीकार सत्कार किया गया और उसकी पत्नि ने अपने गहनों को नेता की चरणों पर समर्पित किया। आशीर्वाद देता नेता चाली के प्रत्येक खोली में पहूँचा। उन्होंने केवल एक खोली छोड़ दिया। दुधवाले रघुनन्दन यादव अपनी पत्नी दो बच्चे के साथ रहते थे। पिछले दिन में हुए दंग की भयावहता के कारण बाहर नहीं आया न भाषण सुना। इसलिए चन्दा लेने आये नेता लोगों को नहीं देखा। चन्दे की खातिर अपने घर को छोड़ने से पति-पत्नी के बीच चर्चा हुई। पत्नी तत्कालीन राजनीति की चाल और रीति को जाननेवाली थी। उसने पति से जिद्द करके भविष्य में होनेवाले भीषण सत्य को समझाया और नेताजी को अपने घर वापस बुलाने और चन्दा देने को कहा। लेकिन रघुनन्दन इसकेलिए तैयार नहीं था साथ ही उसके मन में ऐसा विचार भी आया कि लोग क्या सोचेंगे? वह अभी तक घर पर नहीं था। पर पत्नी के प्रस्ताव को सुनकर वह सन्न रह जाता है कि "जान है तो जहान है, पैसों का क्या, कमा लेगे। बाल-बच्चों की जान कमा सकते हो? बोलो?"[2] आगे पत्नी कहती है चन्दा माँगने नही आये थे सत्तर चाली-वाली पारसाल। शेट्टी टी.वी. वाले दूकान लूटने के बाद सत्तर चाली के छोकरे मनुआ को लपटों में झोंकता देखा।"[3] सुनते रघुनन्दन पत्थर की मूर्ति समान बन गयी और 'तुम नेताजी की आगवानी

---

1. चित्रा मुद्‌गल लपटें पृ. 59
2. वहीं - पृ. 63
3. वहीं पृ. 64

की तैयारी करो 'हम उन्हें अपनी खोली की ओर मोड़ते हैं कहकर बाहर गयो। आधुनिक राजनीतिकों की पक्षधरता और चालाकी को इस कहानी में व्यक्त किया गया है। नेता लोग जनता को वादा देते हैं "जब पार्टी सत्ता में आयेगे तब हमारी जात बिरादरी के लोग को रोज़गार में आरक्षित करेंगे।"[1] वे लोकतंत्र की परिभाषा को बदलते हुए नए तंत्र का आविष्कार करते हैं।

रघुनन्दन नामक आम आदमी चन्दा देने केलिए इसलिए तैयार हो जाता है कि कल वे लोग ही उसके घर में घुसकर सारे परिवार को चकनाचूर कर दिये जाएँगे। घर के बाल-बच्चे और अपने परिवार के अस्तित्व केलिए लोग चन्दा देने को विवश हो जाते हैं। इस कहानी में लेखिका ने यह स्थापित किया है कि राजनीति का नारा अब चन्दा इकट्ठा करना, हड़्ताल करना, दंगा करके लोगों को तकलीफ देना आदि है।

'पाठ' नामक लघु कहानी में कहानीकार ने आज के राजनीतिक नेताओं की दीर्घदर्शिता को व्यंग्य के पुट के साथ प्रस्तुत किया है। आज नेता लोग अपनी प्रजा की बुनियादी ज़रूरतों को नज़रन्दाज़ करके अप्रमुख बातों केलिए धन और समय व्यय करते हैं जिससे आम जनता को कोई फायदा नहीं मिलता।

गाँव के एक स्कूल में आये एक नेता बच्चों को नंगे और गन्दे देखकर तोफा के रूप में साबून और खादी वस्त्र देते हैं। नेता ने सोचा कि इससे बच्चे खुश होंगे और माँ-बाप अपना वोट उसे देंगे। लेकिन भूखे-

---

1. चित्रा मुद्गल लपटें पृ. 59

बच्चे साबुन और वस्त्र को बेच देते हैं। कुछ दिन बाद नेता फिर आये और बच्चों में कोई बदलाव न देखकर पूछने लगे कि तुम साफ-सुधरे क्यों नहीं आये। एक बच्चे ने हिम्मत बाँधकर पूछा "माई कहत रही, बही अऊर आँगोछे के दाम से दू रोज़ का पिसान आएगा। तू नहाएगा की रोटी खाएगा?"[1]

निष्कर्ष

समकालीन हिन्दी महिला कहानिकारों में चित्रा मुद्गल की खास पहचान है। उनकी कहानियाँ अपने ही अनुभवों और सामाजिक जीवन की घटनाओं का सच्चा दस्तावेज हैं। इसलिए उनकी कहानियाँ ज़्यादा प्रामाणिक हैं। उनमें परिवेशगत यथार्थ और लेखकीय निजी अनुभूति दिखाई पड़ती है। उनके कथानक में नवीनता के रंग पाये जाते हैं। उनमें कल्पना की अपेक्षा यथार्थ और सजीवता की ओर लेखकीय झुकाव अधिक है। सजग, संवेदनशील ईमानदार महिला रचनाकार होने के कारण सामाजिक एवं वैयक्तिक परिप्रेक्ष्य में नारी के बदलते-बिगड़ते-संवरते अनेक रूपों को उन्होंने बखूबी से प्रस्तुत किया है।

जीवन यथार्थ की अभिव्यक्ति की दृष्टि से उनकी कहानियों को मुख्य रूप से चार वर्गों में रखा जा सकता है। जैसे

1. पारिवारिक जीवन यथार्थ की कहानियाँ
2. सामाजिक आर्थिक यथार्थ की कहानियाँ

---

1. चित्रा मुद्गल बयान पृ. 66

3. नारी जीवन यथार्थ की कहानियाँ

4. राजनीतिक यथार्थ की कहानियाँ

चित्राजी की अधिकांश कहानियाँ पारिवारिक जीवन पर आधारित हैं। 'अपनी वापसी' 'शून्य' 'गर्दि' 'केंचुल', 'दशरथ का वनवास' 'अग्निरेखा', 'रूना आ रही' 'बावजूद इसके' 'एंटीक पीस' 'स्टेपिनी' 'लाक्षागृह', 'शिनाख्त हो गयी', 'लिफाफा' आदि कहानियें में पारिवारिक और सामाजिक जीवन के विवध पहलुओं की अभिव्यक्ति हुई है। चित्राजी की 'प्रेतयोनी' 'दरमियान' 'फातिमाबाई कोठे पर नही रहती' 'शून्य' 'स्टेपिनी', 'जहर ठहरा हुआ है', 'चेहरे', 'केंचुल' 'ताशमहल' 'अभी भी', 'गर्दी' आदि कहानियाँ नारी जीवन से सम्बन्धित विभिन्न संवेदनाओं को सशक्त ढंग से उभारती हैं। चित्राजी की 'बन्द' 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' आदि कहानियाँ राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार धोखाधडी, अत्याचार आदि को जनता के सामने लाती हैं। 'जिनावर' 'लिफाफा' 'अपनी वापसी', 'केंचुल' 'चेहरे' 'लाक्षागृह' जैसी कहानियाँ आर्थिक समस्याओं से हमारा साक्षात्कार कराती हैं। बहुवर्गीय और बहुरंगी कथ्य, विषय की विविधता, भाषा की संरचना, कथ्य की प्रभावात्मक प्रस्तुति आदि कई दृष्टियों से चित्राजी की कहानियाँ हमारे समकालीन जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज़ साबित होती हैं।

अध्याय - 5

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी

प्रस्तावना

समाज में नर और नारी को समान अधिकार होना चाहिए। लेकिन कई कारणों से पुरुषों की तरह समान अधिकार स्त्रियों को नहीं मिल रहा है। पर आज ज़माना बदल गया है। पुरुषों के समान स्त्रियाँ भी अपनी क्षमताओं को दर्शाते हुए समाज के हर क्षेत्र में कदम बढाने लगी हैं। नर-नारी के पारस्परिक सम्बन्ध से ही सृष्टि का विकास होता है। पहले पहल सामाजिक व्यवस्था में मातृसत्तात्मकता की प्रमुखता थी तब स्त्रियाँ समाज में सशक्त शख्सियत रखनेवाली एवं सर्वाधिकार से युक्त भी थीं। उसके बाद बदलती सभ्यता में मातृसत्तात्मकता पितृसत्तात्मकता में बदल गयी। तब से स्त्रियों का जीवन परिवार में सीमित होने लगा। पुरुष की अपेक्षा स्त्री को आज वैयक्तिकता और सामाजिकता का भी ध्यान रखना है। इसलिए दोहरे व्यक्तित्व को उसे निभाना पड़ता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय नारी को जीवन के तमाम तबकों से जुड़ने का मौका मिला। भारतीय संविधान ने स्त्रियों और पुरुषों केलिए समान अधिकार प्रदान किये हैं। आज कई नियमों और योजनाओं के द्वारा स्त्रियों के शाक्तीकरण का कार्य ज़ारी है। भूमण्डलीकरण और संचार क्रान्ति ने स्त्री-समाज में नई चेतना का विकास किया है। पश्चिमी प्रभाव से भारत में भी नई सार्वभौमिक चेतना का प्रसार हुआ। भारतीय नारी पुरानी रूढ़ियों एवं कुप्रथाओं से आगे बढ़ने लगी। स्त्रियों की स्थिति अधिक उभरने-सुधरने लगी। सन् 1970 के बाद भारत में पश्चिमी ढंग के नारी-वाद का आगमन हुआ। इस

समय भारत में हुए परिवर्तनकामी पुरुषों और अधिकार चेता स्त्रियों के सम्मिलित प्रयास से महिलाओं में उत्थान की उमंग आयी और संगठित होकर अपने हक केलिए संघर्ष करने की प्रेरणा मिली। महिलाओं को जागृत करने केलिए पत्र-पत्रिकाओं का भी प्रकाशन शुरू किया गया जिनके द्वारा स्त्रियों से सम्बन्धित विवादों एवं समस्याओं को जनमानस तक सीधे पहूँचाने में मदद मिली। इसके अलावा कई स्थानों में सैकड़ों महिला संगठनों की स्थापना हुई। सरोजिनी नाइडु द्वारा स्थापित "अखिल भारतीय महिला परिषद" से लेकर अनेक संस्थाएँ जैसे 'जागोरी', 'महिला दक्षता समिती', 'काली फोर विमेन' 'कल्याणी' 'अखिल भारतीय जनवादी महिला समिती' 'प्रगतिशील महिला मंच' 'संचेतना' 'महिला पाथेचक' 'मुम्बई की महिला शोषण विरोधी मंच मैत्रिणी' 'स्त्री मुक्ति संगठन' 'बिहार की महिला उत्पीड़न विरोधी संघर्ष समिति' 'जागो बहन' 'महिला जागरण संगठन' और 'बैंगलूर की विमोचना' एवं 'वुमेन्स वोयिस' केरल की 'अन्वेषी' आदि कुछ प्रमुख संगठन हैं।

इस प्रकार के संगठनों और पत्रिकाओं के माध्यम से भारत में नारीवादी विचार को मज़बूती मिली।[1] इन महिला संगठनों का मुख्य उद्देश्य निरक्षरता और गरीबी को मिटाना और ग्रामीण औरतों का स्वास्थ्य सुधार करना था। नारी होने के कारण नारी अनेक पीड़ाओं को सहती आ रही है। पत्र-माध्यमों और संगठनों के कारण नारी समाज में बहुत कुछ बदलाव आया है। नारी समाज में आये बदलाव को रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में अंकित किया है।

---

1. डॉ. ओम प्रकाश शर्मा समकालीन महिला लेखन पृ. 101

समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में नारी

समाज में नारी के अस्तित्व को लेकर तरह-तरह की चर्चाएँ ज़ारी हैं। समाज में आज स्त्रियाँ सबसे अधिक शोषण एवं छल की शिकार हो रही हैं। उनका अस्तित्व समाज में एक ओर सम्मान जनक है तो दूसरी ओर परिस्थिति के अनुसार पुरुष-मेधा समाज की शिकार है। वैदिक युग में स्त्री सम्मान और अधिकार से युक्त थी। पर सामंती युग में आकर पुरुषों ने स्त्रियों को अपने अधिकारों से वंचित कर दिया। नयी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में उनका अस्तित्व घर की चार दीवार के अन्दर बन्द हो गया। इसका सीधा प्रभाव स्त्री समाज पर पड़ा। वे आर्थिक रूप से कमज़ोर हो गयीं और फिर पैसा कमाने केलिए कुछ न कुछ करने को विवश हो गईं। इस प्रकार नौकरी करने केलिए बाहर आयी स्त्री को समाज में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। स्त्री को अपने परिवार और समाज की मुख्यधारा में अपने अस्तित्व को बनाये रखने केलिए संघर्ष करना पड़ा। समाज में स्त्री के कई रूप हैं - माँ, पत्नी, बेटी, बहु, बहन, ननद, सास, नानी, दादी आदि। पारिवारिक रिश्तों के अलावा नौकरी पेशा-नारी, नौकरानी, वेश्या आदि कई अन्य सामाजिक रूप भी उसके हैं। सभी जगहों पर उसकी अपनी-अपनी समस्याएँ भी हैं। समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में लेखिकाओं ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार नारी के विविध रूप एवं उनकी समस्याओं की चर्चा की है।

हिन्दी उपन्यास के प्रारंभ से लेकर अनेक लेखकों ने नारी जीवन के कई क्षणों को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। जैनेन्द्र ने नारी मन को मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा और परखा। महिला लेखिकाओं ने नारी

जीवन की सारी धड़कनों को बड़ी बेबाकी के साथ चित्रांकन किया। नारी होने के नाते नारी वर्ग की कठिनाईयों को सहज-स्वाभाविक रूप से उन्होंने पकड़ा और निःसंकोच उसकी अभिव्यक्ति की। कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास 'डार से बिछुडी' में परम्पराओं और रूढ़ियों में जकड़ी एक नारी के जीवन की कहानी प्रस्तुत की। 'मित्रो मरजानी' उपन्यास में विद्रोही नारी की कथा है जो पुरानी लीक से हटकर मनमानी ढंग से जीती है। मन्नू भण्डारी का 'आपका बंटी' नौकरी पेशा और उपेक्षित नारी की मानसिकता पर केन्द्रित है। तलाक की स्थिति में नारी जीवन में होनेवाले संघर्षों को उन्होंने मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यास 'सीढ़ियाँ' में विधवा नारी के दुविधापूर्ण जीवन की कथा चित्रित है। इसमें मनीषी नामक नारी के अन्तर्द्वन्द्व एवं टूटे व्यक्तित्व को उजागर किया गया है। नारी जीवन के एकाकीपन का चित्रण करनेवाला उपन्यास है 'कर्करेखा'। वेश्याओं के जीवन की दुर्गतियों और उनके जीवन की दारुण घटनाओं को चित्रित करनेवाला उपन्यास है अमृता प्रीतम का 'एक थी अनिता'। मेहरुन्नीसा परवेज़ के 'उसका घर' नामक उपन्यास में अपनी रुग्ण अवस्था के कारण तलाक को स्वयं स्वीकार करनेवाली एलमा और रेश्मा जैसी विद्रोही नारियाँ और सोफिया जैसी समर्पण भाव की नारी मिलती हैं। साथ ही नारी को केवल भोग की साधन माननेवाले पुरुष की मानसिकता की भी आलोचना की गयी है। नारी जीवन के पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन के संघर्षों एवं उलझनों के साथ नारी के पारिवारिक रिश्तों के प्रति आत्मसमर्पण की जो भावना है, उसे उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यास 'पचपन खम्बे लाल दीवारें' में अभिव्यक्त किया है। सुषमा मध्यवर्गीय नारी का प्रतीक है। वह अपने दायित्वों का बोझ लेकर अपने में ही सिमट जाने

को विवश है। 'रुकोगी नहीं राधिका' में भी उषा प्रियंवदा ने नारी जीवन के अकेलापन की त्रासदी को चित्रित किया है। 'शेषयात्रा' में लेखिका ने ऐसे पुरुष पात्रों को चित्रित किया है जो स्त्री को अपनी मर्जी के अनुसार उपयोग करते हैं। शादी के बाद अपने पति का असली चरित्र जानकर दुःखी अनु उसे छोड़कर चली जाती है। पाश्चात्य संस्कृति के परिदृश्य में इस उपन्यास की रचना की गयी है। ममता कालिया का उपन्यास 'बेघर' नारी जीवन के कुँवरेपन पर लिखा गया है। संजीवनी और परंजीत के माध्यम से पुरानी रूढ़ियों पर भी इसमें चर्चा की गयी है। नारियों के प्रति जो पुराना विचार चालू है उस पर चोट लगाना लेखिका का मुख्य उद्देश्य रहा है। घर में अकेली हो जानेवाली नारी के जीवन की मज़बूरी की कथा है "नरक दर नरक" में। मंजुल भगत ने अपने उपन्यास 'अनारो' में निम्नवर्ग की नारी जीवन में स्वाभिमान केलिए जीती-मरती नहीं, बल्कि जूझती भी है। निम्नवर्ग की नारी होने पर भी उसमें आत्मनिर्भरता है, समस्याओं से जूजने की क्षमता भी। नारी जीवन की विवशता का चित्रण कृष्णा अग्निहोत्री ने भी अपने उपन्यास 'बात एक औरत' में किया है। 'कुमारिकाएँ' उपन्यास में लेखिका ने कुँवरी पीढ़ी की तमाम समस्याओं एवं जटिलताओं को सहजता से प्रस्तुत किया है। 'मेरे संधिपत्र' 'यामिनी कथा' और 'दीक्षांत' उपन्यासों में सूर्यबाला ने नारी के घर-बाहर की ज़िन्दगी को प्रस्तुत किया है।[1] समकालीन महिला लेखन में नारी की सामाजिक छवि और उनके जीवन संघर्ष को रेखांकित करनेवाली अनेक लेखिकाएँ हैं। स्त्री चेतना में निरन्तर होनेवाले विभिन्न परिवर्तनों और

1. साधना अग्रवाल वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन पृ. 74, 75

उनकी बहुआयामी व्यक्तित्व को पूरी सच्चाई के साथ लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में समावेश किया। सामाजिक एवं राजनीतिक, शैक्षिक जैसे सभी क्षेत्रों में आज नारी की भागीदारी बढ़ चुकी है। इसलिए नारी को आज पहले से अधिक दायित्व निभाना पड़ रहा है। इसलिए नारी जीवन के इस संघर्ष को समकालीन हिन्दी उपन्यास में अभिव्यक्ति मिली। स्त्री नियति से जुडे जीवन यथार्थ को सिर्फ स्त्री ही भोगती है। इसलिए नारी लेखन केवल कल्पना मात्र नहीं है बल्कि स्वानुभव की साक्ष्य भी हो जाता है।

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी

चित्रा मुद्गल ने 'समकालीन महिला लेखन' नामक पुस्तक की भूमिका में 'आधुनिक महिला लेखन स्वतंत्र चिन्तन की दिशाएँ' शीर्षक लेख में लिखा है "महिलाएँ तो अपने बारे में स्वाभाविक रूप से लिखती हैं, जब कि पुरुष साहित्यकारों केलिए भी अनेक रूपोंवाली नारी रहस्य और जिज्ञासा का कारण रही है। इसलिए कवियों एवं लेखकों ने अन्य विषयों के अतिरिक्त अपने लेखन के द्वारा सशक्त नारी पात्रों के माध्यम से प्रखर नारी चेतना की अभिव्यक्ति की है। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, यह विचित्र बात है कि स्त्री जब साहित्य लिखती है, तब भी स्त्रियों के बारे में ही लिखती है और पुरुष जब साहित्य लिखता है तब भी स्त्रियों के सम्बन्ध में लिखता है। दोनों का अन्तर यह होता है कि स्त्री के लिखने का उद्देश्य है अपने विषय में फैले हुए भ्रम का निराकरण और पुरुष का उद्देश्य है उसके विषय में और भी भ्रम पैदा करना।" चित्राजी ने स्पष्ट किया है कि महिलाओं के बारे में महिला साहित्यकारों एवं पुरुष साहित्यकारों द्वारा पर्याप्त लेखन हुआ है, परन्तु महिला लेखन के अन्तर्गत

हम महिलाओं द्वारा महिला के बारे में लिखे गए साहित्य को शामिल करते हैं और पुरुष साहित्यकारों द्वारा लिखे गए महिला पर लेखन को शामिल नहीं करते, क्योंकि महिलाओं द्वारा रचित साहित्य को ही प्रामाणिकता व विश्वसनीयता प्राप्त है। स्त्री नियति से जुड़े जीवन-यथार्थ को सिर्फ वही भोगती है अतः इस स्वानुभूत सच्चाई की अभिव्यक्ति में विश्वसनीयता विद्यमान हैं।"(1) चित्राजी की रचनाओं के अध्ययन करने पर यह महसूस होता है कि उनकी यह बात सौ प्रतिशत सही है। चित्राजी ने अपने उपन्यासों एवं कहानियों में जिन नारी पात्रों की प्रस्तुति की है वे पूर्णतया अपने आस पास के जीवन में विद्यमान है।

समकालीन साहित्य में कई लेखिकाओं ने नारी जीवन से जुड़ी स्थूल एवं सूक्ष्म समस्याओं को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखने-परखने का प्रयास किया है। नारी होने के नाते उन्होंने नारी सुलभ उदात्त चरित्र और मूल्यों की स्थापना की है। उन्होंने अपनी रचनाओं में पारंपरिक नारीत्व के भावों जैसे सतीत्व, पत्नीत्व, मातृत्व का खयाल दिलाकर आत्मबोध भरा दिया। आधुनिक युग में शिक्षा, नौकरी और जीवन मूल्यों में आये बदलाव मानव जीवन में भी आये। स्त्री और पुरुष परम्परागत लीक से हटकर स्वतंत्र जीना पसन्द किया। समकालीन महिला लेखन स्त्री में अस्तित्व बोध जगाकर उसमें आत्मविश्वास और व्यक्तित्व प्रदान किया।

समकालीन महिला रचनाकारों द्वारा चित्रित सारे विषयों को चित्रा मुद्गल ने भी अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया हैं। चित्राजी के उपन्यासों में समकालीन नारी के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। उन्होंने युवा पीढ़ी की

---

1. डॉ. ओम प्रकाश शर्मा समकालीन महिला लेखन पृ. 26

मानसिकता, मॉडलिंग तथा विज्ञापन के क्षेत्र से समाज में व्यापती नयी संस्कृति की ओर प्रकाश ड़ाला है।

विज्ञापन की दुनिया में पिसती नारी

विज्ञापन की दुनिया में पिसती हुई स्त्री को भूख या घर की आर्थिक ज़रूरतें विज्ञापन की मंड़ी में ले जाती हैं। वहाँ पुरुष के हाथ से उसे नंगी होनी पड़ती है, क्योंकि बाज़ार में नंगी या अधनंगी औरत ज्यादा ऊंची कीमत पर बिकी जाती है। यहाँ बाज़ार की बर्बरता और मर्द की बर्बरता एक है और औरत एक बिकाऊ चीज़ या माल होकर रह जाती है। इसी को आधार बनाकर चित्राजी ने अपने उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' की रचना की। लेकिन चित्रा मुद्‌गल ने यह समझदारी दिखाई है कि सभी पुरुषों को दरिंदा और तमाम औरतों को आदर्श की पुतली नहीं बनायी। उन्होंने बड़ी बारीकी से यह दिखाया कि यहाँ भी चुनाव है - कौन सी औरत बाज़ार या मंड़ी में दबाव के आगे झुकती है और कौन यहाँ भी अपनी लड़ाई और जंग ज़ारी रखती है। उपन्यास में स्त्री मुक्ति में कुछ बहुत साफ अर्थ निकलते दिखाई पड़ते है और चित्रा मुद्‌गल को स्त्री स्वतंत्रता को ऐसा भड़कीला, चालू और रसीला बनाने में रुचि नहीं थी कि उसे सहज सैक्स स्वतंत्रता या स्वछंद यौन-विचार में अवमूल्यित कर दिया हो, जैसा कि हम बहुत सी बड़बोली, क्रान्तिकारी मुद्राओंवाली लेखिकाओं में देखते हैं। उनकेलिए स्त्री स्वतंत्रता की बोल्डनेस सिर्फ मर्द बदलने या मर्द से दूसरे मर्द के पास तक चले जाने में है, जो स्त्री स्वातंत्र्य को महज देह में अवमूल्यित कर देता है। कम से कम स्त्री को अपने स्वतंत्र जीवन को नए अर्थ ढूँढ़ निकलना चाहिए।

चित्राजी ने अपने नारी पात्र को आदर्श का मुखौटा नहीं पहनाया बल्कि उनके यथार्थ जीवन को हू-बहू चित्रित किया है। 'एक ज़मीन अपनी' और 'आवाँ' में नारी जीवन के जिन जिन क्षणों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है, वह सब आधुनिक जीवन में विद्यमान है। इनमें नमिता, अंकिता, नीता, स्मिता, अंजना वासवानी जैसे पात्रों द्वारा सामाजिक जीवन में मीडिया, मॉडलिंग एवं फेमिनिज़्म आदि कई विषयों को प्रस्तुत किया गया है। नमिता और अंकिता द्वारा चित्राजी ने दो तरह के चरित्रों को प्रस्तुत किया है। नमिता आधुनिक सभ्यता की शिकार है तो अंकिता आदर्श नारी पात्र है। अंकिता अपनी अस्मिता बनाये रखते हुए विज्ञापन जगत की चकाचौंधी से बची रही। पर नीता ने अपना जीवन अपने कार्य क्षेत्र में ही होम कर दिया। जब उसने अपनी गलती का एहसास किया तब तक उसकी सारी ज़िन्दगी नष्ट हो चुकी थी। अंकिता स्वाभिमानी नारी है। वह पुरुष की गुलामी को सह नहीं पाती। वह नौकरी करके स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। नीता का चरित्र अंकिता से ठीक विपरीत है। वह अपना जीवन मनमानी ढ़ंग से बिताना चाहती है। उसकी राय में जिन्दगी का मज़ा ऊसर बनाने से नहीं ऊर्वर बनाने में है। वह बिना शादी किये अनेक पुरुषों के साथ जीती है। आखिर अपनी गलती को समझकर आत्महत्या करती है। तब भी अंकिता के अपने पैरों तले की ज़मीन पर दृढ़ रही। वह अच्छी तरह समझती है कि जीवन में आत्मनिर्भरता पाकर किसी के सामने सिर न झुकाते हुए जीवन जिया जा सकता है। जीवन के कई क्षणों में वह परेशान होती है और दुविधा में फंस जाती है, पर वह आत्मबल के कारण औंधे मुँह गिरती नहीं। विज्ञापन के क्षेत्र में काम करने पर भी वहाँ के जीवन, रंग और चकाचौंधी के प्रति अंकिता एक नकारात्मक दृष्टिकोण

रखती है। वह प्रतिकूल अवस्था में भी प्रतिशोधात्मक भाव से संघर्ष करते हुए अस्मिता को बनाए रख सकी। यद्यपि अंकिता आधुनिक शिक्षित नारी है, पर उसे उसका अपना निर्णय तथा नैतिक मूल्यों के प्रति विश्वास है। नीता के पुरुष सम्बन्धी विचार का विरोध करते हुए वह कहती है "तुम्हारी स्त्री-समानता का दृष्टिकोण मर्द बनना है... मर्द बनना है.... मर्दों की भांती रहना... वे समत्व, आचार, व्यवहार, व्यवस्थाएँ अपनाना... यही समानता का दृष्टिकोण है। स्त्री को समाज में समान अधिकारों के नाम पर इन्हीं उच्छृंखलताओं और अनुशासन हीनता की चाह है? प्रश्न उठता है नीतू... ये अव्यवस्थाएँ मर्दों केलिए अनैतिक, अमानवीय दुराचरण और निरंकुशताएँ हैं तो स्त्री केलिए उचित कैसे हो सकती हैं।"(1) समानता की चाह में आज स्त्री पुरुषों के साथ मिलजुलकर काम करती है, पर यह सम्बन्ध जब अनुशासनविहीन बन जाता है तब स्थिती बदल जाती हैं। अंकिता ऐसी समानता को नहीं मानती। उसके मत में समाज ने जिन मूल्यों को निर्धारित किया है उसका पालन करते हुए स्वतंत्र जीवन जीना सही है। समाज में स्त्रियों की स्थिति बदलनी है। वह घर बाहर बहुत सारी समस्याओं को झेलती है। पर निरंकुशता से पुरुष के साथ मनमानी ढ़ंग से जीना, बिना शादी करके पारिवारिक जीवन बिताना नारी मुक्ति या नारी स्वतंत्रता नहीं है। उनको भी अपनी ज़मीन होनी चाहिए। सुधांशु के साथ पारिवारिक जीवन की शुरुआत में अंकिता भी अपने स्त्रीत्व की पूर्ति चाहती थी। पर बाद में जब उसे महसूस हुआ कि सुधांशु ने उसके मन को, उसकी चाह को पहचानते हुए, उसकी 'स्व' को चिन्दी चिन्दी कर दिया।

---

1. चित्रा मुद्‌गल एक ज़मीन अपनी पृ. 74

दोनों का एक साथ जीना दूभर हो गया, इसलिए परस्पर अलग होने का निर्णय लिया गया। बाद में जीवन के कई सन्दर्भों में अंकिता अकेलापन को महसूस करती रही।

नारी मुक्ति के दो पक्षों का उद्घाटन

चित्रा मुद्गल ने अंकिता और नीता के माध्यम से नारी मुक्ति के दो पक्षों का उद्घाटन किया है। लेकिन उन्होंने नारी मुक्ति के भारतीय चिन्तन को ही ज्यादा बल दिया है। नारी की स्वतंत्रता उसके शरीर से नहीं मन से ही है।

नीता ने स्वतंत्र होकर जीना चाहा पर नहीं हो पायी। यही नहीं, उसे ज़िन्दगी को आधेरास्ते पर छोड़ना पड़ा। अंकिता अपने जीवन का एक-एक कदम सोच-समझकर रखा इसलिए वह अपना जीवन सुरक्षित रख सकी। अंकिता की उपलब्धि अंजुरी भर होते हुए भी उसकी अपनी है। वही उसका लक्ष्य था। पति से सम्बन्ध विच्छेद कर अंकिता स्त्रीत्व की पूर्णता के भ्रम से मुक्त हो लेती है। समाज के कुछ नियमों के प्रति उसका दृष्टिकोण नकारात्मक और प्रतिशोधात्मक नहीं, पर उसके अपने कुछ जीवन दर्शन हैं। नीता और अंकिता अपने-अपने स्तर पर विचारणीय हैं। दोनों के चरित्र दो प्रतीक हैं जो नारी-मुक्ति की चेतना को विपरीत ध्रुवों को प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास में नीता आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। उसका चरित्र सहज एवं अविस्मरणीय है।[(1)]

अंकिता सीधा-सादा पर विचारशील नारी है। नीता उच्चवर्ग की नारी है, उसमें आधुनिक सभ्यता के अनुकरण की प्रवृत्ति अधिक है।

---

1. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ हिन्दी उपन्यास की दिशाएँ पृ. 171

अंकिता संस्कार तथा मूल्य को महत्व देती है तो नीता अर्थ और प्रतिष्ठा को एक मॉडल के तौर पर अपनी जगह बनाना चाहती थी। कई पुरुषों से सम्बन्ध रखकर वह अपनी मंजिल तक पहूँची। लेकिन सुधीर जैसे शादीशुदा व्यक्ति से सम्बन्ध रखने से नीता का जीवन अन्धकार में डूब गया। सुधीर से मिली उपेक्षा ने उसमें पराजय बोध भर दिया और स्वयं को खत्म कर दिया। लेकिन अपनी एकमात्र बेटी मानसी को अंकिता को सौंपकर उसने अपने विचारों की सार्थकता को महसूस किया।[1]

आवाँ में चित्रित नारीयाँ

चित्राजी के दूसरे उपन्यास 'आवाँ' में नारी जीवन के कई संघर्षपूर्ण क्षण हैं। इसमें समाज सेविका, मज़दूर, निम्नवर्गीय नारी, मध्यवर्गीय नारी, उच्चवर्गीय नारी, गलियों एवं झोंपडियों में रहती स्त्री, कम्पनियों में नौकरी करती स्त्री, वेश्या जीवन बिताती स्त्री आदि के चित्र हमें मिलते है। जीवन के हर स्तर के स्त्री जीवन का इसमें समावेश किया गया है। उपन्यास की पृष्ठभूमि श्रमिक राजनीति है। राजनीति और श्रमिक संगठनों का नेतृत्व पुरुषों का कार्य-क्षेत्र रहा था। लेकिन आज नारी सभी क्षेत्र में अपनी कार्य कुशलता दर्शाती हुई आगे बढ़ रही है। चित्रा मुद्‌गल का यह उपन्यास 'आवाँ' ऐसे एक मज़दूर संगठन के कार्यव्यवहार और उसके सदस्यों के जीवन में आई कुछ घटनाओं का चित्र है। श्रमिक राजनीति में आयी धोखाबाजी एवं और अवमूल्यन राजनैतिक नेताओं की गलत मानसिकता आदि को लेखिका ने उकेरा है। इसमें पुरुष पात्रों से ज्यादा स्त्री पात्रों को

---

1 डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ हिन्दी उपन्यास की दिशाएँ पृ. 172

प्रमुखता दी गयी है। इसमें चित्रित स्त्री पात्रों में समकालीन समाज की हर उम्र की स्त्री मानसिकता प्रस्तुत है।

मज़दूरों के अधिकारों केलिए लड़ती नारी

मज़दूरों के प्रति होनेवाले अनैतिक व्यवहारों, अनीतियों के विरोध करके अपनी आखिरी साँस तक मज़दूरों के नैतिक अधिकारों केलिए लड़ती समाज सेविका कामरेड कुसुमबाई का सही रूप है उपन्यास की किशोरी बाई। किशोरी बाई भी कुसुम बाई की तरह मज़दूरों की बुनियादी ज़रूरतों केलिए उनके साथ रही। किशोरी बाई शिक्षित नहीं थी। फिर भी संगठन की अन्य सदस्य विमला बेन, अन्ना साहब, शिंदे, पवार, आदि के साथ अपना विचार व्यक्त करती रही। किशोरी बाई का जीवन एक श्रमिक नारी के साथ साथ निम्नवर्ग की नारी का पारिवारिक जीवन भी है। उसने श्रमिकों के प्रति ठेकेदारों और मिलमालिकों की अनैतिकता का प्रतिशोध किया। उसकी बेटी है सुनंदा। किशोरी बाई का जीवन अन्त तक संघर्ष पूर्ण रहा। फिर भी उसका चरित्र प्यार एवं ममता से युक्त संयमित रहा। इसलिए देवीशंकर पाण्डे से उनका सम्बन्ध जुड़ा। उनका मन इतना संयमित एवं नियंत्रित था कि बेटी सुनन्दा की मृत्यु के सन्दर्भ में ही उनका मन खुलता है कि सुनंदा देवी शंकर की बेटी थी। अविवाहिता माँ होने पर उसने नौकरी करके जीवन बिताया। गली में एक झोंपड़ी में वह बेटी के साथ रहती थी। मज़दूर संगठन 'जागोरी' से जुड़े मज़दूर नारी वर्ग के अधिकारों केलिए आवाज़ उठाते रहे। सुनन्दा मुस्लिम धर्म के सुहैल से प्रेम करती थी। धार्मिक विरोधों के खिलाफ मनुष्य के साथ जीने की संकल्पना को लेकर उसने यह कार्य किया। लेकिन सुनन्दा अपने जीवन

में यह महसूस किया कि साम्प्रदायिक समभावना केवल संकल्प मात्र है, यथार्थ में लाना संभव नहीं है। सुनंदा और सुहैल परस्पर चाहते थे पर सुहैल सुनन्दा को मुस्लिम बनाना चाहता था। लेकिन सुनंदा हिन्दु होकर मुसलमान से शादी करना चाहती थी। वह हिन्दु मुस्लिम एकता को धर्म के ऊपर देखना चाहती थी।(1) सुनन्दा और किशोरी बाई का जीवन निम्नवर्ग की झोंप पट्टी की नारियों का है। किशोरी बाई ने उपन्यास के केन्द्र पात्र नमिता पाण्डे को पिता से अनैतिक सम्बन्ध रखा। उसकी बेटी है सुनन्दा। लेकिन किशोरी बाई ने यह सत्य छिपाकर रखा और अन्त में जब सुनन्दा मारी गयी तब किशोरी बाई ने नमिता से पत्र द्वारा बेटी की मृत्यु देवीशंकर तक पहुँचाया है। निम्नवर्ग की स्त्रियों में ऐसे कुछ पात्र ज़रूर हैं। किशोरी बाई ने नमिता से इसलिए ममतापूर्ण व्यवहार किया कि वह देवी शंकर पाण्डे की बेटी है। सुनन्दा की हत्या में किशोरी बाई हतप्रभ हो गयी। आखिर उसकी बेटी को किसी को न देकर अकेले पालने का निश्चय किया। उसके जीवन में निरन्तर संघर्ष चलते रहे। किशोरि बाई के चरित्र में विद्रोह, ममता, प्यार आदि भाव मिलजुले हैं। यद्यपि किशोरीबाई के चरित्र में खूबियाँ थीं फिर भी उसका पारिवारिक जीवन खुली पुस्तक के समान बिखरा हुआ था। लेकिन नमिता पाण्डे की माँ ऊर्मिला में जिन जिन गुणों का अभाव था वे सब किशोरी बाई में थे। स्त्री शक्ति की अपार क्षमता और अत्याचार एवं अन्यायों के विरुद्ध आवाज़ उठाने की शक्ति भी उसमें थी। 'जागोरी' के सदस्यों के जीवन में आती तमाम समस्याओं को सुलझाने केलिए किशोरी बाई तैयार रही। जहाँ श्रमिक नारी मालिकों के अत्याचार के शिकार बन गयी तो वहाँ किशोरी बाई और बेटी सुनन्दा

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 123

उसकी सेवा केलिए पहूँचती है। आखिर सुनंदा को अपने विश्वास के लिए जान देनी पड़ी। उसकी दाहसंस्कार के समय स्त्रियों की इतनी भीड़ हुई कि इससे पहले ऐसा नही हुआ। 'रामनाम' रटकर स्त्रियाँ शमशाम तक गयीं। किशोरी बाई के जीवन में यह सबसे बडा परिक्षणं था।[1] इस प्रकार चित्राजी ने किशोरी बाई और सुनन्दा के द्वारा दो विद्रोही नारियों को प्रस्तुत किया है।

मध्यवर्गीय नारी

मध्यवर्गीय नारी का जावीन हमेशा संघर्षमय होता है। उपन्यास का केन्द्रीय पात्र नमिता पाण्डे इस मध्यवर्गीय नारी का प्रतिनिधि है। मध्यवर्गीय व्यक्तियों के समान ही नमिता भी महत्वाकांक्षी है। नमिता की माँ ऊर्मिला भी महत्वाकांक्षी है। वह लकवाग्रस्त होकर पड़े पति और बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति निषेधात्मक भाव रखती है। हमेशा महंगी सडियाँ, इत्र आदि लगाकर रिश्तेदारों की सेवा करने यात्रा करती रहती है। इसकेलिए जितना भी खर्च करने को भी वह तैयार है।[1] अपने को बड़ा दिखाने केलिए वह बिरादरी में परंपारगत रूप में रखे पानदान को इन्द्रभैया को देती है। वह अच्छी तरह जानती है कि पति को उससे आन्तरिक लगाव है। देवी शंकर पाण्डे जैसे श्रमिक नेता की पत्नी का चरित्र ऐसा होना नहीं चाहिए था। क्योंकि श्रमिकों और उनकी समस्याओं से जुड़े पति का जीवन वह जानती थी। फिर भी वह शिंदे, अन्नासाहब, विष्ट आंटी के सामाजिक जीवन से प्रभावित रही। मध्यवर्गीय नारी की महत्वाकांक्षा की अच्छी मिसाल है यह। वह अपने अभावों के प्रति पति से

1. चित्रा मुद्‌गल आवाँ पृ. 30

घृणा का भाव रखती थी। साथ ही बडी बेटी नमिता जो पिता से ज्यादा पसंद करती है, उसे भी नफरत करती थी। नमिता के हर व्यवहार पर वह डाँटती रही। इन्हीं कारणों से पूरे परिवारवालों में माँ ने डरावना भाव पैदा किया। उसका चरित्र माँ की ममता, प्यार आदि गुणों से वंचित रहा।

लेकिन बीच बीच में उसमें माँ का दायित्व बोध भी निखर आता है, लेकिन पूर्ण रूप से नहीं आता। नमिता का नौकरी करना और उसका रात में देर से आना उसे अच्छा नहीं लगता। वह अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त भी करती, लेकिन पैसे की चाह से प्रतिक्रिया केवल धमकी तक सीमित रही। वह इतनी निर्दयी बनी कि अपने पति के अन्तिम समय में भी उसमें कोई दर्द या ममता नहीं थी, वह अपनी ही बातों में मग्न थी। उसके मन में अन्नासाहाब द्वारा दिया गया फ्लैट की चिन्ता थी। पति और बच्चों के प्रति कडु व्यवहार करने पर भी उसने अपनी बहन और अन्नासाहब आदि से अधिक लगाव दिखाया। चित्राजी ने एक अनोखे चरित्र के रूप में नमिता की माँ का गढ़न किया है। यह चरित्र कथा विकास केलिए अनिवार्य भी है। पत्नी के ऐसे दंभी चरित्र के कारण पाण्डेय का सम्बन्ध किशोरी बाई से हुआ। नमिता के प्रति माँ की भावना एक नौकरानी जैसी रही। घर के सारे काम, भाई-बहन की देख-भाल, बीमार पड़े पिता की सेवाशुश्रूषा आदि बेटी पर सौंपकर नई-नई साड़ी और ऊँची एड़ियों की चप्पल पहनकर आराम से जीती है। शादी, वर्षा गाँठ आदि केलिए तोफा देने केलिए बेटी का पायल तक उठा लेती है। उसे लेने केलिए उसको थोडी भी लाज नहीं आती। वह कहती है "पहननेवाला न हो तो चीज़ों की कोई कीमत नहीं होती?"(1) "एक ही बात ठहरी स्टील कोई चांदी-

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 31

सोना हुआ! फिर तेरी नाक पर क्यों बिच्छू मूत रहा?"(1) इस प्रकार के चरित्र के होने पर भी वह नमिता और संजय के रिश्ते को शंका की दृष्टि से देखती है। नमिता को माँ से प्यार एवं सुरक्षा नहीं मिली। यदि माँ के कर्तव्य निभाने की क्षमता उसमें है तो नमिता अपनी ज़िन्दगी संभल रख सकती थी और घर के सारे जीवों की भूख मिटाने के चक्कर में उसे नौकरी केलिए घर से निकलना न पड़ता। चित्राजी नमिता की माँ के चरित्र द्वारा मध्यवर्गीय नारी की जलील एवं गलत मानसिकता की झांकी प्रस्तुत की है। वह हमेशा इन्द्र भैया, कुंती मौसी और उनके बच्चों का गुण-गान करती रहती है।

"पाण्डेय जी धरने या आन्दोलन के चलते जेल में होते तो माँ कालेज से नमिता के लौटने की उत्कंठा से बाट जोहती ताक में बैठी होती कि जैसे ही वह घर पर पांव दे, उठकर वे पड़ोसियों के ठियां सद्भावना-यात्रा पर निकल दें।"(2) घर का कोई काम उसके वश की बात नहीं।

नमिता की कमाई की हकदार होने पर भी उसे ऐसी आशंका है कि वह किसी प्रेम में फंसकर भाग जायेगी तो कैसे जीऊँ। साथ ही नमिता की मॉडलिंग पर जाने को मना कर कहती है "कपड़े उतार नंगमनंग बेचने को भरे बाज़ार खड़ी रहना होगा? मॉडलिंग कोई शरीफों का पेशा ठहरा? फैशनमारियाँ की सरे आम रंड़ीबाजी है, रंड़ीबाजी! x x x x x x x x x कल जाके साफ-साफ कह आए-सीधे-सीधे नौकरी कटवानी है तो कटवाए। मॉडलिंग-फाडलिंग के चकम-चक्कर नहीं चलेंगे।" वह इसलिए

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 32
2. वहीं पृ. 83

ऐसा कहती है कि "बहन कुंती को भनक पड़ेगी तो लत्ता लिए बिना छोड़ेगी।"(1)

अन्ना साहब द्वारा प्रदत्त मकान की चावी वह खुले मन से स्वीकारती है। वह किसी न किसी प्रकार जीवन में सुख-चैन को बनाये रखना चाहती थी। बच्चों से मना करने पर वह कहती है "मैं वही करूगी जो मेरे मन का होगा।"(2) उपन्यास के अन्त तक उसकी यही मानसिकता है।

नमिता माँ के प्रति घोर प्रतिक्रिया भाव रखती थी। ऐसे होने पर भी जब अस्पताल में पत्रकारों ने उसे एक साक्षात्कार लेने का अवसर माँगा, साथ ही अन्नासाहब द्वारा दिये गये फ्लैट के प्रमाण पत्र को दिखाने को कहा, तब उसने कहा भेंट केलिए यह उचित समय नहीं है। उसका पति मरणासन्न अवस्था में अस्पताल में पड़े हुए हैं। नमिता माँ की प्रदर्शननुमे-मनोभाव पर चौंक जाती है। लेकिन अन्नासाहब उसकी इस आदत की प्रशंसा करते हुए कहते हैं "कर्मठ स्त्री है, आप व्यावहारिक बुद्धि में कोई नहीं पछाड़ सकता है आपको।"(3) उसके इसी व्यावहारिक नज़रिये के कारण उसके रिश्तों में ममता एवं मूल्य नहीं के बराबर है।

मुम्बई में छोटी बहन के अलावा उसका कोई सगे-सम्बन्धी नहीं। पाती की मृत्यु की खबर उसके अलावा और किसी को भी न कहना था। इसलिए कि वह अपना जीवन बहन के अनुसार चलाती रही। पिता की मुहाग्नि जलाने केलिए तैयार नमिता से वह गर्जती है.... "दिमाग तो नहीं

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 200
2. वहीं पृ. 250
3. वहीं पृ. 379

चल गया तेरा नांगिन, तो बैठे-ठाले अलाय-बलाय बकने लगी? न मैं बांझ हूँ न, छूंछी! कुलदीपक बेटा जना है मैंने, बेटा! जना है तो भला किस दिन केलिए जना है? बोल?"[1] पति के शव के सामने इकट्ठे लोगों के सामने ऐसी प्रतिक्रिया सामान्य नहीं लगती। नमिता उसकी ही बेटी होते हुए उसे धिक्कारना उचित भी नहीं लगता। उसके हृदय से शोक और संताप खो गया। पति की याद में उसका गला न भरा, चौथे के बाद वह कुंती मौसी के साथ ठहाका मारने लगी। नमिता के मना करने पर वह कहती है कि "अपना जीवन जीकर जिसे जाना था, सिधार गया। उसके मरे मैं भी मर लूँ, ऐसी सती-सावित्री मैं नहीं।"[2] वह मरे पति की याद में विधवा की ज़िन्दगी बिताने को वह तैयार नहीं। उसकी राय में कोई विशेष गुण नहीं था। पति केवल "लावारिस कुकुरों की भांति इस घर को खंभा बनाए रात-दिन मूतता यूनियन वाला था।"[3] अतृप्त पारिवारिक जीवन का सारा संघर्ष उसके चरित्र में विद्यमान था। पति के प्रति उपजे घृणा भाव को बच्चों के ऊपर शाप-वचन के रूप में बरसाती रही।

माँ की, बच्चों के प्रति होनेवाली आकांक्षा उत्कंठा उसमें नहीं थी। फिर भी सयान-बेटी बाहर जाकर देर से लौट आने पर उसमें माँ की सर्तकता जाग उठी है। लेकिन शुरू से वह हर बातों पर नमिता को डाँटती रहती थी इसलिए उसमें एक व्याकुल माँ की पूर्णता नहीं आती। इस प्रकार ऊर्मिला की पात्रता पूर्ण रूप से स्वार्थी महिला के रूप में सिद्ध होती है। नमिता को ऐसी माँ की रक्षा से बढ़कर किशोरीबाई जैसी माँ की रक्षा बेहत्तर लगी।

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 399
2. वहीं पृ. 404
3. वहीं पृ. 404

निम्नवर्गीय नारियाँ

अनीसा और सुनन्दा निम्नवर्ग की काम-काजी नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं। अनीसा के ज़रिए चित्राजी ने झोंपड़ियों और गलियों में जीविकोपार्जन केलिए जिश्मफरोर्शी करती स्त्रियाँ के जीवन पर भी प्रकाश डाला है। अनीसा पहले वेश्या थी, फिर वह किरपु दुसाध नामक युवक से प्रेम करके उसके साथ जीने लगी। बाद में वह 'जागोरी' में श्रमिक स्त्रियों के हकों केलिए प्रयत्नरत रही। एक वेश्या होने के कारण किरपू दुसाध को हमेशा उस पर शंका थी। एक दिन उसकी जान लेकर उसने अपनी शंका का समाधान किया। लेकिन अनीसा की मृत्यु के पीछे श्रमिक राजनीति का हाथ है साथ ही साम्प्रदायिक विद्रोहियों का भी। अनीसा और सुनन्दा मिलकर ही टेकेदारों की अन्यायों अत्याचारों के विरुद्ध अवाज़ उठाती थीं। सुनन्दा नवीन चिन्ताधारा से साम्प्रदायिक ऐक्य स्थापित करना चाहती थी। सुहैल से उसका गहरा सम्बन्ध भी था। अनीसा हमेशा उसका साथ देती रही। इसी कारण से नमिता और पवार उसकी मृत्यु का कारण किरपु है, ऐसा विश्वास नहीं करते। अनीसा के द्वारा निम्नवर्ग की एक विद्रोही नारी के चरित्र को प्रस्तुत किया गया है। विवाह के बाद अनीसा किरपु के प्रति समर्पित रही। फिर भी लोगों ने उसे वेश्या ही मानी। समाज में कुछ ऐसा विश्वास है वे कभी नहीं बदलते। अनीसा एक अच्छी सहेली थी। सुतन्दा के साथ उसने भी निम्न वर्ग की श्रमिकों केलिए आवाज़ उठायी।

सुनन्दा का चरित्र गठन चित्राजी ने बड़ी कुशलता से किया है। सुनन्दा का चरित्र निम्नवर्ग के बीच साम्प्रदायिक दंगे का कारण बना। नयी चिन्ता और समाज में सब लोग समत्व भाव से जियें, इसी भावना से वह

जीवन बिताती थी। किशोरी बाई उसकी माँ है वह भी एक श्रमिक नारी है, बड़ी होने पर सुनन्दा ने भी उसका साथ दिया। सुहैल और सुनन्दा के प्रेम को किशोरी बाई ने स्वीकार किया था। दोनों ने शादी कर एक साथ जीने का निश्चय किया, शादी केलिए सुहैल के परिवार भी तैयार था पर उनकी शर्त थी कि सुनन्दा मुस्लीम धर्म कबूल करे। सुनन्दा ने इस शर्त को स्वीकार नहीं किया। वह अपने धर्म में जीकर सुहैल के साथ जीना चाहती थी। उसके इस निश्चय ने साम्प्रदायिकता को जगाया और सुहैल विदेश चला गया। शादी केलिए अपने विश्वास या धर्म को छोड़ने को वह तैयार नहीं थी। सुनन्दा स्वतंत्र व्यक्तित्ववाली नारी है। वह किसी के सामने अपनी अस्मिता को गाँवा देने को तैयार नहीं है। धर्म बदलने बिना सुहैल का पिता शादी केलिए तैयार नहीं था। इसी बीच सुनन्दा गर्भवती हो गयी। हिन्दु युवती और मुस्लिम युवक दोनों का एक साथ जीना संभव नहीं था। 'जागोरी' और 'कामगार अघाडी' के सदस्यों ने समस्या पर विचार किया। किसी ने एक बार सुनन्दा की हत्या करने की कोशिश की। आखिर सम्प्रदायिकों ने एक रात में उसका कत्ल किया। मानव समाज जाति-धर्म के ऊपर समता से जीने का सपना देखनेवाली सुनन्दा का चरित्र ध्यान आकृष्ट करनेवाला है। नारी में इतना साहस होना चाहिए कि अन्त तक अपने निर्णय पर दृढ़ रहे।

कामगार अघाड़ी का प्रवर्तक देवीशंकर पाण्डे उसका पिता था। सुनंदा विमला बेन के उद्‌बोधनों से उद्वेलित थी। समाज से धार्मिकता मिटाने के विमला बेन के श्रमों में सहमत भी थी। वह चाहती थी कि "संवेदनशील इलाकों की गृहिणियों को विमला बेन अपने ओजस्वी उद्‌बोधन से उद्वेलित कर, धार्मिक उन्माद के खिलाफ अपने घरों में उन्हें प्रतिवाद

केलिए सन्नद्ध करें।"[1] साथ ही उनके विचार हैं "धर्म से ऊपर उठकर कल दो प्रेमी अपनी नीड़ के निर्माण में समर्थ हों।"[2] पर खुद सुनंदा इसी धार्मिक उन्माद की शिकार बनी। वह सुनन्दा होकर सुहैल के साथ जीना चाहती थी। वह सुहैल नामक व्यक्ति से प्रेम करती थी धर्म से नहीं। इसलिए वह धर्म बदलने को तैयार नहीं रही। वह कहती है "धर्मान्धों केलिए मात्र मैं एक बहाना भर हूँ। मैं बहाना न रहूँ तो कल वे कोई और बहाना तलाश लेंगे। गढ़ लोंगे। गढ़कर उनमें तेल के पीप उलीचेंगे। दीदी, ज़रूरत है, उनकी कलाइयाँ धर लेने का मज़बूती से, ताकि वे हाथ न छुड़ा पाए। तीली न सुलग पाएँ। और यह काम अब कोई नहीं, सिर्फ स्त्रियाँ कर सकती हैं।"[3] यह सोच उसको अपने अनुभव से मिली है। वह समाज से सम्प्रदायिक उन्माद को मिटाना चाहती थी। उसकेलिए हिन्दु और मुसलमान स्त्रियों को जागरूक करना चाहती थी। कुँवरी माँ होने के कारण प्रसूति की छुट्टीं तथा अन्य सुविधाओं से उसको वंचित किया गया। तीन साल से ऊपर वह 'में एंड बेकर' में काम कर रही थी। अन्य कर्मचारियों केलिए उपलब्ध अधिकारों से उसे वंचित किया गया, क्योंकि उसकी शादी नहीं हुई है। सुनन्दा अपने मातृत्व को छोड़ने को तैयार नहीं थी। कम्पनी के अधिकारों से और प्रेमी से उपेक्षित होने पर भी सुनन्दा अपने निर्णय पर अड़ी रही और साम्प्रदायिक एकता लाने की कोशिश करती रही।

साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ती नारी

सांप्रदायिकता के खिलाफ लड़ती नारी का चित्रण भी चित्राजी ने किया है। इस दृष्टि से सुनन्दा का चरित्र अधिक विचारणीय है। सुनन्दा को

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 123
2. वहीं पृ. 123
3. वहीं पृ. 124

समझौते के मार्ग में लाना और उसको सांत्वना देने केलिए कोशिश करते हुए कहती है "तुम्हें नहीं लगता कि धर्म-परिवर्तन केलिए तुम गुपचुप राजी हो जाती तो शायद विद्वेष की यह आग...

x x x x

"गलत सोच रहीं दीदी! धर्मांधों केलिए मात्र मैं एक बहाना न रहूँ तो कल वे कोई और बहाना तलाश लेंगे।"(1)

वह कहती है कि सुहैल ने प्रेम करने के समय तो कोई शर्त नहीं रखी? ब्याह करना होगा तो उससे नहीं, इस्लाम से करना होगा... या उसे हिन्दुत्व से?

x x x x

"जो शर्त पहले शर्त नहीं थी, बाद में क्यों शर्त बने! समझौते को मैं भी राजी नहीं हुई। मुझे लगा, दीदी, समझौते, आदि तो होते हैं 'अंत' नहीं।"(3) उसके इन शब्दों से उसके मन के आदर्शों को व्यक्त किया गया है।

चित्राजी ने इसके द्वारा समाज में व्याप्त सम्प्रदायिक दंगों, उसके नाम पर मरे हुए मनुष्यों की ओर संकेत किया है। साथ ही अनाथ स्त्रियों के प्रति अधिकारियों की उपेक्षा का भाव एवं अनाचारों को भी व्यक्त किया गया है। उपन्यास में नमिता के समान ही उल्लेखनीय पात्र है सुनन्दा। जिसको जीवन भर संघर्ष करना पड़ा। और अन्त में वह साम्प्रदायिकता का शिकार भी बनी।

---

1 चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 113

2. वहीं पृ. 112

नशीली दवाइयाँ की विभीषिका

चित्रा जी ने 'आवाँ' में नमिता पाण्डे को जिस प्रकार समर्पण, दया, प्रेम, ममता, ईमानदार आदि के साकार रूप में प्रस्तुत किया है उसके ठीक उल्टे चरित्र हैं ममता और स्मिता के। दोनों नमिता की सहेलियाँ थीं साथ ही हमसबक भी। ममता और स्मिता के चरित्रों की प्रस्तुति उपन्यासकार ने आधुनिक शिक्षित युवतियों की मानसिकता को ध्यान में रखकर की है।

ममता नमिता की पड़ोसिन भी है। लेकिन नमिता से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। उसका फ्लैट चौथे माल पर है। शरीर को जकड़ी मिडी-जींस पहनकर कॉलेज जाती है। नमिता से वह एक प्रकार का घृणा भाव रखती है। उसका एक बॉयफ्रेंड है जो सिविल सर्विस की तैयारी में जुड़ा हुआ है। उसका नाम है सुबीर चाटर्जी। ममता सुबीर के साथ जीने का सपना देखती है। कॉलेज में युवा पीड़ी में व्याप्त नशीली दवाइयों और मादक द्रव्यों के सेवन की विभीषिका को चित्राजी ने ममता के द्वारा अभिव्यक्त किया है। ड्रग्सों के लगातर सेवन से ममता पागलपन की स्थिति में पहूँची। पढ़ाई के नाम पर दोस्तों के साथ वह रोज़ नशा का उपयोग करती थी। ममता के व्यवहार से माँ को शंका होती है, वह उसे डॉक्टर के पास ले गयी तब पता चला कि ममता एक साल से केमिकल “स्वैस्मोप्रॉक्सिम' 'नइट्रोजन' आदि का उपयोग करती है। इनके अधिक प्रयोग से वह ड्रग रोगियों जैसे व्यवहार करने लगी है। जीवन को बरबाद करनेवाली नयी पीढ़ी का प्रतिनिधि है ममता। ममता का जीवन सुबीर के प्रति समर्पित था। पर उसकी दूसरी शादी की खबर वह सह नहीं पाती। सहेलियों के संपर्क से आयी उस बुरी आदत ने उसका मानसिक सन्तुलन

खो दिया। आखिर ममता को एहसास होता है कि उसकी जिन्दगी में क्या-क्या हो रहे हैं। वह कहती है "कोई भी रहे उस घर में, दरवाज़े पर तू मुझे हमेशा खड़ी-मिलेगी.... हमेशा की भाँती।"(1) वह इतनी बदल गयी कि उसने जिस चेहरे को न देखने की कोशिश की, उस चेहरे की अनुपस्थिति में उपस्थिति की खोज करने लगी।

स्तिमा एक समझदार लड़की है। वह नमिता की हमजोली है। नमिता के जीवन के हर उतार-चढ़ाव की साक्षी भी है। उसने अपने जीवन में दु:ख से ज़्यादा कुछ नहीं पाया। नमिता के शब्दों में "स्मिता चुलबुली ज़रूर है, नाम की खोटी नहीं। न पेट की उथली। नशे की ऐब से तो वह कोसों दूर है। हाँ तनिक स्वतंत्र प्रकृति की ज़रूर है।(2) लड़के लड़कियों में भेद उसे मंजूर नहीं। जीवन में उसको कई कड़ु अनुभवों से गुज़रना पड़ा। यह चरित्र भी आधुनिक रुग्ण समाज की सृष्टि है। जो उसे घर से न मिला वह उसकी खोज में रही। घर में पियक्कड़ पिता द्वारा किये गये अत्याचारों से आहत होकर उसने हर एक पुरुष को घृणा की दृष्टि से देखा, साथ ही प्रेम दिखाकर धोखा दिया। वह बॉयफ्रेंड को बदलती रही। उन्हें आकांक्षा तक ले जाती और फिर छोड़कर नए दोस्त को खोजती रही। पियक्कड़ पिता के करतब से तंग आकर स्मिता की माँ ने मिट्टी का तेल उंडेलकर खुदखुशी करने की कोशिश की। घर पर माँ और बहन सहम कर जीती है। चित्राजी ने नशा के प्रभाव की प्रस्तुति बड़ी बेबाकी से की है। स्मिता का पियक्कड़ पिता अपनी बड़ी बेटी को मात्र शरीरवाली

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 305
2. वहीं पृ. 459

स्त्री के रूप में देखता है। समाज में व्याप्त नशा का जाल मनुष्य से मनुष्यता को भी लूट लेता है।

निर्दयी एवं शोषक पिता से बदला लेती बेटी

स्मिता ने पिता के व्यवहार से तंग आकर एक बार कहा था "जिस दिन नौकरी मिल जाएगी, मुझे नमी बाप रूप इस राक्षस को मैं सीढ़ियों से ढ़केल स्वाभाविक मौत मरने पर विवश कर दूँगी।"(1) नमिता उसे समझाने का प्रयास करती है पर वह नहीं मानती। पिता से कभी भी प्यार उसे नहीं मिला। वह प्रक्षुब्ध हृदय की असहायता की पात्रा बन गयी। उसका पिता मुम्बई का मटका किंग है। दिन रात वह नशा पीना मात्र नहीं, नशे में भीग जाता है। आखिर स्मिता ने पिता को सीढ़ियों से ढ़केल कर गिरा देने को विवश हो गयी। स्मिता कहती है "उसके मारे हम रोज़-रोज़ मरते रहे, उसके मरे हम अब नई जिदगी जिऐंगे...। खुलकर सांस लेंगे.... घर में रहते हुए दडबों में दुबके नहीं रहेंगे कीड़े-मकडों की भाँति फड़फड़ाते।"(2) मुम्बई जैसे नगरों में ऐसे आदमी कम नहीं, पर इतनी बेदर्दी से अपने परिवार से व्यवहार करना अजीब बात लगती है। स्मिता जैसी बेटियों की ऐसी ही प्रतिक्रिया होना भी स्वाभाविक है। घर के अन्य सदस्यों की चैन केलिए निर्देयी पिता को ऐसा ही ठीक करना वाजिब है, फिर भी हमारी संस्कृति में पिता ईश्वर के बराबर है। उनकी हत्या करना पाप है। पिता से मिले कटु व्यवहार ने पूरे पुरुष समाज के प्रति उसमें विरोध की भावना जगायी। वह कहती है "अकसर लगता है कि मैं कभी

---

1. चित्रा मुद्‌गल आवाँ पृ. 43
2. वहीं पृ. 113

जीवन में सहज नहीं हो पाऊँगी। बाप का बदला मैं शरत से लेती रही, उसे उद्दीप्त कर ऐन मौके पे लात लगा..... विक्रम भी उसी की कड़ी हो रहा, मगर विक्रम को मैं खोना नहीं चाहती.... अच्छा हुआ वह विदेश चला गया। मेरेलिए फेलोशिप की कोशिश कर रहा है।"[1] अपने चरित्र की खामियों को वह यह कहकर स्वीकार करती है कि वह मटका किंग की औलाद है, वह अब तक औरत नहीं है। अपने जीवन में घटी एक-एक घटनाओं से स्मिता ने काफी सीख ली। नमिता और स्मिता का जीवन एक ही धारा में बहने लगा। नमिता जीवन के हर संकट उससे बाँटती रही। स्मिता भी नमिता का सहारा चाहती है। माँ और बहन की देख भाल करने केलिए स्मिता को अपनी पढाई छोड़नी पडी। वह मरना नहीं चाहती, जीना चाहती थी, जीने के रास्ते खोजती रही, इसकेलिए जो कुछ करना है करते रही।"[2]

चित्राजी ने स्मिता और ममता के माध्यम से जीवन के विभिन्न सन्दर्भों में पली लड़कियों का जीवन परिवेश प्रस्तुत किया। ममता जीने लायक तमाम परिवेश होने पर भी जिन्दगी खो बैठकर अपने में सीमित रहना चाहती है। पर स्मिता अपने विपरीत परिवेश से जूझकर सफल जीवन की तलाश कर रही है।

श्रमिक राजनीति और समाज सेवा से जुड़ी नारियाँ

शाहबने और विमला बेन उपन्यास में चित्रित समाज सेविकाएँ हैं। दोनों नमिता के जीवन पर ज़्यादा प्रभाव ड़ालनेवाली नारियाँ हैं।

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 373
2. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 433

उपन्यास की पृष्ठभूमि में श्रमिक राजनीति और ट्रेड़ यूनियन है। उपन्यास में इसलिए अनेक पुरुष नेताओं के साथ महिला नेताओं के भी चित्रण हैं। विमला बेन, शाहबेन के अलावा किशोरी बाई, सुनन्दा, अनीसा आदि पात्र भी हैं। शाहबेन एक समाज सेविका है। वह शोषित, प्रताड़ित, ज़रूरतमंद स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उनसे सैकड़ों के हिसाब से पापड़ बिलवाती है। उड़द, हींग, पापड़, खार की रली-मिली गन्ध लिए वह बेसहारे महिलाओं के जीवन दे रही है। देह पर खादी की धोती पहनकर वह हमेशा उसके साथ रही। चित्राजी ने शाहबेन द्वारा समाज के प्रति समर्पित एक समाज सेविका का चित्र प्रस्तुत किया है। नमिता सोचती है "शाहबेन स्वतंत्रता की प्राप्ति के पूर्व की अवशेष सी, अनशन से जीर्ण-शीर्ण हुई समाज सेविका है शायद। लायन-लायनेस किस्म के नवरत्न जड़े समाज-सेविकाएँ नहीं।"[1]

असहाय स्त्रियों केलिए उन्होंने 'श्रमजीवा' की स्थापना की। खुद शाहबेन का कहना है "अपने सुधारने का नई। ...पिच्छे श्रमजीवी औरतों की बड़ी। मरद का इधर काम नई। बापू ने मेरे को उन्नीस सौ पैंतालीस में मुम्बई भेजा होता। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की दीनाबाई पाटिल के संग। आदेश देके भेजा, बाई, तू जाके अनाथ-बेसहारे औरतों केलिए बाड़ी खोल। स्वालंबन सिखा उनको।"[2] शाहबेन के इस श्रमजीवा में दो सौ से ऊपर औरतें काम करती हैं। नमिता और ऊर्मिला वहाँ पापड़ बेलने आती हैं। शाहबेन नमिता से बेटी जैसा व्यवहार करती थी। श्रमजीवा से मिली

---

1. चित्रा मुद्‌गल आवाँ पृ. 23
2. वहीं - पृ. 85

कमाई से वे घर की गुज़ारा कर रही थी। श्रमजीवा की सुगम संचालन केलिए शाहबेन सरकार से पत्र व्यवहार करती है। बूढे होने पर उनका व्यक्तित्व कठोर अनुशासन का है। गाँधिजी पर उनकी गहरी आस्था थी। देवीशंकर पाण्डे की मृत्यु पर वह आयी और भगवत गीता को पढातीं है और थोडी देर बैठकर चली जाती हैं। उनके बूढे मन में इतना निसंग भाव था जिसे कोई समझ नहीं पाया।

शाहबेन के चरित्र से उल्टे चरित्रवाली समाज सेविका है बिमलाबेन। वह कामगार अगाड़ी की महिला शाखा की अगुआ है। एक समाज सेविका, स्त्री उद्धारिका, भूतपूर्व एम.एल.ए. कुमारी बिमला बेन स्त्रियों की उन्नति केलिए खड़ी है। पर वह हमेशा अपनी सुख सुविधा की बात सोचनेवाली समाज सेविका थी। पवार कहते हैं "यह विमलाबेन की कूवत है। भर पूर यौनानंद भोगने के बावजूद वे आजीवन कुँवरी रही और भविष्य में भी रहेंगी। हो सकता है, इस खेल में उन्हें कई बार जोखिम उठाने पड़े हों सावधानी के बावजूद। मगर है वे जीवट की महिला। खतरों से खेलने में माहिर।"(1) उनके बंगले में सेवा-टहले के नाम पर गोदली कुमारियों से वह अपनी सेवा-टहल में नियुक्ति करती है। मद्यपान के विरुद्ध श्रमिकों को सर्तक रहने केलिए वह बड़ा भाषण देती है और श्रमिकों को शपथ कराती है और घर आकर अंग्रेज़ी स्कॉच को पीकर सो जाती है। विमला बेन आधुनिक समाज सेविकाओं का प्रतिरूप है, जिन्होंने अपनी भलाई केलिए झूठे आदर्शों को दूसरों पर थोपकर खुद आदर्शों से वंचित रहती है। विमला बेन और शाहबेन के रूप में समाज सेविकाओं के

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 263

दो रूपों को चित्राजी ने प्रस्तुत किया है। एक दूसरों केलिए समर्पित है तो दूसरी अपनेलिए समर्पित। ऐसे होने पर भी एक समाज सेविका और अगुआ केलिए आवश्यक साहस और क्षमता उसमें है। अपने या दूसरों के अधिकारों के प्रति वह सजग थी। उनका साहसी व्यक्तित्व ही सुनन्दा की मय्यत को कन्धे में लेकर श्मशान तक ले गया। उनके साथ सारी नारियाँ इकट्ठी हुई थी। विमलाबेन के साहस को रोककर पाटील ने कहा "स्त्रियों द्वारा शव लेना शास्त्र सम्मत नहीं है।" उत्तर में उसने कहा "कूप मंडूक पुरुषों से हमें सीखना होगा कि स्त्रियों केलिए क्या शास्त्र सम्मत है, क्या नहीं? निर्दोष स्त्री की नृशंस हत्या करना शास्त्र सम्मत है, पाटील.....? मैं कंधा किसी औरत की मय्यत को नहीं दे रही, उस स्त्री-चेतना को दे रही हूँ जिसका गला घोंटने की कोशिश हत्या के बहाने हुई है। मैं हर जाति, धर्म, वर्ण की स्त्रियों से आह्वान करती हूँ कि वे सबके सब श्मशान चलें और बारी-बारी से सुनन्दा की मय्यत को कंधा दें।"(1) उनकी वाणी में पुरुष समाज की रूढ़ियों और स्त्रियों पर किए जानेवाले अत्याचारों के प्रति घोर प्रतिक्रिया एवं विद्रोह व्यक्त है। कई प्रकार की कमज़ोरियों के होते हुए भी वह सच्चा नेता ही है।

उच्च-वर्गीय पात्र

उच्चवर्गीय पात्र वे हैं, जिनका सामाजिक स्तर ऊँचा है और धन सम्पन्नता के साथ-साथ उनका रहन-सहन, खान-पान भी उच्च कोटि का है। 'आवाँ' में उच्चवर्ग की पात्रों एवं उनकी समस्याओं का चित्रण किया गया है। इसमें अंजना वासवानी, निर्मला कनोई, गौतमी सन्याल, कुंती

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 153

मौसी, शिप्रा, स्मिता, ममता, नीलम्मा की मालिकिन आदि। इन पात्रों के ज़रिए उच्चवर्ग की नारियों की समस्याओं की ओर भी संकेत है।

कुंती मौसी नमिता की माँ ऊर्मिला की सगी छोटी बहन है। ऊर्मिला हमेशा उसका परामर्श करती रहती है। कुंती मौसी हमेशा नमिता को छोटा दिखाने केलिए दीदी से कुछ न कुछ कहती है, और माँ उसे डाँटती है। कुंती मौसी दीदी की हर हालत में उसका साथ देती है। दीदी की अभावग्रस्तता को वह जानती है, फिर भी उससे कुछ लेती रहती है। नमिता से वह एक सौतेली माँ या सास का जैसा व्यवहार करती है। अपने विलासपूर्ण जीवन की प्रदर्शनी केलिए बच्चे और पोत्तियों की वर्षागांठ के अवसर पर दीदी को बुलाती है। कुंती मौसी नमिता के घर पर अक्सर आती रहती है। मुम्बई जैसे महानगर में उसके और कोई रिश्तेदार नहीं है। उससे प्राप्त पुरानी साड़ियाँ, बैग, चप्पल आदि से ऊर्मिला तृप्त थी। उसे पाने केलिए दीदी उसकी खुशामदी करती रहती है। वह स्वभाव से बडा कंजूस है। दीदी के बच्चों केलिए वह कुछ नहीं करती। देवी शंकर पाण्डे के श्राद्ध कर्म को भी खर्चीला कहकर उसने काट दिया। नमिता काम पर जाने को ऊर्मिला इसलिए रोकती है कि कुंती को अच्छा नहीं लगेगा। हर बात पर कुंती भी नमिता को डाँटती रहती है। इसलिए नमिता मां के समान कुंती मौसी से भी घृणा करती है। नमिता के जीवन में एक खलनायिका के रूप में यह पात्र चित्रित है। माँ की बहन हमेशा माँ के समान है। लेकिन नमिता को दोनों से प्यार नहीं मिला। कुंती मौसी एक स्वार्थी, ईर्ष्यालू नारी है। उपन्यास में इसकी विशेष भूमिका नहीं है। लेकिन नमिता की माँ के चरित्र की गरिमा को बढ़ानेवाले उद्दीपन के रूप में इस पात्र की हैसियत है।

उपन्यास में आये एक अन्य नारी पात्र है गौतमी सन्याल। गौतमी अपने जीवन में भोगे उत्पीड़नों-संघर्षों से तपा हुआ व्यक्तित्व है। छोटी उम्र में पिता की ओर से माँ को जितनी पीड़ाएँ सहनी पड़ीं, उसे देखकर वह बढ़ी। बाद में जब माँ की दूसरी शादी हुई और खुशी से जीने लगी, तब भी गौतमी को अपने जीवन में चैन नहीं मिली। सौतेले भाई विनोद से वह गर्भवती होती है। माँ की ज़िन्दगी को वह दुःखपूर्ण बनाना नहीं चाहती थी, इसलिए अत्महत्या करने को निकली। उसी यात्रा ने उसे अंजना वासवानी से मिला दिया। अंजना ने उसे अस्पताल ले जाकर पेट साफ करवाया और लम्बे बाल कटवाये और जापान में भेजकर आभूषण डिसैनिंग भी पढ़ायी। वह जो नेहा थी तब से वह गौतमी बन गयी।

गौतमी बनकर वह जिस अपमान से भाग निकली, उसी दलदल में अधिक फँस गयी। गौतमी अंजना के व्यापार की प्रमुख सहायिका बन गयी। पुरातन लिपि तथा संस्कार से युक्त आभूषणों को डिज़ैन करना और बड़े-बड़े व्यापारियों के यहाँ आभूषणों का प्रदर्शन करना उसका काम था। गौतमी अपने काम को लेकर अत्यन्त कल्पनाशील है। वह अंजना से इतनी ईमानदार रही कि वह उसकी हर चाल की हकदार रही। वह जानती थी कि नमिता गर्भवती है। लेकिन वह यह सत्य छुपाती रही। बाद में जब नमिता ने उसे बुलाया तब उसने कोई न कोई बहाना बनाकर हैदराबाद पहूँचने का अवसर टाल रही। चाल सफल निकली जब नमिता यह सत्य जान गयी कि वह गर्भवती है तब चार महीने बीत चुके थे और एबौर्शन करना मुश्किल हो चुका था। अंजना गौतमी और संजय कनोई का षड्यंत्र था। नमिता की गर्भपात होने की वार्ता सुनकर संजय गौतमी के बारे में

कहते हैं.... कम खूबसूरत है गौतमी तुमसे?... गौतमी मुझे बहुत मानती है। मैं चाहता तो वह मेरेलिए दस बच्चे पैदा कर देती। मैंने कभी नहीं चाहा। गौतमी अच्छी मित्र हो सकती है, प्रेयसी नहीं.... न मेरे बच्चे की माँ.... जुठी कोख है गौतमी! जिस ठाठ-बाट से वह जी रही है केवल प्रतिभा के बूते वहाँ तक पहूँचने में उसे बीस साल लग जाते। जिस आलीशान फ्लैट में रह रही वह, जानती हो किसका भेंट किया हुआ है? नामी-गिरामी उद्योगपति छेड़ा साहब का। जापान में उनके संग डेढ़ साल रही गौतमी। छेडा साहब की पत्नी मुम्बई लौटीं तो अपनी सूनी गोद में बेटा लेकर। व्यवसायी समाज में उन्हों ने झूठ उड़ा रखा था कि मिसेज़ छेड़ा गर्भवती हैं। दुनिया का कोई इलाज मिसेज़ छेडा को माँ नहीं बना सकता था।"[1]

संजय की इस घोषणा से गौतमी का सारा भेद खुल आया। सिद्धार्थ के साथ और संजय के साथ भी उसका अनैतिक सम्बन्ध था। अपने काम में गौतमी समर्थ एवं ईमान्दार ज़रूर थी। यों स्त्रियों को फंसाने की जाल में वह अंजना की सहचारी बनी। नमिता जैसी निरीह लड़की को वह बचा सकती थी। लेकिन उसने उसे फंसाने की अधिक कोशिश की।

गौतमी का चरित्र लालची, सुख भोगवादी चरित्रहीन आधुनिका के रूप में चित्राजी ने चित्रित किया है।

दलाली करती नारी

दलाली के क्षेत्र में आज कई नारियाँ कार्यरत हैं। 'आवाँ' की अंजना वासवानी एक ऐसी नारी है। उच्चवर्ग की नारियों में अंजना

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 540

वासवानी का जीवन उल्लेखनीय है। उच्चवर्ग के सारे दंभ उसमें हैं। ज्यादा धन कमाने केलिए बड़े से बड़े नीच कर्म करने को भी वह तैयार है। आलीशान महल और उसकी साज-सज्जा से अंजना के जीवन का परिचय मिलती है। "पीतल के चुल्लों से अलंकृत दरवाज़े की कलात्मक नक्काशी ने उसकी उचाट प्रतीक्षा को थपका टेका-सा दिया। ऐसा अनोखा दरवाज़ा राजस्थान की हवेलियों के रंगीन चित्रों में ही निरखा है।"(1)

अंजना आभूषणों का उत्पादन और व्यापार कर रही है। आभूषणों का व्यापार बढ़ाने केलिए बड़े से बड़े निकृष्ट कार्य करने को भी तैयार है। गौतमी, नमिता जैसी लड़कियों के जीवन से वह अपना व्यापार आगे बढ़ाती है। उपन्यास में अंजना वासवानी के ज़रिए नारी केलिए नारी जिस प्रकार शत्रु बनती है उसीका चित्र प्रस्तुत किया गया है। जानबूझकर उसने नमिता को अपने जाल में फंसाया। कई कारों और अन्य मोटोरों के होने पर भी वह रेल गाड़ी में यात्रा करती है ताकि राह भटकी कोई निरीह लड़की मिलें। एक रेल यात्रा में उसे नमिता से भेंट हुई। रेल यात्रा से मिला थोड़ा समय के अन्दर उसने नमिता से सम्बन्धित सारी बातें जान लीं। उसकी नौकरी की तलाश और पैसे की ज़रूरत के साथ ही नमिता जैसी कुँवरी लड़कियों की इच्छा को भी वह जानती थी। इसलिए नमिता के जन्मदिन के अवसर पर उसने उसको कीमती चप्पल, कपड़ा, बैग, शुभकामना के कार्ड और कैक भी खरीदे। एक नामी रेस्टारेंट में मोम बत्ती के प्रकाश में बधाई के साथ ये सब वह नमिता को देती है। बड़ी होशियारी से ये चीज़ें अंजना ने नमिता की ही पसन्द में खरीदी थीं। उसी प्रकार धीरे-धीरे उसने

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 60

उसे अपने चंगुल में फंसाया। उसे जब-जब पैसे की ज़रूरत आती है तब-तब बिना किसी शर्त से पैसे देती रही। ये सब नमिता के मन में उसके प्रति विश्वास दिलाने केलिए थे। नमिता जैसी सीधी-सादी लड़कियों केलिए यह ज्यादा था।

उपन्यासकार ने अंजना की चरित्रगत प्रस्तुति इतनी सूक्ष्मता से की है कि उपन्यास के अन्तिम भाग तक वह दया, ममता और निस्वार्थ भाव की स्त्री रही। सिस्टर मरिया, गौतमी, नमिता जैसे पात्रों को वह बाहरी तौर पर सहायता देती है पर आन्तरिक तौर पर उनके जीवन और व्यक्तित्व को बेचती ही रहती है। अंजना उच्चवर्ग की स्वार्थी नारी का प्रतीक है। गौतमी को मृत्यु की गोद से जीवन की राह में इसलिए लायी कि वह कलाकारी के साथ सुन्दर भी थी। अंजना की सहायता से वह आभूषण डिज़ैनिंग में मसहूर बन गयी। वह उसके सारे व्यापार की धुरी बन गयी। हैदराबाद में नीलम्मा द्वारा संभालनेवाला घर अंजना का है। यह बात जानने पर भी बेचारी नमिता को कोई गलती नहीं सूझी। क्योंकि नमिता को उसपर इतना विश्वास था कि झूठ बोलने के पीछे कोई कानूनी कारण होगा। अंजना जैसी दलालों का ऐसा चेहरा है जो भेद खुलने पर भी सामने नहीं आता। गर्भपात के बाद संजय कनोई की बातों से अंजना की दलाली का पूर्णरूप बाहर आता है। संजय कहता है

उस मामूली औरत अंजना वासवानी की औकात है कि तुम्हारे ऊपर पैसा पानी की तरह बहा सके? उसका जिम्मा सिर्फ इतना भर था कि वह मेरे पिता बनने में मेरी मदद करे और सौदे के मुताबिक अपना कमीशन खाए। वह ऐसी पचासों लड़कियों को परोस सकती थी, जो

मुझसे यौन सम्बन्ध कायमकर केवल पचहतर हज़ार में मुझे बाप बना सकती थी। इस बात से अंजना की रंडीबाजी की पूरी खबर बाहर आती है। वह अपने व्यापार के साथ लड़कियों को भी बेच रही थी। स्त्री होने पर भी वह नमिता जैसी निरीह लड़कियों को कमीशन केलिए बेचती रहती है। वह ऐसे दलाल का प्रतीक है जो मनुष्य को बेचैन कर कमीशन ऐंठता है जिनका बाहरी जीवन इतना सभ्य एवं सुव्यवस्थित है कि कोई छल-कपटता को नहीं पहचान पाये। अंजना द्वारा दलाल का चित्र चित्राजी ने यहाँ प्रस्तुत किया है। अंजना जैसे अनेक पात्र हमारे समाज में हैं, जो राह-भड़की निरीह लड़कियों की खोज में है।

समकालीन परिस्थितियों में पिसती नारी

नमिता उपन्यास का केन्द्रीय पात्र है। चित्राजी ने नमिता के विभिन्न जीवन-सन्दर्भ की प्रस्तुती के द्वारा कई सामाजिक राजनीतिक समस्याओं को उपस्थित किया है। इनमें श्रमिक राजनीति प्रमुख है। राजनीति चाहे श्रमिक या किसी अन्य सामाजिक संगठन की क्यों न हो उसमें नेतागिरी की होड़, ईर्ष्या आदि निहित है। सब लोग चाहते हैं कि किसी न किसी प्रकार संगठन का नेता बने। नमिता पाण्डे का पिता देवी शंकर पाण्डे इसी संघर्ष का शिकार है। कॉलेज में पढ़ती कुँवरी पुत्री पर देवी शंकर जैसे पिता की बीमारी भारी बोझ देती है। घर की ज़रूरतों और पिता की शुश्रूषा का भार उस पर पड़ता है। इसी बीच माँ का कडु व्यवहार और उसके कर्तव्य पालन की विमुखता नमिता को घर की धाय संभालने को विवश कर देती है। देवीशंकर पुत्री की हर मानसिकता को पहचानती है। नमिता को भी पिता से बहुत प्यार एवं श्रद्धा है। नमिता बहुत सीधी-सादी लड़की

थी। आधुनिक युवा पीढ़ी के नए-नए फैशन, एवं संस्कार का प्रभाव उस पर नहीं था। इसलिए उसको स्मिता के अलावा और कोई सहेली भी नहीं। ममता जैसी हमजोलियों से वह कोसों दूर रही। जिस प्रकार उसमें बाहरी वेश-भूषा की सादगी है, उसी प्रकार मन से भी वह निरीह है।

छोटी उम्र में ही पुरुष समाज द्वारा उसको बुरा और कटु अनुभव मिला। अपने ऊपर मौसाजी के आक्रमण को सब के सामने से उसने छिपा रखा, क्योंकि मौसाजी ने उसे मार देने की धमकी दी थी। डर से उसने अपने को संभलते रहने का प्रयास किया। छोटी उम्र में घटी यह घटना उसपर कई रूप में ज़ारी रही। पिताजी के लकवाग्रस्त होकर पड़ जाने पर कामगार अघाडी में नौकरी केलिए प्रमुख नेता अन्ना साहब ने अनुमती दी। श्रमिक नेता की बेटी होने के कारण वह श्रमिकों और उनके जीवन से परिचित थी। कामगार अघाडी की नौकरी वह ईमानदारी से करती थी। पवार, शिंदे अंकल, शिवहरे, पाटील जैसे लोग उसे सहायता भी देते थे। पर वहाँ उसके जीवन की दूसरी अहम घटना घटती है। पिता का मित्र, सहयोगी, प्रमुख श्रमिक नेता जो नमिता केलिए पिता समान था, उसने एक दिन कामगार अघाडी के दफ्तर में उससे अनैतिक कार्य करने को उकसाया। अन्नासाहब जैसे नेता से ऐसा व्यवहार ठीक नहीं है। इस पर अन्ना साहब का तर्क है "देखो दोस्त की बेटी हो तुम, बेटी नहीं हो मेरी। पिता समान हूँ मैं तुम्हारे, पिता नहीं हूँ। रिश्ते की इस गहन अंतर्सूक्ष्मता को महसूस कर लोगी तो सम्बन्ध से स्वयं को शोषित अनुभव नहीं करोगी। न छुडाने की कोशिश करो, न उठने की.... कहा न, पिता नही हूँ, पिता समान हूँ।"(1) आधुनिक राजनैतिक नेताओं की आजकल की आदत

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 136

है कि आम लोग उनकेलिए अपने जैसे हैं पर अपने नहीं है। कामगार उघाडी छोड़कर नमिता को दूसरी नौकरी की तलाश में जाना पडा।

'बाबा ज्वेलर्स' की अंजना वासवानी से उसका मिलन उसके जीवन का तीसरा मोड़ था। वासवानी ने उसे महीने में तीन हज़ार पाँच सौ रुपए का प्रस्ताव रखा। वह रकम उसकेलिए बड़ी थी। वह जानती थी कि डिग्री की उपाधि न मिलने पर इससे अच्छी नौकरी और नहीं मिलेगी। मॉडलिंग के सम्बन्ध में नमिता पूर्ण रूप से अनभिज्ञ थी। कनोई दम्पति के सामने प्रदर्शन करते समय वह बेहोशी तक पहूँच गई। संजय कनोई बड़ी चालाकी से नमिता को अपने मार्ग पर लाया।

घर पर माँ से उसका अच्छा नाता नहीं रहा पहले से माँ घर की जिम्मेदारियों से अलग रहती थी। कॉलेज से जब नमिता लौटती है तब माँ पड़ोस में जा बैठती है। पिता उसे समझदार लड़की मानता है। वह हमेशा उसे नए भोर की प्रतीक्षा की प्रेरणा देता रहा। उसने अपनी बेटी के निर्णयों को उचित माना है क्योंकि उसका विश्वास है कि 'बेटी में स्वतंत्र निर्णय लेने का विवेक जागृत है तुम्हारा, जागृत ही रखना। मैं तुमसे हरिगिज़ नहीं पूछूँगा कि तुम वहाँ नौकरी क्यों नहीं करना चाहती? निश्चिंत होकर सो जाओ-नए भोर की प्रतीक्षा में, जिसे कोई सूर्य नहीं, स्वयं आदमी गढ़ता है....।"[1]

अंजना वासवानी नमिता के चरित्र के बारे में कहती है "कठिन परिस्थितियों में नौकरी का लोभ छोड़ पाना स्वाभिमानी व्यक्ति के ही बूते की बात है। तुम सचमुच बहुत साहसी लड़की हो।"[2]

---

1. चित्रा मुद्गल आवाँ पृ. 143
2. वहीं

संजय कनोई से नमिता का सम्बन्ध केवल सहानुभूति पर उपजा था, क्योंकि संजय कनोई ने अपनी पारिवारिक अतृप्ती और बच्चा न होने का दुःख आदि कहकर उसमें सहानुभूति पैदा की। दूसरों के दुःख पर दुःखी होना नमिता की आदत थी। संजय कनोई जैसे धनी लोगों को सैकड़ों लड़कियाँ मिलेंगी पर उसे नमिता जैसी कुँवारी लड़की ही चाहिए थी, जो किसी प्रकार की जूठन न हो। नमिता में उसने केवल अपने बच्चे को जन्म देनीवाली एक कोख देखी। अंजना वासवानी का जिम्मा भी यह था। उसने बड़ी चालाकी से नमिता को संजय कनोई के हाथ बेच दिया। प्रेम और विवाह का वादा देकर उसके दुःखों पर दुःखी होने का अभिनय कर संजय कनोई ने अपना लक्ष्य प्राप्त किया।

अभावों से घिरी हुई एक मध्यवर्गीय लड़की का मन हमेशा तोफा एवं अन्य प्रलोभनों से आकृष्ट होना स्वाभाविक है। पर चित्राजी ने नमिता को प्रारंभ में एक समझदार लड़की के रूप में प्रस्तुत किया था। बाद में उसी समझदार लड़की को नासमझदार लड़की के रूप में चित्रित किया। नमिता जानती थी कि संजय शादीशुदा व्यक्ति है, उसका कोई बच्चा नहीं। संजय के कहने पर वह जल्दी ही विश्वास करने लगती है कि संजय और निर्मला का सम्बन्ध जल्दी ही टूट जायेगा।

संजय के प्रभावी व्यक्तित्व ने धीरे-धीरे नमिता को उसकी ओर आकृष्ट किया। हैदराबाद में आभूषण डिसैनिंग की पढ़ाई के दौरान अंजना ने नमिता को पूर्ण रूप से संजय को समर्पित किया। फलतः वह गर्भवती हो जाती है। उसकी परेशानियों को जानते हुए भी गौतमी वहाँ उसका आना जानबूझकर टालती रही, ताकि वह गर्भ गिराने का उपक्रम न करें।

एक हद तक उसका यह इरादा सफल हुई। नीलम्मा की सहायता से वह डॉक्टर से मिला। डाक्टर ने गर्भ गिराने से इनकार किया तब उसने बच्चे को जन्म देने का निर्णय लिया। संजय की प्रतीक्षा में रही। इसी बीच पवार का फोन आया। फोन से अन्ना साहब की मृत्यु की खबर सुनकर वह बेहोश होकर गिर पड़ी। होश आने पर नमिता ने अपने को खून से लथपथ देखा। वह घटना उसकी गर्भपात का कारण बन गयी। संजय कनोई को जब वह खबर सुनायी गयी तब उसकी जो प्रतिक्रिया उसने की, उससे नमिता के ऊपर रचित षड्यंत्र का पता नमिता को होता है। नमिता अपना जीवन का सब कुछ नष्ट होने का अनुभव करती है। संजय को बहुत मनाने पर भी उसने नहीं माना।

कुँआरी माँ

संजय कनोई और नमिता का सम्बन्ध नमिता केलिए पवित्र था। कुँवारी रहकर माँ बनना और उसके कारण हुए अपमानों से अवगत होने पर भी वह संजय केलिए माँ बनने को तैयार थी। लेकिन आकस्मिक गर्भपात उसके जीवन का चौथा मोड़ बना। इससे वह अपने जीवन में छल को पहचान सकी। उपन्यास में नारी शोषण का पूर्ण चित्र है। धनी पुरुष वर्ग अपने धन के बल पर ही स्त्रियों का शोषण करता है। वहाँ से नमिता अपने जीवन के बारे में सोचने लगी। उसने लौट जाने का निर्णय लिया। उसने किशोरी बाई के पास जाना चाहा, जहाँ उसको प्यार एवं ममता मिलेगा साथ ही सुनन्दा की बच्ची की देखभाल भी कर पायेगी।

नमिता घर की चाहतों की पूर्ती केलिए नौकरी पर निकली। उसको अपने जीवन में तीन बार पुरुष के छल की शिकार बननी पड़ी।

पहले मौसाजी द्वारा उसका यौन शोषण हुआ। दूसरा अन्ना साहबा जैसे सज्जन व्यक्तित्व से हुआ जिसके कारण उसे दफ्तर छोड़ना पड़ा। तीसरा शोषण संजय कनोई द्वारा हुआ।

लेखिका ने नमिता के ज़रिए कई मुद्दों की ओर संकेत किया है। समाज में नमिता जैसी लड़कियों की प्रतीक्षा के रास्तों में छल-कपट और शोषण के जाल कई बिछाये हुए हैं। लेखिका ने नमिता द्वारा लड़कियों को सजग रहने की चेतावनी दी है। दलाल या आढ़तिया बनना समाज में व्याप्त एक बुरी प्रवृत्ति है। चित्राजी ने अपनी कहानियों में भी इस प्रवृत्ति का चित्रण किया है। 'आवाँ' उपन्यास में अंजना वासवानी के ज़रिए दलालीकरण से उत्पन्न जीवन सन्दर्भ का चित्र प्रस्तुत किया है। स्त्री को केवल साधन माननेवाले पुरुष मेधा समाज का रूपायन इसी दलाली वृत्ति का परिणाम है। साथ ही साथ वैश्वीकरण, राजनीतिक, छल-कपट, समाज में व्याप्त अनैतिकता, अवमूल्यन आदि कई समस्याओं पर उपन्यास में संकेत किया गया है।

धन और सम्मत्ति को अहम् मानती आधुनिकाएँ

चित्राजी के तीसरे उपन्यास 'गिलिगडु' में धन संपत्ति को अहम माननेवाली आधुनिक महिलाओं को चित्रित किया गया है। ये सिर्फ पैसे को ही महत्व देती है। उनकेलिए पारिवारिक रिश्तों की कोई आत्मीयता नही है। उनकेलिए प्यार, मूल्य आदि निरर्थक शब्द हैं। 'गिलिगडु' की सुनयना एक ऐसी स्त्री है। सुनयना मेजर जस्वत सिंह की बहु है जो आधुनिक शिक्षित युवा-पीढ़ी की प्रतिनिधि है। उसके लिए केवल धन और साम्पत्ति सब कुछ है। ससुर जसवंत सिंह को वह केवल कुत्ते की देखभाल

केलिए घर पर रखती है। उसके मन में ढ़ेर सारे असंतोष और लोभ हैं। मृत सास की गहनों और ससुर की सम्पत्ति हड़पने की आकांक्षा से उसने उन्हें साथ रखा है। ऐसी निर्दयी बहू के रूप में सुनयना की पात्र-योजना की गयी है।

सुनयाना अपने बच्चों को जसवंतसिंह से अलग करने की कोशश करती है। किसी न किसी अभियोग लगाकर पुत्र को भी डाँट सुनाती है। युवा पीढ़ी की वृद्धजनों के प्रति जो मानसिकता है उसे सुनयना के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

दलित चेतना का उग्र रूप

इस उपन्यास दूसरा स्त्री पात्र है सुनगुनिया। उसके माध्यम से अनायास दलित चेतना का उग्र रूप चित्रित किया गया है। उसमें शोषक अत्याचारी बामन-ठाकुरों को सिखाने की ऊष्मा और ऊर्जा मुखर है। सुनगुनिया परिवार केलिए दम तोडकर काम करती है। जसवंत सिंह के परिवार से उसकी पुराना रिश्ता है। जसवंत सिंब आखिर यह निर्णय लेते है गाँव लौटकर सुनगुनिया के बेटे अपनी सम्पत्ति दे और अपना अंत्य संस्कार उसका बेटा ही करें। निम्न वर्ग का समर्पण भाव, निस्वार्थ प्रेम आदि को सुनगुनिया के माध्यम से प्रस्तुत है।

चित्रा मुद्गाल की कहानियों में चित्रित नारी

चित्रा मुद्गाल दबे-कुचले इन्सान और खासकर शोषित स्त्री की विड़म्बनात्मक स्थिति को अपनी रचनाओं में बड़ी सहानुभूति और सहजता से अभिव्यक्त करनेवाली रचनाकार है। वर्तमान रचनाकारों ने पुरुष सत्ता

से प्रताड़ित और लगातार चोटों को झेलते हुए जीवन बितानेवाली नारी को चेतनापूर्ण बनाने केलिए अपनी सामर्थ्य और प्रतिभा से रचना कार्य किया है। आलोचकों ने इसे 'जनाना लेखन' कहकर उसे कमतर बनाने की कोशिश की है। पर समाज की आधी आबादी स्त्री समाज को प्रतिनिधित्व करनेवाली ये रचनाएँ न साहित्यिक मूल्यों से कम नहीं और न ही सामाजिक समस्याओं से। चित्राजी ने भी अपनी कहानियों में ऐसी नारियों को वाणी देने की प्रयास किया है जो समाज के निम्न स्तर की है और हमेशा सामाजिक नियमों से दमित और प्रताड़ित है। मूल्य और मर्यादाओं के नाम पर भारतीय नारी को अधिक दमित रखने की चेष्टा हो रही है। आम भारतीय स्त्री के विषम जीवन को अधिक जटिलतर बनानेवाली अनेक कठिनाइयाँ हैं। समकालीन लेखिकाओं ने स्त्री विड़म्बनाओं और उनके द्वन्द्वों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। समकालीन रचनाकारों में मेहरुन्नीसा परवेज़, उषादेवी मित्रा, मृदुला गर्ग, मृणाल पाण्डे आदि की रचनाओं में ऐसी विड़म्बनात्मक स्थिति के चित्र हैं। अहं के टकराव, पराश्रयता से मुक्ति, स्वावलम्बन, प्रेम, विवाहेतर सम्बन्ध, तलाक, असमानता, यौन स्वेच्छा आदि इनकी कहानियों के विषय बने हैं। मन्नू भण्डारी की 'एक बार और' और 'नयी नौकरी' आदि इसके उदाहरण हैं। भारतीय समाज में नारी का जीवन कितना संघर्षमय एवं करुणापूर्ण है, इसका सही रूप पाठक के सामने चित्राजी ने प्रस्तुत किया है। नारी जीवन के उत्पीड़न और मानसिक अन्दर्द्वन्द्व को उन्होंने बखूबी से उकेरा है। चित्राजी ने अपनी कहानियों में भी नारी जीवन के विभिन्न सदमों के मार्मिक चित्र प्रस्तुत किये हैं। उनकी कहानियों में नारी का विद्रोही रूप, कामकाजी नारी का जीवन एवं समस्याएँ, स्लम की नारी निम्नवर्ग मध्यवर्ग एवं उच्चवर्ग की नारी की

विभिन्न समस्याओं को प्रस्तुत करने की कोशिश हुई है। चित्राजी की कहानियों में आज की नारी को सहज मानवीय रूप में चित्रित है तथा नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की भी प्रस्तुति है। उनकी कहानियाँ जीवन की वास्तविकताओं पर आधारित होने के कारण जीवन की विविध समस्याएँ उनमें स्वतः जाहिर हुई हैं।

विद्रोही नारी

आज की शिक्षित और अपने अस्तित्व के प्रति सजग महिलाओं ने सभी क्षेत्र में 'आँचल में है दूध और आँखों में पानीवाली' अबला छवि को तोड़ा है और सीता, सावित्री जैसे परंपरागत रूप को भी वे न अपनातीं।"[1] घर-बाहर के दोहरी व्यक्तित्व को निभानेवाली स्त्री को दोनों का प्रतिशोध करनी पड़ती है। स्वावलम्बी, साहसी नारी स्वतंत्र जीने का निश्चय कर सकती है पर असहाय, निरीह नारी अपने ऊपर होनेवाले अत्याचारों को सह नहीं पाती। जब उसकी क्षमा की सीमा पार करती है तब उसमें जीने-मरने की चिन्ता नहीं बल्कि अत्याचारियों से प्रतिशोध लेने की भावना जागृत होती है। पति परमेश्वर की रूढ़ धारणाओं से ऊबकर वह उसे बराबर साथ मानती है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में नारी-शिक्षा में हुई वृद्धि से नारी को पुरुष प्रधान समाज में जीवन के विभिन्न कार्यक्षेत्र में पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने और अपनी योग्यता स्थापित करने का अवसर मिला। आर्थिक स्वावलम्बन ने उसमें आत्मविश्वास बढ़ा दिया है। तब से वह पुरानी रूढ़ियों और व्यवस्था, पुरुष मेधा समाज के अत्याचारों के प्रति

---

1. साक्षात्कार मार्च 1985 पृ. 97

विद्रोह करने लगी। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध आज काफी उलझनमय हो गया है। आज पुरुष शिक्षित नारी के साथ जीने को इनकार करते हैं। साथ ही स्त्रियों के बलात्कार, अपहरण और सामाजिक उत्पीड़न की घटनाओं में लगातार वृद्धि हुई है। स्त्री के प्रति व्यावसायिक और भोगवादी नज़रिया तेज़ी से पनपा है। उसे व्यावसायिक प्रचार-प्रसार के साधन के रूप में पेश किये जाने की एक त्रासद प्रतिद्वन्द्विता चल पड़ी है। स्त्री स्वातंत्र्य के नाम पर आधुनिक वेश-भूषा फूहड़पन और स्वच्छन्द श्रृंगार को स्त्री स्वातंत्र्य का पर्याय मान लिया गया है। चित्राजी ने अपने स्त्री पात्रों को ऐसी परिस्थितियों से गुज़रते हुए चित्रित करने के साथ ही भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही उनको बनाये रखा। उनकी 'एक ज़मीन अपनी' की अंकिता इसका उदाहरण है।

पुरुष शासित समाज में आज भी स्त्री पुरुष की गुलाम और सामाजिक प्रताड़नाओं की शिकार है। चित्रा मुद्‌गल ने अपनी कहानियों में ऐसी स्थितियों में जागृत होती नारी की विद्रोही मानसिकता को चित्रित किया है। उनकी अधिकांश कहानियाँ विभिन्न परिस्थितियों से जूझती पिसती और उबरती महिलाओं के यथार्थ को अंकित करती हैं। कई कहानियों में नारी के परंपरागत चूल्हे-चक्की तक सीमित जीवन में आये बदलाव का स्वर मुखरित भी है। 'अपनी वापसी' की शकुन, 'शून्य' की सरला, 'प्रेतयोनी' की अनिता, बावजूद इसके' की प्रीति, 'जब तक बिमलाएँ है' की बिमला, 'अभी भी' की 'शिल्पा' 'प्रमोशन' की ललिता 'हस्ताक्षेप' की अंकिता, 'लकड़बग्धा' की पछाहवाली 'लेन' की मेहन्दरी, 'चेहरे' की भिखारिन, 'इस हमाम' की अंजा', 'नीले चौखानेवाले कम्बल' की टिकैतिन कक्की, 'सौदा' की सौदा, 'ताशमहल' की शोभना, जैसे पात्र जीवन में

अचानक आती विभिन्न समस्याओं से मुकाबला करते हैं। इन पात्रों अपने-अपने ढंग से उनके जीवन में आये तनावपूर्ण क्षणों का उचित निर्णय के साथ सामना किया है। वे पात्र समाज की रूढ़ियों के सामने न झुकते हैं और न ही पुरुष मेधा समाज से डरते हैं। चित्राजी ने इन पात्रों के ज़रिए नारी-जीवन से सम्बन्ध विभिन्न मुद्दों को, विभिन्न कोणों से उभारा है, जिससे यह जाहिर होता है कि बहुत सी यातनाओं, पीड़ाओं, कुंठाओं, संत्रासों, वेदनाओं के बीच आज की नारी जी रही है।

'अपनी वापसी' की प्रौढा शकुन के जीवन में निराशा है। वह अपने पति और बच्चों के द्वारा उपेक्षित है। जब उसका संपर्क मेजर के साथ होता है तो उसमें नए जीवन की उमंग उमड़ आती है। वह स्वयं सजग होने का संकल्प लेती है क्योंकि वह परिवार में खुद अजनबी महसूस करती थी। पति और बच्चों के व्यवहार के कारण वह विद्रोहात्मक निर्णय लेने को विवश हो जाती है। 'शून्य' की सरला में जो विद्रोहात्मकता है वह उसकी एकमात्र सहारा केलिए था, जो जीने केलिए उसको प्रेरणा दे रहा था। पुरुष समाज के दंभ से केवल पिता होने के कारण से पुत्र पर अधिकार कायम रखने की कोशिश करनेवाले पति के विरुद्ध सरला अपने को दृढ रखने का निर्णय लेती है। उसको पक्का विश्वास है कि नियम उसके साथ ही है। पति द्वारा उपेक्षित होने पर भी उसमें प्रतिहिंसा का भाव नहीं था। पर अब पति जो माँग रहा है वह उसकी जिन्दगी थी, उसे छोड़ने को तैयार नहीं थी।"[1]

---

1. साक्षात्कार मार्च 1985 पृ. 98

'लेन' की मेहन्दरी का विद्रोह कानून से है। लेकिन कानून की सहायता से पति पर छुरा भोंपनेवाले को पकड़ा सकती थी। लेकिन उससे उसके परिवार का जीवन अन्धकार में समा जायेगा। इसलिए मेहन्दरी अत्याचारियों द्वारा दिये गये रुपये लेकर कानून से पूरे परिवार को बचाती है। यहाँ जीने और जीवन को बनाये रखने को विवश एक निम्नवर्गीय नारी की मानसिकता चित्रित है।

'चेहरे' कहानी की भिखारिन सामाजिक व्यवस्था एवं अधिकारी लोगों के प्रति अपने आक्रोश व्यक्त करती है। भिखारिन द्वारा कही गयी बात पुलिस अधिकारियों और रेल अधिकारियों के मुखौटे फेंक देती है। भिखारिन का जीवन समाज में बहुत ही बदतर है, लेकिन उसे भी अधिकारी अपने शोषण के जाल से नहीं छोड़ते।

'प्रमोशन' कहानी में ललिता शंकालु पति को छोड़ती है। वह उससे कहती है "मानसिक तौर पर रुग्ण तुम हो मैं नहीं....कान खोलकर सुन लो तुम्हारी कुंठाओं द्वारा रचा हुआ सत्य मेरी नियति नहीं बन सकता..........।"[(1)] नारी मन की विद्रोहात्मक प्रवृत्ति कभी-कभी पारिवारिक विघटन तक ले जाती है। ललिता पति द्वारा किये अभियोगों से नहीं बच पायी। इसलिए वह अकेले ही जीने का निर्णय लेती है। रिश्तों के प्रति भी आज की मानसिकता बदल गयी है।

'लकड़बग्घा' कहानी की पछाहवाली समाज में व्याप्त रूढि एवं परम्परा के विरुद्ध विद्रोह प्रकट करती है। समकालीन परिस्थितियों से जूझकर वह बेटी पुनिया को शिक्षा दिलाने का प्रबन्ध करती है।

---

1. चित्रा मुद्गल जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं पृ. 73

'जब तक विमलाएँ हैं' कहानी में विमला ऐसी नारी है जिसमें अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने की ताकत है। अपनी छोटी बेटी पर हुए अत्याचार पर वह घर, परिवार, पड़ोसवालों के बातों को नकार कर पुलिस थाने में हर्जी देकर अत्याचारी को उचित दण्ड दिलाती है। समाज के नियमों के विरुद्ध अपने ऊपर हुए अत्याचार को उसने इसलिए नहीं छोड़ा कि आगे ऐसा नहीं होना चाहिए। लेकिन सामाजिक व्यवस्था उसे छिपाने को प्रेरणा देती है।

'प्रेतयोनी' की नीतू अपना विद्रोह घर से शुरू करती है। समाज में अपमानित होने के डर से माँ-बाप नीतू पर हुए अपमान को सबसे छिपाते हैं। इसलिए उसे अत्याचारों से और रूढियों से विद्रोह अपने ही घर से शुरू करना पड़ा। खुदखुशी करने केलिए तैयार नीतू अपने सहपाठियों द्वारा आयोजित हडताल में भाग लेने को तैयार हो जाती है।

इस प्रकार चित्राजी ने अपनी कहानियों में सामाजिक व्यवस्था से प्रताड़ित नारी की विद्रोही चेतना को प्रस्तुत किया है। औरत मानसिक धरातल पर क्षत-विक्षत होकर अपने अस्तित्व और व्यक्तित्व को बनाए रखने केलिए जो संघर्ष करती आती है, इसकी जानकारी चित्राजी की कहानियाँ देती हैं।

कामकाजी नारी

भारतीय परिवार एवं समाज में स्त्री की स्थिति विवाह, दहेज, वैधव्य एवं आर्थिक गुलामी के कारण पूर्णतः बदल गयी है। अशिक्षित स्त्री पहले परिवारवालों के सभी दुःखों का कारण बन गयी थी। किन्तु आज वह शिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी बनकर पिता का नहीं पूरे परिवार का

दुःख दूर करने की चेष्टा कर रही है। सैकड़ों वर्षों से भारतीय नारी का कार्यक्षेत्र घर की चार दीवार तक सीमित रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाज में आए परिवर्तनों में प्रमुख है स्त्रियों का नौकरी में प्रवेश। उद्योगीकरण, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, शहरीकरण, नारी की शिक्षा, घर परिवार की आर्थिक दुरवस्था आदि के कारण स्त्रियाँ नौकरी की तलाश में निकलीं। फलतः साहित्य में स्त्रियों से सम्बन्धित सामाजिक समस्याओं की चर्चा होने लगी। इस सिलसिले में कामकाजी नारी की समस्याएँ भी अधिक चर्चित होने लगी हैं। पुरुषों के समान वह भी अपने दायित्वों को निभाने लगी है। कामकाजी नारी की समस्याओं को समकालीन महिला रचनाकारों ने अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। चित्राजी ने भी अपनी कहानियों में कामकाजी नारी के आन्तरिक एवं बाहरी संघर्षों एवं समस्याओं को शब्दबद्ध किया है। नौकरीपेशा नारी की कई अनकही समस्याओं को चित्राजी ने अपनी कहानियों में बखूबी से उभारा है।

स्वावलम्बन की स्थिति ने उसमें आत्मविश्वास जगाया। वह पुरानी रूढ़ियों एवं व्यवस्थाओं में दमित जीवन से बाहर निकली। घर-परिवार एवं बाहर की दोहरी जिम्मेदारी निभाने के कारण उसे बहुत टूटना पड़ा। इस दोहरे व्यक्तित्व को निबाहने में, पति, सास, बच्चे एवं अन्य पारिवारिक सम्बन्धों एवं समस्याओं को पूरा करने केलिए नौकरी और जीवन के बीच उसे बहुत कुछ खोना पड़ता है, इसे ही चित्राजी ने अपनी कहानियों में अभिव्यक्ति दी है।

आर्थिक स्वावलंबन स्त्री की समस्या को एक हद तक सुलझा सका, पर दूसरी ओर अन्य समस्या का कारण भी बन गया। ऐसी

समस्याओं के कारणों का अन्वेषण ही चित्राजी ने अपनी कहानियों में किया है। समाज के नारी-विरोधी नियमों की आलोचना लेखिका ने अपनी कहानियों में की है। आधुनिक नगर जीवन एवं नौकरी दोनों कामकाजी नारी के घर और बाहर की समस्या का कारण बनते हैं। 'स्टेपिनी' कहानी की नायिका नौकरानी से अपने पति के अवैध सम्बन्ध का बोझ सहकर जीवन बिताती है। कामकाजी नारी की यह एक प्रमुख समस्या है। समय पर घर से निकालने की जल्दबाज़ी में उसे घर का सारा काम निपटाने का समय नहीं मिलता, इसलिए घर में नौकरानी की ज़रूरत है। यह आधुनिक नगर-जीवन का दबाव भी है। पत्नी अपने को टूटते हुए भी उसे निकालने का साहस नहीं जुटा पाती। आखिर वह इस स्थिति को स्वीकारती है कि नौकरानी गाड़ी का मुख्य पहिया है और वह स्वयं 'स्टोपिनी' है।

'सुख' कहानी में विधवा कामकाजी नारी का जीवन चित्रित है। घर पर सास, ससुर और उसका बच्चा है। बच्चे की देख-भाल, बूढे माँ बाप की सेवा शुश्रूषा और नौकरी को एक साथ संभालना मुश्किल है। आजीविका केलिए नौकरी भी चाहिए। ऐसी स्थिति में नौकरानी को खोजती है, सारी सुख-सुविधा के **बावजूद भी नौकरानी वहाँ इसलिए नहीं रही कि** घर पर **कोई मर्द नहीं है।**

'स्टोपिनी' और 'सुख' में महानगरीय तनाव, दबाव और भागदौड़ में सीधी-सादी कामकाजी महिला कैसा यातनापूर्ण जीवन जीती है, इसका चित्रण है। नौकरीशुदा नारी के जीवन का असलियत इन कहानियों में चित्रित है। 'दरमियान' और 'शून्य' कहानियाँ जीवन से समायोजन करती, निर्णय लेती कामकाजी मध्यवर्गीय नारी के व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पहलुओं

को रेखांकित किया गया है। 'दरमियान' कहानी में चित्राजी ने बिलकुल नारी की वैयक्तिक जीवन की अभिव्यक्ती की है। पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करनेवाली नलिनी के माध्यम से कामकाजी नारी के तनाव पूर्ण जीवन के साथ महवारी जैसी शारीरिक समस्याओं को भी इस कहानी में चित्रित किया गया है। अचानक माहवारी होने से उत्पन्न समस्याओं को लेखिका ने नलिनी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। साथ ही दफ़्तर से समय पर स्कूल जाना और बच्चे को लेकर घर पहूँचना आदि नौकरीशुदा नारी की कुछ अन्य समस्याएँ इसमें है।

'शून्य' कहानी में अकेले बच्चे के साथ जीती कामकाजी नारी का जीवन चित्रित है। 'लाक्षागृह' में कामकाजी नारी के मोहभंग की कहानी है। बदसूरत होने पर भी सुन्नी को सिन्हा इसलिए प्यार दिखावा करता है कि वह महीने में छः हज़ार कमाती है। साथ ही सिन्हा का जीवन तंगियों एवं आवश्यकताओं से भरा था। दफ्तर में सब लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। यह कहानी बद्सूरती के नाम पर घर, आफिस में अपमानित होती नारी की कहानी है।

नौकरी पेशा नारी के जीवन में आती एक अन्य समस्या है पति का शंकालु चरित्र। 'प्रमोशन' 'ताशमहल' आदि कहानियाँ में पत्नियाँ पति के इस चरित्र के कारण तलाक लेती हैं। 'प्रमोशन' में पत्नी और आफिस के डॉ. कोठारी के सम्बन्ध को शंका की दृष्टि से से देखते पति का चित्र है तो 'ताशमहल' में पत्नी का सम्बन्ध उनके पहले पति से जन्मे पुत्र से बनाए रखने की शंका करते पति का चित्र है। इन कहानियाँ में नौकरी पेशा नारियों पर पतियों द्वारा झूठा अभियोग लगाने की स्थिति को चित्रित किया गया है। इस स्थिति में स्त्री को अकेलापन के दुःख को भी सहना पड़ता है।

नारी जब कामकाजी बनती है तो आत्मनिर्भरता के साथ वैयक्तिक स्वतंत्रता भी मिलती है। लेकिन शादीशुदा लड़की को नौकरी-पेशा जीवन में दुगुना बोझ पैदा कराती है। उसको घर और दफ्तर की जिम्मेदारियों को एक साथ निभाना पड़ता है। लेकिन बीच इनमें से एक छूटना ही पड़ता है।

कामकाजी नारी परिवार केलिए कुछ न कुछ कमाती है। लेकिन शादीशुदा स्त्री अपने और घर के अन्य सदस्यों की सेवा-शुश्रूषा करती है, उनकी हर बातों का खयाल करती है तो उसको आराम करने का समय भी नहीं मिलता। समाज में पति-पत्नी नौकरी पर जाते हैं, लेकिन घर लौटते समय पति आराम लेता है, पत्नी को चूल्हा-चक्की में लगना पड़ता है। स्त्रियों की नौकरी परिवार केलिए आवश्यक है। लेकिन स्त्री शारीरिक एवं मानसिक तनाव को सहकर मशीनी जीवन जीने को विवश होती है। निम्नवर्ग की नारी आजीविका केलिए नौकरी करती हैं तो उच्चवर्ग की नारी ऐशो-आराम से जीने केलिए।

पति द्वारा उसे जो मानसिक तनाव होता है वह मनोवैज्ञानिक समस्याओं का भी कारण बनता है। तनावों से बचने केलिए कभी कभी उसे खुदखुशी भी करनी पड़ती है। एक ओर मातृत्व एवं दाम्पत्य की जिम्मेदारी, दूसरी ओर नौकरी की जिम्मेदारी। इसलिए उसे हमेशा तनाव एवं अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति में रहना पड़ता है।

नौकरी केलिए निकलती पत्नी को अनेक अन्य व्यक्तियों के साथ सम्पर्क में रहना पड़ता है। कभी-कभी दूसरे पुरुषों के साथ सफर करना पड़ता है। यह पति के मन में अनिच्छा पैदा करता है। वैयक्तिक जीवन में यह अलगाव का भाव भी पैदा कराता है। कामकाजी नारी को पति के

अन्य सम्बन्धों को भी सहना पड़ता है। चित्राजी ने कामकाजी नारी की इस विडम्बनात्मक स्थिति को कई कहानियों में प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

चित्राजी ने अपने कथा साहित्य में नारी जीवन के हरेक पहलू को सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन को अपने उपन्यासों और कहानियों में प्रतिपादित किया है। समकालीन जीवन में नारी का जीवन, उनकी विसंगतियाँ, सामाजिक जीवन में आती समस्याओं, संकटों एवं संघर्षों को उसकी पूरी यथार्थता एवं पैनापन के साथ प्रस्तुत किया है। पुरुषों द्वारा नारी के सामाजिक शोषण के चित्र 'एक ज़मीन अपनी' और 'आवाँ' से मिलते हैं। 'आवाँ' उपन्यास में चित्राजी ने हर वर्ग और स्तर की नारी के जीवन को उपस्थित किया है। इसमें नारी जीवन की पारिवारिक समस्याएँ हैं, राजनीतिक या संगठन के क्षेत्र में नारी को जिन समस्याओं को झेलना पड़ता है, उसे सुनन्दा, अनीसा, किशोरी बाई, नमिता आदि पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। मॉडलिंग और विज्ञापन जगत में नारी का जिस प्रकार पुरुष शोषण करते हैं इसके भी उदाहरण हैं। नमिता पाण्डे, अंकिता एवं नीता आदि इस क्षेत्र में शोषक की शिकार है। नीता को अपनी जान को भी त्यागना पड़ा। नौकरी पेशा नारी के जीवन और उनकी समस्याओं को अंकिता और नमिता के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। स्लम की नारी की समस्याओं के साथ-साथ चाकरी या झाड़ु-पोंछकर जीवन बितानेवाली बाइयों की समस्याएँ, वेश्याओं की जीवन समस्याएँ, समाज में दलाली करती स्त्रियों की समस्याएँ भी चित्राजी के दोनों उपन्यासों में चित्रित हैं।

चित्राजी ने उपन्यासों की तुलना में कहानियाँ ही ज्यादा लिखी हैं। उनकी हर कहानी में नारी जीवन के किसी न किसी मुद्दे को प्रधानता मिली है। नारी जीवन की विद्रोहात्मक प्रतिक्रियाओं को भी चित्राजी ने सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है। चित्राजी की कुछ स्त्रियाँ रूढ़ियों एवं पुरुष द्वारा स्त्री समाज पर किए जानेवाले अत्याचारों के प्रति अपना विद्रोह प्रकट करती है। 'चेहरे' की भिखारिन के लफ्जों में अधिकारियों के खिलाफ विद्रोह मुखरित है। स्त्री निम्नवर्ग की हो या उच्चवर्ग की, जीने केलिए उसे पुरुष के इच्छानुसार रहना पड़ता है। भिखारिन ने अपने जीवन में सब कुछ खो दिया है, वह इसलिए जीती है कि उसे अपने बच्चे को पालना है। लेकिन जब उसके ऊपर चोरी का झूठा अभियोग लगाया जाता है वह उसे सह नहीं पाती। पतियों के शंकालु चरित्र से ऊबकर पत्नी अपने पति से सारा नाता तोड़कर स्वतंत्र जीवन बिताने निकलती है। कामकाजी नारी में ऐसी ताकत है। उसने पति के प्रताड़नों से बचने की क्षमता प्राप्त की है। 'प्रमोशन', 'शून्य' आदि कहानियाँ इसका उदाहरण है।

'लकडबग्घा' कहानी की पछाहवाली सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह प्रकट करती है तो 'सौदा' कहानी में पती की दलाली वृत्ति के विरुद्ध विद्रोह करने को निश्चय लेती पत्नी की कथा है।

वेश्याओं के जीवन और उनसे जनित बच्चों के जीवन को 'फातिमाबाई' कोठे पर नहीं रहती' और 'नतीजा' नामक कहानियों में प्रस्तुत किया गया है। 'नतीजा' में एक स्कूल अध्यापिका की कहानी है जो वेश्याओं के बच्चों को पढ़ाने और उन्हें समाज के दुराचारों से दूर रखने की कोशिश करती है।

चित्राजी की कहानियों में नारी जीवन के विभिन्न अनुभवों का प्रामाणिक वैविद्य विद्यमान है। कहानियों में स्त्री की निजी वैयक्तिक दुनिया के साथ बहुत नज़दीकी भी पायी जाती है और उनकी रचनाएँ विषय की विविधता के ऐसे आयाम रचती हैं कि पाठक का जुड़ाव स्वतः ही हो जाता है।

अध्याय - 6

चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य : शिल्पपरक विशेषताएँ

प्रस्तावना

समकालीन हिन्दी उपन्यास की कई शिल्पपरक विशेषताएँ हैं। सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने केलिए रचनाकारों ने अपनी अपनी रचनात्मक शैली और नए नए प्रयोगों, बिम्बों, प्रतीकों को स्वीकार करके अपने शिल्प कौशल का भी परिचय दिया है। नवीन शिल्प एवं नयी अभिव्यंजनात्मक शैली में सामाजिक जीवन के हर क्षण को उन्होंने रचनाओं में समाविष्ट किया है। जीवन और मानव मन की संवेदनाओं को ही आज सामाजिक, आंचलिक, मनोवैज्ञानिक आदि औपन्यासिक प्रकारों में विकसित देखे जा सकते हैं। समकालीन महिला रचनाकारों की रचनाओं में विषय की विविधता के साथ शिल्पपरक विशेषताएँ भी देखने को मिलती हैं। ज्यादातर लेखिकाओं ने सामान्यतः स्त्री की सामाजिक, पारिवारिक विसंगतियों को लेकर रचना की हैं। लेकिन कुछ लेखिकाओं ने वैयक्तिक जीवन की मनोविश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की है। समाज की वास्तविक समस्याओं से संघर्ष करनेवाले नारी पात्रों के जीवन की प्रस्तुति भी लेखिकाओं ने की है। समकालीन रचनाकारों में उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, मेहरून्नीसा परवेज़, मंजुल भगत, चित्रा मुदगल, मृदुला गर्ग आदि कई महिला उपन्यासकारों के उपन्यास शिल्पपरक खूबियों के कारण विशेष चर्चित हैं।

चित्रा मुद्गल के उपन्यास साहित्य की शिल्पपरक विशेषताएँ

उपन्यास या कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है। इसलिए इसमें सामाजिक जीवन के कई सन्दर्भों को समन्वित किया जाता है। मानव जीवन के कई सन्दर्भों-परिदृश्यों को चित्रा मुद्गल ने भी अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है।

चित्राजी की रचनाओं में खास तौर पर वर्णनात्मक कथाकथन की प्रमुखता है। उपन्यासों में फ्लैश बैक, अत्मकथात्मक शैलियाँ आदि को भी अपनाया गया है। कहानियाँ ज्यादातर वर्णनात्मक शैली पर रचित हैं। वर्णनात्मक शैली में संप्रेषण की क्षमता ज़्यादा रहती है। उपन्यास में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग बीच बीच में हुआा है। उनके विभिन्न उपन्यासों के प्रमुख पात्र अंकिता, नमिता, जसवंत सिंह तीनों भूतकाल की सुन्दर-असुन्दर घटनाओं को पूर्वदीप्ति शैली में प्रस्तुत किया गया है। 'आवाँ' में संजय कनोई के चरित्र को उसके फोटोग्राफर सिद्धार्थ ने एक पत्र द्वारा व्यक्त किया है। कहानियों में ज्यादातर वर्णनात्मक शैली को अपनाया गया है। फिर भी कहीं वर्णनात्मक और फ्लैशबैक शैली को भी अपनाया गया है तो कहीं पूर्ण रूप से फ्लैशबैक शैली को।

चित्रा मुद्गल के उपन्यास साहित्य में कथानक विधान

कथानक उपन्यास का नींवधार तत्व है। उपन्यासकार कथा को कल्पना एवं सत्य का सम्मिश्रण करके अत्यन्त कुशल एवं आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करता है। उपन्यास को कथानक के निर्धारण और घटनाओं की दृष्टि से कथानक को मुख्यतया दो प्रकार से विभाजित किया गया है :[1]

---

1. डॉ. सुरेश सिन्हा उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ पृ. 44

1. सुगठित कथानक वाले उपन्यास (Novel of organic plot)

2. विश्रृंखलित कथानकवाले उपन्यास (Novel of loose plot)

चित्राजी के 'एक ज़मीन अपनी' और 'गिलिगडु' सुगठित कथानकवाले उपन्यास हैं। उनका 'आवाँ' विश्रृंखलित कथानकवाला उपन्यास है। पैनी दृष्टि से देखा जाय तो कहा जा सकता है कि 'एक ज़मीन अपनी' की कथावस्तु भी विश्रृंखलित है। इसमें पारिवारिक जीवन है, विज्ञापन क्षेत्र का संघर्ष और नारी शोषण, नारी मुक्ति आदि भी है। इन तमाम सन्दर्भों को चित्राजी ने अपने उक्त उपन्यास के कलेवर में समाविष्ट किया है। 'आवाँ' का चित्रपट अत्यन्त विस्तृत है। कथावस्तु का गठन लेखिका ने बड़ी होशियारी से किया है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि श्रमिक राजनीति, पारिवारिक जीवन, मॉडलिंग, नारी शोषण, साम्प्रदायिकता आदि पर केन्द्रित है। 'गिल्लिगडु' में चर्चित विषय बुढ़ापा है। दो व्यक्तियों, रिटयेर्ड सिविल इंजिनियर जस्वंतसिंह और केनल स्वामी के जीवन सन्दर्भों से चित्राजी ने आधुनिक युग के बूढ़े लोगों की बहुत सारी समस्याओं को प्रस्तुत किया है।

चरित्र चित्रण

चरित्र प्रधान उपन्यास में पात्रों के चरित्र या मानस की अभिव्यक्ति उनके चिन्तन कथन के अतिरिक्त आनुषंगिक रूप से घटनाओं द्वारा होती है। घटनाओं का स्वतंत्र महत्व न होने के कारण क्रमबद्ध होना आवश्यक नहीं है, और न कोई कथानक या कार्य ही उपन्यास में अपेक्षित है। यहाँ पात्र समाज-धारा से अपना सामंजस्य स्थापित करने की चिन्ता नहीं करते। वे समाज से कटकर उससे विद्रोह करके आत्माभिव्यक्ति मात्र में

रत होते हैं।[1] इसके अनुसार चित्राजी के उपन्यास के हर पात्र सामाजिक धारा में बहते हुए भी बीच में विद्रोह प्रकट करते हैं। हर पात्रों में किसी न किसी प्रकार सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोही मानसिकता है। यह विद्रोही मानसिकता परिस्थितियों से जन्य है। वे उसे पहले स्वीकारते हैं फिर स्वतंत्रता की खुला हवा चाहते हुए अकेले लडते हैं। 'एक ज़मीन अपनी' की अंकिता, नीता, "आवाँ" की नमिता पाण्डे, नीलम्मा, सुनन्दा, स्मिता, अनीसा, गौतमी और 'गिलगडु' के केनल स्वामि, जस्वंत सिंह, सुनगुनिया आदि इस प्रकार के पात्र हैं।

सामाजिक जीवन में दिखते पात्र एवं उपन्यासों के पात्रों के बीच विशेष अन्तर नहीं होता। इसलिए पात्रों के चयन का आधार सामाजिक जीवन होता है। उपन्यास के पात्रों के द्वारा उपन्यासकार जीवनगत विषमताओं एवं दुरूहताओं से स्वयं उसका भी साक्षात्कार करता है और पात्रों के रूप में अपनी कल्पना को सफलता पूर्वक अभिव्यक्ति कर देता है। रचनाकार पात्रों को उसकी दुर्बलताओं एवं कुरूपताओं को चित्रित करने के साथ आदर्श पक्ष को भी प्रस्तुत करते हैं।"[2]

कथानक में मुख्य रूप से दो प्रकार के पात्र होते हैं प्रमुख पात्र एवं अप्रमुख पात्र। मुख्य पात्र उपन्यास के केन्द्र होते हैं।

चित्राजी के उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' में मुख्य पात्र अंकिता है। उसके जीवन से जुड़े अन्य पात्र हैं नीता, सुधांशु, मेहत्ता, सुधीर, माँ, भाई और अन्य गौण पात्र मिस्टर मैथ्यू, सविता, मानसी, वकील, तिलक

---

1. डॉ. शशिभूषण सिंहल उपन्यास का स्वरूप पृ. 24
2. डॉ. सुरेश सिन्हा उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ पृ. 64

आदि। ये सभी पात्र कथानक में विविध प्रसंगों के साथ सहायक रूप से उपस्थिति हुए हैं। इसमें अंकिता के माध्यम से आधुनिक, आत्मनिर्भर शिक्षित स्त्री के अन्तर्द्वन्द्व को और विज्ञापन के जगत में ज़ारी नारी शोषण आदि को चित्रित किया गया है।

अंकिता एक ऐसा नारी पात्र है जो इतने आत्मविश्वास के साथ जीती है कि प्रतिकूल परिस्थिति में भी वह अपने स्व को बनाये रखती है। वह स्वावलंबी होना चाहती है। पुरुष द्वारा बनायी गयी नीतियों का पालन कर उसके इच्छानुसार जीने को वह तैयार नहीं है। पति सुधांशु से वह खुलकर कहती भी है "मैं सिर्फ गृहिणी ही नहीं हूँ.... एक स्त्री भी हूँ.... आखिर सुबह से रात के बीच कोई एक क्षण ऐसा नहीं हो सकता जिसे मैं नितांत अपने लिए जी सकूँ... कागज़ कलम लेकर बैठ सकूँ। जो पढना चाहती हूँ पढ सकूँ.. लिखना चाहती हूँ लिख सकूँ।"(1) दमित स्त्री स्वतंत्रता के विद्रोही रूप ने उसमें मातृत्व की जो ममता थी उसे विनष्ट कर दिया। मेरेलिए भी उसका मरना मेरी ज़िन्दगी से तुम्हारा निष्कासन है... वरना उसकी शक्ल में जिन्दगी भर मुझे तुमको ढोना पडता... क्योंकि वह हमारा बच्चा नहीं था... मुझे तुमसे घृणा है घृणा... तुम्हारी ऐयाशियों और ज्यादातियों को सती-साध्वी बनी माँग में सजाए इस मुगलते में रहना कि मैं स्त्रीत्व की पूर्णता का भ्रम जीति रहूँगी - लो इसी वक्त यह रिश्ता खत्म।"(2)

पति द्वारा अपनी कविताओं को चिन्दी चिन्दी कर फेंकने को वह अपनी जिन्दगी को चिन्दी चिन्दी कर फेंकने का अनुभव करती है।

---

1. चित्रा मुदागल एक ज़मीन अपनी पृ. 81
2. वहीं पृ. 19

अंकिता पति से इसलिए अलग हो जाती है कि उसकी वैयक्तिक स्वतंत्रता को भी उसके सामने छोडने को नहीं चाहती। वह एक ग्रहणी बन कर जीवन समाप्त करना नही चाहती। भारतीय संस्कृति एवं संस्कार को अपनाते हुए वह एक स्वतंत्र व्यक्तित्ववाली भारतीय नारी बनना चाहती है। विज्ञापन जगत की चकाचौंधी में जहाँ स्त्री के शोषण की संभावनाएँ हैं वहाँ अंकिता ने अपने को एक आदर्श स्त्री चरित्र के रूप में बनाए रखा। नारी विमर्श का एक सक्रिय पक्ष अंकिता में है। वह पुरुष की गुलामी सह नहीं पाती। जीवन में अकेली होने पर भी और सुधीर ओर मेहत्ता जैसे पात्रों के सम्पर्क में आने पर भी उसमें पुरुष के प्रति आकर्षण नहीं होती। क्योंकि सुधांशु से मिले कड़ु अनुभव ने उसको अपनी सारी जिन्दगी को अकेलापन में ही जीने को विवश किया। फिर भी अंकिता के मन में सुधांशु के प्रति प्यार था वह बीच-बीच में सोचती है "कभी सोचा होगा सुधाँसु ने... देह और मन का वनवास.... उसकी चाहनाओं के विरुद्ध उसे विरक्त करना..... तप-सा असाध्य उसे साधना सहज है। आखिर वह भी मानवीय है.... उसके भीतर की स्त्री में किसी रोमिल छाती की सुदृढ सघन छाती की ललक नहीं सिर उठाती। मांगा था मात्र... भीतर की उस स्त्री का सम्मान। अस्तित्व का स्वीकार। और इस्तेमाल से विद्रोह।"(1) अंकिता केवल इतना चाहती है कि पति द्वारा अपना व्यक्तित्व और व्यक्ति स्वतंत्रता को स्वीकारना। पर सुधांशु के अहंकारी पुरुष ने निरंकुश प्रवृत्ति उसकी व्यक्तित्व को मानने के बिना कड़ु वचनों से धिक्कारा और अपमानित किया। दाम्पत्य की ऊष्मा को वैचारिक मत भेद ने नष्ट कर दिया।

---

1. चित्रा मुदागल   एक ज़मीन अपनी   पृ. 170

अंकिता में स्वाभिमान की भावना एवं विद्रोही मानसिकता पहले भी थी। बचपन में भी उसे माँ 'विद्रोहिणी' पुकारती थी।

सुधांशु स्त्री को अपने गुलाम मात्र देखनेवाले समझनेवाले पुरुष समाज का प्रतिनिधि है। सुधांशु अपनी गति समझकर उससे माफी माँगती है। पर अंकिता ने उसे स्वीकारना नहीं चाहा। उसने आत्मनिर्भर होकर अपने आत्म सम्मान की रक्षा की। वह सुधांशु से कहती है "औरत बोनसाई का पौधा नहीं है.... जब जी चाहा उसकी जडें काटकर उसे वापस गमले में रोप लिया... वह बौना बनाए रखने की इस साजिश को अस्वीकार भी तो कर सकती है।"(1) अंकिता तीव्र व्यक्तित्ववाली चरित्र है। उसका स्वाभिमानी चरित्र पूरे उपन्यास में भरा हुआ है।

उपन्यास का दूसरा प्रमुख पात्र है नीता जो अंकिता के चरित्र के ठीक विपरीत है। जहाँ जहाँ अपनी स्त्रीत्व की रक्षा करनी थी वहाँ नीतु ने स्त्री स्वातंत्र्य के नाम पर स्त्रीत्व की बली दी। अंकिता का चरित्र नीता की चरित्र की कसौटी है। नीतू विवाहित सुधीर के साथ बिना कोई शर्तों से जीती है। उसका मत है 'हम वर्जनाहीन होकर जिएँगे। बंधनहीन होकर बंधेंगे। ...रूढ़िमुक्त होकर मानसिक वरण। उपन्यास में नीता की छवि एक आधुनिक सभ्य युवती की है। वह एक मॉडल के तौर पर अपनी जगह बनाना चाहती है। उसके मन मन में धन-दौलत और यश की कामना है। जिन्दगी में नैतिक-अनैतिक बात की चिन्ता तक उसमें नहीं। इसकेलिए वह कुछ भी करने को भी तैयार है। उपन्यास का एक पुरुष पात्र कहता है कि 'उसकी एक रात की कीमत है 'ओबराय' का डिनर, स्टुडियो 210 की

---

1. चित्रा मुदागल एक ज़मीन अपनी पृ. 220

रंगीन शाम, तेजपाल का आखिरी शो या खंण्डाल की आउटिंग....।"[1] कई धनी व्यक्तियों के साथ जोड़े अनैतिक सम्बन्धों से नीता ने 'मॉडल' के रूप में अपनी जगह बनायी और आखिर सुधीर के प्रति समर्पित भी हुई। वह जानती थी कि सुधीर शादीशुदा आदमी है। आखिर जब सुधीर द्वारा वह उपेक्षित हो जाती है तो गहरे मोहभंग में पड़ जाती है और आत्महत्या कर लेती है।

दोनों चरित्र एक सिक्के के दो पहलू हैं। वैचारिक मतभेद दोनों चरित्र की विशेषता है। दोनों में नारी मुक्ति सम्बन्धी अपने-अपने दृष्टिकोण हैं। अंकिता परम्परावादी है तो नीता परम्परा को तोड़नेवाली है। नीता शादी जैसे सामाजिक सम्बन्ध को धिक्कारती है, पर अंकित पुरुष दंभ द्वारा प्रताड़ित होती है फिर वह तलाक लेती है। दोनों चरित्रों से लेखिका का उद्देश्य स्त्री स्वतंत्रता पर विचार करना है। अंकिता में स्वतंत्र्य बोध है पर स्वातंत्र्य पुरुष समता से नहीं, अपनी अस्मिता को बनाये रखते हुए हासिल करना चाहती है। नीता की राय में स्त्री मुक्ति पुरुष के समान जीने में है। अपनी नौकरी स्थायी करने केलिए अनौतिक कार्य करने केलिए वह तैयार होती है। जहाँ अंकिता अपनी नौकरी त्याग देती है वहाँ नीता यह कहकर नौकरी स्थायी करती है "डाँट वरी मुझे रख लीजिए। मेरे साथ वो वर्जनाएँ नहीं हैं जो अंकिता के साथ हैं।"[2] नीता कहती है मैं जिन्दगी में जो कुछ हासिल करना चाहती हूँ उसे तुम्हारी तर्ज पर चलकर कोई लड़की हासिल कर सकती।"[3] नीता में परम्परा एवं रूढ़ियों से प्रतिशोध है,

---

1. चित्रा मुदागल एक ज़मीन अपनी पृ. 34
2. वहीं पृ. 35
3. वहीं पृ. 35

व्यवस्था के प्रति विद्रोह भी। वह पति की दासी बनकर जीने को धिक्कारती हैं। उसके मत में पुरुष से स्वतंत्र होना है तो पहले उन्हें सिन्दूर पोंछना होगा। बिछुए त्यागने होंगे दासीत्व के प्रतीक चिह्न। यह इस्तेमाल अधिक खतरनाक है। उससे तो पहले मुक्त कर लो उन्हें।"[1] नीता समाज में बराबरी चाहती है, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध में वह कोई शर्त नहीं मानती। उसके मत में "किसी लड़के का लड़की को गहरी नज़र से देख भर लेने से उसकी पवित्रता नष्ट होने लगती है। क्यों? पुरुष उसे क्या दे रहा है, वह किन चीज़ों की हकदार है - यह कटोरा लेकर भिक्षाटन से नहीं प्राप्त होगा उसे सबसे पहले अपने भी स्तर की कुंठाओं से मुक्त होना है दृष्टि परिमार्जित करनी है यानी सैक्स से पवित्र-अपवित्र होने की भावना से स्वयं मुक्त होना है, तभी, केवल तभी वह समाज में मनुष्य की तरह जीवित रह सकती है बराबरी पर।"[2] नीता में अपना संकल्प है जिसके अनुसार वह जीति है। उपन्यास में अंकिता की तुलना में नीता के चरित्र की कुछ खास विशेषताएँ हैं।

उपन्यास में आये कुछ अन्य पात्र हैं अंकिता की माँ, भाई, सुधीर, मेहत्ता हरीन्द्र, मि. मैथ्यू, तिलक, रीना, सविता आदि। ये सभी पात्र कथानक में विविध प्रसंगों में उपस्थित हुए हैं। मेहत्ता एवं सुधीर के पारिवारिक जीवन की घटनाएँ उपन्यास का प्रमुख सन्दर्भ हैं। मेहत्ता की शारीरिक कमी, और पत्नी को तृप्त करने की असमर्थता, पत्नी की आत्महत्या और सुधीर की पत्नी का शंकालु चरित्र आदि के ज़रिये

---

1. चित्रा मुदागल एक ज़मीन अपनी पृ. 35
2. वहीं पृ. 117

लेखिका ने पारिवारिक जीवन के की सन्दर्भ को बड़ी कुशलता के साथ समाया। ये सभी पात्र उपन्यास के परिवेश के अनुकूल हैं।

'आवाँ' पारिवारिक, सामाजि, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भों को उभारनेवाला बृहद उपन्यास है। उपन्यास की प्रमुख पात्रा नमिता पाण्डे है और उपन्यास की पूरी कथा नमिता की ईद-गिर्द बुनी गयी है। नमिता को चित्राजी ने उपभोक्तवादी संस्कृति की शिकार के रूप में प्रस्तुत किया है। आर्थिक विषमताओं से जूझते निम्न मध्यवर्ग के लोग बहुत जल्द इसमें फंस जाते हैं। उसे बाज़ार की और ले जानेवाली अंजना वासवानी मुख्य प्रेरक पात्र है जो सुविधाओं की बात बताकर बाज़ार की ओर उसे आकर्षित करती है। छल एवं कपट के द्वारा स्त्रियों को बारी-बारी से भोग की वस्तु मात्र देखनेवाला संजय कनोई का पात्र अंततः उच्च वर्ग के स्वार्थ का प्रतिनिधित्व करता है। अंजना वासवानी और संजय कनोई नमिता के जीवन को एक गेंद के समान इस्तेमाल करते हैं।

नमिता का पिता फालिज से अपाहिज होकर बिस्तर पर पड़ा तो नमिता को अपनी पढ़ाई छोड़कर माँ के साथ पापड़ बेलकर, साड़ियों पर फॉल लगाकर और ट्यूशन लेकर आजीविका चलानी पड़ती है। शुरू से ही नमिता की जीवन संघर्षमय रहा। बी.ए. के अलावा टैपिंग, शार्टहेंट आदि जानने के कारण नमिता और एक नौकरी की तलाश में जाती है। नौकरी की तलाश में भटके नमिता एक लोकल ट्रेन में अंजना वासवानी से मिलती है। बेहद साधारण वेश-भूषा से और परेशानी से अंजना उसकी ज़रूरतों से अवगत होती है। धीरे-धीरे परिचय से उसका मंतव्य जानती है और अपनी कार्ड देती है। उसी प्रकार नमिता को बाबा ज्वेल्र्स में साढ़े

तीन हज़ार की नौकरी देती है। नए कीमती ड्रिस, पर्स, तथा ऊँची एड़ी का चप्पल, जन्मदिन का कार्ड, केक आदि खरीदकर अप्रत्याशित और अनोखे ढ़ंग से वासवानी उसका जन्मदिन मनाती है। नमिता जैसी लड़की को प्रभावित करने को यह आसान बात निकली। अंजना उसका परिचय आभूषणों के थोक व्यापारी संजय कनोई से कराती है। शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक शोषण के सहने के उपरान्त अपने पुराने अड्डे में आ जाती है।

नमिता का चरित्र को चित्राजी कहीं सहनशील समझदार लड़की के रूप में प्रस्तुत किया है। बाद में सुख भोगवादी लड़की के रूप में। उसका शारीरिक शोषण तीन बार हुआ। पर उसकी प्रतिक्रिया वहाँ छोड़ने तक सीमित रही।

अंजना का चरित्र उच्चवर्ग की दलाली मानसिकता का परिचायक है। आधुनिक समाज में ऐसे कई पात्र हैं जो दूसरों को नई कल्पित दुनिया की कल्पना देकर जाल में फंसा देते हैं। अंजना ने धन की शक्ति को समझ लिया था। उसने कई बुद्धिहीन असमर्थ लड़कियों को जैसे गौतमी, सिस्टर मरिया, नीलम्मा, नमिता आदि को बड़ी आसानी से उसकी हितों केलिए उपयोग किया। अंजना वासवानी जैसे पात्र केवल उपन्यास में नहीं पूरे समाज में व्याप्त एक विषैली मानसिकता का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र हैं जो पूरी मानवराशी केलिए अहितकारी हैं।

ऊर्मिला नमिता की माँ एवं देवीशंकर पांडे की पत्नी है। उनके चरित्र में कडुवाहट ज़्यादा है। यह कटुवाहट परिस्थिति जन्य कठिनाइयों का परिणाम है, जिसके भीतर संवेदना की एक निर्झरणी बह सकती थी। लेकिन चित्राजी ने उसके चरित्र को एक सुविधाकांक्षी कुंठित महिला के

रूप में प्रस्तुत किया है। कई सन्दर्भों में एक माँ की आकांक्षा, सर्तकता प्रकट करती है लेकिन उसमें सच्चाई नहीं केवल दिखावटीपन है।[1] अभावग्रस्तता में भी वह महँगीन साडियाँ और अत्र आदि लगाने में कोई कसर नहीं छोडती। उसकेलिए वह कितने ही खर्च उठाने केलिए तैयार है। ऊर्मिला अपने को सम्पन्न बनाये रखने और दूसरों में प्रशंसा सुनने केलिए व्यग्र है। वह नमिता को संशय की दृष्टि से देखती है और साथ ही मारती-पीटती और प्रताड़ित करती है। वह संयमित चरित्रवाली औरत नहीं हैं। पति की मृत्यु के समय में भी वह चैनलों केलिए साक्षात्कार देती है। पिता के दाह-संस्कार केलिए उतारू नमिता पर वह क्रुद्ध होकर छपट पड़ी दिमाग तो नहीं चल गया तेरा नंगिना जो बैठे-ठाले अलाय-बलाय बकने लगी? न बांढ हूँ न, छूँछी! कुलदीपक बेटा जना है मैंने, बेटा! जना है तो भला किस दिन केलिए जना है? बोल?"[2] ऊर्मिला के चरित्रर को उपन्यास में कठोर हृदय, रूढ़िवादी, निरंकुश, लालची महिला के रूप में प्रस्तुत किया गया।

किशोरी बाई का चरित्र साहसी, सहिष्णु, श्रमिक, और ममतामयी माँ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह कामगार अघाडी से जुडा हुआ महिला संगठन के नेता रही। देवीशंकर पाण्डे से उसका सम्बन्ध श्रद्धा भाव का था। पैसे की तंगी में उसको सहायता भी देती है। तनावपूर्ण पारिवारिक जीवन में किशोरी उसे सांत्वना भी देती है। सुनन्दा उसकी ही बेटी है। सुनन्दा के समान नमिता को भी वह प्यार करती है।

---

1. वर्तमान साहित्य नवम्बर 2001 पृ. 63
2. चित्रा मुदागल आवाँ पृ. 399

विमला बेन को चरित्रहीन समकालीन महिला राजनीतिक नेताओं के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। वह 'जागोरी' संगठन की प्रमुख नेता और विधान सभा की सदस्या भी है। समकालीन सभी नेताओं के समान महत्वाकांक्षी है। वह किसी भी कार्य करने में हिचकती नहीं। पुरुषों के समान समस्याओं में वह अपनी कार्यकुशलता प्रकट करती है। साथ कभी कभी पुरुषों को भी ललकारती है, तो कभी समाज में स्थित रूढ़ियों को। उसके चरित्र के सम्बन्ध में पवार कहता है "भरपूर यौनानन्द भोगने के बावजूद वे आजीवन कुआरी रहीं और भविष्य में भी रहेंगी। ....मगर है वे जीवट की महिला है। खतरों से खेलने में माहिर।"[1] साथ ही उसकी दूसरी बुरी आदत्त मदिरा पान की है। सारे गोष्ठियों में और सभा में मद्यपान की जानलेवा दुष्परिणामों के सम्बन्ध में लम्बे भाषण देकर, उससे चेतावनी देनेवाली वह रात में अंग्रेज़ी स्कॉच की बोतल पिये बिना सो नहीं सकती। चरित्रहीनता के बावजूद भी श्रमिक लोगों के प्रति हमदर्दी, सहानुभूति उसके चरित्र की कुछ विशेषता है।

पवार का चरित्र को चित्राजी ने एक महत्वाकांक्षी युवा नेता के रूप में चित्रित किया है। उसमें सदियों से दमित दलित जीवन की झलक भी विद्यमान है।

संजय कनोई एक थोक व्यापारी है। जिसके माध्यम से उच्च वर्ग का विसंगतिपूर्ण पारिवारिक जीवन प्रस्तुत किया गया है।

बाबु जसवंतसिंह रिटयर्ड सिविल इंजिनियर है। अपनी पत्नी के स्वर्गवास के बाद अपने बेटे नरेन्द्र के साथ गेलैक्सी के बाद अपने बेटे

1. चित्रा मुदागल आवाँ पृ. 263

नरेन्द्र के साथ गेलैक्सी अपार्टमेंट्स में रहने केलिए आते हैं। बालकनी बन्द कराकर उसमें उनके रहने की व्यवस्था कर दी जाती है। घर पर उनका एकमात्र काम कुत्ते को टहलाने और पारिग कराने की है। वे सोचते है कि घर पर दो कुत्ते है एक कुत्ता टॉमी और दूसरा रिटयर्ड सिविल इंजिनियर बाबु जसवंत सिंह। उस घर पर केवल एक ही जीवि उसे बुजुर्ग मानता है वह है कुत्ता टॉमी। बहु सुनयना उसके भोजन की व्यवस्था ठीक से नहीं करती। गीले बिस्कुट, बिना चीनी की चाय आदि देती है। आखिर वह कानपुर लौटने, वसीयत बदलकर सुनगुनिया के नाम पर लिखने और अन्तिम दिन वहाँ ही बिताने का निर्णय लेते हैं।

केनल स्वामी को चित्राजी ने निरशाजनक स्थिति में भी आशावादी के रूप में प्रस्तुत किया। एक स्वाभिमानी चरित्रवाले वह अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं को किसी के सामने निछावर करने को तैयार नहीं। पत्नी की मौत के बाद केनल स्वामी नितान्त अकेले हो गए। तीनों बेटों ने नई नौकरियाँ पकड़कर नए भविष्य की तलाश में नए शहरों में अपना डेरा बना लिया था। नोइडा में चार कमरों वाला फ्लैट बेचने से इनकार करने के कारण तीनों बेटे रूढ़कर अलग गये। उसका चरित्र एक दृढ़ चित्तवाला, स्वतंत्र व्यक्तित्व का है।

जसवंत सिंह की बहू सुनयना आधुनिक महत्वाकांक्षी युवा पीढ़ि की प्रतिनिधी है। उसका चरित्र निर्दय एवं अहंग्रस्त है। वह ससुर को केवल एक जीवि मात्र देखती है समय पर भोजन नहीं। यदि कुछ देती है तो फ्रिज में रखा बासी खाना और देर से बनी सुखी रोटी। जसवंत सिंह के हर व्यवहार पर वह फटकार देती है। वह कहती है, बाबूजी इस संभ्रात

सोसइटी में उनकी इज्ज़त खाक में मिलाने पर क्यों उतारू हैं? ह्रासोन्मुख पारिवारिक मूल्यों के इस युग में सुनयना जैसी पुत्रवधु मिलना सबसे बड़ा अभिशाप है।

उपन्यास के अन्य पात्र हैं नरेन्द्र, शालिनी, अनुश्री, श्रीनारायण, अणिमादास आदि। नरेन्द्र और श्रीनारायण एक ही पीढ़ी का प्रतीक है। पत्नी सुनयता के बातों में आकर वह सपने पिता से कहता है "इस घर में बच्चों की शिकायतें नहीं आती बूढों की आती है।"(1)

नरेन्द्र के मन में ढ़ेर सी कटुताएँ है जो जब-तब पिता के कठोर अनुशासन भरे अतीत का प्रतिफलन थीं।

श्रीनारायण केनल स्वामी का मंझला बेटा है। वह पिता से उसकी सम्पत्ति चाहता है। इच्छानुसार मकान बेचने में इनकार करते पिता को वह खूब मारता है।

अणिमा दास और अनुश्री आदि की प्रत्यक्ष भूमिका उपन्यास में नही है। फिर भी दोनों पात्र केनल स्वामी के जीवन से जुडने के कारण प्रभावशाली हैं।

चित्रा मुद्‌गल के उपन्यासों में परिवेश

चित्राजी की औपन्यासिक रचनाओं में परिवेशगत कई विशेषताएँ पायी जाती हैं। चित्राजी की कहानियाँ एवं उपन्यास मुख्य रूप से शहरी परिवेश पर केन्द्रित हैं। लेकिन इनमें गाँव की यादें भी उपलब्ध हैं। चित्राजी

---

1. चित्रा मुदागल गिलिगडु पृ. 64

ने दिल्ली, मुम्बई, हैदराबाद, कानपूर आदि शहरों और उसके नज़दीकी इलाको के परिवेश को लेकर रचना की है। मुम्बई जैसे महानगर का संपूर्ण परिवेश ही उसमें रूपायित हुआ है। साठ के बाद के मुम्बैया जीवन के साथ-साथ पाश्चात्य और शहरी सभ्यता की ओर तेज़ी से दौड़ती बीसवीं सदी का जीवन भी चित्राजी के उपन्यासों का परिवेश बनकर आया है। 'एक ज़मीन अपनी', 'आवाँ' और 'गिलिगिडु' में महानगरीय परिवेश की सारी विशेषताएँ मौजूद हैं। 'गिलिगडु' उपन्यास में केनल स्वामी और जसवंत सिंह की बातचीत के बीच ग्रामीण परिवेश का चित्रण है। पूरे उपन्यास में ये पात्र एक शान्त, स्वस्थ गाँव का संकल्प करते रहते हैं।

चित्राजी का उपन्यास 'आवाँ' श्रमिक राजनीति का जिक्र करते हुए समकालीन राजनीति, नेतागिरी, होड़, स्पर्धा, आपसी वैमनस्य आदि कई सन्दर्भों को प्रस्तुत करता है। उपन्यास में अन्नासाहब, देवीशंकर पाण्डे, पवार, किशोरी बाई आदि के ज़रिए समकालीन राजनीति एवं श्रमिक राजनीति का सहज चित्र प्रस्तुत किया गया है।

अन्नासाहब 'कामगार अघाड़ी' नामक श्रमिक संगठन का नेता है। वह श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा केलिए कार्यरत है। आज के तथाकथित नेता लोगों की तरह वह भी पत्र माध्यमों में अपनी, प्रशंसा केलिए उतावला है। पवार उनके सम्बन्ध में कहता है "खिलाडी वे बहुत ऊँचे दर्जे के हैं, यह अलग बात कि खेलने से ज्यादा खिलवाने में माहिर है।"(1) वह स्त्री को केवल थकान दूर करने की चीज़ मानता है। समकालीन राजनीतिकों के सारे छल छद्म उनके चरित्र में मौजूद हैं।

---

1. चित्रा मुदागल आवाँ पृ. 345

पवार दलित मज़दूर नेता है। वह दोहरे व्यक्तित्ववाले आधुनिक युवा नेता का प्रतीक है। वह अन्ना साहब के साथ काम करते हुए, उसकी बुराई करता रहता है। ब्राह्मण नमिता से विवाह करके अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ती चाहता है। साथ ही दलित होने की कुण्ठा से मुक्त होना भी है। युवा पीढ़ी की यही मानसिकता है कि जहाँ लोग अभ्यास और अनुभव के बल पर पहुँचते हैं वहाँ ये छलांक मारकर आसानी से पहूँचते हैं।

राजनीतिक क्षेत्र में कार्यरत महिला है विमला बेन। वह तत्कालीन राजनीतिक नेताओं के समान साहसी एवं महत्वाकांक्षी है। विधान सभा की सदस्या विमला बेन समाज में शोषित स्त्री के लिए लड़ती है। समकालीन राजनीतिक नेताओं की चरित्र हीनता उसमें भी है। अन्ना साहब के समान यौनाकांक्षी है।

चित्राजी ने अपने उपन्यासों से समकालीन भारत के विसंगत राजनीतिक परिवेश के बहु आयामी स्वरूप को रेखांकन किया है।

सामाजिक परिवेश

चित्राजी के उपन्यास हमारे सामाजिक जीवन के दस्तावेज़ हैं। 'एक ज़मीन अपनी' में नारी मुक्ति या नारी चेतना की अभिव्यक्ति के साथ साथ सामाजिक जीवन में नारी की हैसिय और पारिवारिक जीवन सम्बन्धी चित्रण भी है। उपन्यास की नायिका अंकिता पति से तलाक लेकर जीवन बिताती है। पारिवारिक जीवन का विघटन और उससे जुड़ी हुई कई समस्याएँ इस में प्रस्तुत हैं। विज्ञापन के क्षेत्र की पैंतरेबाज़ी नारी शोषण और आर्थिक शोषण जैसे मुद्दों पर भी उपन्यास में जिक्र है।

चित्राजी की बृहत रचना 'आवाँ' एक महाकाव्यात्मक सामाजिक उपन्यास है। नारी अस्मिता, स्त्री स्वतंत्रता, नारी विमर्श आदि को प्रस्तुत करने के साथ-साथ, धार्मिक, पारिवारिक, राजनीतिक क्षेत्र की कई समस्याओं को इसमें समाया गया है। निम्न श्रेणी के लोगों की दयनीय स्थिति, गरीबी, बेकारी, आदि भी इसमें चित्रित हैं। नशेबाजी एक सामाजिक विपदा है जो कई परिवारों को अभावग्रस्तता की ओर धकेल देती है और व्यक्ति को अनैतिक कार्य करने के लिए मज़बूर करती है। स्मिता के परिवार की कहानी के माध्यम से नशीली दवा तथा मदिरापान की सामाजिक विपत्ति की ओर संकेत किया गया है। पारिवारिक जीवन के सन्दर्भ में उपन्यास में उच्चवर्ग, मध्यवर्ग एवं निम्न वर्ग के पारिवारिक जीवन को संजय कनोई, नमिता, किशोरी बाई आदि के द्वारा व्यक्त किया गया है। बेकारी की तीक्ष्णता को भी उपन्यास में उजागर किया गया है।

'गिलिगडु' उपन्यास में वृद्धजनों की उपेक्षाभरी जिन्दगी को मर्मांतक ढंग से चित्रित करता है। परिवार में बड़े लोगों के प्रति सम्मान, आदर एवं उनको सुरक्षित एवं सुखपूर्ण जीवन प्रदान करना पुत्रों का कर्तव्य है। लेकिन आधुनिक पीढ़ि के प्रतिनिधि उनकी ही सन्तानें उनको बेकार, फिजुल और अनुपयोगी सिद्ध करके वृद्धाश्रमों, धकेल देती हैं। खून के रिश्तों में आये परिवर्तन भी इसमें रेखांकित हैं।

आर्थिक परिवेश

निम्न एवं मध्यवर्गीय जीवन में अर्थाभाव किस तरह प्रभावित करता है उसको भी चित्राजी ने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। आर्थिक तंगी से बच्चों को अंग्रेज़ी स्कूल में दाखिला नहीं करा पाता। घर

का खर्च निबाहने केलिए पापड़ बेलना, साड़ियों में फॉल लगाना पड़ा नमिता को। अर्थाभाव ही उसे अंजना वासवानी, संजयकनोई जैसे दलालों के पास पहूँचता है, जहाँ नमिता जैसी कई युवतियों को शारीरिक और आर्थिक शोषण की शिकार बननी पड़ती है। यश एवं धन की प्राप्ति और कई सुख-सुविधा इकट्ठा करने के विचार में विज्ञापन के क्षेत्र में फंस जाती हैं। इसे 'एक ज़मीन अपनी में दिखाया गया है। 'गिलिगडु' में धन लोभी बेटे-बेटियों का चित्र है। ये अपने माँ-बाप से ज़्यादा उनकी सम्पत्ति हड़पने का रास्ता खोजते हैं।

धार्मिक परिवेश

भारतीय समाज कई प्रकार की रूढ़ियों एवं विश्वासों से जकड़ा हुआ है। 'आवाँ' उपन्यास में इसके कई सन्दर्भ प्रस्तुत हैं। इतने साजिक परिवर्तन के आने के बावजूद आज लोग जाति भेद एवं उच्च-नीच की भावनाओं से मुक्त नहीं हैं। पवार नामक युवक दलित होने की हीनता-ग्रन्थी से पीड़ित है। इससे बचने केलिए वह ब्राह्मणी नमिता से ब्याह करने का निश्चय करता है। धार्मिकता का दूसरा पक्ष सुनंदा से सम्बन्धित है। प्रेम करते समय धर्म जाति आदि बाधा नहीं बनकर आते, लेकिन शादी के सन्दर्भ में ये सब पहाड़ बनकर ऊटपटांग मचाते हैं। सुहैल और सुनन्दा के माध्यम से इस मुद्दे पर जिक्र किया गया है।

सांस्कृतिक परिवेश

भारतीय जनजीवन पर सांस्कृतिक मूल्यों का बड़ा प्रभाव है। समकालीन समाज में विदेशी संस्कृति का अन्धानुकरण हो रहा है। चित्राजी ने अपने उपन्यासों में यह दिखाने की कोशिश की है कि भारतीय नारी को

भारतीय संस्कृति के अनुरूप जीना चाहिए। अंकिता के द्वारा चित्राजी ने यह दिखाया है। संस्कृति से व्यक्ति परिष्कृत तो होता है। नारी सम्बन्धी पुरानी मान्यताएँ नष्ट हो चुकी हैं। आधुनिक परिवेश में स्त्री बिकाऊ चीज़ बन गयी है। विज्ञापन की मंडी में स्त्री को अपमानित करने केलिए स्त्री ही तैयार होती है। आधुनिकता की आड़ में स्त्री को भविष्य में भी गुलाम रखने की साजिश ही आज हो रही है। अंकिता में सांस्कृतिक चिन्तन का नया रूप मिलता है। उसके शब्द है   जीवन में हम जब भी कोई निर्णय लें, सामाजिक सरोकारों से कटकर नहीं.... जीवन मूल्यों को निजी निजी तौर पर ध्वस्त करना आसान है, मगर उन्हें संशोधित करना चुनौती भरा संघर्ष है।"[(1)] नीता आखिर गलती स्वीकार करती है   'इस देश की स्त्री को यहीं का खुला हवा पानी चाहिए.... यहाँ की मिट्टी का पौधा यहीं के मौसम के अनुशासन में जी सकता है। बाहरी ओर से उधार लिया हवा पानी उसे पच नहीं सकता।" यह केवल नीता की स्वीकारोक्ति नहीं है पर पूरे आधुनिक युवा पीढ़ी केलिए चेतावनी भी है।

'गिलिगडु' में सांस्कृतिक चेतना के अवमूल्यन का चित्र प्रस्तुत है। घर के बुजुर्ग व्यक्ति को कुत्ते से भी बदत्तर स्थिति में जीवन जीने केलिए विवश करती नयी संस्कृति-सभ्यता को इस उपन्यास में रेखांकित किया गया है। आज पश्चमी देशों की तरह आधुनिक समाज में उपभोक्तवाद, स्वार्थ, मूल्यों की गिरावट आदि के कारण सांस्कृतिक मूल्यों में क्षरण हो रहा है। केनल बाबु, जसवंतसिंह जैसे बूढ़े लोगों को समाज में बेकार एवं अनुपयोगी सिद्ध किया जाता है। इस उपेक्षा भाव से जनित संघर्ष उनमें

---

1. चित्रा मुदागल   एक ज़मीन अपनी   पृ. 202

प्रतिशोध का नहीं अकेले रहने का साहस देता है। भारतीय समाज में हुए सांस्कृतिक अवमूल्यन इसका कारण बना है।

शहरी परिवेश

'एक ज़मीन अपनी', 'आवाँ', और 'गिलिगडु' इन तीनों उपन्यासों का परिवेश महानगरीय है। चित्राजी ने शहरी जीवन की सारी गति-विधियों को उसकी पूर्णता के साथ प्रस्तुत किया है। फिल्मी शहर होने के कारण मुम्बई में विज्ञापन की कई कम्पनियाँ हैं जहाँ नारी का कई प्रकार से शोषण हो रहा है। उपन्यास में पूर्ण रूप से शहरी जीवन ही है। विज्ञापन की दुनिया बिलकुल अलग है जहाँ व्यक्ति का टिकाव कुछ न कुछ खोने से होता है। वह मात्र यश और धन कमाने का एक माध्यम है। नीता जैसे पात्र आधुनिक संस्कृति के प्रतीक हैं जो व्यवस्था के अनुरूप 'स्व' को छोड़ने केलिए भी तैयार है। पुरुष द्वारा संचालित इस क्षेत्र में स्त्री केवल उपभोग की चीज़ है। वहाँ उसकी कोई अस्तित्व नहीं लेकिन चित्राजी ने अंकिता द्वारा स्थापित किया है कि हमारे अपने कुछ मूल्य है संस्कृति है। उसे अपनाना चाहिए। शहरी जीवन का अकेलापन, बेबसी अंकिता के जीवन के द्वारा किया गया है। बम्बई जैसे महानगर का जीवन व्यस्थ तथा तनावपूर्ण है। इस उपन्यास में चित्राजी ने महानगरीय जीवन की समस्याओं को उभारा है। अंकिता जैसे पात्र अकेले अकेले रह सकते है पर मानसिक तनाव या द्वन्द्वों को अकेले सहा नही जाता। वह दुःख बाँटने केलिए हरीन्द्र तथा मेहत्ता के पास जाती है, लेकिन तलाक शुदा स्त्री से सम्बन्ध को उनकी पत्नी शंका की दृष्टि से देखती है। पत्नी की मृत्यु के बाद मेहत्ता भी खुद अकेलापन का अनुभव करता है। वह अंकिता से कहता भी है

"बहुत लोग आसपास होते हैं, मगर उस भीड़ में जब किसी को अपने नितांत अन्तरंग का साझीदार बनाना होता है, अपना मुक्त बांटना होता है, यह उसका वैयक्तिक जीवन है फिर भी महानगरों में सामाजिक जीवन का नितान्त अभाव है।

शहरी जीवन में आनेवाली एक और समस्या है आवस व्यवस्था की। वहाँ एक या वर्ष का किराया एक साथ देना पड़ता है। 'सरकारी फ्लैट प्राप्त कर उसे किराए पर उठा स्वयं झोंपडी या चालों में रहनेवाले मकान मालिक भी है।"(1) शहरों में लोग व्यावहारिक स्तर पर सोचकर व्यावसायिक बन जाते हैं। इन मकानों में ज़्यादा रुपये किराया के रूप में देने पर भी बुनियादी उपकरणों को लगाना किरायेदार का कर्तव्य बन जाता है, अगर किराया नहीं दे पाये तो बतौर दलाली धोप लेता है। शहर में एक कमरे केलिए किराया सात-आठ सौ रुपये होते हैं। शहरी जीवन जीवन की यह समस्या सबसे चिन्तनीय है, मुम्बई जैसे महानगरों की चालियों, झोंपड़ियों, गलियों और रेलवे कोलनियों पर लोगों का जीवन बहुत शोचनीय है। शहर की भीड़ को चित्राजी ने ऐसा व्यक्त किया है "इतनी भीड़ किसी अन्य शहर की छति रोयां-रोयाँ रौंध रही होती तो निश्चित ही मनुष्य ज़मीन पर नहीं एक-दूसरे पर पांव रखता हुआ आगे बड़ता। फिर भी आबादी है कि बढती जा रही है। अरब सागर को लगातार पीछे ठेलते हुए। दलदल के बीच यूनियनों के पखौरों पर झोंपडे खडे हो रहे है। यही रफ्तार रही तो एक दिन लोग यहाँ के पेड-पौधों को भी नहीं बरशोंगे उन पर पक्षियों के घोंसलों की बजाय आदमी के घरौंदे झूल रहे होंगे और उनमें पक्षियों के

---

1. चित्रा मुदागल एक ज़मीन अपनी पृ. 38

कलरव की जगह आदमी के बच्चे लंगूरों से चिंतिया, खौंखया रहे होंगे....।"[(1)] शहरों में भीड़ होना स्वाभाविक है पर मुम्बई भीड़ को देखकर गाँव से आयी विचार शील अंकिता के मन में ऐसा विचार होना समीचीन है। और शहर को अजगर से तुंलना करके लिखा है "अजगर होता शहर।.... अजगर होने को अभिशप्त हो उठा है यह शहर।[(2)] अंकिता इस भीड़ में शामिल लेना चाहती है। शहर की रफ्तार भरी ज़िन्दगी उसकी मुट्ठी में नही आ सकती... अंकिता जैसे सहज लडकी इस शहर के साथ दौड नहीं सकती है।"[(3)] अंकिता की मानसिक तनाव को देखकर हरीन्द्र कहता है कि 'यह शहर तनिक जिद्दी प्रकृति का है अंकिता जी.. जल्दी किसी से घुलता मिलता नहीं... लेकिन जब किसी को यह अपना लेता है, अपने रंग और तेवरों से उसे ऐसा सम्मोहन बद्ध करता है कि इसके समक्ष सारे शहर फीके, विपन्न अनुशासनहीन और ऊष्मा रहित प्रतीत होने लगते है।[(4)] इस प्रकार चित्राजी ने मुम्बई शहर की सारी परिस्थितियों को उपन्यास में चित्रित किया है।

दूसरे उपन्यास 'आवाँ' पूर्ण रूप से शहरी परिवेश पर लिखित है। उपन्यास श्रमिक राजनीति तथा श्रमिक संगठनों से सम्बन्धित है। इसमें सामाजिक सच्चाई एवं अनुभवों को एक साथ प्रस्तुत किया। श्रमिक राजनीतिक की पृष्ठभूमि में लिखि उपन्यास दिल्ली महानगर का चित्रण है। नौकरी की तलाश, अन्य सुविधाओं की तलाश में कई लोग गाँवों से

---

1 चित्रा मुदागल एक ज़मीन अपनी पृ. 87

2. वहीं पृ. 64

3. वहीं पृ. 83

4. वहीं पृ. 88

शहरों में आ बसा। उन लोगों केलिए नौकरी, आवास की व्यवस्था, बच्चों की शिक्षा, भोजन आदि कई समस्याओं को सामना करना पड़ा। ऐसी स्थिति में स्त्रियाँ भी विभिन्न प्रकार के कामों में शामिल होने लगीं। उन लोगों केलिए सामाजिक व्यवस्था से कई प्रकार के शोषण सहन पड़े इन अत्याचारों के खिलाफ श्रमिकों की प्रतिक्रिया की परिणति है श्रमिक संगठन। ऐसे संगठनों के कर्ताधर्ता कई नेता लोग भी हैं। इन सबका जीवन ही उपन्यास की पृष्ठभूमि में है। इसमें शहरी परिवेश ही मुख्य है।

'गिलिगडु' उपन्यास में भी शहरी जीवन की सारी परिवेशगत विशेषताएँ विद्यमान हैं। मुम्बई जैसे महानगर में जसवंत सिंह जैसे बुजुर्ग व्यक्तियों को जीने केलिए बहुत कुछ सहना पड़ता है। फ्लैट में रहने में जसवंत सिंह को पडोसियों एवं घरवालों की डाँट सुननी पडती है। बुढापे की सहज भूल के कारण लिफ्ट को न बन्द करने या पडोसिन पर ध्यान दिये बिना कपडा उतारने पर जसवंत सिंह को बेटे-बहु की गलियाँ सुननी पडीं। उपन्यास में जसवंत सिंह और केनल स्वामी के मिलन के सन्दर्भ में मुम्बई नगर की शहर के व्यस्थ जीवन के चित्रण किया गया है।

चित्राजी के उपन्यासों की भाषा

भाषा केवल संप्रेषण का साधन न होकर सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति का ज़रिया भी है। साहित्य की रचना प्रक्रिया और शिल्प पक्ष के सन्दर्भ में अक्सर भाव और भाषा को एकदम भिन्न तत्व मानकर देखा जाता है। लेकिन इसके बदले भाषा को भाव की अनुगामी या भाव को भाषा की अनुगामी के रूप में देखना सर्वाधिक समीचीन है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने इस सम्बन्ध में लिखा है "भाषा केवल साहित्य में ही प्रयुक्त

नहीं होती, वरन् मानव जीवन की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। कवि (विस्तृत अर्थ में साहित्यकार) जिन अनुभूतियों को व्यक्त करना चाहता है, उसका पूर्वरूप उसने भाषा के किसी रूप में सोचा होगा। इस दृष्टि से काव्य सृजन के पूर्व ही उसका संवेदन किसी भाषा में उपलब्ध हुआ होगा। उस अन्तर मंथन की भाषा का रूप क्या है? क्योंकि वह रचना दृष्टि के पूर्व ही उसके व्यक्तित्व में उपस्थित है। उसकी काव्यभाषा उसके भावों से यदि निर्धारित होती है तो उसके संवेदन की भाषा उसे कहाँ से मिलती है? उसकी व्यापक अनुभूति को निर्धारित नहीं करता, क्या ऐसा नहीं है कि जो भाषा जिस हद तक विकसित और परिष्कृत होती है उसी के अनुरूप उसके उपयोग करनेवालों की संवेदना बनती है।"[1]

मतलब यह है कि किसी कृति की रचना के पहले और बाद, दोनों स्थितियों में रचनाकार भाषा का प्रयोग करता है। पहले रूप में वह समाज से मिली भाषा ग्रहण करता है और दूसरे में अपने व्यक्तित्व का सम्मिश्रण करके अपनी संवेदना को वाणी देता है। जब तक सूक्ष्म से सूक्ष्म अनुभूतियाँ और जटिल से जटिल विचारों को सहज संवेदन भाषा में व्यक्त कर सकने की दरिद्रता को कोई नहीं मिटा सकेगा आज के लेखकों का संसार विचारों का संसार है, जिसे यह यथार्थ की भाषा में अभिव्यक्त करता है - सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक यथार्थ। नित्यप्रति के व्यापार को वह अपनी सर्जनात्मक मेधा से इतना परिवर्तित कर देता है कि नया अर्थ और बोध ग्रहण कर लेता है। लेकिन जब भाषा सहज, सुस्पष्ट एवं अर्थ गंभीर नहीं होती, तो इस संवेदना का रूप खंडित भी होता है और सारे अर्थ या तो बदल जाते हैं या धुंधले पड़ जाते हैं।"[2]

---

1. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी भाषा और संवेदना पृ. 97-98
2. डॉ. सुरेश सिन्हा हिन्दी उपन्यास पृ. 61

चित्रा मुद्गल हिन्दी की श्रेष्ठ कथाकार हैं जिन्होंने कथानुकूल और चरित्रानुकूल भाषा के प्रयोग में सफलता हासिल की है। भाषा की दृष्टि से उनके उपन्यासों की अलग पहचान है। चित्राजी की भाषा कथानुकूल पात्रानुकूल सहज भाषा है। उन्होंने परिस्थिति एवं पात्र की मानसिक स्थिति के अनुकूल कहीं सभ्य, संस्कार युक्त कहीं तीव्र भावों से युक्त भाषा का प्रयोग किया है। पात्रों की मानसिकता और प्रसंगों की अनुकूलता पर लेखिका ने अधिक ध्यान दिया है। भाषा भावाभिव्यक्ति का प्रधान साधन है। काल और परिस्थिति के अनुसार भाषा का प्रकट होना चाहिए। भाषा की दृष्टि से चित्राजी की रचनाएँ सक्षम हैं। भाषा की कलात्मकता, शिल्प की कसावट और बिम्बों का बड़ा वैभव उनकी रचनाओं में मौजूद है।

चित्राजी ने अब तक तीन उपन्यास लिखे हैं। तीनों उपन्यास आधुनिक सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है। उन्होंने सामाजिक जीवन की गतिशीलता को प्रस्तुत करने केलिए उसी प्रकार की तेज़ प्रभावशाली भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में बम्बईया हिन्दी का प्रयोग किया है। उनके उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी', 'आवाँ' 'गिलिगडु' में जीवन के अनुरूप, विविधता, नाटकीयता, वाक्य गठन, दृश्य बिम्बों की योजना, कहावतों एवं मुहावरों का कथानुकूल प्रयोग, काव्यात्मक भाषा की प्रभावात्मक प्रस्तुती है। भाषा की विविधता इसलिए है कि उन्होंने अपने उपन्यासों में बहुरंगी जीवन का समावेश किया है। इसके लिए उन्होंने नवीन भाषा, शब्द, प्रतीकों एवं बिम्बों का नूतन प्रयोग भी किया है। चित्राजी के उपन्यासों में भी ऐसी शिल्पपरक विशेषताएँ देखने को मिलती हैं।

अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग

चित्राजी के तीनों उपन्यासों में गाँव एवं शहरी जीवन प्रस्तुत है। फिर भी कथावस्तु शहरी जीवन से ज्यादा निकट है। शहरी वातावरण एवं आधुनिकता की सजीव अंकन करने केलिए उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग जबरदस्त किया है। उनके 'एक ज़मीन अपनी' के कई उदाहरण दृष्टव्य है

अलका, अंकिता फ्रॉम फिल्मरस....

मेहत्ता फ्रॉम फिल्मरस टू... हाय।"[(1)]

"फॉर योर काइंट इनफॉरमेशन"[(2)]

"यू मस्ट गो' x x x x व्हाट अबाउट पेमेंट्स?"[(3)]

"आई एम रियली सॉरी अंकू" ।[(4)]

"मि. सक्सेना दिस शोल्डर बिलांग्स टू मी...।"[(5)]

कई अंग्रेज़ी शब्द जैसे रिएक्ट, ट्रे शो, सैक्सी, क्लइंट्स, टीम, रिलैक्सड, एक्रिडेशन, कमेंडरी, दैट बास्टार्ड, हेट, हिम, पेरफेक्ट मर्डर आदि कई शब्द भी उपन्यास में मिलते हैं।

---

1. चित्रा मुदागल एक ज़मीन अपनी पृ. 6
2. वहीं पृ. 6
3. वहीं पृ. 15
4. वहीं पृ. 21
5. वहीं पृ. 34

चित्राजी के दूसरे उपन्यास में भी अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग हुआ है

"सुरक्षा गार्ड उनकी परछाई से उनके साथ रहते हैं।"(1)

"ओह एस... बोत सारे पेशेंट ठीक होके घर को गए टाइम लगता थोड़ा।"(2)

"उसका स्पेशल केयर होना।"(3)

"नई-नई इमरजेंसी में एकदम आलाउड नई।"(4)

"प्लीज़ सिस्टर, डू मी अ फेवर।"(5)

"ही इज़ इन डीप कॉमा।"(6)

"मेड फॉर ईच अदर' फाइनल राउंड में पहूँचने के बावजूद पुरस्कार से वंचित रही।"(7)

अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग बीच-बीच में भी हुआ है जैसे मेडिसिन, रिपोर्ट, स्कल स्कैन, राउंड, कॉमा, रिटयर, पेमेंट, सर्जरी, रिसेप्शन, सिंपल, केस, पेपर आदि।

उनका तीसरा उपन्यास 'गिलिगडु' भी शहरी पृष्ठभूमि में लिखा गया है। इसलिए अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है।

---

1. चित्रा मुदागल आवाँ पृ. 345
2. वहीं पृ. 335
3. वहीं पृ. 334
4. वहीं पृ. 327
5. वहीं पृ. 327
6. वहीं पृ. 327
7 वहीं पृ. 423

'सेवन वंडर्स में जो मिश्र के पिरमिड...[1]

"नेवर मैंड"[2], "व्हाट्स रांग"[3], "लेट्स सीट"[4]

"सर लिव लैक शेर"[5], "बाय दि वे"[6], यू आर लक्की केनल। आय एनवी यू"[7], "प्रश्न एडजस्टमेंट का है"[8], "रिवरसाइड व्यू"[9]

शहरी जीवन सन्दर्भ को प्रकट करने में अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग सही लगता है।

कथानुकूल भाषा का प्रयोग

'आवाँ' उपन्यास समकालीन जीवन का सही दस्तावेज़ है। आधुनिक युग में युवा पीढ़ि मॉडलिंग, अभिनय, विज्ञापन आदि की ओर उन्मुख है। इन क्षेत्रों में मध्यवर्ग के लोग ही ज़्यादातर आते हैं और वहाँ उन्हें शोषण करने के लिए उच्चवर्ग के लोग हैं। 'आवाँ' में सामाजिक जीवन के बृहत सन्दर्भ चित्रित हैं।

झोंपड़-पट्टी में जीवन बितानेवाले लोगों की भाषा पात्र के अनुरूप ही गढित है। उदाहरण केलिए

---

1. चित्रा मुदागल गिलिगडु पृ. 48
2. वहीं पृ. 69
3. वहीं पृ. 61
4. वही पृ. 61
5. वहीं पृ. 63
6. वहीं पृ. 72
7 वहीं पृ. 73
8. वहीं - पृ. 80
9. वहीं पृ. 100

"काहे को नहीं करेंगे। मदद की खातिर ही बने है हम। मज़दूर है, मुला समाज सेवा का बहुत शौक है हमें।"[(1)]

"एथी उदर किससे मिलना है आपका।"[(2)]

चौकीदार की भाषा देखिए

"जेवण (लंच) की छुट्टी खत्म होने में अजुन पांच मिनिट बाकी हॉय।"[(3)]

"नई एक तास (घंडे) से ऊपर हो गया।"[(4)]

"तुम को शायद मालुम नई नमिता, जैक को मैंने नई छोड़ा, वो मेरे को छोड़के चला गया। दारू के वास्ते मैं उससे बोत झगडा करती होती न। पन जैक बैड कास्क्टर नई उसको फकत दारू का लत होता, औरतकाजी का नही।"[(5)]

यहाँ बम्बइया हिन्दी का प्रयोग हुआ है।

पवार विद्रोही, तेजस्वी एवं युवा पीढ़ी का नेता है। उसकेलिए प्रयुक्त भाषा उसके चरित्र के अनुरूप है

---

1. चित्रा मुदागल आवाँ पृ. 103
2. वहीं पृ. 103
3. वहीं पृ. 103
4. वहीं पृ. 108
5. वहीं पृ. 110

"उठो चलो कैंटीन की ओर मार्च करें। चाय की तलब महमूद गज़नबी सी आक्रामक हो रही। भूक ऊपर से तबाह किए हुए है।"(1) पूरे उपन्यास में पवार की भाषा ऐसा ही अलंकृत एवं साहित्यिक शैली में है।

नीलम्मा की भाषा ऐसी है जो नौकरानियाँ बोलती हैं "काय कू अम्मा"(2)

"मैं लेके जाना न आपको अम्मा। हब्शी गुडा में मेरे पेचान का नर्सिंग होम होना। काम किया मैं उधर डेढ महीना। डॉक्टर पंचानती मेरे को।"(3)

पात्रों की मानसिकता के अनुकूल भाषा का प्रयोग

पात्रों की मानसिकता और प्रसंगों के अनुकूल भाषा के चयन में लेखिका ने ध्यान दिया है। घर पर बेटी के रूप में पिता और माता से नमिता की भाषा अलग है। पिता से उसकी बातचीत आँखों की चलन से भी समझ सकती थी, यहाँ भाषा केवल वाणी मात्र से नहीं, पिता के कुम्हलाये चेहरे से भी बात समझती। कहीं, कहीं नमिता माँ से कटु शब्दों में बातचीत करती थी।

"रहने दे, नाटक, नौटंकी। मैं पूछती हूँ, माया-ममता के ऐसे ही परनले उतारने के व्याकुल फूटे पड़ रहे तो तनिक पूछे अपने बाबूजी से अम्मा की रजाई गद्दा, पलंग, पायदान सर-खंड, सुपारी, बेना काहे उठा के दान-पुन्न कर दिया? घरे रहते सांजा।"(4)

---

1 चित्रा मुदागल आवाँ पृ. 345
2. वहीं पृ. 496
3. वहीं पृ. 496
4. वहीं पृ. 39

परिवार में पिता से मिले क्रूर व्यवहार से तंग होकर स्मिता में विद्रोह एवं घृणा भर जाती है। उसकी भाषा में पुरुष जाति और सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश है।

"मैं राक्षस के जबडे के नीचे घुटे रहे अपने परिवार की कोई और तसवीर बनाना-देखना चाहती हूँ। दूरदर्शन पर दिखानेवाले 'बोनविटा' या हॉर्लिक्स के सुखी संतुष्ट परिवारों की भाँति... अपने निश्चय का जब भी विश्लेषण करती हूँ, स्वयं को तिल भर टस से मस नहीं कर पाती....।"(1)

पिता के प्रति जो घृणा उसमें है वह घृणा पूरा पुरुष जाति के प्रति वैसा ही है। यही मानसिकता उसे कभी पागलपन की स्थिति तक पहूँचाती "अक्सर लगता है कि मैं कभी जीवन में सहज नहीं हो पाऊँगी। बाप का बदला मैं शरत से लेती रही, उसे उद्दीप्त कर ऐन मौके पे लात लगा.... विक्रम भी उसी कड़ी हो रहा, मगर विक्रम को मैं खोना नहीं चाहती....।"(2)

चित्रा मुद्गल की कहानियों की शिल्पपरक विशेषताएँ

महिला रचनाकारों ने ज्यादातर नारी के वैयक्तिक जीवन, पारिवारिक टूटन, नारी शोषण कामकाजी नारी की समस्याएँ आदि को बड़ी बारीकी से अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। पहले स्त्री पात्रों को पारिवारिक जीवन के सन्दर्भ में ही प्रस्तुत किया गया है। समकालीन महिला कहानीकारों में ममता कालिया, मंजुल भगत, चन्दकान्ता, मृणाल पाण्डे, सुधा अरोडा, मणिका मोहिनी, कृष्णा अग्निहोत्री, दीप्ती खण्डेलवाल, प्रतिभा वर्मा, राजी सेठ, मालती जोशी, अचला शर्मा, नमिता सिंह, चित्रा मुद्गाल, नासिरा

---

1. चित्रा मुदागल आवाँ पृ. 43
2. वहीं पृ. 373

शर्मा, निरूपमा सेवती, सूर्यबाला, सुनीता जैन, आदि प्रमुख हैं जिन्होंने शैल्पिक गरिमायुक्त कई कहानियाँ हिन्दी को प्रदान की हैं।

चित्रा मुद्गल एक सफ उपन्यासकार के समान सफल कहानिकार भी हैं। उनके अब तक चौदह कहानी संकल प्रकाशित है। उनकी अधिकांश कहानियाँ पारिवारिक जीवन, नारी जीवन आदि को केन्द्र में रखकर लिखित है। इसके अलावा राजनीतिक समस्याओं को भी उन्होंने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। साथ ही समाज में उपेक्षित अनाथ बच्चों की गलियों में सड़ती जिन्दगी और वेश्याओं के जीवन को भी सृजन का विषय बनाया गया है। उनकी 'मुआवज़ा' 'सौदा', 'अभी भी' 'ताशमहल, 'प्रमोशन' 'लकडबग्धा' 'इस हमाम में' 'अग्निरेखा' 'पाली का आदमी' 'शिनाख्त हो गयी' 'अपनी वापसी', 'शून्य' 'मोर्चा पर' 'स्टोपिनी' 'दुल्हिन' 'केंचुल' 'बावजूद इसके', 'रूना आ रही है' आदि कहानियाँ, पूर्ण रूप से पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित हैं।

कथावस्तु की विशेषताएँ

'मुआवज़ा' की कथावस्तु आधुनिक जीवन की लोभी मानसिकता को प्रस्तुत करते है। विमान चालक शैलु अपहरणकर्ताओं द्वारा मारी जाती है। मधु उसकी माँ है, पुत्री के वियोग दहलती मधु को मुआवज़ा का प्रपत्र मिलता है। सुमित शैलु का पति है जो पहले ही जुदा ही गया था। सुमित माँ-बाप से शैलु के मुआवज़े में से अपना हक माँगता है। लेकिन शैलु का पिता बेटी की इच्छा के अनुसार प्राप्त रकम वनिताश्रम को दे देता है। इसमें असफल दाम्पत्य के अलावा इकलौती बेटी की मृत्यु पर तपते माँ-बाप की मानसिकता को भी इसमें प्रस्तुत किया गया है।

'अभी भी' कहानी भी 'मुआवज़ा' की कथावस्तु से मिलती जुलती है। इसमें धन लोलुपता और परिवार में नारी के शोषण का चित्र है। बडे भाई की मृत्यु से मिले मुआवज़े को अपनाने केलिए छोटा भाई भाभी से आदि करता है। शादी के बाद घरवाले कोई न कोई कारण बताकर पैसा हड़पता है। आखिर शिल्पा अपनी इस दुर्दश को समझ लेती है और विद्रोह करने लगती है।

'सौदा' कहानी में पत्नी के अन्दर-संघर्ष की कथा है। पत्नी द्वारा पीड़ित लड़की के जीवन को बचाने का निर्णय लेती है। यही कहानी का मुख्य विषय है। पत्नी और माँ का कर्तव्य और स्त्री होने के नाते स्त्री पर होनेवाले अत्याचार के प्रति विद्रोह ये दोनों कहानी में अभिव्यंजित है। आखिर उसका कर्तव्य बोध जीत जाता है। पत्नी, पति से बेचारी लड़की को सुरक्षित स्थान पर पहूँचाती है।

'ताशमहल' कहानी में शादी के पहले पति या पत्नी को किसी अन्य सम्बन्ध में जन्मे बच्चे को लेकर पारिवारिक जीवन में होनेवाले संघर्ष की कथा है। शोभना शादी के पहले ही शर्त रखती है कि दूसरे बच्चे को जन्म नहीं देगी। पति निशीथ पहले सहमत होता है। लेकिन जब दूसरे बच्चे का जन्म हुआ। उसके तो चरित्र में बदलाव आ गया वह बच्चु से घृणा करने लगा। न्युमोणिया से पीड़ित बच्चु को अस्पतल ले जाने को उसने इनकार किया। नौकशी पेशा नारी की विवशता और अवैध सम्बन्ध में जन्मे बच्चे के कारण घर पर होनेवाले संघर्ष एवं पुरुष की अहंभावना आदि का चित्रण इसमें हुआ है।

'प्रमोशन' में पारिवारिक विघटन की कथा प्रस्तुत है। आधुनिक शिक्षित नौकरी पेशा युवा पीढ़ी मानसिक रूप से जितना रुग्ण है इसका चित्र इस कहानी में प्रस्तुत किया गया है। सुभाष सोचता है कि ललिता का प्रमोशन उसकी प्रतिभा से नहीं, बल्कि डॉ. कोठारी की अनुकम्पा से हुआ है। इसलिए सुभाष ने ललिता को काम पर जाने को रोका। ललिता ने पति की मानसिकता को जानकर कहा "मानसिक तौर पर रुग्ण तुम हो मैं नहीं.... कान खोलकर सुन लो तुम्हारी कुंठाओं द्वारा रचा हुआ सत्य मेरी नियति नहीं बन सकता.....।"(1) आखिर घर और नौकरी में तुमें क्या चुनना है प्रश्न के उत्तर में अकेली जीने का निर्णय कर के बिना उत्तर दिये बाहर जाती है।

'लकड़बग्धा' में सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ विद्रोह करके अपने बेटी को उच्च शिक्षा देने में प्रयत्नरत एक ग्रामीण विधवा की कथा है। 'इस हमाम में' कहानी में उच्चवर्ग की नारी और निम्न वर्ग की नारी की कहानी है। इस कहानी में फ्लैट में बन्धिता नारी जीवन की विसंगति और निम्न वर्ग की नारी की खुले जीवन का चित्रण है।

'अग्निरेखा' कहानी की कथावस्तु भी पारिवारिक है। इसमें निष्क्रियता, अपंगता एवं असमर्थता में पड़ी पत्नी मनु का शंकालु चरित्र बहन शाशि और मनु के पति अमरेन्द्र के जीवन को नरक तुल्य बना देता है। नारी जीवन की विडम्बनात्मक स्थिति का चित्रण इस कहानी में है।

'पाली का आदमी' में अपने परिवार के सुखद माहौल को बनाये रखने केलिए एक पिता अपनी किशोर-अवस्था के देह सम्बन्ध में जन्मी

---

1. चित्रा मुदागल जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं पृ. 73

बच्ची के प्यार को ठुकरा देता है। इस कहानी में अनाथ लड़की की विवशता की कथा भी है।

'शिनाख्त हो गई' में डाँट खाकर घर से भाग निकले लड़के को लेकर घरवालों की मानसिकता का चित्र है। 'अपनी वापसी कहानी की कथावस्तु आधुनिक पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित है। इसमें आधुनिकता बोध और नयी संस्कृति को अपनाकर सामाजिक मूल्यों को तिरस्कार करनेवाली नयी पीढ़ी के सामने विवश होनेवाले सकुन जैसी माँ का मानसिक संघर्ष है।

'शून्य' कहानी में नारी जीवन की असहाय स्थिति और पुरुष द्वारा बार-बार शोषण की नियति आदि का चित्र है। 'मोर्चा पर' में सुखी पारिवारिक जीवन के बीच से पति की मृत्यु हो जाने पर होनेवाली दुःखमय स्थिति का चित्र प्रस्तुत है। 'स्टेपिनी' कहानी की कथावस्तु भी पारिवारिक सन्दर्भ की है। स्टेपिनी शब्द प्रतीकात्मक है।

'दुल्हिन' कहानी पारिवारिक पृष्ठभूमि में लिखी गयी है। इसमें कुछ विशेष मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है। गाँव में प्रचलित रूढ़ि के कारण आधुनिक काल में मानव जीवन किस प्रकार तनाव ग्रस्त हो जाता है इसका उदाहरण है। 'बावजूद इसके' नामक कहानी में चित्राजी ने यह दिखाने की कोशिश की है कि पाश्चात्य संस्कृति के और फैशन के प्रभाव से समकालीन परिवार में किस प्रकार का बदलाव और पति-पत्नी के आपसी वैमनस्य, संघर्ष एवं अलगाव होता है।

समकालीन समाज की एक ज्वलंत समस्या है बेकारी। बेकारी के कारण युवा पीढ़ि कुछ भी करने को तैयार हो जाती है। बेकार व्यक्ति

परिवार एवं समाज को एक बोझ बन जाता है। चित्राजी की कहानियाँ 'पेशा' 'बन्द' 'लिफाफा' आदि की कथावस्तु बेकारी की समस्या के विभिन्न आयामों को अभिव्यक्ति करती है।

चित्राजी की 'शहर' 'लेन', 'चेहरे' 'ब्लेड', 'मुआवज़ा' 'बेईमान' 'बंद', 'त्रिशंकु' 'जिनावर' आदि कहानियों की मुख्य कथावस्तु गरीबी या आर्थिक संघर्ष है। गरीबी के कारण गरीब ही जिसप्रकार गरीब को लूटता है उसका चित्रण 'शहर' में प्रस्तुत है। 'लेन' कहानी में निम्नवर्गीय परिवार में हुई विपदा का चित्रण है। घर की एकमात्र आय दत्तूराम है। किन्तु एक हमले में उसकी जान बची और वह हमेशा केलिए पलंग पर पड़ने को विवश हो गया। पत्नी मेहन्दरी आक्रमियों को पुलिस से पकड़वाने की कोशिश करती है। लेकिन हत्यारों के द्वारा दिये गये रुपये स्वीकार कर उन्हें कानून से बचाने का निर्णय लेती है। जीने केलिए उन्हें धन की ज़रूरत है, कानून की नहीं। 'चेहरा' में गरीबी और विवशता की कहानी प्रस्तुत की गयी है। 'ब्लेड़' कहानी में एक ड्रावर के माध्यम से आर्थिक समस्या के दूसरे पक्ष को प्रदर्शित किया गया है। अर्थाभाव के कारण वह ड्राइवर अपना वेतन अड्वान्स के रूप में लेता है। परिस्थिति के दबाव से वह गाड़ी को जानबूझकर नुकसान कर मालिक से पैसा कमाने की कोशिश करता है। 'बेईमान' कहानी में पैसा कमाने के चक्कर में अनैतिक कार्य करने को विवश एक अनाथ लडके की कहानी है। 'बंद' कहानी में भी बंद के दिन में तीन युवकों द्वारा किये अनैतिक कार्यों की कथा है।

सामाजिक संसक्ति की दृष्टि से चित्राजी की 'पहचान', 'राक्षस' 'गणित', 'रिश्ता', 'सेवा', 'बोहनी', 'व्यवहारिकता', 'बाज़ार', 'प्राथमिकता'

आदि कहानियाँ बहुत उल्लेखनीय हैं। लोगों की गलत मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है। यात्रा के दौरान युवती के बटुवा की चोरी होती है। टिकट परीक्षक के आने पर वह प्रार्थना करती है "विश्वास कीजिए.... चाहें तो मेरा पता लिख लेकिन उसकी बातों को वह स्वीकार नहीं करता। तब यात्रियों से एक व्यक्ति उसका जुर्माना अदा करता है। तब लोग कहते हैं - "गैंग चलता है भाई इनका.... एक पकड़ा जाए तो दूसरा फौरन छुटवा लेता है।"(1) 'ज़रिए' कहानी में समाज में व्याप्त छल-कपट का एक अच्छा नमूना प्रस्तुत किया गया है। समाज में कुछ ऐसे लोग हैं जो दूसरों की आँखों में धूल झोंककर अपने कार्य प्राप्त करते हैं। इस प्रवृत्ति की की ओर कहानी में इशारा किया गया है।

'होना सम्पादक पत्नी' में ऐसे एक रचनाकार की मानसिकता प्रस्तुत है। संपादक की पत्नी होने के नाते साहित्य समारोहों में लेखिका को भी आमंत्रित किया जाता है। आखिर वह समझ लेती है कि नये लेखक अपनी रचनाओं को छपवाने के आसान तरीके के रूप में संपादक की पत्नी को साहित्य समारोहों में बुलाते हैं।

'लाक्षागृह' में बद्सूरती के कारण समाज में और परिवारों एवं रिश्तेदारों से उपेक्षा एवं घृणा रखनेवाली लड़की सुन्नी की कथा है। शादी के बाज़ार में सरकारी नौकरी होने पर भी अपनी बदसूरती के कारण कोई उससे शादी करने नहीं आता। 'सैक्स वर्क' करनेवाली स्त्रियों के बच्चे सचमुच अनाथ जैसे हैं। ऐसे बच्चों को शिक्षा देकर ठीक रास्ते पर लाने

---

1. चित्रा मुदागल बयान पृ. 58

केलिए कोशिश करनेवाली संस्था 'होम' में बच्चों की, परीक्षा के नतीजे की प्रतीक्षा करनेवाले कार्यकर्ताओं की मानसिकता को 'नतीजा' शीर्षक कहानी में प्रस्तुत किया गया है।

विधवा जीवन समाज में हमेशा कई प्रकार की समस्याओं का कारण बन जाता है। नारी जन्म की सबसे दुखमयी अवस्था है विधवा जीवन। चित्राजी की 'अभी भी', 'मोर्चे पर' 'गर्दी' 'नीले चौखानेवाले कम्बल' 'भूख' 'सुख' आदि कहानियाँ विधवा जीवन पर केन्द्रित हैं। 'अभी भी में विधवा हो जाने पर देवर से दुबारा शादी करने केलिए विवश शिल्पा की कहानी है। 'मोर्चे पर' में भरत पाकिस्तान युद्ध में गए पति की खबर न पाकर विधवा जैसा जीवन बितानेवाली बिट्टी की कथा है। 'गर्दी' में पति रमेश की मृत्यु के बाद तन्हाई की जिन्दगी जीती राजी की कहानी है। 'नीले चौखानेवाले कम्बल' में विधवा जीवन का मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत है। विधवा टिकैतिन कक्की जीवन को इसमें बडी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

चित्राजी की 'पाठ' 'लपटें', 'बंद', 'जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं' आदि राजनीतिक सन्दर्भ को रेखांकित करनेवाली सशक्त कहानियाँ हैं। जनसेवकों के जनविरोध व्यवहार आम जनता की भूख, गरीबी, और विवशता का शोषण करनेवाले राजनीतिक नेताओं के चरित्र को उन्होंने अपनी कई कहानियों में प्रस्तुत किया है। 'लपटें' में आधुनिक राजनैतिक नेताओं के छलपूर्ण आचरण का खुलासा किया गया है। वोट पाने केलिए तथाकथित नेता लोग जिस प्रकार के छल छद्मपूर्ण व्यवहार करते है, उसे ही 'जगदम्बा बाबू गाँव आ आ रहे हैं' में व्यक्त किया गया है।

वेश्या जीवन पर आधारित कहानियाँ हैं 'फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती', 'चेहरे' आदि। फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती के नारी चरित्रों द्वारा यह दिखाया गया है कि युवतियों को रंड़ियों के रूप में परिणत करने का जिम्मेदार पुरुष ही नहीं उसमें नारी समाज भी है। 'चेहरे' में भूख मिटाने केलिए शरीर बेचनेवाली भिखारिन की कथा है। समाज में ऐसी स्त्रियाँ कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करती हैं।

चित्राजी की 'केंचुल' 'डोमिन काकी','भूखे-नंगे' 'चेहरों, 'इस हमाम में', 'मामला आगे बढेगा अभी' 'त्रिशंकु' 'भूख' 'बलि' आदि कहानियाँ निम्नवर्ग की नारियों एवं बच्चों की मानसिकता पर केन्द्रित है। 'केंचुल' निम्नवर्गीय जीवन का सही दस्तावेज़ है। कमला इसकी नायिका है। डॉ मधुरेश ने लिखा है "उसके विश्वासों की केंचुल उतरने की कहानी 'केंचुल' में बतायी गयी है।"(1) कमला अपने जीवन में घटित घटनाओं को पुत्री पर होने की संभावना देखकर डरती है। विधवा कमला घर संभालने केलिए कई नजायज काम करती है। शराब का व्यवसाय करनेवाली कमला जैसी अनेक स्त्रियाँ आज हमारे समाज में हैं।

'डोमिन काकी' की कथावस्तु चित्राजी के ही जीवन में घटित एक घटना पर आधारित है। 'डोमिन काकी' जैसी स्त्री समाज में अपने मालिकों के प्रति जितना ईमानदार है उतना ही घृणा की पात्रा भी है। मालिकिन द्वारा दिखाया गया प्यार केवल दिखावा है। "भूख-नंगे" नामक लघु कहानी का कथ्य झोंपड़-पट्टी के जीवन की दरिद्रता, असहाय, अवस्था, भूख आदि

---

1. डॉ. मधुरेश हिन्दी कहानी अस्मिता की तलाश पृ. 209

है। 'चेहरा' कहानी में कई समस्याएँ हैं जैसी भूख, वेश्या जीवन, श्रम शोषण, नारी शोषण आदि।

'चेहरे' में निम्न वर्ग के जीवन संघर्ष का चित्र है। भिखारिन का श्रम और उसका शारीरिक शोषण निरन्तर होता रहता है। भिखारी लोगों के सम्बन्ध में कई कहानियाँ चित्राजी ने लिखी है जैसे 'बोहनी' 'शहर' आदि। 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' में 'मोट्या' नामक लड़के के माध्यम से स्लम की जिन्दगी में अनाथ होकर जीते बच्चों की ज़िन्दगी चित्रित है। दूसरों के घर पर काम करनेवाले इन बच्चों का जीवन तक उनकेलिए समर्पित है। मोट्या मालिकिन से माँ जैसे व्यवहार करता है। लेकिन जब वह बीमार होकर पड़ गया तो हिसाब देखने वक्त बीमारी के दिनों का वेतन काटकर देती है। यह उसके छोटे मन को घोर अघात पहूँचाता है। वेतन काटने से ज्यादा चोट उसको मेम साहब की चुप्पी से हुई।

'त्रिशंकु' में बाल जीवन को प्रस्तुत किया गया है। दारू पीकर जब पिता माँ को पीटता है तब बच्चों के मन में संघर्ष होता है। माँ को पीटते-घसीटते देखकर दो बच्चे रात में सोते थे। "नित्य हो रही इन घटनाओं से उसकी नीन्द कच्ची हो गयी और उसका मन चिरपरिचित अगले दृश्यों की प्रतीक्षा करने लगता।"[1] झोंपड पट्टी के दूषित वातावरण का चित्रण भी इसमें है।

वृद्ध जीवन को विषय बनाकर लिखी गयी कहानी है 'मिट्टी' और 'गेंद'। आधुनिक व्यस्त जीवन और अजीविका केलिए बेटे के विदेश

---

1. चित्रा मुदागल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 57

जाने पर अकेले हो जानेवाले बूढे माँ-बाप की मानसिकता को सचदेवी द्वारा व्यक्त किया गया है।

'मिट्टी' कहानी की कथावस्तु वृद्ध माँ की मृत्यु के इन्तज़ार में बैठे लालची बच्चों पर आधारित है। बेसुध माँ से वे यह जानता चाहते हैं कि गहनों और चाँदी का सिक्का उसने कहाँ रखा है। बुढ़िया गंगाजल और रामायण की सुन्दरकाण्ड सुनने का आग्रह करती है। लेकिन उसे सुननेवाला कोई नहीं था, सब ज़मीन खोदने में लगे हुए थे। इसी बीच बुढ़िया मर जाती है, पास कोई नहीं था।

शहरीकरण और मीडिया के दुष्प्रभाव को विषय बनाकर लिखी गयी कहानियाँ हैं 'बाद्य' और 'अढ़ाई गज की ओठनी'। बाद्य में पुरोहित जी नामक पात्र के माध्यम से शहरी जीवन के संघर्ष, अजनबीपन, व्यस्तता, आदि को चित्रित किया गया है। शहर के व्यक्ति को 'क' 'ख' 'ग' नामकरण से चित्राजी ने शहरवालों व्यक्तित्व को एवं छली मुखौटे को व्यक्त किया है। 'अढ़ाई गज की ओढ़नी' में फ्लैट की ज़िन्दगी और मीडिया के दुष्परिणाम की चर्चा हुई है। केबल से प्रसारित ज्ञानवर्द्धक सामग्रियों के साथ बच्चों पर दुष्प्रभाव डालनेवाले संगीत-नृत्य आदि का प्रसारण भी होता है। मनोरंजन केलिए केबल जितना समर्थ है उतना गुमराह करने केलिए भी। आधुनिक विचार, चिन्तन आदि बड़ों का विषय बन गये हैं पर छोटे बच्चों के मन में इसका दुष्परिणाम पड़ता है क्योंकि छोटे बच्चे उन बन्दरों के समान है वे जो कुछ देखें उसका उसी प्रकार अनुकरण करते है।

भूख की त्रासदी को व्यक्त कर देनेवाली कहानियाँ हैं 'जिनावर' 'भूख', 'चेहरा', 'गली', 'रक्षक-भक्षक', 'नसीहत' आदि। भूख की विकराल स्थिति को इन कहानियों के माध्यम से चित्राजी ने बड़ी मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। 'जिनावर' में आर्थिक तंगी और अभावग्रस्तता के बावजूद अपनी प्रिय घोड़ी सरवरी की सूखी हड्डियों पर भी आजीविका खोजी जाने की कथा है। 'भूख' की विवशता माँ को अपने बच्चे को किराये पर देने को विवश कर देती है। 'चेहरा' में एक भिखारिन की कथा है जैसे भीख से मिले पैसों का एक हिस्सा अफसरों, पुलिस अधिकारियों को देना पड़ता है। 'गली' में चित्राजी एक बच्चे के माध्यम से भूख का दूसरा चेहरा प्रस्तुत करती है। लेखिका कहती है "यह देश बच्चों को खिला नहीं सकता तो पैदा क्यों करता है?"[1] हमारे देश में छोटे या बड़े भूख मिटाने केलिए क्या क्या करते हैं इसका चित्रण है। 'रक्षक-भक्षक' में चित्राजी ने समाज के एक पुराने विश्वास को तोड़ते हैं। लोगों का विश्वास है कि भीख देना है तो अपाहिजों को देना है। इस विश्वास पर एक छोटा बालक प्रश्न चिह्न लगाता है "तुम्हीच लोग गरीब लाचार का हाथ-पाव तुडेवाते हाय,... सबूत अंगवाले की कोई भी नहीं देता....।[2] समाज में फैली गलत धारणा पर यहाँ व्यंग्य है। 'नसीहत' की कथावस्तु भी भिखारी बालक पर केन्द्रित है।

चित्राजी अपनी 'वैश्फस्वैपी' 'एंटीक पीस' आदि कहानियों में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से पारिवारिक जीवन पर आए बदलाब को अभिव्यक्त करती है। आधुनिक जीवन की नयी सभ्यता यहाँ तक पहूँची है कि रात में पार्टी में जाकर खूब पियें, आपस में मिलजुलकर डान्स करें और आखिर पति-पत्नियों को आपस में बाँट कर पूरा रात बिताएँ।

---

1. चित्रा मुदागल बयान पृ. 74
2. वहीं पृ. 54

विद्रोही नारी चरित्र को केन्द्र में रखकर लिखी गयी कहानियाँ हैं 'नाम' 'जब तक विमलाएँ हैं', 'लकड़बग्धा' 'प्रेतयोनी' 'सौदा' आदि। 'नाम'-नामक छोटी कहानी डोम की पतोह रतिया अपने-बेटे का नाम स्कूल में देवेन्द्र प्रताप सिंह रखती है। पंचायत द्वारा पूछताछ करने पर वह खुलकर बताती है "ठाकुर के बेटे का नाम ठाकुरों जैसा न धरें तो क्या हो चमारोंवाला धरें दें।"(1) रतिया का उत्तर उसके दमित जीवन के प्रति विद्रोह का है।

"जब तक विमलाएँ हैं' में विमला एक ऐसी नारी है, जिनमें अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने की ताकत है। अपनी छोटी बेटी पर हुए अन्याय के विरुद्ध घर, परिवार और पड़ोसिन की बातों को नकारकर वह पुलिस थाने में हर्जी देती है और अत्याचारी को सही सज़ा दिलवाती है। 'लकडबग्धा' की पछांहवाली भी ऐसी विद्रोही नारी है जो सामंती शोषण के विरोध में विद्रोह करती है। पारिवारिक रूढियों से प्रतिशोध कर अपनी बेटी को इलाहाबाद भेजकर पढ़ाने को निर्णय लेती है।

'प्रेतयोनी' एक ऐसी कहानी है जिसमें यह दिखाया गया है कि नारी को अपनी अस्मिता की लड़ाई अपने ही घर से शुरू करनी पड़ती है। इस कहानी में अनिता के विरुद्ध खड़े रहनेवालों में उसके माँ-बाप भी है। यह कहानी केवल एक अनिता की नहीं, बद्‍माशों की हवस के शिकार बननेवाली कई लडकियों की कहानी है।

इस प्रकार चित्राजी की कहानियों की कथावस्तु सामाजिक जीवन के जीवन- यथार्थ पर आधारित है।

---

1. चित्रा मुदागल बयान पृ. 69

चित्रा मुद्गल की कहानियों में पात्र एवं चरित्र चित्रण

कहानी में पात्र एवं उसके चरित्र का महत्वपूर्ण स्थान है। घटना, कथा और परिस्थिति का सृजन कहानीकार पात्रों के ज़रिए करता है। इसलिए पात्र और उसका चरित्र कहानी का प्रमुख अंग है। घटना का सम्बन्ध प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में पात्र के चरित्र से होता है। कहानीकार पात्रों एवं चरित्रों को कल्पना की सहायता से प्रस्तुत करता है। लेकिन चित्राजी का हर पात्र उसके अनुभव से जुड़े पात्र हैं। उदाहरण केलिए उसकी प्रथम कहानी 'डोमिन काकी' के पात्र 'डोमिन' उसका घर के नाल साफ करने आयी नौकरानी है। इसी प्रकार उसका हर पात्र हर घटना यथार्थ जीवन से जुड़ा हुआ है। इसलिए पात्रों में विश्वसनीयता और परिचित माहौल का चित्र देखने को मिलते है।

कहानीकार समाज से पात्रों की प्रेरणा ग्रहण करके कल्पना की सहायता से एक नए रूप देता है। कहानीकार को अन्य विधाओं के समान विस्तृत वर्णन का मौका नही मिलता, इसलिए विशिष्ट तथ्यों द्वारा घटनाओं को अभिव्यक्त करता है। कहानी में पात्रों की संख्या सीमित होती है। मुख्य रूप से पात्र दो प्रकार के होते है मुख्य पात्र और गौण पात्र। प्रमुख पात्र का चरित्रांकन करते हुए विशेष घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। कथावस्तु, संवाद आदि से भी चरित्र-चित्रण होते है। चित्राजी की कहानियाँ में उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग के पात्रों का चित्रण हुआ है। चित्राजी की कहानियाँ में मुख्य पात्र स्त्री होने के नाते पुरुष पात्र गौण है।

उच्चवर्ग के स्त्री पात्र का चरित्र चित्रण

उच्चवर्ग के नारी पात्र की मानसिक संघर्ष एवं विवशता को चित्राजी ने अपनी कहानियाँ में प्रस्तुत किया। पुरुष द्वारा संचलित परिवार में उच्चवर्ग की शिक्षित स्त्रियाँ जिस प्रकार दम घुटकर जीते हैं इसका उदाहरण है "इस हमाम में कहानी। रूढ़ि और पाखंड के बवंडर से घिरे उसके आहत मन में स्वतंत्रता की चाह थी। कोई नौकरी न करके दिवा को अपना पूरा जीवन फ्लैट के अकेलापन में ही बिताना पड़ा। इसमें नारी की गुलामीनुमा जीवन को यों प्रस्तुत किया है। बेटी, बहु, पत्नी, माँ-नारी... पैदा होते ही उसे सम्झाना शुरू कर दिया जाता है कि उम्र के हर टुकडे को दूसरों की सुविधाओं के अनुकूल आत्मसात् कर जीने में ही उसका जीना है।"(1)

'वाइफ फ्स्वैपी' कहानी में उच्चवर्ग की नारी के चरित्रहीन जीवन को प्रस्तुत किया गया है। 'मिसेस फलाँ' में उच्चवर्गीय नारी का विलासी जीवन प्रस्तुत है। पति-पत्नी झूठे कसम खाकर एक समझौते पर जीते है कि वे आपस में ईमानदार हैं। 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' की मेम साहब नामक पात्र के ज़रिए उच्चवर्ग की नारी की घुटन, एकाकीपन, विवशता आदि को व्यक्त किया गया है। 'अग्निरेखा' की 'मनु' का चरित्र भी ऐसा है। ड़ेढ़ साल से बिस्तर पर पड़ रहने के कारण जीने का विश्वास, प्रतीक्षा सब नष्ट हो जाते हैं। काम में व्यस्त पति के व्यवहार ने उसके मन को भी अपाहिज कर दिया। 'अपनी वापसी' के 'रिन्नी', 'दीनु' आदि के चरत्र के ज़रिए उच्चवर्ग के युवा समाज की मानसिकता को व्यक्त किया गया है।

---

1. चित्रा मुदागल भूख पृ. 78

उच्च वर्ग की युवा पीढि फाशन, मॉडलिंग आदि की ओर आकर्षित है। ऐसे पात्रों के सृजन से चित्राजी ने युवा पीढ़ि में पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण से नैतिक मूल्यों का जो पतन होता है उस की ओर संकेत किया है।

'बावजूद इसके' की प्रीति का चरित्र उच्चवर्गीय मानसिकता से मुक्त चरित्र है। पति की 'एक्सक्लुसीव लैफ' को स्वीकारने को वह तैयार नहीं है। रात में क्लब, पार्टी में भाग लेना, भोजन कहीं स्टार हॉटल से या दोस्तों के घर से खाना आदि गोयल का जीवन था। लेकिन उच्चवर्ग के होने पर भी प्रीती में ऐसे जीवन को नहीं अपनाती हैं।

'प्रमोशन' कहानी की नारी ललिता नौकरी पेशा है जो आधुनिक शिक्षित अहंग्रस्त युवा पीढ़ि का प्रतिनिधी है। इसलिए पति द्वारा किये गये झूठे अभियोग को झेलने को वह तैयार नहीं है। पति सुभाष उसे हमेशा शंका की दृष्टि से देखता है क्योंकि खुद सुभाष ने भी अपने दफ्तर की एक युवती से सम्बन्ध रखा था। सुभाष ने ललिता को काम पर जाने को रोका लेकिन सरला उसे ज्यों ही त्यों छोड़ दिया। वह कहलाती है मानसिक तौर पर रुग्ण तुम हो मैं नहीं... कान खोलकर सुल लो तुम्हारी कुंठाओं द्वारा रचा हुआ सत्य मेरी नियति नहीं बन सकता....।"(1) मानसिक तौर पर रुग्ण पति का शंकालु चरित्र सरला को सम्बन्ध विच्छेद करने को विवश कर देता है।

'हस्तक्षेप' कहानी में धन एवं यश केलिए अपने 'स्व' को भी नष्ट करनेवाली नयी पीढ़ी की नीता जैसी लड़कियों के चरित्र का चित्रण किया

---

1. चित्रा मुदागल जगदंबा बाबु गाँव आ रहे हैं पृ. 72

गया है। सुविधाकांक्षी नीता सामाजिक बन्धनों से मुक्त होकर स्वतंत्र जीना चाहती है। वह पति-पत्नी सम्बन्ध में विवाह बन्धन की आवश्यकता को नहीं स्वीकारती। उसके मत में स्त्री को अपने लजालु चरित्र से बाहर आकर समाज में अपनी मर्जी के अनुसार स्वतंत्र विचरण करना चाहिए।

मध्यवर्गीय नारी पात्र

चित्रा जी को मध्यवर्गीय जीवन का अच्छा खासा परिचय है। इसलिए ही वे मध्यवर्गीय नारी मानसिकता को उसकी पूरी सच्चाई के साथ अपनी कहानियों में प्रस्तुत कर सकीं। 'प्रेतयोनी' कहानी में एक बहशी ड्रैवर के हाथ से बची नीता की माँ का चरित्र मध्यवर्ग की रूढ़िग्रस्त नारी का परिचायक है। 'माँ' का ड़र है कि नीता पर आये अपमान से समाज में पूरे घरवालों की इज्ज़त छूट जायेगी। वह बेटी पर हुए अत्याचार से घर की इज्जत बनाये रखने की कोशिश करती है।

'सुख' और 'स्टेपिनी' महिला केन्द्रित है। मध्यवर्गीय नौकरी पेशा विधवा के जीवन संघर्ष को इस कहानी में चित्रित किया गया है। 'स्टेपिनी' कहानी में नायिका पति और नौकरानी के बीच जो नजायत सम्बन्ध है उसे स्वीकारने को तैयार हो जाती है। मध्यवर्गीय नारी अपनी सुख सुविधा को छोडने केलिए तैयार नहीं। वह घर की स्टेपिनी होकर रहने को भी तैयार है।

'एंटीक पीस' कहानी में मध्यवर्गीय नारी जीवन की सारी आकांक्षा विद्यमान है। इसमें ऊर्मिला तीन बच्चे की माँ है फिर भी पारिवारिक जिम्मेदारियों को बड़ी बेटी पर सौंपकर पार्टी, जन्मदिन आदि पर जाती है। बहन कुंती की उतरन और बेटी की ऊँची एड़ीवाली चप्पल पहनकर वह

हमेशा घूमती रहती है। लकवाग्रस्त पति परिवार के स्वस्थ माहौल बनाये रखने केलिए चुप रहता है। पति की मृत्यु पर भी वह दुःखी नहीं होती।

'ताशमहल' कहानी की शोभना पति के शंकालु चरित्र से ऊबकर अपने बेटे के साथ नौकरी से तबादला लेकर दूर जाती है। 'हस्तक्षेप' की अंकिता मध्यवर्गीय नारी होने पर भी विचारवान लड़की है। मध्यवर्गीय जीवन की आकांक्षाओं को जानते हुए भी वह नकारात्मक भाव से जीवन बिताती है। चित्राजी ने अंकिता के चरित्र को एक समझदार लड़की के रूप में चित्रित करके उच्चवर्ग की कई गलतफहमियों की ओर संकेत किया है।

'रूना आ रही है' कहानी की निमा मध्यवर्गीय परिवार की सदस्या है। मध्यवर्गीय परिवार की रूढ़ियों से चोट वह खाती रहती है। 'अनुबन्ध' कहानी की जानकी मध्यवर्गीय जिन्दगी से निम्नवर्गीय जीवन बिताने को विवश है। फ्लैट से झोंपड़ी में रहते हुए भी वह अखबार में दुग्गल को सफल कलाकार घोषित करने की प्रतीक्षा करती है। 'दुल्हिन' में मध्यवर्गीय परिवार के रूढ़िग्रस्त विचार को प्रस्तुत किया है। बड़े बेटे की शादी के बाद भी माँ गर्भवती होने पर बेटा इसे अपना अपमान महसूस करता है।

निम्न वर्गीय नारी पात्र

चित्राजी की ज्यादातर कहानियाँ निम्न वर्ग के स्त्री पात्रो को केन्द्र में रखकर लिखी गयी हैं। चित्राजी को स्लम यानि झोंपड़-पट्टी की जिन्दगी को निकट से देखने और अनुभव करने का मौका मिला। गाँव में रहते वक्त ग्रामीन जीवन से और शहर की गलियों में रहनेवाली, कारखानों में काम करनेवाली, फ्लैट में कचरा लेनेवाली, घरों में झाड़ू-पोंछा कर जीवन बितानेवाली स्त्रियों से चित्राजी का निकट सम्बन्ध रहा है। उनके

जीवन से मिले अनुभव उनकी रचना का मुख्य जीवन भी बने। इसमें कई विद्रोही पात्र भी है।

'भूख' कहानी की लक्ष्मा गरीबी और वैधव्यता से तड़पती है। गनेसी ओर छोटू को पालने केलिए वह कई फ्लैटों में नौकरी की प्रार्थना करती है। लेकिन गोद में बच्चे और उसका कोई परिचित न होने के कारण सब लोग उसे भगाते हैं। 'केंचुल' की कमला भी ऐसी विद्रोही नारी है। कमला के जीवन में कई घटनाएँ आती हैं, जैसे पति की मृत्यु, प्रेमी से मिला छल, दारू की बिक्री पर पुलीस की धमकी। ऐसी बहुत सारी घटनाएँ होने पर भी वह विचलित नहीं होती। वह साहसी है।

'सौदा' कहानी में सौदा सुखपूर्ण पारिवारिक जीवन बितानेवाली निम्नवर्गीय नारी है। एक दिन रात में गेंदा नामक लड़की उसकी झोंपड़ी में आती है। उससे मिली जानकारी से वह पति चंदू की दलाली वृत्ति के बारे में जानती है। आखिर वह स्त्री के कर्तव्य को स्वीकार कर चंदू से गेंदा को बचाने का निर्णय लेती है।

'त्रिशंकु' कहानी में सीताबाई के ज़रिए निम्न वर्गीय स्त्री जीवन के संघर्ष को चित्रित किया गया है। पियक्कड़ पति से तंग आकर सीताबाई बेटी कमला को जोशी बाई के साथ भेजकर बेटे के साथ जीने लगती है। उसे पता चलता है कि पति का एक और स्त्री के साथ दैहिक सम्बन्ध है।

'इस हमाम में' कहानी की अंजा पुरुष जाती के अधिकार को सह नहीं पाती कचरा लेने का काम करनेवाली अंजा अपनी स्वतंत्रता को किसी के सामने छोड़ने को तैयार नहीं। इलिए वह पति को बदलती रही। दूसरे पति के साथ झगड़ा होने के कारण वह आत्महत्या करने का निर्णय

लेती है। 'जिनावर' कहानी में 'जुबैदा' मृत 'घोड़ी' की चिन्ता में दुःखी है। हफ्ते भर भूखे रहने बाद ही वह असलम से कहती है घर पर कई दिनों से चूल्हा नहीं जला है। घोड़ी सरवारी को वह बच्चे के समान प्यार करती थी।

'जब तक विमलाएँ हैं' कहानी में विमला को विद्रोही नारी के रूप में चित्रित है। बिमला ऐसी नारी है जिसमें अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने की ताकत है। अपनी छोटी बेटी से हुए अन्याय के विरुद्ध घर, परिवार, पड़ोसिन की बातों को नकारकर पुलीस थाने में रिपोर्ट करती है और अत्याचारी को सही सज़ा दिलाती है।

'लेन' कहानी की मेहंदरी ज़्यादा व्यावहारिक है। इसलिए वह पति पर छुरा भोंकनेवाले गुण्डों से पैसा लेती है और उस पैसे से घायल पति और बच्चों की देखभाल करती है। 'नाम' की विद्रोही रतिया ने अपने बेटे को ठाकुरों जैसा नाम रखा पंचायत में प्रश्न उठाया गया तो वह कहती है ठाकूर के बेटे का नाम ठाकुरों जैसा होना चाहिए। बडे सज्जन माननेवाले लोग यही चाहते हैं कि समाज के निचले स्तर के लोग हमेशा वहीं पड़ा रहे। 'रतिया' जैसे पात्र मौजूदा स्थिति के विरुद्ध प्रतिशोध व्यक्त करते हैं।

इस प्रकार चित्राजी ने अपने स्त्री पात्रों को उसकी यथार्थ पृष्ठभूमि में प्रस्तुत करने की कोशिश की है। चित्राजी के अपने अनुभव-जगत के ये पात्र सामाजिक जीवन के कई मुद्दों को प्रस्तुत करने में सक्षम हैं। उच्चवर्गीय नारी के दंभ एवं अहं; मध्यवर्गीय नारी की आकांक्षा, लोलुपता और निम्न वर्ग की नारी की विवशता, गरीबी आदि को चित्राजी ने अपने नारी पात्रों के ज़रिए प्रस्तुत किया है।

पुरुष पात्र

चित्राजी नारी पक्षधर लेखिका हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में नारी को ही ज्यादा प्रमुखता दी है। पुरुष पात्र को नीचा दिखाने का प्रयास नहीं किया पर स्त्री पात्र को सतानेवाले पुरुष उनके उपन्यासों और कहानियों में हैं। कहानियों में पुरुष पात्रों की संख्या कम है। फिर भी उन पात्रों के ज़रिए कई सामाजिक सच्चाई की ओर उन्होंने संकेत किया है। पुरुष के दंभ, स्त्री पर अधिकार स्थापित करने की आकांक्षा, स्त्री अस्मिता को स्वीकार न करके उसे घर की चाहर दीवारी में बन्द रखने की मानसिकता आदि को उन्होंने चित्रित किया है।

'दुल्हिन' कहानी में एक विशेष मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है। बेटा रिज़र्च स्कॉलर है। उसकी शादी भी हुई है। उसकी बड़ी बहिनों के बच्चे कालेज में पढ़ते हैं। तभी अचानक माँ गर्भवती हो जाती है। बेटे और घर के अन्य सदस्यों को यह लज्जा की बात हुई। उनको लगता है कि पूरा घर अनपढ़ और गँवारों की अड्डा है। 'दशरथ का वनवास' नामक कहानी का पात्र रवि आधुनिक पीढ़ी का प्रतीक है। नयी पीढ़ी की अनुशासन हीनता इसमें व्यक्त है। पिता द्वारा खरीदा साइकिल रवि को पिता की मृत्यु के साथ मिलता है। माँ-बाप के कठोर अनुशासन से रवि असंतुष्ट होकर दूर चला गया। पिता के प्यार को समझे बिना अज्ञातवास के लिए निकला पुत्र आखिर बाप के प्यार के सामने सिर पीटकर रोने लगता है।

'केंचुल' कहानी में विष्णु नामक पात्र के ज़रिए मटका खेलकर, चोरी-चपाड़ी कर जीवन बितानेवाले पुरुष का चित्र प्रस्तुत किया गया है। 'त्रिशंकु' कहानी में भी ऐसा एक पुरुष पात्र है जो दारू पीकर पत्नी को

पीटता है। इसमें 'कल्पु', 'नन्दु' नामक पुरुष पात्र भी हैं, जिनके द्वारा प्रेमी मन का परिचय मिलता है। 'बावजूद इसके' कहानी में गोयल नामक पात्र आधुनिक सभ्य समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जो आधुनिक जीवन के सुख भोग एवं विलासित को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। उसकेलिए पत्नी, घर, परिवार और अन्य रिश्ते से कोई मतलब नहीं। 'अनुबन्ध' कहानी का दुग्गल जीवन में निराशा होने पर भी भविष्य में अपने को एक सफल निर्देशक बनने का सपना देखता है। वह स्वाभिमानी भी है, अन्य निर्देशकों के प्रोजक्ट में असोसियेट निर्देशक के रूप में काम करने को वह तैयार नहीं। उसमें अहं की भावना भी है खुद वह एक निर्देशक से असोसियेट के स्तर तक नीचे उतरने को तैयार नहीं है। इसी प्रकार के एक महत्वाकांक्षी आहंग्रस्त चरित्र को दुग्गल द्वारा प्रस्तुत किया गया है। 'पेशा', 'बन्द', 'लिफाफा' जैसी कहानियों में बेकारी से त्रस्त युवकों के चरित्र को प्रस्तुत किया गया है। 'पेशे कहानी में नरेन्द्र, प्रणव, सतीश के माध्यम से मासिका में संवाद बना के रूप में काम करनेवालों के आपसी होड और नौकरी बनाये रखने केलिए कम वेतन में भी काम करने को तैयार युवा पीढ़ी का जीवन संघर्ष प्रस्तुत किया गया है।

बन्द के दिन भूख के मारे तीनों युवक मिलकर कंजूस मालिक की अनुमति के बिना पुराने मासिक-पत्रिकाओं को बेचकर भूख मिटाते हैं। अगले दिन खाली रैंक का मतलब जानकर मालिक हर एक के वेतन से दो रुपये सत्तर पैसे काट लेता है। रमेश और हरीश काम में लगा पर नवल का मन विद्रोह से तड़पा और वह पीते हुए सिगरट की किश्ते को 'मेनका' में फेंकता है। 'लिफाफा' कहानी में बेकारी के कारण माँ-बाप के प्यार-ममता से वंचित युवा अशोक का चरित्र प्रस्तुत है। बेकार होने के

कारण घर के मामलों से उसे हटाया गया। घर से मिले उपेक्षा भरी व्यवहारों से दुःखी अशोक आधुनिक जीवन में नौकरी की आवश्यकता को और लड़कियों के नौकरी पर जाने से समाज में उत्पन्न नयी समस्याओं को महसूस करता है। 'शून्य' कहानी का राकेश पति और पिता के दायित्वों से अपने को बचाता है। दो तीन महीने तक के दाम्पत्य को छोड़कर राकेश अपनी प्रेमिका के साथ जीने लगता है। अचानक जीवन में घटी दुर्घटना से बच्चा पैदा करने की क्षमता नष्ट होने पर राकेश पहली पत्नी के पास लौट आता है क्योंकि उसको अपना ही खून चाहिए। कहानी में राकेश के ज़रिए पुरुष की स्वार्थपूर्ण मानसिकता को व्यक्त किया गया है।

'अग्निरेखा' और 'अपनी वापसी' कहानी में पत्नी की निष्क्रियता, अपांगता, असमर्थता, शंका आदि के कारण मानसिक संघर्ष झेलनेवाले पुरुष पात्र हैं अमरेन्द्र और हरीश। दोनों पात्र आधुनिक समाज के अनुसार जीनेवाले पात्र हैं। जीवन की व्यस्तता के कारण दोनों अपनी पत्नियों के जिद्दी चरित्र को अनदेखा करते हैं।

चित्रा मुद्‌गल की ये कहानियाँ यद्यपि नारी केन्द्रित हैं फिर भी उनमें पुरुष पात्रों की मानसिकता को भी प्रस्तुत करने की कोशिश है। उन्होंने पुरुष की स्वार्थता, स्त्री पर किये जानेवाले अत्याचार को प्रस्तुत तो किया है, किन्तू पत्नी द्वारा किये जानेवाले अत्याचार को 'एक काली एक सफेद' और 'एंटीक पीस' नामक कहानी में चित्रित हैं। स्त्री पक्ष लेखिका होने पर भी उन्होंने पुरुष पर होनेवाले अत्याचार अनदेखा नहीं किया। चित्राजी की कहानियों में पुरुष पात्रों की संख्या यद्यपि कम है फिर भी सशक्त पात्रों के द्वारा सामाजिक जीवन के कई मुद्दों पर प्रकाश डालने के लिए सशक्त पुरुष पात्रों की योजना उन्होंने की है।

बालक पात्र

चित्राजी ने अपनी कहानियों में बालक पात्रों की भी अच्छी प्रस्तुती की है। 'त्रिशंकु' 'मामला आगे बढ़ेगा अभी', 'शिनाख्त हो गयी' 'शून्य' आदि कहानियों में और 'गरीब की माँ' 'डोमिन काकी', 'राक्षस' 'गाली' 'रक्षक-भक्षक' आदि लघु कहानियों में बालक चरित्र प्रस्तुत किये गये हैं। 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' कहानी में मोट्या नामक बालक का चरित्र प्रस्तुत करके उच्च वर्ग के लोगों के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। मोट्या उन तमाम बालकों का प्रतीक है जो अपने तन-मन से मालिकों की सेवा करते हैं। मोट्या के माँ बाप नहीं, वह अपने दादा के साथ रहता है। माँ के प्यार एवं ममता से वंचित मोट्या मेम साहब को माँ की तरह प्यार करता है। "उसको मेम साब अपनी छोटी ज़िन्दगी में देखी गई उन तमाम औरतों से भिन्न लगी, जो मोहल्ले के रिश्ते से उसे अपनत्व दे दुलारती रही।"(1) तेज़ बुखार के कारम मोट्या कुछ दिन झोंपडी पर ही पड़ा रहा। उसके मन में यह विचार था कि मेम साब उसकी बिमारी जानकर चौकीदार के पास कुछ पैसा भेज देगा। लेकिन महीने के हिसाब देखते वक्त उसके बीमारी दिन का वेतन काटकर दिया गया। इससे उसके छोटा मन को घोट आघात पहूँचाया। उसके मन में तिरस्कृत प्रेम के प्रति विद्रोह भाव पैदा हुआ। अपना विद्रोह उसने मेम साहब की गाड़ी के शीशे तोड़कर प्रकट किया।

'त्रिशंकु' कहानी में परिवार के अन्य सदस्यों के पालन केलिए टिकटों की कालाबाज़ारी, जेबकतरी आदि कर जीवन बितानेवाले लड़कों

---

1. चित्रा मुदागल मामला आगे बदेगा अभी पृ. 17

के चरित्र को प्रस्तुत किया गया है। नारायण, पाटील, फिलिप्स, रफीक, कादर, बंडू आदि बालकों के ज़रिए उपेक्षाभरे जीवन बितानेवाले बालकों के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। पारिवारिक जीवन का ढीलेपन छोटे बच्चों के मन में गहरी चोट पहूँचाता है। बंडू बालक होने पर भी समझदार लड़का है। वह बाप का निर्मम व्यवहार से अपनी बहन को एक रिश्तेदार के यहाँ भेजता है। अपने एक दोस्त की सहायता से टिकट की कालाबाज़ारी करता है। एक बार पकड़ा जाता है और डोंगरी बाल सुधार गृह में भेजा जाता है। टिकट की कालाबाज़ारी करनेवाले लड़कों की परेशानियाँ और ज़बरदस्त काम करनेवाले लोगों और उनके जीवन में होनेवाले संकटों एवं पीड़ाओं को लेखिका ने अपनी कहानियाँ के पात्र के द्वारा अभिव्यक्त किया है।

'शिनाख्त हो गयी' 'एक काली एक सफेद' और 'शून्य' में उच्चवर्ग के बच्चों का चरित्र प्रस्तुत है। 'शिनाख्त हो गयी' कहानी में डाँट खाकर घर से भाग निकले बच्चे का चरित्र प्रस्तुत है। कहानी में लिखा भी है 'अनुशासन की बात इतनी कडवी तो नहीं थी - आधुनिक बच्चा आज अनुशासन को नहीं चाहता। इसी विषय को चित्राजी ने सोनु नामक बालक के ज़रिए प्रस्तुत किया है। अनुशासन हीनता नयी पीढ़ी की आदत है जिसमें माँ-बाप एवं रिश्तेदार जिसप्रकार परेशान होते हैं इसका चित्रण इस कहानी में।

'एक काली एक सफेद' में माँ-बाप के अहं और आपसी झगडे के बीच दुःख झेलते बच्चे की मानसिकता चित्रित है। कहानी का शीर्षक प्रतीकात्मक है। बच्चे के मन में उसका पापा अच्छा और माँ बुरी है। आधुनिक समाज में व्याप्त अंग्रेज़ी पढ़ने की शौक कहानी में व्यक्त किया

गया है। माँ बच्ची को इसलिए अंग्रेज़ी पढ़ाना चाहती है कि डिग्री पास होने पर भी माँ को अंग्रेज़ी नहीं आती। इसलिए वह खुद लज्जा का अनुभव करती है। माँ के जिद्दी चरित्र ने बाप को घर से भगाया और बच्ची को अन्तर्मुखी बना दिया।

'शून्य' कहानी में माँ के साथ सुखी जीवन बितानेवाले दीपू नामक बालक की कहानी है। पिता ने दीपू और माँ सरला को पहले ही छोड़ दिया था। बालक दीपू के मन में उसका पिता विदेश में है। पिता के अवैध सम्बन्ध के कारण दीपू अपने पिता के प्यार से वंचित रहा। पिता से सम्बन्धी उसकी आकांक्षा को सरला झूठे कहानियों से सांत्वना देती रही। दीपू को पाने केलिए पिता अदालत में मुकद्मा पेश करता है। समकालीन समाज में ऐसे कई बच्चे हैं जो माँ-बाप के आपसी होड़ या ईगो के बीच दम घुटते हैं।

'गरीब की माँ' 'गली' 'राक्षस' और 'रक्षक-भक्षक' में भी ऐसे बाल चरित्र प्रस्तुत किये गये है। 'गरीब की माँ' किराया न देने के कारण झोंपड़ी छोड़ने की स्थिति में एक बालक झूठ बोलता है कि उसकी माँ मर गयी। ताकि बरसात के वक्त जीने को उन्हें और जगह नहीं थी। गरीब लड़के की विवशता इसमें है। 'गली' कहानी में गजरा बेचनेवाले बच्चे के माध्यम से लेखिका ने पूरे देश की एक समस्या हमारे सामने प्रस्तुत करते है कि "भूख मिटाने केलिए छोटे से बड़े तक क्या क्या काम करते है। वह देश बच्चों को खिला नही सकते तो पैदा क्यों करता है?"(1) उसी प्रकार लेखिका से मिले एक बालक उनकी दुतकार पर क्रुद्ध होकर सारे चीज़

---

1. चित्रा मुदागल बयान पृ. 54

चकनाचूर करके भाग लेते है। कुछ महीने बाद फिर उसे मिला और वह धन्यवाद देकर कहा कि "आपने जो रास्ता दिखाया था बहुत भला था।"

'रक्षक-भक्षक' में भी ऐसे भिखमंगे बालकों के चरित्र प्रस्तुत हैं। समाज में कुछ गलत धारणाएँ हैं, एक भीखमंगा बच्चा लेखिका से क्रुद्ध होकर कहता है "तुम्हीच लोग गरीब लाचार का हाथ पाव तुडवाते है। गरीब बच्चे भीख माँगकर जीते है। कभी-कभी उसके दमित जीवन विद्रोह भर उठते है।

'राक्षस' कहानी में मध्यवर्गीय परिवार में एक बालक बाप की नीति पर प्रश्न डालता है। घर पर बडे भाई शराब पीते वक्त बाप हाँहता और पीटता है। उसी दिन पिता के बोस घर पर आये तब छोटे बालक से शराब खरीदने को कहते हैं। बालक के मन में शंका होती है कि 'राक्षस' कौन है? जो कार्य बच्चों को मना हैं, उसी कार्य उनके सामने से कर क्यों कर बैठते हैं।

'अढ़ाई गज की ओढ़नी' में बच्चों पर चैनलों का दुष्प्रभाव कैसा पड़ता है। इसे प्रस्तुत किया गया है। लेखिका कहती है बच्चा उन बन्दरों के समान है वे जो कुछ देखते है उसका अनुकरण करते हैं। मनोरंजन केलिए केबल जितना समर्थ है उतना गुमराह करने केलिए भी। कुछ बच्चों के माध्यम से लेखिका ने मीड़िया के दुष्परिणाम को भी दिखाया है। प्रिय और सिराज आधुनिक बच्चों के प्रतीक है।

चित्राजी ने अपनी कहानियों में सामाजिक पहलुओं को रेखांकित किया है। विषय व कथ्य के अनुरूप पात्रों के चयन में उनको बड़ी कामयाबी भी मिली है।

पात्रों का नामकरण

आज कहानी में नए नए प्रयोग की प्रवृत्ति बडी है। महिला कहानिकारों की रचनाओं में ज्यादतर पात्र व्यक्तिवाचक संज्ञावाले है। चित्राजी की कहानियों में कुछ पात्र प्रतीकात्मक है। मुख्य पात्र पुरोहित जी के अलावा बाकी पात्रों को 'ख' 'ग', जैसे प्रतीकात्मक नामकरण किया है। अन्य कहानियों में पात्रों को परिस्थिति के अनुरूप नाम दिया गया है। उदाहरण केलिए 'स्टेपिनी' कहानी में नौकरानी का पात्र बताशा जो नाम से ही सुन्दर है साथ ही अच्छे कपड़े और साज-धज कर काम पर आती है। बताशा नाम एक नौकरानी केलिए उचित नहीं, लेकिन वेश-भूषा एवं नाम से भी चित्राजी ने उसे सुन्दर बना दिया। उसी प्रकार पीढ़ियों का अन्तर स्पष्ट करते हुए चित्राजी ने पात्रों का नामकरण किया है। उदाहरणार्थ 'अपनी वापसी' कहानी में आधुनिक सभ्यता के अनुरूप बच्चों के नाम रखा है जैसे रिन्नी दीनू, 'पाली का आदमी' में 'नीरू', लल्ली, गेंदा, कहानी में मारगरट, सुवीना, बावजूद इसके में प्रीति गोयल आदि पात्रों का पाश्चात्य संस्कृति के अनुरूप ही नामकरण किया गया है। इसी प्रकार स्लम की ज़िन्दगी एवं निम्न स्तर का जीवन बितानेवाले पात्र हैं। 'सौदा' कहानी की चंदू गेंदा, केंचुल के सिद्ध कमला सरना, एवं कल्पू, 'भूख' के लक्ष्मा, गनेसी, छोटू सावित्री अक्का, लेन कहानी के मेहंन्दरी, दत्तूराम, 'इस हमाम में' के अंजा, 'डोमिन काकी' की डोमिन काकी, 'नीले चौखानेवाले कम्बल' के टिकैतिन कक्की, 'जब तक बमलाएँ हैं' कि बिमला, 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' के मोट्या 'त्रिशंकु' के सिद्ध, कमला, रफीक, बंडू आदि पात्रों को निम्न वर्ग के जीवन के अनुरूप ही नाम रखा गया है।

मध्यवर्गीय जीवन पर केन्द्रित कहानियों में उसी वर्ग के प्रतिनिधि हैं। 'प्रेतयोनी' की नीतू, 'सूख' की सुमंगला, 'एंटीक पीस' की कुंती मौसी, 'अढाई गज की ओढ़नी' के सिराज, प्रिया एवं उमा, 'दशरथ का वनवास' के रवि, सुधा, टीनू एवं मोना, 'अनुबन्ध' के दुग्गल एवं जानकी, 'पेशा के गौना', नरेन्द्र, प्रणव सतीश आदि इसके उदाहरण है।

चित्राजी की कहानियों की भाषागत विशेषताएँ

लेखक केलिए भाषा एक माध्यम है, जिसके द्वारा वह अपनी संवेदना को पाठकों तक संप्रेषित करता है। संप्रेषणीयता की दृष्टि से सशक्त भाषा का व्यवहार रचनाकार केलिए आवश्यक बन जाता है। भाषा अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं होती। उसका महत्व तब होता है जब वह लेखक की अभिव्यक्ति का विशेष ढंग बन जाती है। समकालीन हिन्दी कहानी जटिल सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करने केलिए सक्षम है। इसे व्यक्त करने केलिए सशक्त भाषा की आवश्यकता है। कथा की परिस्थिति एवं पात्रों के अनुकूल भाषा प्रयोग हर रचनाकार की अपनी शैली है। चित्राजी की कहानियों में समाज के तीनों वर्गों के पात्र हैं। साथ ही कहानियों की परिस्थिति मुम्बई शहर एवं आसपास की गली-मोहल्ले है। झोंपड़-पट्टी के जीवन से जुड़ी कहानियों में चित्राजी ने उसी भाषा का ही प्रयोग किया है। चित्रा मुद्गल ने उत्तर प्रदेश की बोलियों का भी सुन्दर प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। किन्तु उनकी कहानियों में सदा मुम्बइया भाषा का ही प्रयोग है 'लकड़बग्घा' से

'हाँ हाँ, हमका पक्का प्रबन्ध चही... पुनिया हमरी नाईं जाहिल-काहिल न रही... आज हम चार अक्षर पढ़ी-लिखी होतिन तो काहू के

आसरे चौका-बासन निबटाइत पड़ी रही होतिन? हमार जिनगी कढ़िलता घसिटन बीत गयी, हमार नसीब।"[1]

'लेन कहानी से एक निम्नवर्गीय स्त्री की भाषा "मेरे से पछो साब! मैं पेचाण सकती हूँ उसे, साब मैं.... ओ माणस को कैसे भूल सकती हूँ।"[2]

'इस हमाम में' कहानी में कचरा लेने आयी अंजा की भाषा देखिए "आज कल अपुन लोग भी ऐसा बात पे इस्वास नहीं करता।"[3]

"अमची मुम्बई, अमचे माणस, 'लोक सेना' का आवाहन है.... अपना लक्ष्य बनाएँगे। अलख जगएँगे।"[4]

"महतारी के मया दइया... अकेल लडिका कय देख का खातिर जिऊ अटका रहया।"

दुई दिन से से रटति दुलहिन बबुन का बुलवाय देव.... बबुन नही आवा।'

"रहय तो किस्मतवाली... मनई और जवान बेटवा के कन्धे चढि के जाय रही है।"[5]

---

1. चित्रा मुदागल केंचुल पृ. 34
2. चित्रा मुद्गल लपटें पृ. 58
3. वहीं - पृ. 72
4. वहीं पृ. 58
5. चित्रा मुद्गल केंचुल पृ. 34

"ये आता-बीता कुच्च नई... लगेच उट्ठ नई तो देऊँ आके एक थोबडे पर। सिद्धा नल पे जा, कोई लबर इद्दर-उद्दर किया तो काऊन टंटा करेगा हलकट।"(1)

"सेठानी हम सरना के संग बियाव (विवाह) करना चाहते हैं।"

"सरना अब्बी बोत सोही है।"(2)

झोंपड-पट्टी में जिये बालकों की भाषा चित्राजी ने बडी सर्तकता से प्रस्तुत की है।

"आगे नहीं बढ़ना हो ऽऽ ....नई तो खोपड़ी तुकड़े तुकड़े करके छोडूँगा... बोत अच्छा घर में नौकरी लगाया... अब्बी, जाके वो बड़ा आदमी को बोल। ....बोल अबी निच्चू उतर के आने कू। कुतरे का औलाद नई मैं गर मदर... को खल्लास नई किया... धक्का देके निकल न मेरे कू दरवाजे से? काय कू? पूरा पगार माँग न इसी वास्ते? काट, बोलना अबी अच्छा तरीक से खाडा काट... देखता भांत धाँधल सेन किया... अब्बी सिद्धा होएगा वो सेठिया...।"(3)

मोट्या नामक बालक के मन के क्रोध, दर्द प्रतिहिंसा आदि भाव इन शब्दों में हैं। चित्राजी पूरी कहानी में मोट्या और उसके दादा की भाषा ऐसी है।

"सिलाई मारूँ कि किल्ला ठाँकूं?"

---

1. चित्रा मुदागल केंचुल पृ. 40
2. वहीं पृ. 53
3. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 10

"कमाई तभी होती अब्बी तो खाने का पन नई पुरता।" ...जास्ती चलने फिरने को नई सकता... इसी के वास्ते इदरीच बैठता....।"[1]

और एक उदाहरण है "तुम्हीच लोग गरीब लाचार का हाथ-पाँव तुड़वाता हय उसको अन्धा-लूला-लाँगडा बनवाता हय... दादा लोगों को मालुम हय, साबुत अंग वाले को कोई भीख नहीं देता... उनपे दया नई करता... तुम्हारा दया पे थू...।[2]

भाषा में सूक्ष्मता और तीव्रता बनाये रखने और भावों का सच्चा प्रतिफलन देने की क्षमता चित्राजी की भाषा की एक विशेषता है। शब्दों को अधिक तोड़ा-मरोड़ा न करके सीधे पर अर्थयुक्त शब्दों का प्रयोग किया है। चित्राजी ने निम्न वर्गीय एवं मध्यवर्गीय पात्रों केलिए उन्हीं वर्गों द्वारा की जानेवाली भाषा का ही प्रयोग किया है उच्चवर्ग तो अंग्रेज़ी शब्दों से युक्त भावपूर्ण शब्दों से युक्त भाषा का प्रयोग करता है। चित्रा जी ने उच्चवर्गीय पात्र केलिए अंग्रेज़ी युक्त भाषा का प्रयोग किया है। उदाहरण केलिए

"डाय अशोक, कतने डैशिंग लग रहे हो यह क्लोज़ आप... वोपु अशोक।"[3]

"ही ईज़ स्मार्ट लल्लू'।[4]

नो ममा। थैंक्यू सो मच"।[5]

---

1. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 12
2. चित्रा मुद्गल बयान पृ. 54
3. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 114
4. वहीं पृ. 152
5. वहीं पृ. 175

"डू यू थिंक... पापा इज़ विद अस"।[1]

"शी इज़ रियली ग्रीडी पाप...।"[2]

मोर्चें पर नामक कहानी में उच्चवर्ग के पारिवारिक जीवन का चित्र है। पढे-लिखे युवा बच्चे और माँ के बीच जो वार्तालाप होते है, उसे देखिए-

"शुड आई गो"

"ओ श्योर, श्योर प्रीती' जैसे कह रहा हो ऑल द बेस्ट।"

"लेट मी नो अबाउट योर डिसीज़न?'

'डिसीज़न'[3]

"अई कैन सेव यू फ्रम दिस प्रॉब्लम। बट... लेट मी नो अबऊट योर डसीज़न... लेटर तब तक फॉरवर्ड नही होगा....।"[4]

"लेट हेर स्टैन्ड हेर ऑन फीट"[5]

"वैइफ स्वैपी' पाश्चात्य संस्कृति के परिदृश्य में लिखी गयी कहानी है। इसमें भी अंग्रेज़ी शब्द मिश्रित भाषा प्रयोग हुआ है

"नाट एट ऑल" दे एंज्वास ईक्वली...। हाँ... भारतीय संस्कार आडे आते है, पर जब जब।"[6]

---

1. चित्रा मुद्‌गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 176
2. वहीं पृ. 176
3. चित्रा मुद्‌गल केंचुल पृ. 79
4. वहीं पृ. 69
5. वहीं - पृ. 70
6. चित्रा मुद्‌गल - भूख पृ. 108

"वह एक खूबसूरत रात थी, बेहद खूबसूरत, एक साथ हज़ारों सितारों की रून-झून में डूबी शी वाज़ वंडरफु ! वेरी को ऑपरेटिव...।"[1]

चित्राजी ने पात्रानुकूल भाषा प्रयोग हर कहानी में किया है। प्रचलित भाषा प्रयोग से पात्रों के भाव तलों को स्पर्श करने की क्षमता उनकी भाषा में है। नये सामाजिक यथार्थ को वैसी ही भाषा में प्रस्तुत करने में चित्राजी ने विजय हासिल की है।

"यह क्रूर अस्सा जो नियती के सर्वग्रासी भूकम्प की भाँती उसकी ज़िन्दगी की ईंट ईंट धसकाकर उसे एक मलबे की शक्ल मेंम छोड गया।"[2]

"भूख में टेढी-मेढी चपातियों के बीच से नर्म मुलायम गोल चपाती खींच लेना लोगों का स्वभाव है, मगर शेष टेढी-मेढी के बीच कौन सा विकल्प बचता है।"[3]

"शादी के बाज़ार में सुन्दर न होने के कारण शादी पक्की नहीं हो पाती है। सरकारी नौकरी होने पर भी उसे किसी ने स्वीकार नहीं किया। टेढी-मेढी चपातियों का तात्पर्य असुन्दर लड़की स्त्री है।

'रेखा के चेहरे पर सावनी बादलों की पानियायी पुलकन उतरा आयी... कृतज्ञता ज्ञापित करती उसकी भूरी आँखों का ठहराव पलों तक उसके चेहरे को अपनी गुलगुली गदेलियों से सहलाता रहा था।"[4]

---

1. चित्रा मुद्गल भूख पृ. 108
2. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 25
3. वहीं पृ. 25
4. चित्रा मुद्गल जगदम्बा बाबु गांव आ रहे हैं पृ. 70

चित्राजी की कहानियाँ की शैलीगत विशेषताएँ

सामाजिक जीवन की यथार्थता की अभिव्यक्ति केलिए रचनाकार कई शैलियाँ अपनाता है। पहले तो कहानियों में आदर्शवाद की प्रस्तुति प्रमुख रही। बाद में व्यक्तिवाद की प्रधानता हुई। सामाजिक संसक्तियों की अभिव्यक्ति रचनाकारों ने अपने अनुभव के आधार पर की। चित्राजी की ज्यादातर कहानियाँ वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी है। 'मुआवज़ा' 'सौदा' 'अभी भी', 'ताशमहल' 'प्रमोशन' 'हस्तक्षेप' 'बेईमान लकड़बग्घा' 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' 'शिनाख्त हो गयी' 'त्रिशंकु' 'लाक्षागृह' 'लिफाफा', 'दरमियान' 'दुल्हिन' 'केंचुल' 'बावजूद इसके' 'अनुबन्ध' 'पेशा' 'भूख' 'चेहरे' 'ब्लेड', 'ज़रिया' 'बैइफ स्वैपी' 'होना संपादक की पत्नी', 'बंद' 'बाध' 'सुख' 'जिनावर' 'एंटीक पीस', 'स्टेपिनी', 'अढ़ाईराज की ओठनी', 'लपटें', 'नतीजा' 'एक काली एक सफेद', 'जब तक बिमलाएँ है' आदि कहानियां वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी हैं।

फ्लैश बैंक एवं वर्णनात्मक शैली का प्रयोग भी कहानीकार ने किया है। वर्णनात्मक शैली में शुरू होकर बीच बीच में पात्र यादों में डूबकर भूत की घटनाओं में डूब जाते हैं। 'पाली का आदमी' 'अपनी वापसी' 'शून्य' 'दशरथ का वनवास' 'फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती' 'इस हमाम में' 'प्रेतयोनी' आदि कहानियों में इन दोनों शैलियों का प्रयोग हुआ है।

फ्लैश बैक शैली में लिखी गयी कहानियाँ हैं 'अग्निरेखा' 'मोर्चे पर' 'रूना आ रही है' 'लेन', 'नील चौखानेवाले कम्बल' आदि।

किस्सा बयानी शैली में लिखी गयी कहानी है 'बलि'। इसमें बच्चों को कथा सुनाने की शैली में गाँव में हुए एक कतल की कहानी प्रस्तुत की गयी।

रचनाकार सामाजिक विसंगतियों पर तीखा प्रहार करने के लिए व्यंग्य शैली का प्रयोग करता है। व्यवस्था पर चोट लगाने के साथ लोगों को सजग करने के लिए यह शैली उपयुक्त है। चित्राजी ने 'पाठ' और 'लपटें' में व्यंग्य शैली का प्रयोग किया है। राजनीतिक नेताओं के मन में आम लोग केवल वोट देने के यंत्र हैं। वोट पाने केलिए वे बदतर कार्य भी कर बैठते हैं।

चित्राजी की कहानियों में आकारगत प्रयोग

समकालीन हिन्दी कहानी के क्षेत्र में विषय की प्रस्तुति में कई नए प्रयोग हो रहे हैं। चित्राजी ने लम्बी कहानी भी लिखी है, कहानी और लगुकथा भी। 'ग्यारह लम्बी कहानियाँ' और 'बयान' इसका उदाहरण है। लघु कथा संग्रह 'बयान' कहानी संग्रह अपने मूल चरित्र में एक-आयामी होती है। लम्बी होने पर भी वह उसी आयाम को विस्तृति और गहनता प्रदान करती है। लघुकथा वह आकार में लघु होने पर भी अपने बहुआयामी स्वर को बनाये रखती है। लघु कथा आकार में लघु होने पर भी अपने बहुआयामी स्वर को बनाये रखता है। अतः लम्बाई की दृष्टि से कई लम्बी कहानियाँ तथा लघु उपन्यास लगभग एक ही भूमि पर संस्थित दिखाई देते है।[1] ग्यारह लम्बी कहानियाँ में चित्राजी ने 'शून्य' 'केंचुल' 'अनुबन्ध'

---

1. डॉ. अशोक भाटिया समकालीन हिन्दी कहानी का इतिहास पृ. 253

'बन्द', 'दशरथ का वनवास' 'मोर्चे पर', 'दरमियान' 'दुल्हिन' 'अग्निरेखा', 'बावजुद इसके' 'चेहरे' 'जिनावर' आदि कहानियाँ संकलित है। कहानी संकलन के नाम अनुसार कहानी का कलेवर रबडा है। छोटे आकार की लघु कथाएँ 'बयान' नामक संकलन में संकलित हैं। इसमें अनतीस कहानियाँ संकलित हैं। अवधनारायण मुद्गल ने चित्राजी की लघु कथाओं पर टिप्पणी करते हुए कहा कि 'इनकी लघुकथा सहज और सपाट होते हुए भी एक नए भावबोध से जुड़ी हैं, यह भावबोध बेबसी की संवेदना का भी है तथा मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग की संस्कृतियों, परम्पराओं मज़बूरियों और ज़िन्दगी की मौजूदा हकीकतों का टकराव भी है।"[1] इसके अनुसार कहानी का आकार छोटा होने पर भी उनमें गंभीर समस्याओं को समाज के समाने प्रस्तुत करने की बडी क्षमता है। आज लघुकथा विशेष रूप से चर्चित हो रही है।

चित्राजी की कहानियों में बिम्ब विधान

बिम्ब और उपमान का प्रयोग कहानी में जीवन का संगीत और लय भरता है। बिम्ब-विधान और उपमा-विधान यद्यपि कविता के उपकरण माने गये हैं, किन्तु, इसका प्रयोग हर साहित्य विधा में भी विद्यमान है। इसका प्रर्याप्त प्रयोग हर साहित्यकारों ने किया है।

बिम्ब एक ओर अभिव्यक्ति को चित्रोपम बनाता है तो दूसरी और रचनाकार की संवेदना को तीव्रता प्रदान करता है। बिम्ब अनेक प्राकर के होते हैं। कहानियों में युक्त बिम्ब की चर्चा मुख्य रूप से श्रव्यबिम्ब, दृश्यबिंब, घ्राणबिम्ब, स्पर्शबिम्ब, स्वाद बिम्ब आदि के अन्तर्गत की जा

---

1. चित्रा मुद्गल बयान पृ. 95

सकती है।[1] चित्राजी की कहानियों में बिम्ब विधान का अच्छा प्रयोग हुआ है। कुछ कहानियों के शीर्षक ही उसकी अन्तर्वस्तु को प्रतिबिंबित करने में सफल हुए हैं 'प्रेतयोनी' 'जिनावर' 'स्टेपिनी' 'अग्निरेखा', 'त्रिशंकु' 'ताशमहल', 'बाध' 'लकड़बग्घा' 'दशरथ का वनवास', 'एक काली एक सफेद' 'अग्निरेखा' 'पाली का आदमी', 'मिट्‌टी', 'ब्लेड', 'गणित', पाठ केंचुल' कहानियों के शीर्षक भी बिम्ब है।

दृश्य बिम्ब

दृश्य बिम्ब सर्वाधिक सहज ग्राह्य है। वर्ण्य विषय का चित्र आँखों के सामने ऐसे खिंच जाए, ऐसे उदाहरण चित्राजी जी की कहानियों में मिलते हैं। चित्राजी की 'अग्निरेखा' शीर्षक कहानी की मनु तन से अधिक मन से बमार पत्नी है। माँ न बन सकने के कारण वह आशंकित और आतंकित है। पति भी जब आरोप लगता है तो वह संकालु और संकीर्ण हो उठती है, और हताश हो जाती है। इस सन्दर्भ को लेखिका ने इस प्रकार व्यक्त किया है "उसे लग रहा है कि एक भयानक तूफान ने उसके घर को जड़ से खाड़कर फेंक दिया है। वह मांस के दो बेडौल लोथडे सी उसमें उडी जा रही है। अचानक दो खौफनाक पक्षी उसके करीब सिमट आए है और अपनी सुर्ख चोचों खोलकर निगल जाने केलिए रपट पडे हैं। वह उनकी सुर्ख चोंचों में समिती जा रही है....।"[2]

'दरमियान' कहानी की वह (युवती) पुरुष समान के धूरने की आदत की घृणा करती है। उसे अधिकांश पुरुष रावण के वंशज प्रतीत

---

1. मंजु शर्मा साठोत्तर महिला कहानीकार पृ. 197
2. चित्रा मुद्‌गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 35

होते है जिसकी दस जोडी भुजाएँ ही नहीं, दस जोडी आँखें भी हैं जो राडार की भाँति स्त्रियों की गतिविधियों को सूंधती बारीक से बारीक हरकत को दरज करती रहती है।"(1)

'प्रेतयोनी' कहानी में परिवार की तनाव पूर्म माहौल को "पन काढे फुफकारते नाग-सा जड़ किए हुए है।"(2)

'अग्निरेखा' कहानी में यह क्रूर अरसा जो नियति के सर्वग्रासी भूकंप की भाँति उसकी जिंदगी की ईंट-ईंट धसकाकर उसे एक मलबे की शक्ल में छोड़ गया है।(3) और "जिज्जी भी अपने तुपे तहखानों में उतरने लगती है, सहस्र-सहस्र काले सर्पों से पन पटकते समन्दर के सीने में अमावस की गाढी रात झेलती अनिश्चित दिशा की ओर बढती पस्त डोंगी सी हो उठती है।"(4) बहन के शंकुलु चरित्र और उसके दुःख का सामना न करने केलिए शशी रसोई चली जाती है। उसी समय उसके मानसिक तनाव को चित्राजी ने इन शब्दों से व्यक्त किया है। 'दुलहिन' कहानी में पूरे परिवार को अनपढ़, गाँवारों, उजड्डों, कमीनों आविवेकियों का अड्डा"(5) समझनेवाले शिक्षित व्यक्ति की मानसिकता व्यक्त की गयी है।

पहले उदाहरणों में 'भयानक तूफान' 'बेड़ौल लोथड़', 'खौपनाक पक्षी' 'सूर्ख-चोंच' आदि के दृश्यात्मक बिम्बों के ज़रिए लेखिका ने जो

1. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 151
2. चित्रा मुद्गल जिनावर पृ. 14
3. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 25
4. वहीं पृ. 29
5. चित्रा मुद्गल केंचुल पृ. 19

दृश्य बिम्ब प्रस्तुत किये हैं, वे अनुपम बन पड़े हैं। दूसरे उदाहरण में पुरुषों के आचरण को बीस हाथों और बीस आँखें पाले 'रावण' से तुलना करके प्रस्तुत किया गया है, जो सचमुच बहुत ही दृश्यात्मक है।

श्रव्यबिम्ब

चित्राजी ने अपनी कहानियों में श्रव्य बिम्ब का भी प्रयोग किया है। बिम्ब योजना तथा उपमान चयन में काव्यात्मकता और कोमलता रचनाकार की भाषा का महत्वपूर्ण अंग है। ऐसी भाषा प्रयोग की कई उदाहरण चित्राजी की रचनाओं में उपलब्ध है। 'अग्निरेखा' कहानी में "अचानक हिचकियों में फूटी नितान्त विपन्न होने की आकुल अनुभूति स्मृतियों में दग्ध वेदना में पारिवर्तित हो ढालन से लुढके गोटे की भाँति 'डग्गा डग्गा' गुलाटी खाती अनाथ हो उठी....।"(1)

"शिनाख्त हो गई है" कहानी में "दीदी की इस 'क्या' के साथ हौक की सर्पीली दौड फिर से सीना रौंदने लगती है - धड़, धड़ धड़'...।"(2)

त्रिशंकु कहानी में से "पर गली के मोड में घुसते ही छोकरों को हूड तूऽऽ तूऽऽऽ तूऽऽऽ' खेलते पा कबड्डी में शामिल होने का लोभ संवरण नहीं कर पाया।"(3) अग्निरेखा में तश्तरी से ढका गिलास उठाया है... 'गटागट, गटागट' पानी की लगातार घूँटें गोलियों समेत उसके सीने में उतर रही है....।"(4) भाषा का सुन्दर प्रयोग के और उदाहरण हैं 'ब्लेड'

---

1. चित्रा मुद्‌गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 28
2. वहीं पृ. 36
3. वहीं पृ. 56
4. चित्रा मुद्‌गल केंचुल पृ. 156

कहानी में "चिडिया की मुक्ति ही राजकुमारी के पुनर्जीवन प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है.... उसकी बिटिया धुधुनू... राजकुमारी चन्द्रावल। कड़वे तेल से तर भूरे घूँघराले बालों में उलझा हुआ गंदुमी गोल चेहरा... दिप्-दिपू करती गोल चमकीली आँखें... मिन-भिन करती हुई लडियाई बोली, "बापू-बाबू" जे दिल्ली में हमऊँ मैक्सी लेंगे।"[1]

मुहावरा, कहावतों और सूक्तियों का प्रयोग

रचनाओं में बिम्ब प्रतीक के साथ भाषा को सुन्दर बनानेवाले तत्व हैं मुहावरे एवं कहावतें। चित्राजी के पास भाषा का अपना मुहावरा एवं अंदाज है। चित्राजी का भाषाधिकार बहुत व्यापक है। आधुनिक जीवन की ऊब, घुटन, संत्रास और अकेलापन को वाणी देनेवाली भाषा उनकी है।

सूक्तियाँ

भाषा में जीवन के गहनतम अनुभवों का सार भरने केलिए सूक्तियों का प्रयोग किया जाता है। सूक्तिकार का उद्देश्य दूसरों के इहलौकिक और पारलौकिक जीवन का परिमार्जन और परिशोदन करना होता है। जीवन का चित्र कही जानेवाली गद्यविधा कहानी में भाषा के सुनहरे तार में गूँथी गयी सूक्तियों के मोत्ति अपनी अलग धुति बिखेरते हैं। छोटी सी सूक्ति जैसे गागर में सागर भरकर एक बडे अर्थ को प्रस्तुत करती है। चित्रा मुद्गल की कहानियों में भी ऐसी कई सूक्तियों के उदाहरण मिलते हैं। कुछ उदाहरण है लोग बरसों बाद अपने आदमीयों से मिलते हैं तो एक स्निग्ध पुलक उठते हैं, उन्हें छोडने का दिल नहीं करता।"[2] इसी प्रकार

---

1. चित्रा मुद्गल भूख पृ. 83
2. चित्रा मुद्गल अपनी वापसी पृ. 43

'सुख' शीर्षक कहानी में औरत के बारे में कहा गया है - "अजब धातु की बनी है यह औरत।"(1) 'एक काली एक सफेद' कहानी में "अपनी चादर का नाप भुल रही हो"(2) 'सिनाख्त हो गई है' कहानी में माँ के मन के बारे में लिखा है "माँ का दिल है, भाई साहब.... पत्थर भी है, मोम भी....।"(3) इस प्रकार चित्राजी की हर कहानियों में सूक्तियाँ देखने को मिलती हैं।

लोकोक्तियाँ और मुहावरे

लोकोक्तियाँ और मुहारे से भाषा की प्राभावात्मकता बढ़ती है चित्राजी की कहानियाँ साधारण जन जीवन से सम्बन्धित हैं इसलिए ऐसे पात्रों की प्रस्तुती में लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग देखने को मिलता है। इससे बाषा में व्यंजना और प्रभावात्मकता बढाने के साथ पाठकों को पढने की प्रेरणा भी देते है। मुहावरे को हम रोज मर्म की जिन्दगी में अक्सर प्रयुक्त करते हैं। चित्राजी की कहानियाँ में इसका भरपूर प्रयोग हुआ है। उदाहरण केलिए एंटीक पीस कहानी में माँ की गति को "साँप छछूर की सी गति।"(4) और "भट्ठी चढाना"(5) "इस कटखनी कुतिया के मुँह पे मत जा।"(6) मामला आगे बढेगा अभी' कहानी से "जल में रहकर मगरमच्छ से वैर।"(7) 'कंकडबग्धा' में "पछाहवाली का नाम तक खिंचा

---

1. चित्रा मुद्गल जिनावर पृ. 45
2. चित्रा मुद्गल लपटें पृ. 79
3. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 42
4. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 12
5. चित्रा मुद्गल जिनावर पृ. 68
6. वहीं पृ. 73
7 वहीं पृ. 74

आंचल देख दुलार भरे स्वर में डपटा उन्हें कहा... पूरा इलाहाबाद तुम्हारा जेठ-ससुर लगता है?"[1] और "अनिष्ट की परछाई फन काढे सभी की छाती पर चढ बैठी।"[2]

कहावतें के प्रयोग ने भी चित्राजी की भाषा को अधिक प्रभावोत्पादक बना दिया। उनकी कहानियों में कहावतों का प्रयोग की बहुत सारी उदाहरण देखने को मिलते है। उदाहरण केलिए

"माँ मरे मौसी जिये...।"[3]

"शिकार के समय कुतिया हगाशी।"[4]

"दान की बछिया के दाँत नही गिने जाते।"[5]

"जल में रहकर मगरमच्छ से वैर।"[6]

"जिसकी लाठी उसकी भैंस।"[7]

"अपनी चादर का नाप भूल रहन।"[8]

"घर का जोगी जोगड, आन गाँ का सिद्ध"[9]

---

1 चित्रा मुद्गल जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं पृ. 94
2. वहीं पृ. 191
3. वहीं पृ. 96
4. चित्रा मुद्गल जिनावर- पृ. 90
5. चित्रा मुद्गल लपटें पृ. 39
6. वहीं पृ. 62
7 वहीं पृ. 62
8. वहीं पृ. 79
9. चित्रा मुद्गल भूख पृ. 96

इसी प्रकार अपनी कहानियों में कहावतों का प्रयोग भी उन्होंने किया है।

चित्रोपमा

चित्रोपमा भाषा की और एक विशेषता है। चित्राजी की कहानियों में इसका सुन्दर प्रयोग हुआ है। शब्द के माध्यम से वर्ण्य विषय का सजीव चित्रण करने की कला वे खूब जानती हैं। यही चित्रोपमा जब परिदृश्य विधान की ताज़गी और नयापन लेकर आती है तो कहानी में और चमत्कार आ जाता है। सीधे सादे शब्दों में वर्ण्य विषय का चित्र खींच देना चित्रोपमता है। चित्राजी की कहानियों में चित्रोपमा पर्याप्त मात्रा में मिलती है जिससे बिम्ब-योजना का सौन्दर्य अधिक प्रदर्शित हुआ है। चित्राजी की कहानियों की चित्रोपम भाषा का उदाहरण है "पीछे तेज़ी से बढ़ती आ रही गड़ियाँ चीटिंयों की रफ्तार में बदलती ठिठकने लगी।"(1)

"तुमने अपने माथे पर डूबता हुआ सिन्दूरी सूरज टाँक लिया है मनु....।"(2)

"पछाहवाली की आँखों की मुंडेर पर किसी इन्द्रधनुषी सपने-सा टंग गया।"(3)

"यह क्रूर अरसा जो नियती के सर्वग्रामी भूकंप की भाँती उसकी जिंदगी की ईंट-ईंट धसकाकरक उसे एक मल्बे की शक्ल में छोड गया है।"(4)

---

1. चित्रा मुद्गल जिनावर पृ. 64
2. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 151
3. वहीं पृ. 25
4. चित्रा मुद्गल जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं पृ. 93

"सड़क पर सुस्ताता, मरकरी से सफेद हुआ अंधेरा सहसा तीखी घरघराहट को पीता हुआ थर्राया।"(1)

"बूढों की उभरी नसों सी आगरे की तंग गलियों में।"(2)

"उसने जनानी की चेहरे के भावों को अनदेखा कर नोट भूखे को दिखी रोटी सा लपक लिया।"(3)

आलंकारिकता

अलंकार वाणी का भूषण है। कहानी जीवन संवेदना की अभिव्यक्ति है। उसे प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने केलिए कहानीकार आलंकारिकता और लाक्षाणिकता लाने की कोशिश करता है। चित्रा मुद्‌गल की कहानियों में भी आलंकारिक भाषा का अच्छा प्रयोग मिलता है। 'प्रेतयोनी' कहानी में अनिता की माँ जब क्रुद्ध हुई तो शेरनी की भाँति दिखाई दी "क्रुद्ध शेरनी सी अम्मा आप खो बैठी।"(4)

'लकड़बग्घा' कहानी से पछाहवाली की आँखों की मुंडेर पर किसी इन्द्रधनुषी सपने सा टंग गया।"(5)

"पछाहवाली के वाक्य का कटाक्ष लंबरदारिन को बिच्छु के डंक सा चुभा।"(6)

---

1. चित्रा मुद्‌गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 25
2. चित्रा मुद्‌गल केंचुल पृ. 66
3. चित्रा मुद्‌गल जिनावर पृ. 55
4. वहीं पृ. 24
5. चित्रा मुद्‌गल जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं पृ. 93
6. वहीं पृ. 98

....लगा कि एक उत्ताल तरंग भयंकर गर्जन के साथ ऊपर उछली।"[1]

"घिसे रिकार्ड सी जो रट शुरू होगी।"[2]

"मोट्या की दुर्दशा की कल्पना कर सूखे पत्ते-सा काँप उठा।"[3]

"स्टियरिंग पर घूम रही उसकी ऊगलियाँ अकुलाई वेदना की छटपटाहट से ठंडी बेजान सी हो रही हैं.....।"[4]

इस प्रकार कहा जा सकता है चित्रा मुदगल की भाषा साधारण व्यवहार की सम्पन्न भाषा है जो सूक्तियों से सजी चित्रोपमा से युक्त और आलंकारिता से पूर्ण है। सरलता, सरसता, और व्यंजकता आदि गुणों से युक्त चित्राजी की भाषा भावाभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम है। अपने भावों को पाठकों के सामने तीव्रतर रूप में संप्रेषित करने की क्षमता उनकी भाषा में है। भाषा और क्षेत्रीय बोली की पकड़, दृष्टि व्यापकता, कथाओं को और ज्यादा मारक और पटनीय बना देती है। चित्राजी की कहानियों में साधारण लोगों की भाषा का प्रयोग भी है। यह उनके व्यापक अनुभव का परिचायक है। संवाद का तीखापन पात्र के मानसिक तनाव को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने में भाषा साहयक बन जाती है।

कहानी के शीर्षक

कहानी के मुख्य पात्र, घटना अथवा स्थान के नाम पर कहानी का नामकरण प्रेमचन्द्र युग से प्रचलित है। वर्तमान दौर में कहानी के नामकरण

---

1. चित्रा मुद्गल जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं पृ. 99
2. चित्रा मुद्गल जिनावर पृ. 75
3. चित्रा मुद्गल मामला आगे बढेगा अभी पृ. 11
4. चित्रा मुद्गल भूख पृ. 83

में प्रतीकात्मक पद्धति का प्रयोग मिलता है। प्रतीकात्मक शीर्षक का उदाहरण है लकड़बग्घा, प्रेतयोनि, स्टेपिनी, एक काली एक सफेद, केंचुल, जिनावट, बाध, आदि।

कथ्य की सशक्त अभिव्यक्ति देनेवाले शीर्षक कुछ कहानियों को दिये गये है जैसे दुल्हिन, ताशमहल, अपनी वापसी इस हमाम में, चेहरा, भूख, अनुबन्ध आदि। चित्राजी की कुछ कहानियों का शीर्षक लम्बी है जब तक बिमलाएँ हैं, जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं, फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती, मामला आगे बढेगा अभी आदि।

निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल एक सजग संवेदनशील और ईमानदार महिला रचनाकार हैं। उनकी रचनाओं की रचनाभूमि उनका सुपरिचित अनुभव क्षेत्र हैं। अपने अनुभव के दायरे में आये विषयों को बड़ी कलात्मकता के साथ प्रस्तुत भी किया है। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों की कथावस्तु सामाजिक हैं। कथ्य के अनुरूप पात्र-चयन चित्राजी की कहानी कला की बड़ी विशेषता है। उनके पात्र हमारे सामाजिक जीवन में हमारे आस पास दिखाई देनेवाले है। उनके उपन्यासों के ही समान उनकी कहानियों के भी केन्द्रीय पात्र स्त्री है।

कहानियों में उनकी भाषा अत्यन्त पारदर्शी बिम्बात्मक और मनोदशाओं की सूक्ष्म अभिव्यंजक है। उनकी भाषा पात्रानुकूल एवं परिवेशानुकूल है जो शहरी मध्यवर्गीय परिवेश से उपजी सामान्य बोलचाल की है। सामान्य व्यवहार की भाषा होने से उसमें एक सहज प्रवाह भी लक्षित होता है। लेखिका की भाषा में पात्रों की अनेकानेक भावनाओं को

प्रसंगानुकूल व्यक्त करने की पर्याप्त क्षमता हैं। खास तौर से नारी मन की परतों को यथार्थ रूप में खोलने में उनकी भाषा पर्याप्त समर्थ पायी है। अपने समय तथा परिवेश का साक्षात्कार करनेवाली उनकी भाषा कथ्य के अनुरूप मुद्रा धारण करती हुई नज़र आती है। कथा संयोजन की विभिन्न शैलियों में चित्राजी ने वर्णनात्मक शैली को ही मुख्य रूप से अपनाया है। यही शैली ही उनको प्रिय है जिसमें सम्प्रेषण की क्षमता सबसे ज्यादा है। चित्राजी ने अपनी रचनाओं में घर-परिवार के भीतरी यथार्थ के साथ साथ राजनीतिक यथार्थ को भी प्रस्तुत किया है। 'आवाँ' उपन्यास, 'जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे है' 'बन्द' 'पाठ', 'लपटें' जैसी कहानियाँ इसकी मिसालें हैं। नारी जीवन की विविध समस्याओं, उसकी जीवनगत दशाओं का परिवार के धरातल पर किया गया रेखांकन चित्रा मुद्गल की महत्वपूर्ण देन कही जा सकती है। भाषा की कलात्मकता शैली की सूक्ष्मता और बिम्बों के वैभव के साथ परिवेश विधान उनकी कहानियों की खासियत है। उनकी कहानियाँ सामंती परिवेश में स्त्री की पीडा, महानगरीय परिस्थितियों में मूल्य इनसान के पतन, संयुक्त परिवार, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओं को अत्यन्त मार्मिक एवं धारदार ढंग से उभारती है। उनकी भाषा शैली और विषय वस्तु आज की कहानी के अनुकूल है। विषय वस्तु तो अपने आसपास के संसार से ही है। इसलिए रचनाओं में किसी तरह की शिल्पगत जटिलताएँ नहीं हैं।

उपसंहार

उपसंहार

हिन्दी कथा साहित्य को महिला रचनाकारों का बड़ा योगदान रहा है। महिला लेखन में खास बू-बास नज़र आने के कारण आज उसे विशेष दर्जा मिला है। अपने वर्ग एवं जाति की अनूठी अभिव्यंजना के ज़रिए महिला कथा-लेखन ने समकालीन हिन्दी साहित्य में खास पहचान बनाई है। यद्यपि पुरुष रचयिताओं की रचनाओं में मन की गहनतम प्रेरणाओं, स्फूर्णाओं और मनोभावों को अभिव्यक्ति मिली है और मिल रही है; तो भी उनकी रचनाओं में उतनी बारीकी और नज़दीकी नहीं है, जितनी महिला कथाकारों की रचनाओं में होती है। पुरुषों द्वारा लिखित रचनाओं को जीवन की संपूर्ण गाथा का अपूर्ण चित्र कहा जा सकता है। यानी, वह आधी दुनिया का सच है। दूसरी आधी दुनिया महिला लेखन है। महिला लेखन को इसलिए साहित्य की अधूरी दुनिया को भरापूरा बनाने का यत्न कहा जा सकता है। महिला लेखन अपनी तमाम खूबियों और खामियों के बावजूद आधी दुनिया को अपनी रचनाओं में बड़ी खूबसूरती के साथ उपस्थित कर गया है और कर रहा है। लेखिकाओं ने महज नारी जीवन पर ही नहीं लिखा है, बल्कि जीवन की तमाम संवेदनाओं-पहलुओं की अभूतपूर्व अक्कासी करके कई मायनों में पुरुष रचयिताओं से ज़्यादा कामयाबी हासिल की है। नारी की कलम से नारी के विषय में जो कुछ लिखा गया है, वह अत्यन्त सार्थक और प्रामाणिक है। महिला-लेखन लेखन की परिव्याप्ति का घेरा खुलने और जीवन की तस्वीर को पूरा होने का साक्ष्य है।

अपने रचना-कर्म के ज़रिए कथा साहित्य को प्रामाणिक स्तर देनेवाली कई महिला कथाकार हैं। यों तो प्रेमचन्द युग में ही हिन्दी कथा रचना के क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश हो चुका था किन्तु स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद नारी-जागरण और स्त्री-शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप इस क्षेत्र में महिला रचनाकारों की एक सशक्त पीढ़ि का उदय हुआ है। फिलहाल महिला कथाकारों की दो पीढ़ियाँ एक साथ सक्रिय हैं। पहली पीढ़ी की लेखिकाओं में शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, और ममता कालिया का नाम उल्लेखनीय है। दूसरी पीढ़ि में दीप्ती खण्डेलवाल, मृणाल पाण्डेय, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्‌गल, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, सूर्यबाला, चन्द्रकान्ता, मेहरुन्नीसा परवेज़, अलका सरावगी, मैत्रेयी पुष्पा, मधु कांकरिया आदि प्रमुख हैं।

समकालीन महिला कथाकारों में जो अनेक नाम प्रतिष्ठित हुए, उनमें एक नाम चित्रा मुद्‌गल का भी है। वे मध्यवर्गीय शहरी जीवन से उभरी कथाकार हैं। उन्होंने अपने कथा-बीज एवं कथा-पात्र उसी परिवेश से बटोरे हैं। चित्राजी अपने लेखन से जहाँ एक ओर निरन्तर रीतती जा रही मानवीय संवेदना को रेखांकित करते हुए लगभग निम्न वर्ग के पात्रों, उनकी जिन्दगी को समूचे परिवेश में घुसकर अध्ययन करती नज़र आती हैं, वहीं दूसरी ओर नये ज़माने की रफ़्तार में घटते जीवन-मूल्यों की स्तब्ध कर देनेवाली तस्वीर भी गहरी संवेदना के साथ उकेरती हैं।

अब तक उनके तीन उपन्यास प्रकाशित हैं - 'एक ज़मीन अपनी', 'आवाँ' और 'गिलिगडु'। वे उपन्यासकार के अलावा संवेदनशील कहानीकार भी हैं। उनके चौदह कहानी संकलन प्रकाशित हैं **जहर ठहरा हुआ,**

लाक्षा गृह, अपनी वापसी, इस हमाम में, ग्यारह लम्बी कहानियाँ, जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं, चर्चित कहानियाँ, मामला आगे बढेगा अभी, जिनावर, केंचुल, भूख, लपटें, बयान और प्रतिनिधि कहानियाँ। अनुवादिका, बालसाहित्यकार और संपादिका के रूप में भी उन्होंने अपनी पहचान बनायी है।

उनके पहले उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' का केन्द्रीय कथ्य बंबई के महानगरीय परिवेश में विज्ञापन जगत् के ग्लैमर, मूल्यहीन प्रतियोगिता, तिकड़म, देह व्यापार के बीच प्रस्तुत 'नारी विमर्श' है। इस परिवेश में नारी को भोगवस्तु के रूप में ही देखा जाता है। चित्रा जी ने गहरी संवेदनशीलता के साथ यह अंकित करने का प्रयास किया है कि पत्नी और प्रेमिका के रूप में आधुनिक नारी की स्थिति बहुत ही त्रासद है। उनका दूसरा उपन्यास 'आवाँ' एक नौजवान लड़की नमिता के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत करता है। मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी-पली यह युवती महानगर के जलते हुए परिवेश में तपकर अपने को संघर्ष केलिए तैयार करती है। उपन्यास में दो बातें उभरकर सामने आती हैं एक तो यह है कि कभी वर्गहीन समाज के रचने के महान उद्देश्य को सामने रखकर संघर्ष करनेवाली ट्रेडयूनियनें आज स्वयं सत्ताकांक्षियों के कठपुतली बन गई हैं और उनका संघर्ष लक्ष्य-भ्रष्ट हो गया है। दूसरी यह है कि समाज का कोई भी वर्ग क्यों न हों, आज के सर्वत्र पुरुष प्रधान समाज़ में नारी ही उत्पीड़ित होने के लिए अभिशप्त है। उनके तीसरे उपन्यास 'गिलिगडु' में आज की युवा पीढ़ि द्वारा अपने माता-पिता की घोर उपेक्षा और अवमानना का बड़ा ही मार्मिक और सजीव चित्रण किया गया है।

चित्राजी ने मुम्बई की झोंपड-पट्टी के जीवन को बडी बारीकी से अपनी कहानियों में पेश किया है। उनकी कहानियों का धरातल बड़ा व्यापक है। आधुनिक मानव समाज की पूरी और असली पहचान उनकी कहानियों की खासियत है। उनकी कहानियों के केन्द्रीय विषय पारिवारिक जीवन पर अवस्थित हैं। इसलिए उनकी कहानियों को 'पारिवारिक जीवन की शोभयात्रा' कही गयी। यह महज आरोप है। परिवार की सीमा के बाहर की कहानियाँ भी उन्होंने लिखी हैं जैसे बंद, फातिमाबाई कोठे पर नहीं रहती,' जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं आदि। जीवन यथार्थ की अभिव्यक्ति की दृष्टि से उनकी कहानियों को पारिवारिक जीवन यथार्थ की कहानियाँ, सामाजिक आर्थिक यथार्थ की कहानियाँ, नारी जीवन के यथार्थ की कहानियाँ और राजनीतिक यथार्थ की कहानियाँ। बहुरंगी कथ्य, विषय का वैविध्य, कथ्य की प्रभावात्मक प्रस्तुति आदि कई दृष्टियों से चित्राजी की कहानियाँ हमारे समकालीन जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज़ हैं।

चित्राजी ने अपने कथा-साहित्य में नारी जीवन के हरेक पहलू को सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है। नारी के वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन का प्रतिपादन ही उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में किया है। पुरुषों द्वारा नारी के सामाजिक शोषण के चित्र "एक ज़मीन अपनी' और 'आवाँ' में मिलते हैं। 'आवाँ' में हर वर्ग और स्तर की नारी के जीवन को उपस्थित किया गया है। मॉडलिंग और विज्ञापन के जगत् में जो नारी शोषण हो रहा है उसकी प्रस्तुति भी दोनों उपन्यासों में हुई है। नौकरी पेशा नारी की समस्याओं की प्रस्तुति के साथ-साथ चाकरी या झाडू-पोंछा करके जीवन बितानेवाली बाइयों, वेश्याओं, दलाल स्त्रियों की समस्याओं को भी उन्होंने

अपने उपर्युक्त दोनों उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। उपन्यास की तुलना में चित्रा जी ने कहानियाँ ही ज़्यादा लिखी हैं। उनकी हर कहानी में नारी जीवन के किसी न किसी मुद्दे को प्रधानता दी गयी है। नारी जीवन की विद्रोहात्मक प्रतिक्रियाओं को भी चित्राजी ने बढ़ी सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी कुछ स्त्रियाँ (स्त्री पात्र) रूढ़ियों एवं पुरुष-द्वारा स्त्री-समाज के शोषण और अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह प्रकट करती हैं।

चित्राजी की रचनाएँ शिल्पपरक कई विशेषताओं से युक्त हैं। उन्होंने अपने अनुभव में आये विषयों को कहानी और उपन्यास में पुनः सृजन किया। कलात्मक एवं काव्यमयी अभिव्यक्ति के ज़रिए रचना को पठनीय बनाया। कथ्य के अनुरूप पात्र चयन और पात्रों के अनुरूप भाषा-चयन उनकी रचना धर्मिता का एक विशेषता है। उनकी ज्यादतार पात्र निम्नमध्य-वर्गीय हैं उनकेलिए सामान्य व्यवहार की भाषा का प्रयोग किया गया है। चित्राजी ने अपने रचनाओं में मुख्यतः वर्णनात्मक शैलि का प्रयोग ही किया है। क्योंकि इसमें संप्रेषण की क्षमता ज्यादा है। शैल्पिक दृष्टि से उनकी कथा रचनाएँ कतिपय विशेषताओं से युक्त हैं। उनकी कथा रचनाएँ कलावाद-रूपवाद के साँचे में ढ़ली रचनाएँ नही हैं, तो भी उनका अलग वैशिष्ट्य है। उनकी भाषा अत्यन्त पारदर्शी, बिम्बात्मक और मनोदशाओं की सूक्ष्म थरथराहट को उसके सारे संगीत और लयात्मकता के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम है। भाषा में एक धारदार आइरनी भी पायी जाती है। उनकी चरित्र-चित्रण शैली, बिम्ब विधान और परिवेश विधान भी अनुपम बन पडे हैं।

अपनी सीमित परिधि और अनुभव क्षेत्र के भीतर रहकर पारिवारिक एवं नारी जीवन की बहुतविध समस्याओं को सामान्य व्यवहार की प्रवाहमयी भाषा में उजागर करने में लीन चित्रा मुद्गल की रचना प्रक्रिया नैरन्तर्य से संपृक्त पायी जाती है। उनका रचना कर्म निरन्तर गतिमान है। नारी के अवलोकन बिन्दु से नारी नारी जीवन की विविध समस्याओं, पारिवारिक सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं, राजनीतिक छल-छद्म का उसके यथार्थ के धरातल पर किया गया रेखांकन हिन्दी साहित्य को चित्रा जी का महत्वपूर्ण प्रदेय कहा जा सकता है। महिला कहानीकारों में चित्रा जी का स्थान अलग है और उनकी रचनाओं की संवेदना एकदम समसामायिक है। उनकी रचनाओं के शिल्प की ताज़गी और संवेदना की व्यापकता की वजह से हिन्दी कथा जगत् में चित्रा मुद्गल श्रेष्ठ एवं सजग महिला रचनाकार बनी हुई हैं।

ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ

1. चित्रा मुद्‌गल — एक ज़मीन अपनी
प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफअली रोड
नई दिल्ली
प्र.सं. 1990

2. चित्रा मुद्‌गल — आवाँ
सामयिक प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 1999

3. चित्रा मुद्‌गल — गिलिगडु
सामयिक प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 2002

4. चित्रा मुद्‌गल — जहर ठहरा हुआ है
अनन्य प्रकाशन
प्रयाग
प्र.सं. 1980

5. चित्रा मुद्‌गल — लाक्षागृह
पराग प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 1982

6. चित्रा मुद्गल — अपनी वापसी
सम्भावना प्रकाशन
हापुड़
प्र.सं. 1983

7 चित्रा मुद्गल — इस हमाम में
प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफ अली रोड, दिल्ली
प्र.सं. 1986

8. चित्रा मुद्गल — ग्यारह लम्बी कहानियाँ
प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफ अली रोड़, दिल्ली
प्र.सं. 1987

9. चित्रा मुद्गल — जगदम्बा बाबु गाँव आ रहे हैं
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली, दरियागंज
प्र.सं. 1992

10. चित्रा मुद्गल — चर्चित कहानियाँ
सामयिक प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 1994

11. चित्रा मुद्गल — मामला आगे बढेगा अभी
प्रभात प्रकाशन
4/19 असफ अली रोड़
दिल्ली
प्र.सं. 1995

12. चित्रा मुद्गल — जिनावर
किताब घर प्रकाशन
नई दिल्ली-2
प्र.सं. 1996

13. चित्रा मुद्गल — भूख
प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफ अली रोड़
प्र.सं. 2001

14. चित्रा मुद्गल — लपटें
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 2002

15. चित्रा मुद्गल — बयान
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 2004

16. चित्रा मुद्गल — प्रतिनिधि कहानियाँ

17 चित्रा मुद्गल — जंगल का राज
प्रभात प्रकाशन
4/9 आसफ अली रोड़, दिल्ली
प्र.सं. 1980

18. चित्रा मुद्गल — देश देश की लोककथाएँ
प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफ अली रोड़, नई दिल्ली
प्र.सं. 1985

19. चित्रा मुद्गल — मणिमेखलै
साहित्य प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 2001

20. चित्रा मुद्गल — जीवक
साहित्य प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 2001

21. चित्रा मुद्गल — (सं) असफल दाम्पत्य की कहानियाँ
प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफ आली रोड़
दिल्ली
प्र.सं. 1987

22. चित्रा मुद्गल — (सं) टूटते परिवारों की कहानियाँ
प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफ अली रोड
नई दिल्ली
प्र.सं. 1987

23. चित्रा मुद्गल — (सं) दूसरी औरत की कहानियाँ
प्रभात प्रकाशन
4/19 आसफ आली रोड़
नई दिल्ली
प्र.सं. 1988

सहायक ग्रन्थ

1. डॉ. इन्द्रनाथ मदान — हिन्दी कहानी
राजकमल प्रकाशन
दिल्ली
सं. 1978

2. डॉ. उषा यादव — हिन्दी की महिला
उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना
राधाकृष्ण प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 1999

3. उमेश गुप्ता — आधुनिक युग की लेखिकाएँ
ऋषभ चरण जैन एवं सन्तति
दिल्ली
सं. 1969

4. डॉ. ऊर्मिला प्रकाश — हिन्दी लेखिकाओं के स्वतंत्रोत्तर
उपन्यासों में पुरुष कल्पना
चिन्ता प्रकाशन
प्र.सं. 1999

5. डॉ. ऊर्मिला गुप्ता — स्वातंत्रोत्तर कथा लेखिकाएँ
राधाकृष्ण प्रकाशन
दिल्ली
प्र.सं. 1967

6. डॉ. ओम प्रकाश शर्मा — समकालीन महिला लेखन
वाणी प्रकाशन
दिल्ली

7	गोपाल राय	हिन्दी उपन्यास का इतिहास राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली प्र.सं. 2002
8.	डॉ. गंगा प्रसाद विमल	समकालीन कहानी का रचना विधान दि मैकमिलन कंपनी इंडिया लिमिटेड प्र.सं. 1980
9.	डॉ. चन्द्रभान रावत	हिन्दी कहानी फिलहाल राजपाल एंड सन्स दिल्ली प्र.सं. 1980
10.	डॉ. ज्ञानवती अरोरा	समकालीन हिन्दी कहानी सामयिक प्रकाशन दिल्ली सं. 1999
11.	डॉ. धनंजय	समकालीन हिन्दी कहानी दिशा और दृष्टि अभिव्यक्ति प्रकाशन दिल्ली प्र.सं. 1978
11.	धीरेन्द्र वर्मा	साहित्य कोश भाग दो
12.	डॉ. नरेन्द्र मोहन	समकालीन हिन्दी कहानियाँ भारतीय प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली प्र. सं. 2000

13. डॉ. नामवर सिंह — कहानी नई कहानी
लोक भारती
इलाहाबाद
प्र.सं. 1966

14. डॉ. परमानंद श्रीवास्तव — हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया
ग्रन्थम
कानपुर
प्र.सं. 1965

15. डॉ. पुष्पपाल सिंह — समकालीन कहानी रचना मुद्रा
सूर्य प्रकाशन
नई दिल्ली
प्र.सं. 1984

16. डॉ. मधुरेश — हिन्दी कहानी अस्मिता की तलाश
आधार प्रकाशन
पंचकूल
प्र.सं. 1997

17 डॉ. मधुरेश — हिन्दी उपन्यास का विकास
सुमित प्रकाशन
अलोपिबाग, इलाहाबाद
प्र.सं. 1998

18. मन्नु भण्डारी — स्वामी
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली

19. मंजुशर्मा — साठोत्तर महिला कहानिकार
राधा पब्लिकेशनस
नई दिल्ली-2
प्र.सं. 1992

20. डॉ. राम प्रसाद — साठोत्तरी हिन्दी कहानी में पात्र और चरित्र चित्रण
जयभारती प्रकाशन
इलाहाबाद
प्र.सं. 1995

21. डॉ. रामदरश मिश्र — हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान
नेशनल पब्लिकेशिंग हउस, दिल्ली
प्र.सं. 1977

22. डॉ. रामकली शराफ — समकालीन कथालेखिकाएँ
विजय प्रकाशन मन्दिर
प्र.सं. 1989

23. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी — भाषा और संवेदना
भारतीय ज्ञानपीठ, वारणासी
प्र.सं. 1989

24. डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल — हिन्दी कहानी की शिल्प विधि
साहित्य भवन, इलाहबाद
प्र.सं. 1979

25. डॉ. वासदेव शर्मा — साठोत्तर हिन्दी कहानी मूल्यों की तलाश
सहयोग प्रकाशन
प्र.सं. 1990

26.	विजया वारद (रागा)	साठोत्तर हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ विकास प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 1993
27	डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ	हिन्दी के सौ वर्ष मधुपन प्रकाशन, मधुरा प्र.सं. 1998
28.	डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ	हिन्दी कहानी की समकालीन परिदृश्य जवहर पुस्तकालय प्र.सं. 2005
29.	डॉ. शशिभूषण सिंहल	उपन्यास का स्वरूप आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली -3 प्र.सं. 2003
30.	डॉ. साधना अग्रवाल	वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.सं. 1995
31.	डॉ. सुधाकर अदीब	हिन्दी उपन्यासों में प्रशासन अभिव्यंजना, नई दिल्ली प्र.सं. 1996
32.	डॉ. सुरेश सिंहा	उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ अशोक प्रकाशन प्र.सं. 1967
33.	डॉ. सुरेश सिंहा	हिन्दी उपन्यास अशोक प्रकाशन प्र.सं. 1987

पत्रिका

1.	आजकल	सितंबर	1984
2.	दस्तावेज	अक्टूबर/दिसंबर	1987
3.	दस्तावेज़	जनवरी/मार्च	1982
4.	दस्तावेज़	जनवरी	2000
5	दस्तावेज	दिसंबर	2000
	दस्तावेज़	जनवरी/मार्च	2000
7	वर्तमान साहित्य	**नवंबर**	**2001**
8.	समीक्षा	जनवरी/मार्च	1997
9.	समीक्षा	अक्टूबर	2004
10.	साहित्य अमृत	जनवरी	2003
11.	सारिका	अक्टूबर	1989
12.	साक्षात्कार	मार्च	1885